CONTENTS

Fifteenth Series, Vol. XXXII, Thirteenth Session, 2013/1934 (Saka) No.11, Friday, March 8, 2013/Phalguna 17, 1934 (Saka)

SUBJECT	PAGES
ORAL ANSWERS TO QUESTIONS *Starred Question Nos.161 to 165	6-40
WRITTEN ANSWERS TO QUESTIONS	41.06
Starred Question Nos.166 to 180 Unstarred Question Nos.1841 to 2070	41-86 87-520

 $^{^*}$ The sign + marked above the name of a Member indicates that the Question was actually asked on the floor of the House by that Member.

PAPERS LAID ON THE TABLE	521-529
BUSINESS OF THE HOUSE	530-534
STANDING COMMITTEE ON URBAN DEVELOPMENT 21 st and 22 nd Reports	534
DEMANDS FOR SUPPLEMENTARY GRANTS (GENERAL), 2012-13	535
DEMANDS FOR EXCESS GRANTS (GENERAL), 2010-11	535
REFERENCE BY THE SPEAKER International Women's Day	536-537
SUBMISSION BY MEMBERS Re: Occasion of International Women's Day	538-574
RESOLUTION RE: APPROVAL OF THIRD REPORT OF RAILWAY CONVENTION COMMITTEE, RAILWAY BUDGET (2013-14) – GENERAL DISCUSSION, DEMANDS FOR GRANTS ON ACCOUNTS (RAILWAYS), 2013-14, DEMANDS FOR SUPPLEMENTARY GRANTS – (RAILWAYS), 2012-13 AND	
DEMANDS FOR EXCESS GRANTS (RAILWAYS), 2010-11	575-674
Shri Ganesh Singh	575-583
Dr. Mirza Mehboob Beg	584
Dr. Ratna De	585-587
Shri Shripad Yesso Naik	588-590
Dr. Tushar Chaudhary	591-597
Shrimati Annu Tandon	598-602
Shri Ramsinh Rathwa	603-609
Shri R. Thamaraiselvan	610-614
Shri Ram Singh Kaswan	615-617

Sukhdev Singh	618-621
Jitendra Singh Bundela	622-629
Sher Singh Ghubaya	630-633
Prem Das Rai	634
N. Peethambara Kurup	635-638
Sanjay Dina Patil	639-644
Adhir Chowdhury	645-650
Ajay Kumar	651-653
nati Jayshreeben Patel	654-656
Kamal Kishor 'Commando'	657-660
Sajjan Verma	661-662
Hansraj G. Ahir	663-665
Rakesh Sachan	666-668
Rayapati Sambasiva Rao	669-673
Lalit Mohan Suklabaidya	674
RE: THIRTIETH AND THIRTY-FIRST OF COMMITTEE ON PRIVATE S'BILLS AND RESOLUTIONS	675
MEMBERS' BILLS – Introduced	675-686
Destitute Children (Rehabilitation and Welfare) Bill, 2011	675
By Shrimati Priya Dutt	
Writers and Artists' Social Security Bill, 2011	676
By Shrimati Priya Dutt	
	Jitendra Singh Bundela Sher Singh Ghubaya Prem Das Rai N. Peethambara Kurup Sanjay Dina Patil Adhir Chowdhury Ajay Kumar mati Jayshreeben Patel Kamal Kishor 'Commando' Sajjan Verma Hansraj G. Ahir Rakesh Sachan Rayapati Sambasiva Rao Lalit Mohan Suklabaidya RE: THIRTIETH AND THIRTY-FIRST OF COMMITTEE ON PRIVATE S'BILLS AND RESOLUTIONS MEMBERS' BILLS – Introduced Destitute Children (Rehabilitation and Welfare) Bill, 2011 By Shrimati Priya Dutt Writers and Artists' Social Security Bill, 2011

08.03.2013 4

(iii)	Persons with Disabilities (Equal Opportunities, Protection of Rights and Full Participation) Amendment Bill, 2011 (Amendment of section 33). By Shrimati Priya Dutt	676
(iv)	Prevention of Bribery in Private Sector Bill, 2012 By Shri Varun Gandhi	677
(v)	Indian Penal Code (Amendment) Bill, 2012 (Insertion of new section 304AA) By Dr. Kirit Premjibhai Solanki	677
(vi)	Lakshadweep Coconut Tree Climbers (Welfare) Bill, 2012 By Shri Hamdullah Sayeed	678
(vii)	Disclosure of Lobbying Activities Bill, 2013	678
	By Shri Kalikesh Narayan Singh Deo	
(viii)	Jute Growers (Remunerative Price and Welfare) Bill, 2013 By Dr. Kakoli Ghosh Dastidar	679
(ix)	Nationalisation of Inter-State Rivers Bill, 2013 By Shri Ramen Deka	679
(x)	Indian Penal Code (Amendment) Bill, 2013 (Amendment of section 304A, etc.). By Dr. Bhola Singh	680
(xi)	Child Welfare Bill, 2013 By Dr. Bhola Singh	680
(xii)	Compulsory Military Training Bill, 2013 By Dr. Bhola Singh	681
(xiii)	Fodder Bank Bill, 2013 By Shri Hansraj G. Ahir	681

08.03.2013 5

(xiv)	Constitution (Amendment) Bill, 2013 (Insertion of new articles 16A and 16AA) By Shri Hansraj G. Ahir	682
(xv)	Constitution (Amendment) Bill, 2013 (Amendment of the Eighth Schedule). By Shri Hansraj G. Ahir	682
(xvi)	Constitution (Amendment) Bill, 2013 (Insertion of new article 72A) By Shri Hansraj G. Ahir	683
(xvii)	Powerloom Sector (Welfare) Bill, 2013 By Shri Suresh Kashinath Taware	683
(xviii)	Bureau of Accountability Bill, 2013 By Shri Jai Prakash Agarwal	684
(xix)	Cinematograph (Amendment) Bill, 2013 (Amendment of section 2, etc.) By Shri Jai Prakash Agarwal	684-685
(xx)	Constitution (Amendment) Bill, 2013 (Insertion of new article 30A). By Shri Jai Prakash Agarwal	686
	TION BY THE CHAIR ag of Private Members' Bills	686
EMPLOYN BILL, 2010	A GANDHI NATIONAL RURAL MENT GUARANTEE (AMENDMENT)	
`	endment of section 2, etc.)	687-737
	Arjun Ram Meghwal	687-690
Shri Shailendra Kumar		691-694
Prof. Saugata Roy		695-699
	Hukmadeo Narayan Yadav	700-704
	S. Semmalai	705-707
Shri N	Mahendrasinh P. Chauhan	708-709

Dr. Bhola Singh	710-714
Shri Ramen Deka	715-717
Shri Virendra Kashyap	718-720
Shri Jagdambika Pal	721-725
Shri Syed Shahnawaz Hussain	726-732
Shri Pradeep Jain	733-735
Shri Hansraj G. Ahir	736-737
Bill Withdrawn	737
SAFAI KARAMCHARIS INSURANCE SCHEME BILL, 2011	738
Motion to Consider	738
Shri Arjun Ram Meghwal	738
ANNEXURE – I	
Member-wise Index to Starred Questions	754
Member-wise Index to Unstarred Questions	755-759
ANNEXURE – II	
Ministry-wise Index to Starred Questions	760
Ministry-wise Index to Unstarred Questions	761

OFFICERS OF LOK SABHA

THE SPEAKER

Shrimati Meira Kumar

THE DEPUTY SPEAKER

Shri Karia Munda

PANEL OF CHAIRMEN

Shri Basu Deb Acharia
Shri P.C. Chacko
Shrimati Sumitra Mahajan
Shri Inder Singh Namdhari
Shri Francisco Cosme Sardinha
Shri Arjun Charan Sethi
Dr. Raghuvansh Prasad Singh
Dr. M. Thambidurai
Dr. Girija Vyas
Shri Satpal Maharaj

SECRETARY GENERAL

Shri T.K. Viswanathan

LOK SABHA DEBATES

LOK SABHA

Friday, March 8, 2013/Phalguna 17, 1934 (Saka)

The Lok Sabha met at Eleven of the Clock

[MADAM SPEAKER in the Chair]

MADAM SPEAKER: Question Hour. Question No.161 - Shri Ramsinh Rathwa.

... (Interruptions)

श्री शैलेन्द्र कुमार (कौशाम्बी): माननीय अध्यक्ष महोदया, उत्तर प्रदेश के बारे में यह महत्वपूर्ण मुद्दा है। हमने नोटिस दिया है।...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : प्रश्न काल चलने दीजिए। बाद में ले लेंगे।

...(व्यवधान)

श्री शैलेन्द्र कुमार: अध्यक्ष महोदया, उत्तर प्रदेश अंधकार में डूब जाएगा।...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : आज प्रश्न काल चलने दीजिए।

...(व्यवधान)

MADAM SPEAKER: Nothing will go on record.

(Interruptions) ...*

अध्यक्ष महोदया : हम बाद में देखेंगे कि क्या कर सकते हैं?

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : अब प्रश्न काल चलने दीजिए।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : बाद में ले लेंगे।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : पहला पूरक प्रश्न।

...(व्यवधान)

श्री रामसिंह राठवा (छोटा उदयपुर): माननीय अध्यक्ष महोदया, मैं आपका बहुत आभारी हूं कि आपने मुझे प्रश्न पूछने का मौका दिया।...(व्यवधान)

श्री शैलेन्द्र कुमार: अध्यक्ष महोदया, हमने नोटिस दिया है।...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : बाद में ले लेंगे।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : आप बताइए कि प्रश्न काल कैसे स्थिगित करें? प्रश्न काल स्थिगित नहीं हो सकता है।

...(व्यवधान)

-

^{*} Not recorded.

अध्यक्ष महोदया : आप बैठ जाइए। रिकॉर्ड में नहीं जा रहा है।

...(व्यवधान) *

अध्यक्ष महोदया : बाद में बोलेंगे तो रिकॉर्ड में भी चला जाएगा।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : बैठ जाइए।

...(व्यवधान)

श्री रामसिंह राठवा: माननीय अध्यक्ष महोदया, मैं आपके माध्यम से मंत्री जी से पुछना चाहता हूं।...(व्यवधान)

11.02 hrs.

At this stage Shri Premdas and some other hon Members came and stood on the floor near the Table.

...(व्यवधान)

MADAM SPEAKER: Nothing is going on record. Do not do this.

(Interruptions) ...*

अध्यक्ष महोदया : आज अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस है। पूरे सदन की भावना है कि सदन को सुचारु रूप से संचालित किया जाए।

...(व्यवधान)

श्री रेवती रमण सिंह (इलाहाबाद): हमारी बात एक मिनट के लिए सुन लीजिए।...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : आप पहले बैठ जाइए, तब मैं बात सुनूंगी।

...(व्यवधान)

MADAM SPEAKER: Nothing will go on record.

 $(Interruptions) \dots *$

अध्यक्ष महोदया : बैठ जाइए।

...(व्यवधान)

MADAM SPEAKER: When I am standing, why are you standing then?

... (Interruptions)

अध्यक्ष महोदया : आप सब अपने स्थान पर जाकर बैठ जाइए।

-

^{*} Not recorded.

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया: महिला दिवस के दिन ऐसा मत कीजिए।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : बैठ जाइए।

...(व्यवधान)

11.03 hrs.

At this stage, Shri Premdas and some other hon. Members went back to their seats

...(व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव (मैनपुरी): माननीय अध्यक्ष महोदया, हम आपको महिला दिवस पर बधाई देते हैं।

MADAM SPEAKER: When nothing is going on record, why are you talking?

(Interruptions) ...*

अध्यक्ष महोदया : मुलायम सिंह जी, बैठ जाइए।

...(व्यवधान)

MADAM SPEAKER: Nothing is going on record.

(Interruptions) ...*

अध्यक्ष महोदया : आप इतना परिश्रम करते हैं लेकिन रिकॉर्ड में नहीं जाता है। जब मैं बुलाऊं, समय दूं, तब आप बोलें, तब रिकॉर्ड में भी जाएगा।

...(व्यवधान)

श्री शैलेन्द्र कुमार: उत्तर प्रदेश की बिजली का मामला है। आप हमें बोलने का समय दें।...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : मैं समय दूंगी। बैठ जाइए।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : मुलायम सिंह जी, हम आपको बोलने का मौका देंगे।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया: किसे बोलना है?

रेवती रमण सिंह जी।

श्री रेवती रमण सिंह: माननीय अध्यक्ष महोदया, उत्तर प्रदेश 22 करोड़ की आबादी वाला प्रदेश है। भारत सरकार ने उत्तर प्रदेश में पुनर्गठन की बात कही थी। आठ राज्यों में से उत्तर प्रदेश ने भी दस्तखत किया है। बिजली बिल का बकाया पुरानी सरकार का है और इसे उत्तर प्रदेश देने के लिए तैयार है। वहां बजट सत्र चल रहा है। आज रात 12 बजे बिजली काट दी जाएगी और पूरे उत्तर प्रदेश में हाहाकार मच जाएगा। इस समय किसानों का थ्रेशिंग सीज़न है। गेहूं कटकर खिलहान में आ रहा है। अगर इस तरह से बिजली काट देंगे तो पूरे उत्तर प्रदेश में हाहकार मच जाएगा। मैं आपसे आग्रह करता हूं कि बिजली मंत्री को बुलाकर सदन में बयान दिलवायें कि पावर ग्रिड वाले वहां की बिजली नहीं काटेंगे। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : ठीक है। अब आप प्रश्न पूछिये।

...(व्यवधान)

श्री शेलेन्द्र कुमार: मैडम, आप कोई निर्देश दीजिए।

अध्यक्ष महोदया : वह मैं नहीं कर सकती हूं, उन्होंने सुन लिया है।

श्री शैलेन्द्र कुमार: आप इस बारे में कोई निर्देश दें।

अध्यक्ष महोदया : स्पीकर निर्देश नहीं दे सकती। उन्होंने सुन लिया है, कृपया अब आप डिस्टर्ब मत कीजिए।

11.06 hrs

(Q. 161)

अध्यक्ष महोदया : प्रश्न संख्या 161 - श्री रामसिंह राठवा।

श्री रामसिंह राठवा: माननीय अध्यक्ष महोदया, अर्नेस्ट एंड यंग की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत केवल 7 से 9 प्रतिशत खनिज संस्थानों की खोज करता है, जबिक दुनिया के अन्य देश और आस्ट्रेलिया जैसे देशों में भू-भौतिकी और भू-रासायनिक सर्वेक्षण के आधार पर 100 प्रतिशत खनिज संस्थानों की खोज होती है। मैं माननीय मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि भारत में खनिज संस्थानों की खोज 7 से 9 प्रतिशत क्यों रही है और इसे बढ़ाने के लिए सरकार क्या कदम उठा रही है?

श्री दिनशा पटेल: मैडम, माननीय सदस्य ने जो प्रश्न पूछा है, वह पार्ट-ए, पार्टी-बी, पार्ट-सी और पार्ट-डी चार भागों में बंटा हुआ है। पार्ट-ए में कोल लिग्नाइट है, पार्ट-बी में एटोमिक मिनरल है, पार्ट-सी में मैटालिक और नॉन-मैटालिक मिनरल हैं, इसमें 87 मिनरल्स बंटे हुए हैं माइनर मिनरल्स स्टेट के पास है। जो माइनर मिनरल्स है, वह स्टेट के पास बंटा हुआ है। इसके अलावा जो मिनरल्स हैं, उनमें एस्बेस्टस, बॉक्साइट, क्रोमियम, कापर ओर, गोल्ड, आयरन ओर, लैड, मैंगनीज ओर, प्रिशस स्टोन्स और जिंक जैसी सभी धातुएं मेरे डिपार्टमैन्ट के साथ जुड़ी हुई हैं। इसके अलावा माइन्स और मिनरल्स सारे स्टेट के साथ जुड़ा हुआ है। उसमें पत्थर, चूना, माटी, ग्रेवल, ग्रेनाइट आदि के साथ जुड़ा हुआ है और जो एटोमिक मिनरल्स हैं, वे एटोमिक डिपार्टमैन्ट के साथ जुड़े हुए हैं।

माननीय संसद सदस्य ने जो प्रश्न पूछा कि दुनिया के मुकाबले में हमारे खिनजों की क्या पोजीशन है, वह इस प्रकार है - लैड कंटैन्ट विश्व में 89 मिलियन टन्स और भारत में 2.6 मिलियन टन्स है। लोहा विश्व में 170 बिलियन टन है और भारत में 28.52 बिलियन टन्स है तथा इसके और बढ़ने की संभावना है। बॉक्साइट विश्व में 28 बिलियन टन्स और भारत में 3.48 बिलियन टन्स है। गोल्ड कंटैन्ट विश्व में 52000 टन्स है और भारत में 665.70 टन्स है। डोलोमाइट विश्व के आंकडे. नहीं है, लेकिन हमारे देश में 7.7 बिलियन टन्स है। चूना पत्थर विश्व के आंकडे. नहीं है, लेकिन हमारे देश में 184 बिलियन टन्स है। कॉपर कंटैन्ट विश्व में 680 मिलियन टन्स है और भारत में 12.29 मिलियन टन्स है। हीरा विश्व में 600 मिलियन कैरेट है और 31.92 मिलियन कैरेट भारत में है। मैंगनीज विश्व में 630 मिलियन टन्स है और भारत में 49 मिलियन टन्स है। सिल्वर कंटैन्ट विश्व में 540 मिलियन टन्स है और भारत में 0.028 मिलियन टन्स है। जिंक कंटैन्ट विश्व में 250 मिलियन टन्स है और भारत में 12 मिलियन टन्स है। इन सारी

चीजों को आगे बढ़ाने के लिए भारत प्रयत्न कर रहा है और उसके लिए जो भी साधनों की जरूरत हो, उसके लिए हवाई, जमीन पर और समुद्र में भी संशोधन किया जाता है।

इसके अलावा जो डोलोमाइट की बात पूछी गई है, विश्व के पैमाने पर उसके आंकड़े मेरे पास उपलब्ध नहीं हैं। मगर जो माननीय सदस्य ने पूछा कि इसके लिए आप क्या आयोजन कर रहे हैं तो जमीन और समुद्र में सर्वेक्षण करके उसे कैसे बढ़ाया जाए, उसके लिए भी हम आयोजन कर रहे हैं। एरियल सर्वे से भी कैसे उसका मुआयना किया जाए, उसके लिए भी हम प्रयत्न कर रहे हैं। जैसा मैंने बोला है कि आयरन जो 28.52 बिलियन टन है, उसमें भी बहुत सा बढ़ावा हो सके, ऐसी कोशिश चल रही है।

श्री रामिसंह राठवा : महोदया, खनिज संपदा के लिए भारत में नवीनतम प्रौद्योगिकी वाली कंपनियां बहुत कम हैं। केवल उड़ीसा माइनिंग कॉर्पोरेशन और एन.एम.डी.सी. के पास नवीनतम यंत्र हैं। लेकिन ये सरकारी कंपनियां अपने अनुसंधान के लिए ही काम करती हैं। मैं माननीय मंत्री जी से यह जानना चाहता हूँ सरकार प्राइवेट कंपनियों को बढ़ावा देने के लिए 49 प्रतिशत सीधे विदेशी धन निवेश लाने के लिए विचार कर रही है? यदि हाँ तो क्यों और यदि ना तो क्यों? यह बताने की कृपा करें।

श्री दिनशा पटेल: महोदया, मैंने पहले ही बताया है कि जी एस आई और उनके जिए जो कोशिश सरकार द्वारा की जाती है, वह सरकार द्वारा की जाती है। हमारे पास समुद्र के अंदर संशोधन के लिए जो पोत है, वह पोत भी पुरानी हो गई है, इसलिए नई पोत खरीदने के बारे में तय किया गया है। हम आज जो संशोधन करते हैं, वह 3500 मीटर तक करते हैं मगर नई पोत आने के बाद 6000 मीटर तक संशोधन कर सकेंगे। कोरिया के साथ इसका कॉन्ट्रैक्ट भी हो गया है। कोरिया की जो नई पोत है, वह इसी साल छह महीने के बाद आ जाएगी। संशोधन की जो बात हो रही है, मैंने पहले भी बताया कि एरियल सर्वे भी हो रहा है, ज़मीन पर भी सर्वे हो रहा है और समुद्र में भी सर्वे हो रहा है। ऐसी कोशिश चल रही है कि सरकार के जिए ज्यादा से ज्यादा सर्वे हो सके। मैं मानता हूँ कि हमें जो संशोधन करना है, उसमें बहुत आगे बढ़ सकेंगे। सन् 2008 से निजी कंपनियों से खरीद देश में आ रही है। उन्होंने जो निजी कंपनियों के आने के बारे में पूछा है, उसका भी सॉल्यूशन निकल जाएगा।

SHRI P.K. BIJU: Madam, mineral mining industry is giving 2.2 per cent to 2.5 per cent to our GDP. As a whole the mining industry gives ten to eleven per cent to our GDP. Now-adays, in the mining industry, our economic growth is being looted by some companies. The last one is Coalgate Scam of Rs. 1.86 lakh crore. It is three times of our education budget, four times of our health budget and two times of our petroleum subsidy, but our Government is not ready to stop this wrong-doing in the mining industry.

Madam Speaker, through you, I would like to ask one question to the hon. Minister. What are the steps taken by the Central Government to stop the wrong-doing and protect the mining sector in our country and for using it for the welfare of the Indian population? श्री दिनशा पटेल: महोदया, माननीय सदस्य ने कहा है कि लूट रहे हैं। अवैध खनन को रोकने के लिए भी पूरी कोशिश की जा रही है। उड़ीसा हो, गोवा हो या आंध्र प्रदेश हो, कहीं भी अवैध खनन हो रही है तो उसको रोकने की पूरी कोशिश हो रही है।

उन्होंने इंवेस्टमेंट के बारे में कहा है, तो हम एफडीआई इन माइनिंग सैक्टर में अलाऊ कर रहे हैं। हमें एफडीआई सैक्टर में भी काम करना है, इसमें आगे बढ़ना है तो उसमें हम अलाऊ कर रहे हैं। मैं मानता हूँ कि इस सैक्टर का हिस्सा उन्होंने 2.4 पर्सेंट बताया है। कोल और जो सारी माइनिंग उसमें 2.4 पर्सेंट है। मगर मेरे डिपार्टमेंट का करीब 0.87 पर्सेंट देश के विकास में जुड़ा हुआ है। माइनिंग सेक्टर को कैसे आगे बढ़ाया जाए, इसकी पूरी कोशिश की जा रही है। माइनिंग सेक्टर अच्छी तरह से काम करे, इसके लिए भी पूरे प्रावधान किए गए हैं और अवैध खनन का रोकने के लिए भी पूरी कोशिश हो रही है।

DR. RATNA DE: Madam, as we do know, there is a need for proper management of our minerals. Some States are rich in minerals, for example, Odisha. Will the Ministry give extra advantage to such States? What is the mineral potential of West Bengal?

श्री दिनशा पटेल: महोदया, मैं मानता हूं कि हर एक राज्य अपने-अपने तरीके से, जो वहां खनिज हैं, उनके लिए काम कर सकते हैं। उसके प्रावधान भी उसके एक्ट में हैं और उसके पहले रूल्स में किए गए हैं। मैं मानता हूं कि उनका जो खनिज है, जो माइनर और मेजर मिनरल्स हैं, माइनर मिनरल्स में जिस स्टेट को जो कुछ करना है, वे अपने कानून के मुताबिक वह कर सकते हैं, कानून भी बना सकते हैं, उसे रोक भी सकते हैं, अवैध खनन को भी रोक सकते हैं। इसे कैसे करना है, वह सारे प्रावधान उसमें किए गए हैं। सेंट्रल गवर्नमेंट और स्टेट गवर्नमेंट एकसाथ मिलकर इसकी कोशिश कर रहे हैं। जो नया कानून आ रहा है, एमएमडीआर बिल 2011, उसमें भी सारे प्रावधान किए गए हैं। अभी यह स्टैंडिंग कमेटी के पास है। जब यह पास हो जाएगा, तो मैं मानता हूं कि जो दिक्कतें हैं, उनमें से बहुत सी कम हो जाएंगी।

SHRI RAJAIAH SIRICILLA: Thank you, Madam, for giving me this opportunity.

Power has become an essential commodity and it has become a costliest component. For generation of power, coal is required in a bigger way. Now-a-days, if you take the case of Andhra Pradesh, out of 24 hours, we have given the guarantee to provide power for at least seven hours, but even that also we are not able to give because of shortfall in

generation. There is a huge gap between supply and demand. To reduce this gap, we need to increase the generation capacity.

In Bhupalapalli area of my constituency in Warangal, we have two power generation projects with a capacity of 500 MW each, and another project with a capacity of 800 MW that are coming up. Everything like land, water and infrastructure is available, but only coal is not available there. If coal linkage is given to this power plant, then 800 MW of additional power can be produced in this area, which could then cater to the needs of the people of the Telangana Region of Andhra Pradesh.

श्री दिनशा पटेल: महोदया, माननीय सदस्य ने कोल और बिजली के बारे में प्रश्न पूछा है। मैं मानता हूं कि उसे कोल और बिजली डिपार्टमेंट से पूछना चाहिए।

अध्यक्ष महोदया : ठीक है।

श्री नामा नागेश्वर राव।

श्री नामा नागेश्वर राव: महोदया, मिनिस्टर ने अपने रिप्लाई में जो जवाब दिया है, टोटल इंडिया की जो लैंड है, 42.8 लाख वर्ग किलोमीटर है, आज तक पूरा सर्वे कम्प्लीट नहीं कर पाये, जियोलॉजिकल सर्वे का मिनरल्स के बारे में। जो सर्वे किया है, उसमें 5.71 लाख वर्ग किलोमीटर का हाई पोटेंशियल मिनरल रिसीसेज है, बोलकर आइडेंटिफाई कर दिया है। मिनिस्टर ने अपनी बात कहते हुए विश्व के साथ इंडिया को कम्पेयर करते हुए, क्या-क्या मिनरल्स इधर हैं, क्या-क्या मिनरल्स वर्ल्ड में हैं, बोलकर बात की है। आज के दिन मिनरल्स का रिसीसेज, मिनरल्स का वेल्थ कंट्री के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इतने महत्वपूर्ण सब्जेक्ट को इतने महत्वपूर्ण डिपार्टमेंट में आज के दिन में इंडिया में जो मिनरल्स उपलब्ध हैं, वे मिनरल्स भी हम लोग इम्पोर्ट कर रहे हैं, उदाहरण के लिए कोल है। अभी हमारे एक माननीय सदस्य ने आन्ध्र प्रदेश के बारे में बात की, यद्धिप यह इससे सम्बन्धित नहीं है, कोल सप्लाई, कोल लिंकेज इससे रिलेटेड नहीं है, तब भी आज के दिन पूरे आन्ध्र प्रदेश में अंधकार है। अभी मिनिस्टर ने कहा कि इंडिया में एप्रॉक्सिमेटली तीन लाख मिलियन टन का कोल का रिजर्व है।

अध्यक्ष महोदया : आप फिर कोल पर आ गए। वे कह रहे हैं कि वे जवाब नहीं दे सकते।

श्री नामा नागेश्वर राव: मैं सब्जैक्ट पर आ रहा हूँ।

अध्यक्ष महोदया : आप तुरंत सब्जैक्ट पर बोलिये।

श्री नामा नागेश्वर राव: महोदय, जो तीन लाख मिलियन टन का कोल का रिज़र्व है, अभी देश का प्रोडक्शन 500 मिलियन का है। इस हिसाब से देखें तो 600 साल तक हम प्रोडक्शन कर सकते हैं। प्रोडक्शन डबल भी कर दें तो भी

300 साल तक हम इस रिज़र्व को इस्तेमाल कर सकते हैं। अभी इतने इंपॉर्टेन्ट सब्जैक्ट में आपने कहा कि नई टैक्नोलॉजी ला रहे हैं, मगर यदि आप एक्सपैन्डीचर देखें तो पिछले तीन साल में जियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया और मिनिरल एक्सप्लोरेशन ऑफ इंडिया, इन दोनों कंपनियों के लिए 20 करोड़ रुपये, 17 करोड़ रुपये का एक्सपैन्डीचर आप कर रहे हैं। हमारे देश में इतनी मिनिरल वैल्थ है और उसको निकालने के लिए आप एक्सपैन्डीचर ही नहीं कर रहे हैं, उसका कोई टार्गेंट और प्लानिंग नहीं है। क्या यह गवर्नमेंट की फेल्योर नहीं है? आप कब तक एक्सप्लोरेशन कंप्लीट करेंगे, एक्सपैन्डीचर को बढ़ाएँगे? कैसे नई टैक्नोलॉजी का उपयोग करेंगे क्योंकि नई टैक्नोलॉजी से उसमें काफी कुछ किया जा सकता है। नई टैक्नोलॉजी को ये लोग नहीं ले पा रहे हैं। हम मंत्री जी से यही पूछना चाहते हैं कि मिनिरल हैल्थ है मगर कंट्री मिनिरल के लिए सफर कर रही है। उसमें एक्सप्लोरेशन के लिए अमाउंट को कोई टार्गेट डेट के साथ इनक्रीज़ करेंगे?

श्री दिनशा पटेल: महोदया, मैंने पहले भी यही बताया कि लेटैस्ट टैक्नोलॉजी के ज़रिये जितना सर्वेक्षण हो सके, इतना सर्वेक्षण करने की कोशिश जी एस आई के ज़रिये हो रही है। मैं मानता हूँ कि सर्वेक्षण मानचित्र के ज़रिये तथा हैलीकॉप्टर एरियल सर्वे के ज़रिये और समुद्र में जहाज़ के ज़रिये भी ज्यादा से ज्यादा सर्वे हो सके और कौन सा मैटीरियल कहाँ है, उसके लिए भी टैक्निकली कैसे आगे बढ़ सकें, उसके लिए भी हम कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि मैटीरियल है और उस पर अनुसंघान तो चलता ही रहता है। कहाँ क्या चीज़ है, कितनी डैप्थ में है, कैसे मिलेगा, वह पाना बहुत मुश्किल काम है। इसीलिए 11वें प्लान में 925 करोड़ रुपये का 2007-12 तक में प्रावधान किया गया था, 9वें प्लान में भी उसके लिए प्रावधान किया गया था और अब 12वें प्लान में भी उसके लिए 2004 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। इसलिए जो नॉन प्लान्ड एक्सपैन्स है उसमें प्लान्ड और नॉन-प्लान्ड एक्सपैन्स के ज़रिये देखा जा रहा है कि कैसे बढ़ावा किया जाए, कैसे अनुसंधान किया जाए और कैसे नई टैक्नोलॉजी के ज़रिये किया जाए। विश्व में जो नई टैक्नोलॉजी है, विश्व की नई टैक्नोलॉजी के ज़रिये कैसे उसमें अनुसंधान किया जाए, उस पर भी देखा जा रहा है। जापान और कोरिया के पास नई टैक्नोलॉजी है, उन टैक्नोलॉजी के ज़रिये भी कैसे काम किया जाए, उस पर भी काम चल रहा है और इसमें आं हम कैसे बढ़ सकें इसकी कोशिश हो रही है।

अध्यक्ष महोदया : प्रश्न संख्या 162 - श्री रावसाहेब दानवे पाटील।

श्री नामा नागेश्वर राव: अध्यक्ष महोदया, ...(व्यवधान)

MADAM SPEAKER: Nothing is going on record.

(Interruptions) ... *

* Not recorded.

(Q. 162)

श्री दानवे रावसाहेब पाटील: अध्यक्ष महोदया, मेरा प्रश्न यह था कि सब्सीडाइज़्ड गैस सिलैन्डर की काला-बाज़ारी रोकने के लिए क्या सब्सीडाइज़्ड गैस सिलैन्डर और नॉन-सब्सीडाइज़्ड गैस सिलैन्डर के कलर में आप कुछ बदलाव करने वाले हैं? पहले सभी सिलैन्डर सब्सीडाइज़ थे लेकिन अब कुछ सिलैन्डर नॉन-सब्सीडाइज़ किए गए हैं। उनमें से एक साल में केवल नौ सिलेण्डर सब्सिडाइज़ किए गए हैं। इस सिलेण्डर की कीमत 411 रुपये है। लेकिन नॉन सब्सिडाइज़ सिलेण्डर की कीमत 942 रुपये है। इन दोनों में 521 रुपये का अंतर है। लेकिन इसमें काफी तफ़ावत है। इसका कारण इन्होंने जो बताया है और इसकी कालाबाजारी रोकने के लिए जो उपाय इन्होंने बताया है कि 5 किलोग्राम और 14.2 किलोग्राम का सिलेण्डर केवल घरेलु उपयोग में लाया जाएगा। हमने केवल उसका आकार कम ज्यादा किया है। मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से पूछना चाहता हूं कि देश में पचास फीसदी जनता ऐसी है, जो गैस का यूज़ नहीं करती है। लेकिन उनके नाम से यदि कोई गैस खरीद कर उसका वाणिज्यिक उपयोग करता है तो उसको रोकने के लिए सरकार क्या कर रही है?

SHRIMATI PANABAKA LAKSHMI: Madam, there are four types of non-subsidised cylinders available in 5 kgs, 19 kgs, 35 kgs and 47.5 kgs. In the case of commercial cylinders, there is a colour difference. In the case of subsidized cylinders, there is no change in the colour(red). We are getting it in 5 kgs and 14.2 kgs. To curtail this black market, we have introduced Know Your Customer (KYC) Scheme. Through that, we have received forms from the customers throughout India. There is one connection per family. Through this also, we can curtail this black marketing.

We have received the request from all the hon. Members as also from organizations for increase in the number of gas cylinders. Based on that, our Ministry has increased the cap from six cylinders to nine cylinders. Through that also, we curtail the black marketing. There are other procedures also to curtail the black marketing.

श्री दानवे रावसाहेब पाटील: अध्यक्ष महोदया, अभी-अभी मंत्री जी ने बोला है कि हम नौ सिलेण्डर करने वाले हैं। लेकिन देहात में जो बीपीएल परिवार रहते हैं, उनका नौ सिलेण्डर से काम नहीं चलता है। उनको कम से कम 12 सिलेण्डर एक साल में सब्सिडाइज़ देने चाहिए। जब तक आप 12 सिलेण्डर नहीं देंगे, 145 रुपये मजदूरी एक मजदूर को महाराष्ट्र में मिलती है।...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : क्वैश्चैन करिए।

श्री दानवे रावसाहेब पाटील: महोदया, मैं प्रश्न पर ही आ रहा हूं। वहां मजदूर को 145 रुपये मजदूरी मिलती है, इसलिए उसके लिए 942 रुपये का सिलेण्डर खरीदना मुश्किल है। मेरी मांग है कि एक परिवार को 9 की बजाय कम से कम 12 सिलेण्डर एक परिवार को देने चाहिए।...(व्यवधान)

महोदया, इन्होंने बताया है कि जहां से गाड़ी जाती है, हम उसकी जांच करते हैं। हम उस परिसर में अपने लोग लगाते हैं। मैं जानना चाहता हूं कि आपकी नजर में आज तक इस तरह के कितने मामले आए हैं?...(व्यवधान) SHRIMATI PANABAKA LAKSHMI: Madam, about 90 per cent population are using nine cylinders. Based on the survey, normally six cylinders are enough per family. ... (Interruptions) I am telling this based on the survey.... (Interruptions)

MADAM SPEAKER: Nothing else will go on record.

(Interruptions) ...*

अध्यक्ष महोदया : आप लोग मंत्री महोदया को बोलने तो दीजिए।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : आप लोग बैठ जाइए और उन्हें बोलने दीजिए।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : आप लोग क्या कर रहे हैं? उन्हें बोलने दीजिए। इस तरह से मत कीजिए।

...(व्यवधान

अध्यक्ष महोदया : ऐसा न करें।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : बैठ जाइए।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : ऐसा न करें।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : मैं समझ रही हूं कि आप बहुत उद्वेलित हैं। लेकिन, यह भी याद रखिए कि वे महिला हैं और आज महिला दिवस है।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : बैठ जाइए।

* Not recorded.

_

...(व्यवधान) अध्यक्ष महोदया : श्री के. एस. राव। ...(व्यवधान) अध्यक्ष महोदया : बैठिए। (व्यवधान) अध्यक्ष महोदया : इस तरह उद्वेलित न हों। ...(व्यवधान) अध्यक्ष महोदया : इतना ज्यादा उद्वेलित न हों। (व्यवधान) अध्यक्ष महोदया : बैठ जाइए। ...(व्यवधान) अध्यक्ष महोदया : गणेश सिंह जी, बैठ जाइए। ...(व्यवधान) MADAM SPEAKER: Nothing will go on record.

(Interruptions) ... *

अध्यक्ष महोदया : तूफानी सरोज जी, बैठिए।

...(व्यवधान)

MADAM SPEAKER: Nothing else will go on record.

(Interruptions) ... *

DR. K.S. RAO: Madam, with the forest cover coming down regularly, the usage of cooking gas is spreading to even villages. So, the consumption is very high these days. Even a poor person is also using cooking gas cylinders now. In this background, the cost of carrying cylinders over long distances has become very high, and there is a risk involved in poor men carrying cylinders on cycles over long distance. Keeping this in view, is the Government thinking in terms of increasing the number of gas agencies so that the distance

^{*} Not recorded.

will come down and it will be convenient for the poorer sections of the society?.... (*Interruptions*)

श्री दानवे रावसाहेब पाटील: अध्यक्ष महोदया, मेरा यह प्रश्न नहीं था।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : अब आप की बारी खत्म हो गयी।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : अब आप बैठ जाइए।

...(व्यवधान)

SHRIMATI PANABAKA LAKSHMI: Madam, we have launched Vision 2015 scheme to provide LPG connections to the people in rural areas and also to help women in the rural areas. Our aim is to ensure that 75 per cent population gets LPG connections. We want to provide LPG dealerships in every Mandal Headquarters.

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : श्री गोरखनाथ पाण्डेय।

श्री गोरखनाथ पाण्डेय: माननीय अध्यक्षा जी, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से जानना चाहूंगा कि आज शहर से कस्बे और गांवों में 90 से 95% घरों में गैस का प्रयोग किया जाता है।

महोदया, एक तो गैस की जो आपूर्ति थी, जो छः सिलिण्डर से नौ सिलिण्डर माननीय मंत्री जी ने किया। हम लोगों की डिमांड चल रही है कि इसे बारह या उस से अधिक कर दिया जाए। लेकिन, इस से दूसरी समस्या भी जुड़ी हुई है कि एक तो आपूर्ति नहीं हो रही है और दूसरी ओर घटतौली हो रही है। गांव में जो सामान्य परिवार है, गरीब परिवार है, वह किसी तरह से पैसे का जुगाड़ कर गैस लेना चाहता है तो उसे ब्लैक मार्केंट से लेने के लिए मजबूर होना पड़ता है। उसे अधिक दाम देने के लिए मजबूर होना पड़ता है। गांवों में एक तो संयुक्त परिवार प्रथा है। आज भी गांवों में लगभग पचास या उस से अधिक संख्या में रहने वाले लोग एक छत के नीचे रहते हैं। नौ सिलिण्डर से उनके पूरे महीने का खर्च नहीं चल सकता। उसे तो बारह से अधिक करने की आवश्यकता है। आज महिला दिवस है। माननीय अध्यक्षा जी, आप भी महिला हैं, हमारी प्रतिपक्ष की नेता महिला हैं और संयोग से माननीय मंत्री जी जो हमारे प्रश्न का उत्तर दे रही हैं, वे भी महिला हैं। इस से ज्यादा सौभाग्य सदन का नहीं होगा कि एक महिला मंत्री जी आज इस बात पर भरोसा दिलाएं कि गैस सिलिण्डरों की घटतौली बंद की जाएंगी और गांवों में गैस की आपूर्ति सुनिश्चित करायी जाएगी।

अध्यक्ष महोदया : ठीक है, अब आप स्थान ग्रहण कीजिए।

श्री गोरखनाथ पाण्डेय: क्या वे नौ सिलिण्डर से बढ़ाकर बारह सिलिण्डर करने का काम करेंगी, क्या माननीय मंत्री जी सदन को ऐसा आश्वासन देंगी?

SHRIMATI PANABAKA LAKSHMI: Madam, every year we are providing nearly one crore gas connections in the country. Through Rajiv Gandhi Gramin Vitarak Yojana, we are expanding to rural areas also. There is a shortfall, I agree with the hon. Member. But every householder can get one connection... (*Interruptions*) Madam, after the introduction of KYC norms, the domestic consumption has come down. Earlier, they misused the cylinders and they gave them to commercial people. After the KYC norms were implemented, the commercial growth rate also increased – it was nearly 12.5 per cent this year during September-January 2013. The domestic consumption has also come down to 1.8% during the same period...



(Q. 163)

SHRI A. GANESHAMURTHI: Madam, as per the statement made by the hon. Finance Minister, only in the case of 148 companies, suspension has been revoked by the exchanges. In that case, what happened to the remaining 977 trading companies? May I know whether they are not interested to come into business or is there any other reason behind it?

SHRI P. CHIDAMBARAM: Madam, when a company is suspended, unless the company complies with the requirements of listing, it cannot be re-listed again. Maybe, they are unable to comply with the conditions of listing; as long as they remain non-compliant, they will remain suspended. Delisting is a final order. A company may be delisted – it is quite possible that many of them may not wish to be listed again because they cannot comply with the conditions of listing. There is a very comprehensive listing agreement. They have to sign it with each exchange. It is a very rigorous agreement. If they are not able to comply with the listing agreement conditions, they cannot list and they will not list.

SHRI A. GANESHAMURTHI: Due to delisting of companies during 2009-2012, whether the investors are able to recover the amount of money that got blocked? If so, what are the details?

SHRI P. CHIDAMBARAM: When a company's listing is either suspended or company is delisted, the company's shares cannot be traded on the stock exchange. When a company is suspended the shareholder can sell the share, if there is a willing buyer outside the stock exchange. If the company is delisted, the owner is obliged to buy-back the shares at the fair-value. That is a complicated procedure, where the fair value has to be decided by the valuer. As far as the proportion is concerned, it is a very small proportion. For example, in the NSE, the total market cap, say on the 6th March was Rs. 64,86,850 crore, but the market cap of the suspended companies is only 0.12 per cent. It is a very small percentage of the total market cap. Likewise, in the BSE, the market cap of the suspended companies is only 0.1 per cent of the total market cap. It is a very small amount, but of course, the shareholder suffers. But the shareholder suffers because the company in which he invested, turns out to be a company which cannot comply with the listing agreement.

श्री एकनाथ महादेव गायकवाड : अध्यक्ष महोदया, हमने यह सवाल पूछा था कि छोटे निवेशकों के हितों की रक्षा हेतु क्या कदम उठाए गए हैं और उठाए जा रहे हैं, उसका जवाब पूरे उत्तर में नहीं आया। ये जो सब तकलीफें हैं, ये चीफ प्रमोटर की वजह से होती हैं और कम्पनी बंद होती है, निलम्बन होता है।

मेरा सवाल यह है कि छोटे निवेशकों की रक्षा हेतु शासन क्या करने वाला है और राजीव गांधी इक्विटी योजना के तहत क्या कुछ लाभ मिलेगा?

SHRIP. CHIDAMBARAM: Non-compliance with the listing agreement, in fact, harms the investor more than anything else. If a company is not compliant, it should not be allowed to trade. When the exchange suspends the company in order to protect the investors in the market, the exchange gives adequate notice to the market participants about the proposed suspension. The suspension comes into effect only after 21 days. During that period the share-holder has an exit option. He can exit from the company. Suspension also prevents new investors from trading in these securities. In the case of delisting, the promoter acquires shares at an exit price. As I said a little while earlier, 'shall provide an exit price to the remaining share-holders from one year from the date of delisting, pursuant to the Securities and Exchange Board of India Regulations 2009'. I am not saying that the share-holder is now affected. The share-holder is affected because he has chosen a wrong company or the company that he has chosen turns out to be a bad company which is unable to comply. There is a price to be paid but there is a period during which you can exit in the case of suspension and there is a provision for the promoter to acquire the shares at an exit price under the regulation that I have mentioned above.

श्री अर्जुन राम मेघवाल: धन्यवाद अध्यक्षा जी। मंत्री जी अभी जवाब दे रहे थे कि कंपनी के कारण इन्वेस्टर सफर करते हैं। यह तो हमें भी पता है कि कंपनियां रजिस्टर्ड होती हैं, शेयर मार्केंट में उतरती हैं और लोक-लुभावने नारे भी देती हैं, लोक-लुभावने लिट्रेचर भी प्रकाशित करती हैं और उसके बाद जो छोटे-छोटे इन्वेस्टर होते हैं, वे आकर्षित होते हैं। यह हमारी जानकारी में है, लेकिन मंत्री जी ने जो जवाब दिया है, इन्होंने यहां इसमें लिखा है कि "The investor will be able to encash the value of share whose trading is suspended". महोदया, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि कितने लोगों को इन्होंने यह इनकैश किया, कितने लोगों को वापस सहायता दिलायी या ऐसा कोई मैकेनिज्म ये विकसित करने वाले हैं?

SHRI P. CHIDAMBARAM: Madam, I think I need to explain. The stock exchange is a market place. It is a private entity. SEBI is a regulator. SEBI lays down regulations to ensure that the market place is properly regulated. But the stock exchange is like any other market place and in a market place, there will be a few persons who do not comply with the law. If a share-holder invests in such a company, as I said, he does suffer a little pain. But the regulations are so designed that when you propose to suspend the company from the stock exchange, enough notice is given to the share-holder. When you de-list a company, there is one year period during which the promoter has to buy back but there is no mechanism by which either the Government or the regulator can compensate the share-holder. Market is based on risk perception and risk assessment. There is no way in which the Government can compensate the share-holder. That is not the principle on which the stock exchange or the market works.

RAJKUMARI RATNA SINGH: Madam Speaker, through you, I would like to ask the hon. Minister whether these share trading companies are following rules because often they take investors' money and manage the portfolio. When they manage the portfolio they can do private business and also sub-broke the money and finally use that money to get more volume for trading. I have a case which I have given to the Minister in August and to which I have not got a reply. It is one of India's biggest trading houses which is indulging in a lot of malpractices. SEBI is not taking enough action on them. I will give him a further representation of certain people who are investing in these big share companies with their portfolios, where they are not being given correct information. Every trading which is done today has to be, as per the rules of SEBI, voice-taped. These big companies do not follow this and they are misusing lots of investors' money. So, I would request, through you Madam that the Minister takes necessary action and SEBI should come down on these share trading companies where volumes of money are being misused in the name of somebody else.

SHRI P. CHIDAMBARAM: Madam Speaker, obviously unless the hon. Member mentions the name of the company, I don't know which company she has in mind. I receive dozens of representations and I am sure her representation has been marked down



to the officer concerned of the SEBI and action is being taken. If she gives me a reminder or tells me as I leave the House which is the company she is talking about, I will find out what action has been taken and convey it to her. But I do not know what the hon. Member meant by a share trading company. We are here talking about companies that are listed on the Stock Exchange. The listing is either suspended and then revoked if they are compliant or the company is de-listed permanently. That is the question I am answering. But if the hon. Member has some other company in mind which buys and sells shares in the market, that is a different thing.

RAJKUMARI RATNA SINGH: I am talking about brokering companies.

SHRI P. CHIDAMBARAM: That is not the thrust of this question. Share broking is a legitimate business. But if a share broker violates the law, then we will have to find out which law is violated and action will be taken. But share broking is a legitimate business in this country.

(Q. 164)

डॉ. किरीट प्रेमजीभाई सोलंकी: मैं अनाथ और बेसहारा बच्चों के बारे में पूछना चाहता हूं। महोदया, आज मंत्री जी ने जो जवाब दिया है, उस जवाब में मंत्री जी ने ऐसा कहा है कि उनके पास ऐसे बच्चों के प्रमाणित आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं। मंत्री जी ने यह भी कहा है कि आंकड़े उपलब्ध नहीं होते हैं क्योंकि इसमें फलक्चूएशन होता है उसमें कहीं बढ़त होती है, कहीं घटत होती है। आज अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस है। उनकी स्थिति इतनी बदतर है कि "द सेव द चिल्ड्रेन" एक संस्था है उसने यूनिसेफ के माध्यम से उनकी स्थिति के बारे में एक सर्वे किया है। उस सर्वे के जो आंकड़े हैं, वे काफी चौकाने वाले आंकड़े हैं। ये जो बच्चे होते हैं, इनमें 89 परसेंट लड़के होते हैं, 11 परसेंट लड़कियां होती हैं। 49 परसेंट बच्चे की उम्र 11 से 15 साल तक है। 24 परसेंट बच्चे अन्य राज्यों से आते हैं। इनमें से 4.1 परसेंट बच्चे जो अपना नाम भी नहीं लिख सकते हैं। उनमें से 60 परसेंट बच्चे को बीमार होने पर डॉक्टर और स्वास्थ्य की कोई सुविधा उपलब्ध नहीं होती है। 90 परसेंट बच्चे पुलिस द्वारा प्रताड़ित और शिकार होते हैं और 92 परसेंट बच्चे जो शराब और नशे की लत में इंवाल्व होते हैं।

मंत्री जी ने जो गोलमोल जवाब दिया है। मैं मंत्री जी से निवेदन करता हूं कि जो जुवेनाइल जस्टिस प्रोटेक्शन एण्ड केयर ऑफ द चिल्ड्रेन एक्ट-2000 है उनके तहत बालगृहों को पंजीकृत किया जाना चाहिए। कई बालगृह ऐसे होते हैं जो पंजीकरण नहीं कराते हैं और फिर भी वे उन्हें चलाते हैं। इनमें से कुछ गलत प्रवृत्तियों में इंवाल्व होते हैं। मैं मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि ऐसे जो बालगृह पंजीकृत नहीं हैं उनकी संख्या कितनी है? जो बालगृह पंजीकृत नहीं हैं तो उनको क्या दंड देना चाहिए? इसके बारे में मंत्री जी बताएं।

श्रीमती कृष्णा तीरथ: आदरणीय अध्यक्ष महोदया, मेम्बर साहब ने जो प्रश्न किया है, मैं आपके माध्यम से कहना चाहती हूं कि हमारे पास जो आईसीपीएस के अंदर जो होम्स हैं उनके अंदर कुल 75 हजार बच्चे हैं। जैसा कि आपने कहा कि कुछ होम्स ऐसे चल रहे हैं जो कि अब तक आईसीपीएस के अंडर रजिस्टर्ड नहीं हुए हैं। हम कोशिश कर रहे हैं। हमने राज्य सरकारों को कई बार पत्र लिखा है कि जितने भी होम्स चल रहे हैं, अंडर दिस इंटिग्रेटेड चाइल्ड प्रोटेक्शन स्कीम के अंतर्गत उन्हें लाना चाहिए तो अभी कुछ आए हैं। इसलिए मैंने कहा कि हमारे पास टोटल बेसहारा बच्चों का इग्जैक्ट फीगर नहीं है। लेकिन, हमारे अंडर जो होम्स चल रहे हैं, मैंने बताया कि उनमें 75 हजार बच्चे हैं। दूसरा, आपने कहा कि 89 परसेंट लड़के, 11 परसेंट लड़कियां, ये सब हैं। हम इस आईसीपीएस स्कीम के अंदर चार तरह के होम्स चलाते हैं। इन चारों तरह के होम्स में, ऑब्जरवेशन होम्स, स्पेशल होम्स, चिल्ड्रेन होम्स और शेल्टर होम्स हैं। इसमें सीडब्ल्यूसी (चाइल्ड वेल्फेयर कमेटीज़) हैं। बच्चा जब सरेंडर्ड, अबेनडेंड, ऑरफन, स्ट्रीट चिन्ड्रन हो, किसी भी प्रकार के बच्चे देश में जहां हैं, उन्हें सीडब्ल्यूसी के पास लेकर आते हैं। वह फिर डिसाइड करती है कि ये कनफ्लिक्ट विद लॉ हैं या सरेंडर्ड हैं। अगर कनफ्लिक्ट विद लॉ हैं तो उन बच्चों को हम ऑब्जर्वेशन होम और स्पेशल



होम में भेजते हैं। अगर बच्चे छोटे हैं, आप जो कह रहे हैं कि कुछ नहीं जानते और उन्होंने कोई क्राइम या ऑफेंस नहीं किया, तो उन्हें हम सिम्पल होम में लाते हैं जिसमें उनके रहने, खाने-पीने, पढ़ने, काउंसलिंग करने का इंतजाम होता है। आपने कहा कि ड्रग एडिक्ट्स बच्चे भी हैं। उनके लिए भी काउंसिल है। हम उन बच्चों के लिए अलग-अलग तरह से राज्य सरकारों को पैसे देते हैं और वे उन बच्चों की देखभाल करती हैं।

डॉ. किरीट प्रेमजीभाई सोलंकी : अध्यक्ष महोदया, ऐसे बच्चों को गोद लेने की प्रक्रिया, अगर उन्हें अच्छे लोग गोद लेंग तो उनके जीवन में परिवर्तन होगा, उन्हें मौका मिलेगा और संस्क्षण मिलेगा। आजकल कई एजैंसियों द्वारा उन बच्चों को गोद लिया जाता है। विदेश से भी कई लोग आकर उन्हें गोद लेते हैं। लेकिन एक विडंबना है कि गोद लेने वाली एजैंसियों में से कुछ ऐसी हैं जो उनका मिसयूज करती हैं, तस्करी करवाती हैं, उनका शोषण करती हैं। क्या ऐसे लोगों को हटाने और गोद लेने की प्रक्रिया को सहज और लचीला बनाने के लिए मंत्री महोदया लॉ में कोई प्रावधान करेंगी? जो लोग ऐसे बच्चों को गोद लेते हैं, जब तक वे मेच्योर होते हैं तब तक उन्हें गोद लेने वाले लोग उनके प्रति कैसा रवैया रखते हैं, क्या हम इसके लिए कोई मौनीटरिंग सिस्टम डवेलप करेंगे?

श्रीमती कृष्णा तीरथ: मैंडम, मैं आपके माध्यम से बताना चाहूंगी कि माननीय सदस्य ने जो प्रश्न किया है, हमारे पास मौनीटिरंग सिस्टम है जिसमें स्टेट, डिस्ट्रिक्ट, ब्लॉक हर लैवल पर मौनीटिरंग होती है। आपने ऐडॉप्शन के बारे में कहा। हम कोशिश करते हैं कि जो बच्चे इन होम्स में आएं, वे ऐडॉप्ट कर लिए जाएं, उन्हें पारिवारिक माहौल मिले जिससे उन्हें पलने, बढ़ने में मदद मिले। हम कोशिश करते हैं कि देश के बच्चों को देश में ही रखें। हमारे पास इन-कंट्री, इंटर-कंट्री ऐडॉप्शन सिस्टम है। मैं आपको इसके आंकड़े बताती हूं। वर्ष 2009 में इन-कंट्री में 1,852 बच्चे, इंटर-कंट्री में 666, वर्ष 2010 में इन-कंट्री में 5,693 और इंटर-कंट्री में 593, इसी तरह वर्ष 2011 में इन-कंट्री में 5,964 और इंटर-कंट्री 589 और अप्रैल, 2012 से दिसम्बर, 2012 तक मेरे पास जो आंकड़े हैं, उसमें इन-कंट्री में 2,609 बच्चे, देश के भीतर जो बच्चे ऐडॉप्ट किए गए, कुछ ऐसी फैमिलीज़ हैं जो बच्चों को गोद लेना चाहती हैं, यह कोर्ट के माध्यम से होता है, क्योंकि सीडब्ल्यूसी डिफरेंट एजैंसियों को एप्रोच करती है और फिर कारक के माध्यम से ऐडॉप्शन होते हैं। इंटर-कंट्री 242 बच्चे ऐडॉप्ट किए गए। जो बच्चे ऐडॉप्ट किए जाते हैं, उनकी पूरी तरह से काउंसिलेंग और सिक्योरिटी होती है। जो बच्चे होम में रह जाते हैं, ऐडॉप्ट हुए ही नहीं, उनके लिए वे होम 18 साल तक पूरा प्रोविजन करते हैं, 18 साल से 21 साल तक वे दूसरे होम में चले जाते हैं। इन कोशिश करते हैं कि वहां उन्हें ट्रेंड करें तािक वे अपने पैरें पर खड़े हो सकें, एक मेनस्ट्रीम, सोसाइटी में जगह बनाएं और दूसरे लोगों की तरह रहें। मेजर होने के बाद यानी 18 से 21, 22 साल तक भी बच्चा हमारे पास रहता है। इम उसकी नौकरी लगवाना चाहते हैं। वह मेन सोसाइटी में रहकर अपना जीवन अच्छी तरह बिता सके, यह हमारी कोशिश रहती है।

श्री किपल मुनि करवारिया: अध्यक्ष महोदया, माननीय मंत्री जी ने प्रश्न का उत्तर दिया है कि अनाथ व निराश्रित बच्चों की संख्या घटती-बढ़ती रहती है। यह सरकार के एक जिम्मेदार मंत्री का तर्कसंगत उत्तर नहीं है। कृपया आप हमें विगत वर्ष का ही आंकड़ा बताने का कष्ट करें? क्या सरकार ने कोई ऐसी निगरानी एजेंसी बनायी है, जो गोद लेने संबंधी प्रक्रिया की निगरानी करे, तािक ऐसे बच्चों को कोई गलत व्यक्ति गोद न ले सके। क्योंिक कई बार ऐसा सुनने में आया है कि विदेशों में जो लोग ऐसे भारतीय बच्चों को गोद लेते हैं, उनके साथ दुर्व्यवहार किया जाता है। मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से जानना चाहूंगा कि गोद लेने वाली व्यवस्था को सरल बनाने और निगरानी सिमित बनाने के बारे में सरकार का क्या कोई विचार है?

श्रीमती कृष्णा तीरथ: अध्यक्ष महोदया, मैंने अभी बताया कि हमारे पास आईसीपीएस के अंडर जितने होम्स हैं, उनमें 75 हजार बच्चे हैं। कुछ होम्स ऐसे हैं, जो अभी रिजस्टर्ड नहीं हैं, क्योंकि वर्ष 1986 में जो एक्ट बना था, उसे वर्ष 2000 में रिपील किया गया। उसके बाद वर्ष 2006 में उसमें अमेंडमैंट हुआ, फिर वर्ष 2011 में एक छोटा अमेंडमैंट किया गया। अभी जो 75 हजार बच्चे हैं, उनका हमारे पास पूरा आंकड़ा है।

दूसरा, आपने बच्चों को बाहर एडॉप्ट करके ले जाने के बारे में कहा। उसके लिए मौनीटिरंग की व्यवस्था है। यह बात मैंने पहले भी कही है कि हम ऐम्बेसीज को लिखते हैं कि बच्चा यहां, क्योंकि कोर्ट के माध्यम से बच्चे जाते हैं, तो विदेशों में हमारी जो एडॉप्शन एजेंसी है, वह बच्चों को दो साल के लिए फॉलो करती है। हमारे मिशन में उनका गेट-टूगैदर कराते रहते हैं। जो बच्चे वहां हैं, जिस-जिस कंट्री में हैं, वहां हमारा जो मिशन है, उनका गेट-टूगैदर वहां पर होता है और उसे हम पूरा मौनीटर करते हैं कि जो बच्चे यहां से गये, उनका पालन-पोषण, लालन-पालन ठीक तरह से हो।

श्री पोन्नम प्रभाकर : अध्यक्ष महोदया, सबसे पहले मैं आपको इंटरनैशनल वूमैन्स डे की मुबारकबाद देना चाहता हूं। पिछले सैशन के जीरो ऑवर में हमारे साथी श्री राजय्या साहब ने ऑरफन के संबंध में बहुत चर्चा की थी। मैं आपके माध्यम से मंत्री जी से कहना चाहता हूं कि आपने पहले कहा कि हमारे पास आंकड़े नहीं हैं, लेकिन बाद में कहा कि 75 हजार बच्चे हैं। मैं पूछना चाहता हूं कि उनमें गर्ल्स कितनी हैं और उनको स्पेशल प्रोटेक्शन देने के लिए गवर्नमैंट ऑफ इंडिया की तरफ से क्या कदम उठाया जा रहा है? दूसरा, आजकल आधार कार्ड इश्यू हो रहे हैं, तो उनको आधार कार्ड इश्यू करने के लिए पर्टिकुलर गर्ल्स ऑरफन के लिए कोई कड़े स्टेप मिनिस्ट्री ऑफ वूमैन एंड चाइल्ड वेल्फेयर की तरफ से उठाये जा रहे हैं?

श्रीमती कृष्णा तीरथ: अध्यक्ष महोदया, मैं आपके माध्यम से माननीय सदस्य को बताना चाहूंगी कि हमने राज्यों से अलग-अलग आंकड़े देने के लिए कहा है। राज्यों ने इंटर कंट्री और इन कंट्री एडॉप्शन के जो आंकड़े दिये हैं, उनके मैंने अभी ईयरवाइज टोटल नम्बर बताये हैं। आप कहें तो मैं इसे दोबारा बता देती हूं। ... (व्यवधान)

श्री राजैया सिरिसिल्ला: टोटल चिल्ड्रन कितने हैं, वह आप बतायें।...(व्यवधान)

श्रीमती कृष्णा तीरथ: मैं वही बता रही हूं। मैंने टोटल चिल्ड्रन 75 हजार बताये हैं, जो हमारे अंदर आईसीपीएस हैं। ...(व्यवधान)

श्री राजैया सिरिसिल्ला: यह गलत है। 3 टू 4 परसेंट है। ...(<u>व</u>्यवधान) That is equivalent to the population of Delhi. ...(<u>व</u>्यवधान)

श्रीमती कृष्णा तीरथ: अध्यक्ष महोदया, मैंने इनको बताया कि आईसीपीएस के अंडर जो होम्स हैं, उनमें 75 हजार बच्चे हैं। गर्ल्स में जो एडॉप्शन की बात है, वह मैं बता सकती हूं। वर्ष 2009 में हमारी जो गर्ल्स एडॉप्टेड हुई हैं, वह इंटर कंट्री में 446 है और मेल 244 है। वर्ष 2010 में फीमेल 410 और मेल 218 हैं। वर्ष 2011 में फीमेल 444 हैं और मेल 225 हैं। वर्ष 2012 अप्रैल से लेकर दिसम्बर 2012 तक फीमेल 173 और मेल 91 हैं, जो एडॉप्टेड हैं।

अध्यक्ष महोदया : प्रश्न संख्या 165 -- श्रीमती मेनका गांधी।

समय कम है, इसलिए आप अपना प्रश्न जल्दी से पूछ लीजिए।

(Q. 165)

SHRIMATI MANEKA GANDHI: I want to ask the Minister as to which medicines are imitated the most. Since the Minister has put in so many laboratories, there must be some data available now as to which medicines are imitated the most.

MADAM SPEAKER: We have no time now.

... (Interruptions)

SHRI GHULAM NABI AZAD: Hon. Member, I think you are talking of the spurious drugs.... (*Interruptions*)

MADAM SPEAKER: Yes, hon. Minister, we have no time now. We have just half-aminute only.

... (Interruptions)

SHRI GHULAM NABI AZAD: Do I have any time?

MADAM SPEAKER: Yes, you have half-a-minute.

... (Interruptions)

SHRI GHULAM NABI AZAD: I have so much of materials.... (Interruptions)

These are the drugs. Of course, I have a big list. I have to go through the list. But mostly these drugs are the most-sought-after drugs, particularly the drugs for anti-TB, cardiovascular diseases and antibiotics.... (*Interruptions*)

MADAM SPEAKER: I suppose you can send the written answer to the hon. Member.

12.00 hrs.

PAPERS LAID ON THE TABLE

MADAM SPEAKER: Now, Papers to be laid on the Table of the House.

THE MINISTER OF NEW AND RENEWABLE ENERGY (DR. FAROOQ ABDULLAH): Madam, I beg to lay on the Table:-

- (1) (i) A copy of the Annual Report (Hindi and English versions) of the Centre for Wind Energy Technology, Chennai, for the year 2011-2012.
 - (ii) A copy of the Review (Hindi and English versions) by the Government of the working of the Centre for Wind Energy Technology, Chennai, for the year 2011-2012.
 - (2) Statement (Hindi and English versions) showing reasons for delay in laying the papers mentioned at (1) above.

(Placed in Library, See No. LT 8502/15/13)

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI S.S. PALANIMANICKAM): I beg to lay on the Table:-

- (1) A copy of the Annual Accounts (Hindi and English versions) of the Insurance Regulatory and Development Authority, Hyderabad, for the year 2010-2011, together with Audit Report thereon.
- (2) Statement (Hindi and English versions) showing reasons for delay in laying the papers mentioned at (1) above.

(Placed in Library, See No. LT 8504/15/13)

- (3) A copy of the Annual Report (Hindi and English versions) of the National Housing Bank, New Delhi, for the period from July, 2011 to June, 2012, alongwith Audited Accounts.
- (4) A copy of the Report (Hindi and English versions) on Trend and Progress of Housing in India (National Housing Bank), 2012 under Section 42 of the National Housing Bank Act, 1987.

(Placed in Library, See No. LT 8505/15/13)

(5) A copy of the Debts Recovery Tribunal (Procedure for Investigation of Misbehavior or Incapacity of Presiding Officer) Amendment Rules, 2012 (Hindi and English versions) published in Notification No. G.S.R. 920(E) in Gazette of India dated 21st December, 2012 under sub-section (3) of Section 36 of the Recovery of Debts Due to Banks and Financial Institutions Act, 1993.

(Placed in Library, See No. LT 8506/15/13)

- (6) A copy each of the following Notifications (Hindi and English versions) under section 159 of the Customs Act, 1962:-
 - (i) The 'On-site Post Clearance Audit at the Premises of Importers and Exporters (Amendment) Regulations, 2012' published in Notification No. G.S.R. 936(E) in Gazette of India dated 27th December, 2012, together with an explanatory memorandum.
 - (ii) The Customs House Agents Licensing (Amendment) Regulations, 2013 published in Notification No. G.S.R. 70(E) in Gazette of India dated 6th February, 2013, together with an explanatory memorandum.
 - (iii) G.S.R.132(E) published in Gazette of India dated 1st March, 2013 together with an explanatory memorandum making certain amendments in the Notification No. 69/2004-Cus., dated 9th July, 2004.
 - (iv) G.S.R.133(E) published in Gazette of India dated 1st March, 2013 together with an explanatory memorandum making certain amendments in the Notification No. 75/2005-Cus., dated 22nd July, 2005.
 - (v) G.S.R.134(E) published in Gazette of India dated 1st March, 2013 together with an explanatory memorandum making certain amendments in the Notification No. 9/2012-Cus., dated 9th March, 2012.
 - (vi) G.S.R.135(E) published in Gazette of India dated 1st March, 2013 together with an explanatory memorandum making certain amendments in the Notification No. 12/2012-Cus., dated 17th March, 2012.

(vii) G.S.R.136(E) published in Gazette of India dated 1st March, 2013 together with an explanatory memorandum making certain amendments in the Notification No. 19/2012-Cus., dated 17th March, 2012.

- (viii) G.S.R.137(E) published in Gazette of India dated 1st March, 2013 together with an explanatory memorandum making certain amendments in the Notification No. 146/94-Cus., dated 13th July, 1994.
- (ix) G.S.R.138(E) published in Gazette of India dated 1st March, 2013 together with an explanatory memorandum making certain amendments in the Notification No. 27/2011-Cus., dated 1st March, 2011.
- (x) The Baggage (Amendment) Rules, 2013 published in Notification No. G.S.R.139(E) in Gazette of India dated 1st March, 2013 together with an explanatory memorandum.

(Placed in Library, See No. LT 8507/15/13)

- (7) A copy each of the following Notifications (Hindi and English versions) under Section 296 of the Income Tax Act, 1961:-
 - (i) The Income-tax (14th Amendment) Rules, 2012 published in Notification No. S.O. 2365(E) in Gazette of India dated 4th October, 2012, together with an explanatory memorandum.
 - (ii) The Centralised Processing of Statements of Tax Deducted at Source Scheme,
 2013 published in Notification No. S.O. 169(E) in Gazette of India dated 15th
 January, 2013, together with an explanatory memorandum.
 - (iii) The Income-tax (First Amendment) Rules, 2013 published in Notification No. S.O. 308(E) in Gazette of India dated 31st January, 2013, together with an explanatory memorandum.
 - (iv) The Electoral Trusts Scheme, 2013 published in Notification No. S.O. 309(E) in Gazette of India dated 31st January, 2013, together with an explanatory memorandum.

(Placed in Library, See No. LT 8508/15/13)

36

(8) A copy each of the following Notifications (Hindi and English versions) under Section 48 of the Foreign Exchange Management Act, 1999:-

- (i) The Foreign Exchange Management (Borrowing or Lending in Foreign Exchange) (Third Amendment) Regulations, 2012 published in Notification No. G.S.R. 886(E) in Gazette of India dated 11th December, 2012.
- (ii) The Foreign Exchange Management (Deposit) (Second Amendment) Regulations, 2012 published in Notification No. G.S.R. 893(E) in Gazette of India dated 17th December, 2012.
- (iii) G.S.R. 894(E) published in Gazette of India dated 17th December, 2012 regarding receipt from, and payment to, a person resident outside India.
- (iv) The Foreign Exchange Management (Borrowing or Lending in Foreign Exchange) (Amendment) Regulations, 2012 published in Notification No. G.S.R. 895(E) in Gazette of India dated 17th December, 2012.
- (v) The Foreign Exchange Management (Export of Goods and Services) (Amendment) Regulations, 2012 published in Notification No. G.S.R. 896(E) in Gazette of India dated 17th December, 2012.
- (vi) The Foreign Exchange Management (Guarantees) (Amendment) Regulations, 2012 published in Notification No. G.S.R. 914(E) in Gazette of India dated 21st December, 2012.
- (vii) The Foreign Exchange Management (Foreign Currency Accounts by a Person Resident in India) (Second Amendment) Regulations, 2012 published in Notification No. G.S.R. 915(E) in Gazette of India dated 21st December, 2012.
- (viii) The Foreign Exchange Management (Borrowing or Lending in Foreign Exchange) (Fourth Amendment) Regulations, 2012 published in Notification No. G.S.R. 916(E) in Gazette of India dated 21st December, 2012.

(ix) The Foreign Exchange Management (Guarantees) (Third Amendment) Regulations, 2012 published in Notification No. G.S.R. 917(E) in Gazette of India dated 21st December, 2012.

- (x) G.S.R. 944(E) published in Gazette of India dated 31st December, 2012 regarding definition of 'Security' for the purposes of FEMA.
- (xi) The Foreign Exchange Management (Transfer or issue of Security by a Person Resident outside India) (Fifth Amendment) Regulations, 2012 published in Notification No. G.S.R. 945(E) in Gazette of India dated 31st December, 2012.
- (xii) The Foreign Exchange Management (Transfer or issue of Security by a Person Resident outside India) (Sixth Amendment) Regulations, 2012 published in Notification No. G.S.R. 946(E) in Gazette of India dated 31st December, 2012.
- (xiii) The Foreign Exchange Management (Transfer or issue of Any Foreign Security by a Person Resident outside India) (Fourth Amendment) Regulations, 2012 published in Notification No. G.S.R. 947(E) in Gazette of India dated 31st December, 2012.
- (xiv) The Foreign Exchange Management (Deposit) (Second Amendment) Regulations, 2013 published in Notification No. G.S.R. 26(E) in Gazette of India dated 17th January, 2013.

(Placed in Library, See No. LT 8509/15/13)

- (9) A copy each of the following Notifications (Hindi and English versions) under subsection (4) of Section 23A of the Regional Rural Banks Act, 1976:-
 - (i) S.O. 1(E) published in Gazette of India dated 1st January, 2013, regarding amalgamation of Hadoti Kshetriya Gramin Bank, Baroda Rajasthan Gramin Bank and Rajasthan Gramin Bank as Baroda Rajasthan Kshetriya Gramin Bank.

(ii) S.O. 60(E) published in Gazette of India dated 7th January, 2013, regarding amalgamation of Neelanchal Gramya Bank, Kalinga Gramya Bank and Baitarni Gramya Bank as Odisha Gramya Bank.

- (iii) S.O. 2969(E) published in Gazette of India dated 21st December, 2012, regarding dissolution of Madhya Bharat Gramin Bank, Sharda Gramin Bank and Rewa Sidhi Gramin Bank by reason of amalgamation.
- (iv) S.O. 2970(E) published in Gazette of India dated 21st December, 2012, regarding dissolution of Satpura Narmada Kshetriya Gramin Bank, Vidisha Bhopal Kshetriya Gramin Bank and Mahakaushal Kshetriya Gramin Bank by reason of amalgamation.
- (v) S.O. 2971(E) published in Gazette of India dated 21st December, 2012, regarding dissolution of Samastipur Kshetriya Gramin Bank and Bihar Kshetriya Gramin Bank by reason of amalgamation.
- (vi) S.O. 2972(E) published in Gazette of India dated 21st December, 2012, regarding dissolution of Aryavart Gramin Bank and Kshetriya Kisan Gramin Bank by reason of amalgamation.
- (vii) S.O. 2973(E) published in Gazette of India dated 21st December, 2012, regarding dissolution of Narmada Malwa Gramin Bank and Jhabua Dhar Kshetriya Gramin Bank by reason of amalgamation.
- (viii) S.O. 2974(E) published in Gazette of India dated 21st December, 2012, regarding dissolution of Uttaranchal Gramin Bank and Nainital Almora Kshetriya Bank by reason of amalgamation.
- (ix) S.O. 2975(E) published in Gazette of India dated 21st December, 2012, regarding dissolution of Chikmagalur Kodagu Grammeena Bank, Visveshvaraya Grameena Bank and Cauvery Kalpatharu Grameena Bank by reason of amalgamation.

(x) S.O. 2976(E) published in Gazette of India dated 21st December, 2012, regarding dissolution of Rushikulya Gramya Bank and Utkal Gramya Bank stand dissolved by reason of amalgamation.

(Placed in Library, See No. LT 8510/15/13)

- (10) A copy each of the following Notifications (Hindi and English versions) under sub-section (4) of section 94 of the Finance Act, 1994:-
 - (i) G.S.R.152(E) published in Gazette of India dated 1st March, 2013 together with an explanatory memorandum making certain amendments in the Notification No. 26/2012-Service Tax dated 20th June, 2012.
 - (ii) G.S.R.153(E) published in Gazette of India dated 1st March, 2013 together with an explanatory memorandum making certain amendments in the Notification No. 25/2012-Service Tax dated 20th June, 2012.
 - (iii) G.S.R.154(E) published in Gazette of India dated 1st March, 2013 together with an explanatory memorandum notifying "the resident public limited company" as a class of persons under sub-clause (iii) of clause (b) of section 96A of the Finance Act, 1994.
 - (iv) The Service Tax (Fifth Amendment) Rules, 2012 published in Notification No. G.S.R. 858(E) in Gazette of India dated 30th November, 2012, together with an explanatory memorandum.

(Placed in Library, See No. LT 8511/15/13)

- (11) A copy each of the following Notifications (Hindi and English versions) under subsection (2) of section 38 of the Central Excise Act, 1944:-
 - (i) G.S.R.140(E) published in Gazette of India dated 1st March, 2013 together with an explanatory memorandum making certain amendments in the Notification No. 17/2007-CE dated 1st March, 2007.

(ii) G.S.R.141(E) published in Gazette of India dated 1st March, 2013 together with an explanatory memorandum making certain amendments in the Notification No. 20/2011-CE dated 24th March, 2011.

- (iii) G.S.R.142(E) published in Gazette of India dated 1st March, 2013 together with an explanatory memorandum seeking to provide exemption to intermediate goods captively consumed in the manufacture of goods by units availing Area Exemption in the States of Himachal Pradesh and Uttarakhand.
- (iv) G.S.R.143(E) published in Gazette of India dated 1st March, 2013 together with an explanatory memorandum making certain amendments in the Notification No. 7/2012- CE dated 17th March, 2012.
- (v) G.S.R.144(E) published in Gazette of India dated 1st March, 2013 together with an explanatory memorandum making certain amendments in the Notification No. 1/2011- CE dated 1st March, 2011.
- (vi) G.S.R.145(E) published in Gazette of India dated 1st March, 2013 together with an explanatory memorandum making certain amendments in the Notification No. 2/2011- CE dated 1st March, 2011.
- (vii) G.S.R.146(E) published in Gazette of India dated 1st March, 2013 together with an explanatory memorandum making certain amendments in the Notification No. 30/2004-CE dated 9th July, 2004.
- (viii) G.S.R.147(E) published in Gazette of India dated 1st March, 2013 together with an explanatory memorandum making certain amendments in the Notification No. 12/2012-CE dated 17th March, 2012.
- (ix) G.S.R.148(E) published in Gazette of India dated 1st March, 2013 together with an explanatory memorandum making certain amendments in the Notification No. 49/2008-CE (N.T.)dated 24th December, 2008.
- (x) The Central Excise (Amendment) Rules, 2013 published in Notification No. G.S.R.149(E) in Gazette of India dated 1st March, 2013 together with an explanatory memorandum.

(xi) The CENVAT Credit (Amendment) Rules, 2013 published in Notification No. G.S.R.150(E) in Gazette of India dated 1st March, 2013 together with an explanatory memorandum.

(xii) G.S.R.151(E) published in Gazette of India dated 1st March, 2013 together with an explanatory memorandum specifying "the resident public limited company" as a class of persons under sub-clause (iii) of clause (c) of section 23A of the Central Excise Act, 1944.

(Placed in Library, See No. LT 8512/15/13)

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PETROLEUM AND NATURAL GAS (SHRIMATI PANABAKA LAKSHMI): I beg to lay on the Table a copy of the Petroleum and Natural Gas Regulatory Board (Determination of Petroleum and Petroleum Products Pipeline Transportation Tariff) Amendment Regulations, 2012 (Hindi and English versions) published in Notification No. F. No. PNGRB/M(C)/62/2012 in Gazette of India dated 13th December, 2013 under Section 62 of the Petroleum and Natural Gas Regulatory Board Act, 2006.

(Placed in Library, See No. LT 8503/15/13)

MADAM SPEAKER: Item No. 5 – Shri Sharad Yadav – not present.

Shri Anant Gangaram Geete – not present.

Now, Item No.6 – Shri Paban singh Ghatowar.

12.02 hrs

BUSINESS OF THE HOUSE

THE MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF DEVELOPMENT OF NORTH EASTERN REGION AND MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI PABAN SINGH GHATOWAR): Madam, with your permission, I rise to announce that Government Business during the week commencing Monday, the 11th of March, 2013, will consist of:-

- Consideration of any item of Government Business carried over from today's Order Paper
- 2. General Discussion on the Budget (General) for 2013-14.
- 3. Discussion and Voting on:-
 - (a) Demands for Grants on Account (General) for 2013-14.
 - (b) Supplementary Demands for Grants (General) for 2012-2013, and
 - (c) Demands for Excess Grants (General) for 2010-11
- 4. Introduction, consideration and passing of the related Appropriation Bills.
- 5. General Discussion on Jharkhand Budget, 2013-14.
- 6. Discussion and Voting on:-
 - (a) Demands for Grants (Jharkhand) for 2013-14, and
 - (b) Supplementary Demands for Grants (Jharkhand) for 2012-13.
- 7. Introduction, consideration and passing of the related Appropriation Bills.

श्री हुक्मदेव नारायण यादव (मधुबनी): अध्यक्ष महोदया, अगले सप्ताह की कार्यसूची में इन विषयों को जोड़ा जाए-

 अन्य पिछड़ा वर्ग राष्ट्रीय आयोग को अन्य आयोग के जैसा संवैधानिक दर्जा दिया जाए। अन्य पिछड़ा वर्ग के कल्याण समिति के प्रथम प्रतिवेदन पर चर्चा की जाए, जिसमें इस संबंध में सिफारिश की गई है। इस पर चर्चा हो।

2. नयायधीशों की नियुक्ति के लिए संघ न्यायिक सेवा आयोग बनाया जाए, जिसमें अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा अन्य पिछड़े वर्गों को आरक्षण दिया जाए। इस पर चर्चा हो।

श्रीमती जयश्रीबेन पटेल (महेसाणा): अध्यक्ष महोदया, अगले सप्ताह की कार्यसूची में इन विषयों को जोड़ा जाए-

1. देश में प्राथिमक शालाओं में मिड-डे-मील का प्रोग्राम चलाया जाता है। इसके तहत गुजरात में 30,373 मिड-डे-मील केन्द्र चल रहे हैं। केन्द्रों में किचन, किचन-कम-स्टोर रूम भी है तथा 25,650 केन्द्रों को एलपीजी गेस कनेक्शन दिए गए हैं। एलपीजी गैस सिलिंडर रिफिलिंग खर्च में कीमतें बढ़ाने से रसोई खर्च में बढ़ावा हुआ है।

अध्यक्ष महोदया: सिर्फ विषय पर बोलिए।

श्रीमती जयश्रीवेन पटेल: मैं आपसे विनती करती हूं कि एलपीजी गैस में जब-जब बढ़ावा हो, उसे ध्यान में रखकर समान बढ़ावा किया जाए, तथा

2. भारत सरकार द्वारा देश में घोषित की गई 14 सेटिंग-अप ऑफ इनोवेटिव नई यूनिवर्सिटी के निर्माण में गुजरात का भी समावेश था। इसके तहत गुजरात के एच.आर.डी. मंत्रालय ने भारत सरकार के ए..आर.डी. मंत्रालय को 28.02.2011 द्वारा प्रस्तुत यूनिवर्सिटी के निर्माण के बारे में कोई जरूरत है।

अध्यक्ष महोदया : सिर्फ विषय पर बोलिए।

श्रीमती जयश्रीबेन पटेल: तो उसकी पूर्णता के लिए विनती की थी, लेकिन आज तक भारत सरकार द्वारा इसमें कोई जवाब नहीं दिया गया है।

श्री हंसराज गं. अहीर (चन्द्रपुर): अध्यक्ष महोदया, आगामी सप्ताह की कार्यसूची में निम्नलिखित विषयों को सिम्मिलित किया जाए -

1. देश के महालेखाकार व नियंत्रक (कैंग) द्वारा कोयला क्षेत्र में एक लाख 86 हजार करोड़ रुपये के भ्रष्टाचार एवं अवैध आवंटन के मामले की सरकार जांच कर दोषियों पर कार्रवाई करे।

2. देश में महिला सुरक्षा से जुड़े मामले में असफलता से उत्पन्न जनाक्रोश को देखते हुए महिला अत्याचार से संबंधित कानूनों में कालोचित बदलाव तथा बलात्कार में फांसी के दंडादेश का संशोधन करने के लिए सरकार कदम उठाए।

श्री अर्जुन राम मेघवाल (बीकानेर): अध्यक्ष महोदया, आगामी सप्ताह की कार्यसूची में निम्नलिखित विषयों को सिम्मिलित किया जाए -

- 1. प्राइवेट सेक्टर, विशेषकर शिक्षा एवं चिकित्सा के क्षेत्र में बढ रहा भ्रष्टाचार।
- 2. राजमार्गों पर बढ रही सड़क दुर्घटनाएं एवं उनकी रोकथाम।

डॉ. भोला सिंह (नवादा): माननीय सभाध्यक्ष महोदया जी, अभी सदन में माननीय संसदीय कार्य मंत्री ने आगामी सप्ताह की कार्यसूची के बारे में विचार-विमर्श प्रस्ताव रखा है, मैं उसमें दो प्रस्तावों को जोड़ने का आग्रह करता हूं -

- 1. बिहार राज्य के नवादा जिले में बकसौती बैराज परियोजना जो 650 करोड़ रुपये की है, बिहार सरकार द्वारा केंद्र सरकार के जल संसाधन मंत्रालय को प्रस्तावित है, को शीघ्रातिशीघ्र मंजूरी देने का प्रश्न।
- 2. बिहार आज अंधेरे में है, बिहार का नवादा पिछड़ा है और अंधेरे में छाती पीट रहा है। ...(<u>व्यवधान</u>) अध्यक्ष महोदया : केवल विषय बोलिए।

डॉ. भोला सिंह: बिहार के रजौली में आणविक विद्युत ताप केंद्र की स्थापना, जो वर्षों से लंबित पड़ी है, पर विचार।

SK. SAIDUL HAQUE (BARDHMAN-DURGAPUR): Madam, I want that the following items may be included in ext week's agenda:

- a) Need to give stoppage of one Rajdhani Express at Burdwan Railway Junction because of the importance of the location. It connects not only bordering three districts but also is the centre of learning having one university, one medical college, one university institute of technology;
- b) Need to convert the narrow gauge railway line to broad gauge line in between Balgona to Katwa in Eastern Railway, that is, the remaining portion of Burdwan-Katwa Line, in the district of Burdwan, West Bengal.

श्री पन्ना लाल पुनिया (बाराबंकी): अध्यक्ष महोदया, आगामी सप्ताह की कार्यसूची में निम्नलिखित महत्वपूर्ण विषयों को सम्मिलित किया जाए -

- 1. खोए हुए नेटवर्क उपकरणों की पुलिस में सूचना दर्ज कराना अनिवार्य करने के संबंध में।
- 2. पोस्टमार्टम पद्धति में आवश्यक सुधार करने के संबंध में।

श्री शैलेन्द्र कुमार (कौशाम्बी): अध्यक्ष महोदया, आगामी सप्ताह की कार्यसूची में निम्न विषयों को सम्मिलित किया जाए -

- 1. मनरेगा का धन ग्राम पंचायत, क्षेत्र पंचायत एवं जिला पंचायतों में बराबर जाना चाहिए।
- 2. अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर सभी महिलाओं, बच्चियों को स्वाभिमान, सम्मान एवं सुरक्षा की गारन्टी होनी चाहिए।

श्री वीरेन्द्र कुमार (टीकमगढ़): अध्यक्ष महोदया, आगामी सप्ताह की कार्यसूची में निम्न विषयों का समावेश किया जाए

- 1. केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना मध्य प्रदेश के टीकमगढ़, छतरपुर संसदीय क्षेत्र में की जाए।
- 2. संसदीय क्षेत्र टीकमगढ़ से होकर निकलने वाले राष्ट्रीय राजमार्गों झांसी, छतरपुर, सतना पर फोरलेन एक्सप्रेस हाइवे सड़क का निर्माण शीघ्र कराया जाए।

श्रीमती ज्योति धुर्वे (बेतूल): अध्यक्ष महोदया, आगामी सप्ताह की कार्यसूची में निम्न विषयों को सम्मिलित किया जाए -

- 1. मेरे संसदीय क्षेत्र में पिछले माह ओलावृष्टि होने के कारण बेतूल जिले एवं हरदा-हंडिया जिले के 70 प्रतिशत किसान प्रभावित हुए हैं। इन किसानों को भारी नुकसान का सामना करना पड़ा है। अतः मैं केंद्र सरकार से इन किसानों को सहायता प्रदान करने की मांग करती हूं।
- 2. मेरे संसदीय क्षेत्र बेतूल में बहुत सी छोटी-छोटी नगर पंचायतें आती हैं। उन नगर पंचायतों में आज भी शौचायलय की सुविधा की भारी कमी है। अतः इन नगर पंचायतों को समग्र स्वच्छता अभियान में शामिल कर इन नगर पंचायतों को स्वच्छता प्रदान करने की आवश्यकता है।

अध्यक्ष महोदया: आइटम नम्बर पांच, श्री शरद यादव। हमने पहले भी आपका नाम बुलाया था।

12.10 hrs.

STANDING COMMITTEE ON URBAN DEVELOPMENT 21st and 22nd Reports

श्री शरद यादव (मधेपुरा): अध्यक्ष महोदया, मैं शहरी विकास संबंधी स्थायी समिति (2010-13) के निम्नलिखित विवरण (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण)सभा पटल पर रखता हूं:-

- (1) शहरी विकास मंत्रालय की अनुदानों की मांगों (2010-2013) के बारे में समिति के 18वें प्रतिवेदन (15वीं लोक सभा) में अंतर्विष्ट सिफारिशों पर सरकार द्वारा की-गई-कार्रवाई के संबंध में समिति के 21वें प्रतिवेदन (15वीं लोक सभा) में अंतर्विष्ट सिफारिशों पर सरकार द्वारा आगे की-गई-कार्रवाई को दर्शाने वाला विवरण; और
- (2) आवास और शहरी गरीबी उपशमन मंत्रालय की अनुदानों की मांगों (2012-2013) के बारे में समिति के 19वें प्रतिवेदन (15वीं लोक सभा) में अंतर्विष्ट सिफारिशों पर सरकार द्वारा की-गई-कार्रवाई के संबंध में समिति के 22वें प्रतिवेदन (15वीं लोक सभा) में अंतर्विष्ट सिफारिशों पर सरकार द्वारा आगे की-गई-कार्रवाई को दर्शाने वाला विवरण।

12.11 hrs

DEMANDS FOR SUPPLEMENTARY GRANTS – (GENERAL), 2012-13

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI P. CHIDAMBARAM): Madam Speaker, I beg to present a statement (Hindi and English versions) showing the Supplementary Demands for Grants in respect of the Budget (General) for 2012-13.

(Placed in Library, See No.LT 8513/15/13)

12.11 ½ hrs.

DEMANDS FOR EXCESS GRANTS – (GENERAL), 2010-11

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI P. CHIDAMBARAM): Madam Speaker, I beg to present a statement (Hindi and English versions) showing the Demands for Excess Grants in respect of the Budget (General) for 2010-11.

(Placed in Library, See No.LT 8514/15/13)

12.12 hrs.

REFERENCE BY THE SPEAKER

International Women's Day

अध्यक्ष महोदया: माननीय सदस्यगण, आज अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस, महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक उपलब्धियों के प्रतीक के रूप में विश्व भर में मनाया जा रहा है।

विश्व स्तर पर आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, कला-साहित्य, शिक्षा, खेल-कूद, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में महिलाओं की उल्लेखनीय उपलब्धियां हैं। हमारे देश में भी हर कार्यक्षेत्र में सफलता ने उनके कदम चूमे हैं और वे उन्नित की ध्वजवाहक बनी हैं।

केवल ख्यातिप्राप्त महिलाओं ने ही नहीं, अपितु दिन-रात परिवार की देखभाल करने वाली, खेत में काम करने वाली, मजदूरी करने वाली, छोटे बड़े काम करके घर की आमदनी में योगदान करने वाली असंख्य नारियों ने स्नेह, निष्ठा, त्याग और परिश्रम से हमारे समाज और देश की प्रगति का मार्ग प्रशस्त किया है। यह दिन भारत की बेटियों को समर्पित है। आज कोटि-कोटि स्वर में उनका अभिनन्दन करने का दिन है।

साथ ही आज उनकी गरिमा, सम्मान, सुरक्षा, हित, कल्याण और सशक्तिकरण पर आत्मविवेचन और विचार-विमर्श करने का भी दिन है। आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक सशक्तिकरण समान रूप से हो, इस पर भी बल देने का दिन है।

महिलाओं का सतत् शोषण इतिहास का एक कटु सत्य है। समाज के क्रियाकलापों में उनके दायरे को सीमित रखने, शिक्षा के अवसरों तथा मूलभूत मानवाधिकारों से वंचित करने, हिंसा तथा प्रायः अमानवीय व्यवहार की शिकार बनाए जाने से सदियों से महिलाओं के लिए अपनी पूर्ण क्षमता के प्रदर्शन के अवसर दुर्लभ कर दिए गए हैं।

महिलाओं के प्रति शतियों से चले आ रहे भेदभाव धीरे-धीरे समाप्त होने और समानता को सिद्धान्ततः व्यापक रूप से मान लिए जाने के बावजूद महिलाओं को आज भी पूरी तरह बराबरी का दर्जा नहीं मिल सका है।

यद्यपि हमारे महानगरों और शहरी क्षेत्रों में उनकी स्थिति में अपेक्षाकृत सुधार हुआ है, लेकिन देश के ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली और विशेष रूप से निर्बल वर्गों की महिलाओं की स्थिति में कोई बदलाव नहीं आया है। यदि महिलाओं को समाज में बराबरी का दर्जा देना है, तो हमें शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों की सभी वर्गों की महिलाओं को समान रूप से शिक्षा, स्वास्थ्य परिचर्या और सामाजिक सुरक्षा प्रदान करनी होगी।

इस वर्ष का अंतर्राष्ट्रीय महिला-दिवस का उद्देश्य है:

"महिलाओं के प्रति हिंसा को समाप्त करने के लिए हम वचनबद्ध हैं।"



12.15 hrs

SUBMISSION BY MEMBERS

Re: Occasion of International Women's Day

श्रीमती सुषमा स्वराज (विदिशा): अध्यक्ष जी, मैं आपके प्रति हृदय से धन्यवाद करती हूं कि आज अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के दिन अध्यक्षीय पीठ से आपने बहुत ही सशक्त टिप्पणी महिलाओं के संबंध में की है।

अध्यक्ष जी, अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस होने के कारण आज के दिन पूरी दुनिया में महिलाओं से संबंधित मुद्दों पर चर्चा की जाती है, समाधान खोजे जाते हैं और संकल्प किये जाते हैं। भारत में भी महिलाओं से संबंधित अनेक मुद्दे हैं, लेकिन मुद्दों पर चर्चा करना और बाद में उन्हें भूल जाना, यह केवल रस्म निभाई होता है।

आज जब मैं सदन में प्रवेश कर रही थी, कामरेड गुरुदास दासगुप्त मुझे मिले और हाथ जोड़कर बोले, "Let me greet you today". I said: "Yes, for 364 days you beat us and on 365th day you greet us." उन्होंने बहुत सहमित के स्वर में कहा, "This is true." इसिलए आज मेरा सुझाव है कि सभी मुद्दों पर चर्चा करने और बाद में उन्हें भूल जाने के बजाए यदि हम अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के दिन सबसे सामयिक, सबसे प्रसांगिक एक मुद्दा पकड़ें और वर्ष भर संकल्पित होकर उसका समाधान करें और अगले वर्ष यह आंकलन करते हुए संतोष करें कि उस मुद्दे का समाधान हमने कर लिया और फिर आगे बढ़ें तो यह ज्यादा बेहतर होगा। पिछले दिनों जो घटनाक्रम चला है उसके लिए मेरा सुझाव है कि यह वर्ष हम "महिला सुरक्षा" को समर्पित करें।

अध्यक्ष जी, जब मैं भारत की महिलाओं पर दृष्टिपात करती हूं तो एक बड़ा असंतुलित चित्र सामने आता है। एक तरफ हम कहते हैं कि महिला हमारे यहां राष्ट्रपति पद पर आसीन हुई, महिला वर्षोंवर्ष प्रधानमंत्री रही। आज हमारी अध्यक्षीय पीठ पर महिला शोभायमान है, आज सत्तारुढ़ गठबंधन की शक्तिशाली नेत्री एक महिला है, विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र की नेता-प्रतिपक्ष महिला है। हमारी कल्पना चावला और सुनीता विलियम्स ने वर्जनाओं को भेदकर अंतिष्क्ष में उड़ानें भरी हैं। संतोष यादव ने अपने महिला पांवों से बार-बार हिमालय को नापा है। अध्यक्ष जी, यह वह चित्र है जो हमें गौरवान्वित करता है, यह वह चित्र है जो भारत की प्रतिष्ठा दुनिया में बढ़ाता है। लेकिन एक दूसरा चित्र भी है जहां महिला न जन्म से पहले सुरक्षित है और न बाद में सुरक्षित है। वह माता के गर्भ में मार दी जाती है और भ्रूण हत्या करने के लिए कोई बाहर से नहीं आता है, यह कार्य माता-पिता करते हैं, दादा-दादी करवाते हैं। जन्म के बाद तो न दो वर्ष की बच्ची सुरक्षित है, न 60 वर्ष की वृद्धा सुरक्षित है। दिल और दिमाग काँधने लगता है जब अखबार में पढ़ने को मिलता है कि दो वर्ष की बच्ची बलात्कार की शिकार हुई, 7 वर्ष की स्कूली बच्ची के साथ स्कूल के ही एक व्यक्ति ने दुष्कर्म किया, 60 वर्ष की बूढ़ी औरत के साथ गैंग-रेप हुआ। हमारा माथा शर्म से झुक जाता है और दिल दर्द से भर जाता है। इसलिए मैं कहना चाहती हूं कि आज का वर्ष यदि महिला सुरक्षा के लिए समर्पित कर दें, तो हम एक

संकल्प ले सकते हैं, जो संकल्प दिल्ली के बच्चों ने लिया। दिसम्बर 16 को जो घटना घटी, उसके बाद जनाक्रोश पनपा। हम लोगों को लगा कि स्थिति सुधरेगी, लेकिन अगर आप आज के दिल्ली के दो प्रमुख अंग्रेजी अखबारों को देखें तो उनकी हैडलाइन है, "96 per cent women are unsafe in the Capital." दूसरे की हैडलाइन है, "Every two hours, a woman is raped and molested in Delhi." यह मामला केवल दिल्ली तक सीमित नहीं है, एक राजधानी या एक शहर तक सीमित होता तो शायद इतनी चिंता की बात नहीं थी, यह कमोबेश पूरे देश में व्याप्त है। किसी भी दल की सरकार हो, यह मामला किसी एक सरकार का नहीं है। किसी भी दल का शासन हो, लेकिन स्थिति यही है। यह स्थिति केवल दो चीजों से बदल सकती है। पहली चीज समाज की सोच से और दूसरी चीज व्यवस्था के खौफ से। मुझे दुख के साथ कहना पड़ता है कि समाज की सोच विकृत हो गई है। यह सोच हर समय विकृत रही है, सतयुग में भी रही है। कम या ज्यादा अच्छे बुरे लोग हमेशा समाज में रहते हैं, लेकिन अगर व्यवस्था अपना खौफ बनाए रखे, तो बुराई ढकी रहती है और बुरे लोग बुरा काम करने से डरते हैं। आज दिक्कत यह है कि व्यवस्था का कोई खौफ नहीं बचा है और समाज की सोच विकृत से विकृत होती जा रही है। इसलिए मुझे लगता है कि आज के दिन की हार्म तभी सार्थक होगी, जब आज हम सभी संकल्प करें, वह संकल्प हम अपने स्तर पर भी करें, हमारी राज्य सरकारें भी संकल्प करें, हमारी केंद्र सरकार भी संकल्प करे, हमारी विभिन्न संस्थाएं भी संकल्प करें, हमारे समाज का हर व्यक्ति अगर आज अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर यह संकल्प करे कि हम अपनी बहन और बेटियों को सुरक्षित रखेंगे, उनके मन में कभी भी असुरक्षा का भाव पैदा नहीं होने देंगे, तो मुझे लगता है कि यह अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस वाकई सार्थक हो जाएगा और पहले की तरह केवल एक रस्म निभाने वाला नहीं रह जाएगा।

अध्यक्ष महोदया : श्रीमती दर्शना जरदोश और श्रीमती जयश्रीबेन पटेल अपने आपको श्रीमती सुषमा स्वराज द्वारा उठाए विषय से सम्बद्ध करती हैं।

डॉ. गिरिजा व्यास (चित्तौड़गढ़): अध्यक्ष महोदया, महिला दिवस के अवसर पर मैं सभी को बहुत-बहुत बधाई देना चाहती हूं। आज सोनिया जी का नाम सशक्त महिलाओं में पहले स्थान पर आया है, इसिलए मैं आपको सम्पूर्ण सदन की तरफ से बहुत-बहुत बधाई देना चाहती हूं। मैडम, यह मौका बहुत कम मिला है और आगे भविष्य में पता नहीं कब मिलेगा, जब स्पीकर के पद पर आप बैठी हैं, जब यूपीए की चेयरपरसन सोनिया गांधी जी है, विपक्ष की नेता सुषमा जी हैं और सदन में पिछली घटना के बाद पुरुष वर्ग और महिला वर्ग की संवेदना में कोई विभेद मुझे दिखाई नहीं देता है। यही संवेदना के पंख सभी के दिल में हैं। ऐसे हालात में बहुत कुछ परिवर्तन की गुंजाइश है और आज देश की भी यही मांग है। इसीलिए मैं कहती हूं कि बहुत कम मौका मिला और आगे पता नहीं कब मौका मिले इसिलए ये रोशनी के लम्हे कहीं रायेगा न न जाएं, एक ख्वाब देख डालो, एक इंकलाब लाओ, यह हमारा लक्ष्य होना चाहिए। आपने जो गाइड लाइन दी है कि हम बहुत ऊंचाइयों पर पहुंचे हैं, लेकिन यह विश्व भर का पैराडॉक्स है और विशेष कर भारत

का भी कि यत्र नार्यस्तु से ले कर नीचे तक देखा जाए तो जिस बात का जिक्र मैंने पहले किया था कि जब महिला के दोनों हाथ भी काट दिए जाएं, तो वह कहां से खाना खाएगी।

मैंने बहुत-सी बातों का जिक्र पिछली बार कर दिया था, उनका जिक्र दोबारा नहीं करूंगी, लेकिन आपने कहा कि हिंसा समाप्त करने के लिए प्रतिबद्ध और उसी को सुषमा जी ने कहा कि यह वर्ष हम महिलाओं की सुरक्षा की दृष्टि से रखें, इसके लिए सरकार ने पहल की है। मुझे एक गाने की लाइनें बार-बार याद आती हैं - आधा है और आधे की जरूरत है। उस दुर्वांत घटना के बाद सरकार जिस तरह से आर्डिनेंस ले कर आई, चिदम्बरम जी को मैं सदन की तरफ से धन्यवाद देना चाहती हूं कि निर्भय योजना बनाकर एक सशक्त क़दम और उसके साथ-साथ महिलाओं के लिए बैंक खाते की व्यवस्था की है, लेकिन निर्भय योजना हमारे आज के संकल्प की प्रतिमूर्ति दिखाई देता है, उसके लिए मैं उन्हें धन्यवाद देना चाहती हूं।

आज मैं सदन के सामने उन असुरक्षित महिलाओं का जिक्र जरूर करना चाहूंगी जो अछूती रह जाती हैं। उसमें सबसे पहले रेप तो है ही, जिसके संबंध में हम पहले डिस्कस कर चुके हैं। अब फिर वह बिल जो चार दिसम्बर को रखा था, वह बिल सदन में आएगा, जो आर्डिनेंस को हमें रेटीफाई करना है उस पर हम फिर बात करेंगे इसलिए मैं रेप पर, सुषमा जी ने सही कहा कि रेप की अगर घटनाएं देखें तो न केवल दिल्ली बल्कि आज मेरे पास समस्त राज्यों के मेरे पास डेटा हैं लेकिन मैं समय की कमी के कारण बताना नहीं चाहती हूं। कोई भी राज्य ऐसा नहीं बचा है जहां महिलाओं से बलात्कार या छेड़छाड़ की घटनाएं में लगातार वृद्धि न हो रही हो इसके बावजूद कि सरकार बहुत कड़े कानून ला चुकी है और ला भी रही है। इसके बावजूद अगर ऐसी घटनाएं हो रही हैं तो निश्चित तौर पर सदन के सोचने का विषय है।

यह सदन साक्षी रहा है नेहरू जी की पंचवर्षीय योजनाओं का जिसमें महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित की गई थी। यह सदन साक्षी रहा है, जब पता नहीं इंदिरा जी कब महिलाओं के प्रति अपने असूलों के कारण इस देश की माँ बन गईं। यह देश साक्षी रहा है जब हर गवर्नमेंट आई है और मैं वर्ष 2001 का भी जिक्र करूंगी तथा राजीव जी का विशेषकर जिक्र जब महिलाओं के लिए काफी कुछ किया गया। लेकिन मैं आज कुछ अनछुए विषयों को केवल टच करूंगी और मैं आपसे करबद्ध निवेदन करूंगी। मैंने वर्ष 2001 का भी इसीलिए जिक्र किया था कि प्रत्येक प्रधान मंत्री जी के कार्यकाल में बहुत कुछ किया गया था लेकिन बहुत कुछ करना बाकी है जैसा अभी आपने कहा कि थोड़ा है, थोड़े की जरुरत है।

अध्यक्ष महोदया, मैं इम्मोरल ट्रैफिकिंग एक्ट के बारे में जो प्रोविजन एक्ट है, उसके बारे में सदन का ध्यान आकर्षित करना चाहूंगी। मुझे 70 हजार सैक्स वर्कर्स की तरफ से एक चिट्ठी मिली थी कि मैं उनके बीच में जाऊं। मैं वहां पर गई और बंगाल के हमारे साथी इस बात के साक्षी हैं। डैथ बैड पर पड़ी हुई एक महिला ने मुझे केवल इसलिए बुलाया था कि उसमें शरीक होकर मैं उनके दर्द की बात को सुनूं। मैं यहां यह कहने के लिए नहीं आई हूं कि उसको

ठीक किया जाए, उसको लॉफुल बनाया जाए। नहीं बनाया जाए, लेकिन उस महिला ने कहा कि जो हमारे तीन प्रश्न हैं, उनको तो हल करो। जो महिलाएं दुखी, पीड़ित और वृद्ध हो जाती हैं, विशेषकर रोगग्रस्त हो जाती हैं, उनके बारे में क्या व्यवस्था की गई है? मैंने स्वयं यह देखा कि जब उन्हीं में से निकलकर मुझे वहां ले जाया गया तो एक छोटे से कक्ष में वह महिला भर्ती थी और उसको संक्रमण रोग हो गया था। दूर से थाली उसके ऊपर फेंक दी जाती थी कि खाना खाए या नहीं खाए। उसकी परिचर्चा की तो बात ही छोड़ दीजिए। उनके बच्चे कहां पर जाएं? उनके बच्चों के लिए शिक्षा की क्या व्यवस्था है? भुभुक्षता किम् न करोति पापम्? कोई भी महिला इस कार्य को अपनी मर्जी से नहीं चुनती है और यदि वह चुनती भी है तो वह उसके लिए जब लास्ट ऑप्शन होता है, तब वह इस व्यवसाय को चुनती है। इसलिए मैं यह जानना चाहूंगी कि ऐसी महिलाओं के बच्चों के लिए शिक्षा की क्या व्यवस्था की गई है? उनके बच्चों का क्या भविष्य होगा? इस संबंध में कानून में बहुत कुछ फेरबदल करना बाकी है।

दूसरा बिन्दु जिसके बारे में शरद जी बीएसी की मीटिंग में बार बार इस बात को उठाते हैं और वह है- इंडीसेंट रिप्रेजेंटेशन ऑफ वूमैन इन मीडिया। पता नहीं यह क्या सोच है? जब सुषमा जी आप आई एंड बी मिनिस्टर थीं और मैं भी आई एंड बी मिनिस्टर थीं, तब से हम लोगों के प्रयास इस बारे में जारी हैं और जब वहां पर भी महिला को एक सिगरेट के विज्ञापन से लेकर किसी भी विज्ञापन में उस तरह से विज्ञापित किया जाता है या महिला को अधनंगी दिखाकर पेश किया जाता है तो हम उस संबंध में कानून में कोई कड़ा परिवर्तन क्यों नहीं ला पा रहे हैं?

तीसरे, डॉमैस्टिक वॉयलेंस एक्ट बन गया है। वूमैन कमीशन और हमारी महिला मंत्री बैठी हैं, उन्होंने उसको रखने में भी काफी मुशक्कत की थी। लेकिन उसके बावजूद भी आज तक प्रोटैक्शन ऑफिसर्स जो बने हैं, वे भी नाकामयाब हुए हैं और केवल एक दो राज्य को छोड़कर डॉमैस्टिक वॉयलेंस पर कोई रोक नहीं लगी है। इसी तरह से आज भी प्रत्येक राज्य में और मैं दावे के साथ कह सकती हूं कि आज भी प्रत्येक राज्य में वह डायन प्रथा कायम है जिसमें किसी महिला को उस गांव में या उस क्षेत्र में डायन करार कर दिया जाता है और चाहे वह वैस्ट बंगाल से लेकर राजस्थान तक का जिक्र हो, चाहे छत्तीसगढ़ से लेकर आसाम तक का जिक्र हो, मैं जब गईं तो मुझे पता लगा कि केरल के दो जिले भी इस प्रथा से त्रस्त हैं। इसके संबंध में कोई कानून नहीं है। इसलिए मैं इस ग्रे एरिया को भी आपके सामने प्रस्तुत करना चाहती हूं।

हम बहुत बार बुजुर्गों के संबंध में कानून लेकर आए हैं लेकिन मैं उन बुजुर्ग महिलाओं की बात करना चाहती हूं जिनको उनके बेटे घर से बाहर निकाल देते हैं। मुझे खुशी है कि सरकार सभी बुजुर्गों के लिए एक राहत लेकर आई है कि सरकार वृद्धा पेंशन में वृद्धि कर रही है। लेकिन महिला के दिल की बात मैं जरूर कहूंगी। एक महिला जिसके सारे शरीर में नील पड़े हुए थे और उसने हाथ जोड़कर कहा कि मैं एक शर्त पर अपनी बात, अपना दुख कहूंगी कि जिसने भी मेरे साथ यह कृत्य किया है, उसको सजा नहीं दिलाई जाए। केवल मेरी व्यवस्था की जाए और उसका इस

बात के पीछे कहने का यह अर्थ इसिलए था क्योंकि उसके दोनों बेटों ने उसको इस तरह से पीटा था लेकिन फिर भी वह मां उन बेटों के लिए माफी की मांग कर रही थी। इसिलए मैं आज यहां कहना चाहती हूं कि इस कानून में और कड़ाई करने की जरुरत है। केवल कहने भर से काम नहीं चलेगा। प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य बनता है कि वह माता-पिता की देखभाल करे। महिलाएं अपने घरों में बहुत असुरक्षित हैं।

मैं महिला के संबंध में जेल की बात भी करना चाहूंगी। जेल के जो हालात हैं कि महिलाओं के चालान नहीं होते। महिलाओं के संबंध में कुछ बैठता नहीं है, उनके आगे के लिए कुछ व्यवस्था नहीं होती। जयपुर की जेल में जब मैं पहुंची तो वहां एक सांस्कृतिक कार्यक्रम रखा गया था। उस कार्यक्रम में एक महिला ने पांच-छ: नृत्य प्रस्तुत किये थे। वह एक छोटी सी बच्ची थी और मेरे ख्याल से 20-21 वर्ष की वह होगी। उसने बीच में जाकर अपने बच्चे को दूध भी पिलाया। मैंने पूछा कि यह यहां पर कैसे हैं? तब मुझे मालूम पड़ा कि उसके ऊपर चार मर्डर केसेज हैं। मैंने उससे कहा - बेटा ऐसी क्या वजह थी? तब उसने बताया कि मुझे बार-बार गैंगरेप किया जा रहा था, जब कानून ने मेरी बात नहीं सुनी, पुलिस ने नहीं सुनी तब मुझे ही निर्णय लेना पड़ा मैंने इससे बचने का एक ही तरीका सोचा। मैंने एक दिन उन्हें आमंत्रित किया और उन सबको ज़हर दे दिया। उसे क्या सज़ा दें? इस संबंध में क्या बात करें?

अध्यक्ष महोदया, जेल से लेकर एनआरआई महिलाओं की स्थिति बहुत खराब है। रात को दो बजे गिरती बर्फ मं महिला को घर से निकाल दिया जाता है। शादी करके महिलाओं को ले जाया नहीं जाता है। बच्चें छोड़ कर फिर विदेश चले जाते हैं। यहां झूठ बोलते हैं वे शादीशुदा नहीं हैं जबिक वे शादीशुदा होते हैं। शादी करके लड़िकयों को ले जाते हैं और नौकरानी का कार्य कराते हैं। यदि वे बीमार पड़ जाती हैं तो मजबूर करके बाहर फेंक दिया जाता है। मैं अपील करती हूं क्योंकि एनआरआई को विकसित करने की जरूरत है। मुझे एक बात ने सबसे ज्यादा छुआ है। आज भी मैं रो पड़ती हूं जब मुझे वह घटना याद आती है। एक दिन रेड लाइट पर मेरी गाड़ी खड़ी थी, मैंने एक महिला को भीख मांगते हुए देखा। उसकी आंखे झुकी थी और बाल बिखरे थे। ऐसा लग रहा था कि अर्घ विक्षिप्त या विक्षिप्त है। मैंने गाड़ी से उतरकर उससे एक तरफ ले जाकर बातचीत की तब पता चला कि वह एक्स आईएएस अफसर है। मैंने जब इसी तरह की अन्य महिलाओं का सर्वे कराया तब पता चला कि इनमें से बहुत सी प्रिसींपल हैं, पढ़ी लिखी हैं। इन महिलाओं के खिलाफ पतियों ने डिवोर्स का एक माध्यम अपनाया कि यदि वे मेंटली फिट नहीं है तो डिवोर्स दिया जा सकता है। ऐसी महिलाएं आज सड़क पर हैं। क्या सड़क ही आज इनका रिप्लाई है? सड़क ही इनका उत्तर है? मैं पूछना चाहती हूं कि इस संबंध में कानून बनाकर रिहेबिलिटेशन की व्यवस्था क्यों नहीं कर सकते हैं? मैं सदन से अपील करती हूं कि हिंसा कम के लिए कुछ किया जाए।

अध्यक्ष महोदया, एक छोटी सी बच्ची आई, उसने मुझ कुछ पंक्तियां सुनाई थी। हमको भी देखो, हमको भी जानो, हम भी हैं इंसान, इतना तो मानो।

में यही अपील करती हूं कि हिंसा के खिलाफ सुरक्षा प्रदान की जाए। रेप से बचने के लिए सुरक्षा तो चाहिए ही है। सुप्रीम कोर्ट के जज ने जो कमेंट किया, मैं समझती हूं कि इससे बढ़कर किसी और का कमेंट नहीं हो सकता है। उन्होंने कहा - अगर किसी महिला की मृत्यु होती है तो वह एक बार मरती है लेकिन यदि किसी महिला का ब्लात्कार होता है तो वह हर पल मरती है। उस दुखांत घटना ने हमें बहुत कुछ सिखाया है लेकिन अभी भी अत्याचार जारी है। हमें सदन और सारा विश्व देख रहा है, इस संबंध में हम सब एक संकल्प के साथ आगे आएं क्योंकि ऐसा मौका बार-बार नहीं मिलेगा। मैं कहना चाहती हूं कि सदन केवल इस महिला दिवस को आज तक सीमित न रखे बल्कि इस बात को लेकर आगे भी चिंतित हो। मैंने कुछ बातों को इंगित किया है लेकिन कुछ बातें और रह गई हैं। क्या महिलाओं को आज भी डायन प्रथा से जलाकर नहीं मार दिया जाता है? इस हिंसा के बारे में हम क्या कहेंगे? हमें इन हालात में जागना चाहिए। सम्पूर्ण हिंसा के प्रति भारत कानून की दृष्टि में आगे है, हमने सारे नेशनल यूएन के प्रोटोकाल को रेटिफाई किया है। इसके अतिरिक्त कई कानून हैं। हमारी चार भुजाएं हैं। हमें कांस्टीट्युशनल राइट मिले हैं, आईपीसी के भी हैं। हम संसद में बार-बार विभिन्न प्रकार के बिल पारित करते हैं। इसके अलावा सुप्रीम कोर्ट के कुछ जजमेंट हैं जो कानून का रूप ले लेते हैं। इन चारों भुजाओं के बावजूद भी जब हम पैरों की तरफ देखते हैं तो हमारा हाल वही होता है जो मोर की दशा अपने पैरों को देखकर होती है। मैं आज आक्रोशित हूं। क्या मैं आज शर्मिंदगी महसूस करूं? मैं किस पर गुस्सा करूं और किस पर नहीं करूं। जनता जनार्दन ने बहुत सोच समझकर हमें यहां भेजा है। हम बहुत एक-दूसरे की बातों पर बहुत लड़ लिए। हमें इन बातों पर न तो राजनीति करनी है और न वोट बैंक को देखकर महिलाओं को केवल सब्जेक्ट समझना है। हमें उन्हें ऑब्जेक्ट समझना है।

अध्यक्ष महोदया, मैं बहुत समय पूर्व एफीजीनिया की बात कहना चाहती हूं। एफीजीनिया ग्रीस की थी। एक बार जब वहां अकाल पड़ा तब पंडितों ने कहा कि जब तक किसी कन्या का वध नहीं होगा तब तक इस अकाल से मुक्त नहीं होंगे। उस समय 13 वर्ष की सुन्दरतम कन्या को ढूंढ़ा गया। मैं आपको केवल अंतिम परिदृश्य की तरफ ले जाना चाहती हूं। अंतिम मंत्र उच्चारण के बीच पंडित कहते हैं - एफीजीनिया, तुम सौभाग्यशाली हो, कल से तुम्हारे लिए आल्टर्स बनेंगे, मंदिर बनेंगे क्योंकि तुम देश और धर्म के लिए कुर्बान हो रही हो, तुम्हारे मन में अंतिम इच्छा है तो बोलो। वह रुकती है, ठिठकती है, पहले मना करती है और फिर गरदन को थोड़ा सा मोड़कर कहती है कि हां, मुझे इतना ही कहना है कि मेरी आने वाली पीढ़ी की बहनों को एक वस्तु नहीं बल्कि एक व्यक्तित्व का दर्जा दिया जाए। व्यक्तित्व का दर्जा और सुरक्षा हम लोग भीख में नहीं मांग रहे हैं। हम लोग बहुत मशक्कत करके यहां तक पहुंचे हैं, मीरा जी, आपने भी बहुत मशक्कत की है, हम सभी ने बहुत मशक्कत की है, बहुत मशक्कत के साथ आप लोगों ने हमें वोट दिलाया है और आप देते रहे हैं। बहुत मशक्कत के साथ आप एक घर को संभालती हैं। मैं आशान्वित हूं, क्योंकि महिला आशा नहीं रखेगी तो समरसता कहां से आयेगी, समदृष्टि कहां से आयेगी, आपके घर और परिवार कहां से चलेंगे, कैसे एक सुंदर भविष्य का निर्माण होगा, कैसे एक नई सुबह होगी। एक नई सुबह इंतजार में है और

आज इसकी खबर भारत से जानी चाहिए कि भारत की संसद ने समवेत स्वर में इस बात की घोषणा कर दी है, इस बात का संकल्प लिया है कि किसी भी प्रकार की हिंसा, चाहे वह घर से लेकर बाहर की हो, किसी भी प्रकार की असुरक्षा, चाहे वह कहीं की भी हो, उसे बर्दाश्त नहीं किया जायेगा। कड़े कानून के रूप में हम लोगों की प्राथिमकता हो।

मैडम, मैं आपसे प्रार्थना करना चाहती हूं कि इस बारे में हमारी स्टैंडिंग कमेटी है, लेकिन उसके बावजूद मैं विनम्र प्रार्थना करना चाहती हूं कि आप एक कमेटी बनाइये, उस कमेटी में जो हमारे ग्रे एरियाज रह गये हैं, जिनमें कुछ कानून में थोड़ा सा परिवर्तन करने की जरूरत है और कुछ में नये कानून लाने की जरूरत है और यह काम हम इसी कार्यकाल के दौरान करें।

अंत में मैं आप सबसे निवेदन करूंगी कि जब तक निर्णय लेने की प्रक्रिया में हम लोगों की भागीदारी नहीं होगी, हम 22 से 60 तक तो पहुंचे हैं, लेकिन 22 से 60 तक पर्याप्त संख्या नहीं होती। आप अपने माइंडसैट को बदलिये और आकर मदद कीजिए। चलिये एक नये भारत का, एक नई सुबह का, एक नई फिजां का, एक नई खुशबू का, एक नये संगीत का हम लोग आह्वान करें और वह आह्वान आपकी सुरीली आवाज के साथ होगा, जिस आवाज में सुरीलेपन के साथ-साथ दृढ़ता है, वही सुरीलापन, वही सौंदर्य, वही माधुर्य रखते हुए हम कड़ाई के साथ आगे बढ़ना चाहते हैं। हमारा मार्ग प्रशस्त करने के लिए संसद सामने आये, करबद्ध होकर यही विनती मैं आपसे करना चाहती हूं। अध्यक्ष महोदया : श्री पन्ना लाल पुनिया जी. श्री एस.एस. रामासुब्बू और श्री जगदम्बिका पाल जी अपने आपको डा.गिरिजा व्यास के विषय से सम्बद्ध करते हैं।

श्रीमती सुशीला सरोज (मोहनलालगंज): माननीय अध्यक्ष महोदया, आज अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा हर वर्ष इसके लिए एक थीम निर्धारित किया जाता है और इस बार का थीम है - 'A promise is a promise: Time to end violence against women'. महिलाओं के लिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण वर्ष है। आज हिदुस्तान में भी राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जा रहा है। आज किव महिला के दर्द को उभारेगा, महिला संगठन कुछ नया करने की कसमें खायेंगी, पीड़ित महिलाएं कानून की तरफ आस से देखेंगी, कुछ सरकारी संगठन इस पर्व पर औपचारिकताएं निभायेंगे। सवाल उठता है कि क्या आज मिसेज रचना, मिसेज सपना के लिए मुक्ति की बात होगी या गांव की दुलारी या बिटाना के लिए भी कुछ न्याय की बात होगी। आज तथाकथित राजनेता और नीति-नियंता क्या हमारे लिए कुछ करेंगे? मैं कहना चाहती हूं - "अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी, आंचल में है दूध और आंखों में पानी।' छायावाद काव्य की परम्परा को पचास वर्ष से भी अधिक हो गये हैं, दुनिया के नक्शे कई बार बदले हैं, हिंदुस्तान की सूरत बदली है, समाज का ढांचा बदला है, राजनीति के तौर-तरीके बदले हैं, गांवों की तस्वीर बदली है, शहरों की चकाचौंध बदली

है, परंतु महिलाओं की स्थिति आज भी वैसी की वैसी है। मैं ग्रामीण परिवेश से चुनकर आती हूं और देखती हूं कि गांव में जब एक महिला के बेटी पैदा होती है तो शोक छा जाता है।

उसी गांव में जब एक भैंस पिड़या को जन्म देती है तो खुशी आ जाती है क्योंकि लोग लोग कहते हैं कि इससे धन का उपार्जन होगा। हम आज बढ़ते जा रहे हैं, आज दुनिया के नक्शे पर हम छाते जा रहे हैं, पर कितनी विडंबना है कि आज यौन शोषण में भी हमको धकेला जा रहा है। आज यौन शोषण में भी महिलाओं को तड़पाया जा रहा है। महिलाओं के आंचल में उनके लिए कितना दर्द है। क्या बताएं बड़ी तबाही है, महिला की ज़िंदगी फैलती स्याही है।

माननीय अध्यक्ष महोदया, अगर आपकी इजाजत हो को द्वीय सरकार द्वारा संकलित आंकड़े मैं आपके सामने प्रस्तुत करना चाहती हूँ। सात मिनट के अंदर एक महिला अपरीध की शिकार हो जाती है। प्रत्येक 24 मिनट बाद एक महिला के साथ ए-वन शोषण का प्रयास किया जाता है। 43 मिनट के अंतराल पर एक महिला का अपहरण हो जाता है। प्रत्येक 51 मिनट पर एक महिला के साथ छेड़छाड़ होती है। पर इन सबकी शिकायत पुलिस के आंकड़ों में ज्यादा दर्ज नहीं होती है। प्रत्येक 54 मिनट पर एक महिला बलात्कार की शिकार होती है। 1 घंटा 42 मिनट के अंतराल पर एक महिला दहेज उत्पीड़न की भेंट चढ़ जाती है। हिंसा के ये आंकड़े मेरे अपने बनाए हुए नहीं हैं, ये केंद्रीय सरकार द्वारा सकंलित महिलाओं के प्रति होने वाले अपराधों के आंकड़े हैं। आज कैसी विडंबना है कि नारों के सैलाब में नारी की चित्कार विलीन होती जा रही है।

महोदया, पूरा सदन आज महिला दिवस का स्वागत कर रहा है, परंतु बीते साल के कुछ ऐसे ज़ख्म हैं, जो मन को व्यथित कर रहे हैं। दिल्ली में गैंगरेप की शिकार युवती नरिपशाचों के चंगुल में फंस गई और हार गई। यह मौत केवल मौत नहीं है बल्कि वयवस्था पर देश के भरोसे की मौत है। यह देश की राजधानी की सड़कों पर सुरक्षा के अहसास की मौत है। बहादुर लड़की की मौत देश की सरकार, रहनुमाओं, नौकरशाहों और पुलिस अधिकारियों का प्रतीक बन गई है। महिलाओं पर होने वाले अन्याय का प्रतीक बन कर ऊभरी यह युवती पहले एक मशाल बनी, िफर मशाल के साथ समाज के हर तबके को संवेदना दे गई।

माननीय अध्यक्ष महोदया, सरकार को जागना पड़ा। तभी सरकार ने जस्टिस वर्मा कमेटी बनाई। जस्टिस वर्मा कमेटी ने खुद कहा कि हमने देश और विदेश से 80 हज़ार आंकड़ें एकत्रित किए। हमें सुझाव मिले हैं, जिसमें कार्यकताओं ने, महिला संगठनों ने, विद्वानों ने, विदुषियों ने, विकीलों ने तथा विदेश के प्रोफ़ेसरों ने हमें जो सुझाव दिए हैं, उन्हें हमने 631 पृष्ठों में समावेश किया है। हमें इसे दो महीनों में प्रस्तुत करना था, पर हमने 29 दिन में इसको प्रस्तुत कर दिया है। उन्होंने अफ़सोस भी जताया है। ये आंकड़ें हमें समाज के हर वर्गों से मिले हैं। परंतु देश के राज्यों के डीजीपी या वरिष्ठ पुलिस अफ़सरों से हमें कोई भी सुझाव नहीं मिला है। उन्होंने युवाओं की तारीफ की है और यह कहा है कि युवाओं ने हमें वह सब कुछ सिखाया है, जो आज विशिष्ठ श्रेणी के लोगों ने हमें कुछ भी नहीं सिखाया है।

महोदया, मैं कहना चाहती हूँ कि जिस्टिस वर्मा जी ने आपको जो रिपोर्ट अध्यादेश के रूप में दी है, निश्चित तौर पर यह मील का पत्थर साबित होगी। भले ही यह रिपोर्ट आधी-अधूरी हो, भले ही इसमें कुछ खामियां हों, लेकिन यह रिपोर्ट महिलाओं के लिए सहायक होगी। मैं उस बहादुर निर्भया युवती को महिला दिवस पर अपनी श्रद्धांजली अर्पित करते हुए कहना चाहती हूँ कि -

''तू चुप है, लेकिन गुज़रेगी सदा ये अहसास पर तेरी, दुनिया की अंधेरी रातों में ढांढस देगी आवाज़ तेरी। "

महोदया, आज महिला दिवस है। महिलाओं के सशक्तिकरण पर अगर बात न की जाए तो बात अधूरी रह जाती है। महिलाएं अपने पित, अपने पुत्र, अपने पिता के कदमों पर रहती हैं, उनके रहमों पर रहती हैं। पर आज सभी सामाजिक संगठन और सरकारें यह झुनझुना हमको पकड़ाएंगे कि हमने महिलाओं की आत्मनिर्भरता के लिए बहुत सारे काम किए हैं। लेकिन मैं सदन के माध्यम से कहना चाहती हूँ कि महिलाओं का सशक्तिकरण मैं उसी दिन मानूंगी, जिस दिन महिलाएं अपने पैरों पर खड़े हो कर खुद धन का उपार्जन करेंगी और अपने हाथों से कमा कर अपने हाथों को चूड़ियों से सजाएंगी, अपने माथे को बिंदिया से सजाएंगी, तभी मैं समझूंगी कि उनका सशक्तिकरण हो गया है।

महोदया, डॉ. राम मनोहर लोहिया जी ने कहा था अगर साठ सैंकड़ा, दिलत, कुचले, दबे हुए, पीड़ित, हिरजन, मिहिला, अल्पसंख्यक, आदिवासियों के हाथों में जब यह सत्ता आएगी, जो वे मातृभाषा बोलते हैं, वही उस दिन कलम से लिखी जाएगी, तब इस देश में सफल इंकलाब का आगमन होगा। ऐसा इंकलाब आयेगा जिससे भारत मां को अपने सारे अपमानों से निजात दिला देगा, जो वह कई वर्षों से सहती चली आ रही है।

महोदया, समाजवादी पार्टी लोहिया जी के सपनों को साकार करने में लगी हुयी है। आज हमारे उत्तर प्रदेश हैं हिंसा और उत्पीड़न की शिकार महिलाओं के लिए हेल्पलाइन 1090 की शुरूआत की गयी है, जिससे महिलाओं की पुलिस का पूरा सहयोग मिल रहा है। हेल्पलाइन केंद्रों पर संपर्क करने वाली महिलाओं को हरसंभव सहायता प्रदान करने का प्रयास किया जा रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में भी आज मुस्लिम बालिकाओं को तीस हजार रूपए के अनुदान का प्रावधान है और इस तीस हजार रूपए वितरण का काम बखूबी किया जा रहा है। हाई स्कूल पास लड़िकयां को, जो शिक्षा प्राप्त कर चुकी है, कन्या विद्या धन के रूप में उनको बीस हजार रूपए वितरित किए जा रहे हैं। स्कूल और कॉलेज में पढ़ने वाली लड़िकयों के लिए चिकित्सीय सहायता दी जा रही है। उत्तर प्रदेश के हर विकास खंड में डिग्री कॉलेज खोला जा रहा है और यह भी प्रावधान किया जा रहा है कि उसको पांच वर्ष में बी.एड. की मान्यता दी जाएगी।

महोदया, प्राथमिक स्तर पर भी सभी बिच्चियों के लिए अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था होगी। कक्षा आठ तक की सभी कन्याओं को पुस्तकें मुफ्त में दी जायेंगी और दो ड्रेस हर साल वितरित होंगी।

महोदया, मैं अंत में कहना चाहूंगी कि इस देश की सारी महिलाओं को मैं सलाम करती हूं और शुभकामना देती हूं, जो मंजिल उनको अब तक नहीं मिली है, जिस मंजिल से वे दूर रही हैं, वह मंजिल और कामयाबी पाएं, जो उनसे दूर है। मैं सभी बहनों से कहना चाहती हूं कि हर चिंगारी एक दिन अंगार बनती है, हर टहनी एक दिन पतवार बनती है, जो रौंदी गयी मिट्टी समझकर, जो रौंदी गयी बेबस मिट्टी समझकर, वही एक दिन मीनार बनती है। सारी महिलाओं और आपको मेरा सलाम।

SHRIMATI HARSIMRAT KAUR BADAL (BHATINDA): Madam, on this International Women's Day, may I congratulate you and congratulate that huge population of our country which makes up half the population of this nation.

MADAM SPEAKER: Thank you.

SHRIMATI HARSIMRAT KAUR BADAL: I would also like to, on this day, talk about a few facts and figures which are hard and sad reality of the plight of these women. Like my hon. colleague, who spoke before me, read out some figures, I would also like to reiterate those figures. We live in a country where every 12 minutes, some woman in some corner is assaulted or molested; every 14 minutes, a girl is kidnapped; every 20 minutes, a rape occurs; and every 60 minutes, a woman dies a dowry death. What for me personally is more shameful of all is that the UNESCO Report says that 2,000 baby girls do not take birth in our country. They are killed even before they get a chance to live a life. In this scenario, if we look at the conviction rate in cases of sex determination, it is less than one per cent. If we look at convictions in the courts, be it the case of murder, rape, assault or molestation, it is less than 23 per cent and the maximum is 25 per cent, and 75 per cent of the perpetrators of these crimes go scot-free. There is no fear of the law. There is no fear of doing wrong things to women. That is the reason why the safety and the security of our women is something that this House needs to be really concerned about.

I would also like to state that we live in a nation where 58 per cent of our women are still malnourished and the sad part is that Indians constitute 25 per cent of the maternal mortality rate, where the mothers die during child birth, of the global maternal mortality rate. Hardly 60 per cent of our women are educated.

In this scenario, when our Government puts aside barely Rs. 1,000 crore to improve the situation and to improve the things, which are drastically needed to be done, to enhance the status of these women, I think it is too little and too late. I also feel that if it takes an International Women's Day to talk about all these things, I would appeal to you, Madam Speaker, as a woman that at least, as I had requested earlier, put aside two days in every Session where specific women issues need to be addressed. It is because this one day and this little amount that our Government puts aside does not reflect the determination or the strong resolve that is required, and we do not want it to be mere words alone. Millions of women look up to us that this House here will do something concrete to make their life better, and to ensure that they feel safe and secure in their own country, which is enshrined in our Constitution. Then, why do we just stick to mere words and mere tokenism and do not do anything which is required, the strong resolve that is required, which needs to be reflected from here?

I appeal to you, Madam, to put aside certain days in every Session where these issues are discussed so that they remain in focus and something concrete comes out of it. I also appeal to the nation, to all the women and to all the men that please keep up the pressure on the Governments so that this issue remains in focus. It is only when the public does that, I am sure we can ensure the accountability or the answerability of the Police, ensure that the judiciary speeds up the cases, and ensure that those poor victims who need to be rehabilitated are rehabilitated. That is the only way. This is the first time that this is being spoken about, and there are so many millions who do not even get an opportunity to voice these things, and they suffer from all this.

So, on this International Women's Day, on behalf of all the women of my nation, Madam, I appeal to you as a woman that please do not let this be just another day and just another occasion where we get to vent out our feelings. Let us make a resolve today that we will make a difference before this Fifteenth Lok Sabha comes to an end by ensuring that the laws are in place, that the women who just look for safe and secure environment gets justice and she gets that safe and secure environment that she is entitled to.

अध्यक्ष महोदया : श्री दारा सिंह चौहान।

...(व्यवधान)

श्री जगदम्बिका पाल (ड्रमरियागंज): अध्यक्ष महोदया, मेरा भी एक नोटिस है। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया: दारा सिंह चौहान जी, आप क्यों नहीं बोल रहे हैं?

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : श्री शरद यादव।

श्री जगदम्बिका पाल: इनकी पार्टी में कोई महिला ही नहीं है। ...(व्यवधान) आप इन्हीं से बुलवाइए।

श्री शरद यादव (मधेपुरा): अध्यक्ष जी, आपने हमारा नाम इतनी धीरे से लिया तो हम ऐसा समझे कि आपकी इच्छा हमें बुलाने की नहीं थी। बात भी सही है कि हम महिला नहीं हैं। लेकिन हम अर्द्धनारीश्वर तो हैं ही, आधा महिला हैं, आधा पुरुष हैं।

अध्यक्ष महोदया: शरद जी, ऐसा है कि मैंने तो आपका नाम लिया था, मगर आप ही डर-डर के उठे हैं।

...(व्यवधान)

श्री शरद यादव: नहीं नहीं। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : मगर मैं आपको आश्वस्त करती हूँ कि हम सब आपको सुनेंगे।

श्री शरद यादव: अध्यक्ष महोदया, सुषमा जी ने, गिरिजा जी ने और सुशीला सरोज जी ने जो बातें कहीं, इन तीनों की बात से मैं सहमत हूँ। सुषमा जी ने सुझाव दिया है कि एक बरस ज़रूर इस पर चर्चा चलती रहे। महात्मा बुद्ध ने कहा था कि जगत बनेगा, समाज बनेगा तो व्यक्ति बनेगा। व्यक्ति का मतलब पुरुष और महिला दोनों है। बात यह है कि सुषमा जी ने और गिरिजा जी ने जो बात बोली, ऐसे बहुत लोग बोलते आ रहे हैं। जब भीष्म पितामह मृत्युशैया पर लेटे हुए थे और कौरवों तथा पाण्डवों को शिक्षा दे रहे थे, आज तो सदन में गिरिजा जी और सुषमा जी हैं, लेकिन उस ज़माने में जिसके इतिहास के बारे में सही जानकारी नहीं है लेकिन चरित्र तो विकट है। जब भीष्म पितामह शिक्षा देने लगे कि कैसे दुनिया में रहना चाहिए और कैसे होना चाहिए, मेरे बाद क्या करो, तो द्रौपदी हँस पड़ी। इस पर अर्जुन दौड़ा कि क्यों हँस रही हो, हमारे पितामह मर रहे हैं और किस तरह की बात कर रही हो? कृष्ण ने कहा कि द्रौपदी तो बहुत तेजस्वी महिला है, सुनो तो सही कि वह क्या बात कह रही है।

वह बोले कि आप जिंदगी भर जो बात बोलते रहे, उसके विपरीत काम करते रहे और अब आप शिक्षा दे रहे हैं। गिरिजा जी, यानी द्रोपदी ही एक ऐसी महिला है, जिसका हर घर में किस्सा है। इस किस्से को धार्मिक लोग क्यों नहीं निकालते हैं। सुषमा जी ने सही बात कही है कि इस बारे में बहस होनी चाहिए। बहस का मतलब है कि जो थोथी बात है, उसे अलग निकालो और सार बात को रख लो। इसमें एक बात नहीं है। अध्यक्ष महोदया, जिस देश की माँ दुखी,

पीड़ित और सताई होती है, वह देश दुनिया के इतिहास में पनपता नहीं है। कैसा बदिकस्मत देश है कि 1100 बरस हम हारते ही रहे। हम इसिलए हारे क्योंकि हमने माँ गुलाम करके रखी थी। अब मैं उस बात के विस्तार में नहीं जाना चाहता कि माँ गुलाम क्यों है। यदि सुषमा जी मुझे इजाजत देंगी तो गिरिजा जी मैं जरूर कहूंगा। महिला की त्रासदी का सबसे बड़ा कारण यह जगत है, समाज है।...(व्यवधान) व्यवस्था की बात छोड़िए। व्यवस्था से काम नहीं चलता है। मैं इतना ही निवेदन करूंगा कि गिरिजा जी ने कहा कि कानून बनना चाहिए, यह बात सही है। आज का जो तात्कालिक हमारा कर्तव्य है वह जरूर व्यावहारिक कारण बनेगा। लेकिन दूर तक लम्बे समय तक कैसे महिला मुक्ति होगी? कैसे माँ, बहन, बेटी मुक्त होगी? बायलोजिकल डिफरेंस को इतना बढ़ा दिया गया है कि हमारी खुद महिलाएं कह रही हैं कि आधी आबादी है। मैं आपसे कहता हूं कि आधी क्या बल्कि पूरा देश मिला कर आप हैं। शरद यादव का तन तो माँ से बना है, मेरे बाप का क्या योगदान है। मैं सही कह रहा हूं कि मेरे

अंदर जो साहस है, वह मेरी माँ के कारण है। मेरी माँ और मेरे पिताजी फ्रीडम फाइटर थे, लेकिन मेरी जिंदगी में मेरी कभी अपने पिताजी से नहीं बनी, बल्कि मेरी माँ से बनी। मेरी माँ इतनी बहादुर थी कि उसका थोड़ा अंश मेरे भीतर है। मैं अगर कोई सही बात न कह पाऊं तो रात को मुझे नींद नहीं आती है। माँ के बारे में सुषमा जी ने कहा, जरूर आठ दिन में आधा घंटे इस पर बोला जाए। यह जो त्रासदी है, बीमारी है, यह विकट बीमारी है। सबसे ज्यादा जो गरीब है, उसकी माँ, बहन, बेटी सबसे ज्यादा सताई जाती है। जो गरीब है और जो बिलकुल लाचार और बेबस जातियां हैं उनकी माँ, बहन, बेटी तो मानी ही नहीं जाती है वे सबके लिए भोग का सामान बनती हैं। उनमें सुंदर बेटी होना गुनाह है हम शहर में रहने वाले, गांव में रहने वाले हमें मालूम है। बराबरी की बात दिल्ली में होती है। दिल्ली में लोग इकट्ठा हुए तो यह बात जरूर है कि इसकी चर्चा ज्यादा हो गई। अब यह चर्चा इतनी ज्यादा हो गई कि देश में हजारों साल से यह बीमारी चल रही है। लेकिन अब टीवी वालों को यह तमाशा मिल गया और वे इसे ही दिखा रहे हैं। यह अच्छी बात है, लेकिन उसके पीछे कोई बहस भी तो चलाओगे या सिर्फ यही दिखाते रहोगे। जो बच्चियां हैं, उनके साथ तो दुनिया के किसी समाज में बलात्कार नहीं होता है। गजब है हमारा देश, हम इसमें अव्यल है। तीन साल, दो साल, चार साल, छः साल की बच्चियों से दुनिया के किस इलाके में बलात्कार होता है? इसलिए मैं ज्यादा नहीं बालूंगा और आप दोनों-तीनों की बातों को समेट कर कहना चाहता हूं कि आपका दर्द जितना है, उससे कम दर्द हमारा नहीं है।

13.00 hrs.

जो लोग दिल्ली में इकट्ठे हुए थे, उन्होंने बात को जरूर उछाला है, बात को बढ़ाया है लेकिन ऐसी बातों से बना नहीं। ऐसी बातें कई बार उछली हैं। द्रौपदी ने तो महाभारत कराया, लेकिन न्याय कहां धरती पर उतरा, बराबरी कहां आयी? द्रौपदी का क्या दोष था? पांच पित उस ने नहीं रखे थे, अर्जुन की मां ने ऐसा कहा था। लेकिन द्रौपदी ने किसी भी जगह कॉम्प्रोमाइज नहीं किया, युद्ध करा के रही। अपने बाल युद्ध के बाद बांधे।



महोदया, मैं आप से एक ही निवेदन करना चाह रहा हूं कि सुषमा जी की बात बिल्कुल पक्की और दुरूरत है। अगर महीने भर सदन चले तो आप एक दिन एक घंटा जरूर बहस करें। भले ही दो-तिहाई महिला बोलें लेकिन एक-तिहाई हम आदिमयों को भी अवसर मिले क्योंकि हम भी मां वाले लोग हैं, बहन वाले लोग हैं। उस के दर्द और तक़लीफ में हम न शरीक़ हों तो फिर लानत है जिन्दगी पर। मां ने ही जन्म दिया है, मां ने ही शरीर दिया है। उसे बचाना है और उसे बढ़ाना है।

इन्हीं बातों के साथ मैं अपनी बात को समाप्त करता हूं। मैं सुषमा जी, गिरिजा जी, सरोज जी और हरिसमरत जी को धन्यवाद देता हूं।

श्री पन्ना लाल पुनिया (बाराबंकी): महोदया, मैं श्री शरद यादव द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को संबद्ध करता हूं। डॉ. बलीराम (लालगंज): अध्यक्ष जी, आप ने मुझे अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के मौके पर बोलने का अवसर दिया, मैं आपका बहुत-बहुत आभारी हूं। आज के दिन पूरे देश में ही नहीं, पूरे विश्व में महिला दिवस पर चर्चाएं हो रही हैं। लेकिन, मैं यह कहना चाहूंगा कि यह चर्चा सिर्फ़ साल में एक दिन न हो करके उनके लिए काम करने की जरूरत है। आज हर स्तर पर महिला के साथ शोषण हो रहा है, अत्याचार हो रहा है। उनके साथ जुल्म-ज्यादती हो रही है जबिक हमारे जो वेद हैं, पुराण हैं, अगर उन्हें हम देखें तो इसी देश में महिला को सरस्वती का अवतार कहा गया, महिला को लक्ष्मी का अवतार कहा गया, महिला को दुर्गा का अवतार कहा गया। दूसरी तरफ, हम महिलाओं को सिर्फ़ एक मनोरंजन का साधन समझते हैं जबिक ऐसा नहीं होना चाहिए।

महोदया, आज मैं यह कहना चाहूंगा कि जब उत्तर प्रदेश में बहुजन समाज पार्टी की सरकार थी तो बहन कुमारी मायावती जी ने बच्चियों की भ्रूण हत्या पर रोक लगाने के लिए उन्होंने कठोर कदम उठाया था क्योंकि आजकल मशीनें यह बता देती हैं कि गर्भवती औरत के पेट में बच्ची है या बच्चा। अगर बच्ची है तो उसकी भ्रूण हत्या करा देते हैं और बच्चा है तो मिठाई खाते घर चले आते हैं। इसलिए इसे रोकने के लिए उन्होंने कहा कि जो गरीब लोग हैं, अधिकांशतः इनके यहां ऐसा होता है। इसलिए हर समाज, हर धर्म और मज़हब के गरीबों के लिए उन्होंने एक व्यवस्था दी कि जिस दिन किसी भी गरीब के घर कोई लड़की पैदा होगी तो उस के नाम से बीस हजार रुपया अठारह वर्षों के लिए फिक्स हो जाएगा। जब वह लड़की अठारह वर्ष में बालिग हो जाएगी, शादी करने लायक हो जाएगी तो अपने मां-बाप के ऊपर बोझ नहीं बनेगी। उतने पैसे में गरीब अपने बच्चियों की शादी कर लेगा। इसी तरह से, उनकी पढ़ाई-लिखाई के लिए भी किया गया। उन्होंने हाई स्कूल आज पास कर लिया तो कल पढ़ाई छुड़ा दी जाती है लेकिन माननीय बहन कुमारी मायावती जी ने कहा कि जो लड़की हाई स्कूल पास कर के ग्यारहवीं कक्षा में प्रवेश लेगी, उस को पन्द्रह हजार रुपया और एक मोटर साईकिल दी जाएगी। जब एक साल के बाद वह बारहवीं कक्षा में जाएगी तो उस को दस हजार रुपया दिया जाएगा तािक वह अपने मां-बाप के ऊपर निर्भर न रह कर अच्छी तरह से अपनी पढ़ाई

कर सके। इसलिए आज केवल चर्चा ही नहीं करना है, बल्कि आज हमें इन के लिए इस तरह की योजनाएं बनाना है जिससे ये आत्मनिर्भर हो सकें।

हम सशक्तीकरण की बात तो करते हैं लेकिन आज जो घटनाएं घट रही हैं चाहे वे दिल्ली में घटीं, चाहे देश के किसी भी कोने में घटीं, यह शर्मनाक घटना है। इस पर अंकुश लगाना चाहिए। इस के विरुद्ध कड़े कदम उठाने चाहिए। इन के आगे बढ़ने के लिए कदम उठाने चाहिए। जब हम लोग पढ़ाई कर रहे थे, उन दिनों हमारी क्लास में लड़कों से ज्यादा लड़कियां थीं और वे पढ़ने में भी सबसे ज्यादा तेज थीं। आज अगर महिलाओं को अवसर दिया जाए तो वह किसी से पीछे नहीं हैं। लेकिन उन्हें अवसर नहीं मिलता है। आज साक्षात आप हमारे सामने स्पीकर की कुर्सी पर बैठी हैं। हमारी प्रतिपक्ष के नेता श्रीमती सुषमा स्वराज जी हैं और तमाम यहां महिला मंत्री हैं। अभी यहां श्रीमती सुशीला सरोज जी बोल रही थीं। हमारी पार्टी की चार महिलाएं हैं। आज हर क्षेत्र में महिलाएं आगे बढ़ रही हैं और उनको आगे बढ़ाने की जरूरत है।

अध्यक्ष महोदया, मैं आपसे यह अनुरोध करूंगा कि आप सरकार के ऊपर इस तरह का दबाव बनाएं कि सरकार इसके लिए कुछ नीति एवं नियम बनाए, जिससे महिलाओं के ऊपर जो जुल्म एवं ज्यादती हो रही है, वह कम हो, उनका शोषण कम हो। उन्हें हर क्षेत्र में आगे बढ़ने का मौका मिले।

अध्यक्ष महोदया, इसी बात के साथ हम आपका आभार व्यक्त करते हुए अपनी बात समाप्त करते हैं।

DR. KAKOLI GHOSH DASTIDAR (BARASAT): Madam Speaker, please accept sincere appreciation from my Party towards your laudable efforts for empowering women. Today is a very special day for women all over the world.

Nahi samanya naari

jodi rakho parshe more sankate,

sansaye sammati dao jodi kathina brate.

Thus spoke Chitrangada, the warrior princess of Manipur, through our Nobel Laureate poet Rabindranath Tagore. What did Chitrangada say?

"I seek to tread the meadows of this universe by your side,

I seek to tread the universe by your side in dream and reality,

With equal right and responsibility,

During peace and strife, with due respect."

That is the idea of every woman today in our nation, in the world. We want respect. We want rights along with responsibility. And today's woman has proved it. Eighth of March we celebrate as International Women's Day, in keeping with the struggle and success of Clara Zetkins who demanded equal rights, equal wages for equal work for women and she succeeded.

My appeal to you, my appeal to this House, my appeal to the whole universe is: let us celebrate womanhood throughout the year. Let us respect women throughout the year. Let us treat women as equal to the men folk. I appeal to the collective consciousness of the nation to respect women.

The strangest part is that we forget that the universe will stop, societies will stop and the nations will stop functioning if women do not perform a particular duty, which men cannot. Men can never become mothers: women can. The women are mothers. वे बच्चे को पाल-पोस कर बड़ा करते हैं। चूल्हा-चक्की करते हैं, खेत में काम करते हैं, मजदूरी करते हैं, बोझ उठाते हैं और बड़ा करके वह जिस सोसायटी को बनाती है, वहीं सोसायटी उसको काटने को दौड़ती है।

This is shameful. The collective consciousness of the society should treat women as their own.

To quote another poet:

Vidushi Maitreyi, Khana Leelavati,

Sati Savitri, Kanya Arundhati

Bahu Beerbala, Birendra Prasuti,

Amra taderi santati.

Anale dahiya, rakhe ja ra maan,

Pati putra saathe sukhe tyaje praan.

Amra taderi santati.

Think of Maharani Padmini. She gave up her life to safeguard the respect of the nation, of the clan she was fighting for. Think of Savitri who fought to get back her husband. You have to remember all these who fought for the prestige, for the valour, for the respect. Today these women are not being seriously taken care of. It is shameful that today in our country when every single girl and woman speaks in the voice of

Chitrangadha, she is not taken seriously; she is not even allowed to live. She speaks in the same words before and after birth, but she is not even allowed to born. Today in our country, we are having female foeticide every day. We have to resolute from this august House today to mete out severe punishment to those erring-specialists who kill these little foetuses in utero. But the strangest part is, at a particular time when the female foeticide takes place, the external phenotype of the baby is not even formed. So, there are some erring-doctors, specialist out there, fooling the innocent women using some machines, but actually at that particular age – 12 weeks or 14 weeks or 16 weeks of pregnancy – the phenotype, that is, whether it is a boy or a girl, is not even discernable. So, this should be taken up very seriously. We cannot kill the girl child before she is born and we cannot kill the girl child after she is born, because even after she is born, she is exposed to torture. She is exposed to mal-nutrition – 70 per cent of our rural women suffer from anaemia. The only answer to treat this anaemia is to give little bit of grams, little bit of iron and folic acid. But she is not getting that. She is working. To keep her family hearth burning, she herself is burning in the hearth and nobody is taking cognizance of that fact.

We have to seriously request the Ministry of Health to take care of this female foeticide. We are nowhere near meeting the MDG-5, which we were supposed to meet by 2015, to bring down the maternal mortality rate, to bring down anaemia in women – to address the maternal mortality rate so that we do not lose our mothers in child birth. They are trying to perform a physiological function of child birth, but we have failed there.

After birth, when a little girl is growing up every day, right from the age of two years, she is suffering at the hands of the society – voyeurism, stalking. They are abusing; they are hurling abuses at her; they are pulling her by her *dupatta*. We have seen the fight that Nirbhaya fought – what a fight! We salute from this House today, not only the Nirbhaya who lost her life, but all the Nirbhayas, who fight silently in every village, every town, every road, every school, every college and every office. Nirbhayas are fighting and we have to stand by them. We have to have a very strict rule; we have to have a very strict law. We know that we have the Ordinance; we know that we have an Amendment Bill

waiting, in this regard. But the collective conscience of the nation has to stand up and stand by Nirbhaya in her battle.

From this august House today, during this discussion I would also like to extend my gratitude to the hon. Chief Minister of West Bengal, Kumari Mamata Banerjee for declaring today, the Kanyashree Scheme by which she will be paying girl child of the BPL families, for her education, for opening the first womens' university of West Bengel.

We also have to rethink about the Armed Forces Special Powers Act, which subjects women in particular districts of particular States of this country, to shame. We also have to take care of all the women who are suffering from neglect and malnutrition; we have to give them equality..

MADAM SPEAKER: Shrimati Susmita Bauri. Kindly be brief; I have a very long list of speakers. Please be very brief.

श्रीमती सुस्मिता बाउरी: धन्यवाद, अध्यक्ष महोदया। आपने मुझे बोलने का मौका दिया इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देती हूं। आज अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस है। इस अवसर पर आपको, इधर जो सारी महिला सांसद हैं और विश्व के सारी महिलाओं को मैं बधाई देती हूं। पहले कुछ लोगों ने जो बताया है, मैं भी उनकी बात करना चाहती हूं - क्लारा जेटिकन जी। हम लोग अभी सोच रहे हैं, विचार कर रहे हैं। लेकिन, वर्ष 1908 में क्लारा जेटकिन ने इसकी शुरुआत की थी। तब उस आंदोलन में 15 हजार महिलाएं व्याप्तिल हुई थीं और यह संकल्प लिया गया था कि हम लोगों को काम करना है। उस समय काम करने पर कोई पाबंदी नहीं थी। सारा दिन काम करना पड़ता था। उस समय उन्होंने आंदोलन की शुरुआत की थी तभी से आज यह डे मनाया जा रहा है। बहुत दिन बीत गए लेकिन आज भी देश में महिलाओं की हालत ठीक नहीं है। सारे मेम्बर्स ने इसके बारे में अच्छी तरह से बताया है और मैं भी बता रही हूं, चाहे सामाजिक स्थिति हो या आर्थिक स्थिति कहीं भी महिलाएं ठीक से नहीं हैं। हम लोग जानते हैं कि जब एक बच्ची का जन्म होता है तो बहुत क्रिटिसाइज होता है और उसे हम सभी लोग जानते हैं। बहुत सारी घटनाएं घट रही हैं। सरकार का कानून भी है लेकिन वह काम हो रहा है, डायग्नोस्टिक सेन्टर में वह काम हो रहा है। इसलिए आज महिला-पुरुष का अनुपात इतना कम आ गया है। 1000 पुरुष हैं तो 970 महिलाएं है। किसी-किसी स्टेट, जैसे राजस्थान और हरियाणा में यह अनुपात और भी घट गया है। जब हम लोग वर्ष 2025 में पहुंचेंगे तो ऐसा होगा कि एक लड़के को शादी करने के लिए एक लड़की नहीं मिलेगी। ऐसा समय आ रहा है। इसलिए बहुत अच्छे से सोचना चाहिए कि समाज को ठीक करना है तो समाज में महिलाएं भी होनी चाहिए। समाज में हमारा आधा हिस्सा है। लेकिन, हम लोग उस जगह से अभी बहुत दूर हैं।

हम लोग देखते हैं कि महिला मालनूट्रिशियंस का भी शिकार है। वह खाना खाती नहीं है। वह सब को खाना खिलाती है। अभी महंगाई भी बढ़ गई है। हम लोग गैस के लिए चिल्ला रहे थे। यह मिलना चाहिए। सरकार से मैं भी मांग करती हूं कि मालनूट्रिशियंस तभी बंद होगा जब हम बच्चे को अच्छे से खिला सकेंगे। शिक्षा में भी महिलाओं की साक्षरता दर बहुत ही कम है। केरल और मिजोरम में तो महिलओं की साक्षरता दर अच्छी है, उधर आर्थिक स्थिति भी ठीक है। वहां वे लोग आत्मनिर्भर हैं। लेकिन, जब हम अन्य राज्यों पर गौर करते हैं तो वहां हालत बहुत ही खराब है। हम लोगों का तो ग्रुप है लेकिन ग्रुप के जरिए उन लोगों को उतना कुछ नहीं मिलता है। जैसे, वे घर में कुछ बनाती हैं लेकिन उसे कहां बेचेंगे। बहुत सारी समस्याएं हैं। स्कीम्स हैं लेकिन उनका इम्पलिमेंटेशन अच्छी तरह से नहीं होता है। हम लोग आईसीडीएस सेन्टर पर गौर करें तो उसमें भी आप देखेंगे कि गवर्नमेंट का पैसा जा रहा है। मालनूट्रिशियंस की समस्या बहुत बड़ी है। अगर स्कीम्स को ठीक से लागू करेंगे, तभी यह कम होगा और हमारा समाज स्वस्थ होगा। माननीय मंत्री जी बैठी हैं। अभी उन्होंने पैसा भी बढ़ाया है। उसको थोड़ा अच्छे-से चलाना है।

आशा वर्कर्स तो हैं। वे लोग काम करती हैं। जनसंख्या के मामले में भी हमारा भारत आगे है। ''आशा'' महिलाएं काम करती हैं। एक बच्चे का जन्म होगा तो उन्हें तीन सौ रुपया मिलेगा। वे लोग कहते हैं कि आप दो बच्चा करोगे तो 600 रुपये मिलेंगे। वे लोग ज्यादा पैसे के लिए ज्यादा बच्चे के बारे में कहेंगे। ऐसी बात आ गई, इसको आपको देखना है।

महिला रिजर्वेशन जो बिल राज्य सभा में पारित हो कर पड़ा हुआ है उसको आप यहां तुरंत लाइए। क्योंकि जब चुनाव आ जाता है तो महिलाओं के लिए 33 परसेंट रिजर्वेशन की बात बोलते रहते हैं।...(व्यवधान) लेकिन वास्तविक में यह नहीं होता है।

अध्यक्ष महोदया : कृपया आप अपनी बात समाप्त करिए।

श्रीमती सुस्मिता बाउरी: इसे जल्दी लाना चाहिए। दूसरे बिल पास हो जाते हैं। एक और बात है जिसे मैं कहना चाहती हूं। दिल्ली में एक घटना घटी है। हम लोग निर्भया का नाम ले रहे हैं।...(व्यवधान) ऐसी बहुत सारी घटनाएं देश में घटी हैं। जस्टिस भार्गव कमेटी की जो रिपोर्ट है, जिसको आप लोग डाइलूट कर रहे हैं। उसकी पूरे सिफारिशों को आप लीजिए। यह मेरा आग्रह है। तभी, हम लोगों को अच्छा समाज मिलेगा, उन्हें इज्जत मिलेगी, नहीं तो कड़ा से कड़ा कानून रह जाएगा, महिलाओं के लिए कानून तो बहुत सारे हैं लेकिन उनसे सजा कितने लोगों को मिलती है। यह मैं जानना चाहती हूं। सब को तभी अच्छी तरह से समझ में आएगा और सब कानून का लाभ उठा सकेंगे हैं। ...(व्यवधान) कई राज्यों में महिलाओं के ऊपर बहुत सारी घटनाएं घट रही हैं। इसिलए स्टेट की गवर्नमेंट्स, जैसा ये बता रहे थे कि ये स्कीम्स ले रही हैं लेकिन इज्जत भी देना चाहिए तभी स्कीम्स इम्पिलमेंट हो पाएगी और ये सही से जिंदगी जी सकती हैं। ...(व्यवधान)

श्री गुरुदास दासगुप्त (घाटल): मैडम, हम आपको महिला दिवस पर बधाई देते हैं।

अध्यक्ष महोदया : बहुत धन्यवाद।

श्री गुरुदास दासगुप्त: हम आपको बधाई देते हैं, सुषमा जी को बधाई देते हैं, सोनिया जी को बधाई देना चाहते थे लेकिन वे अभी यहां नहीं हैं, फिर भी हम उन्हें बधाई देना चाहते हैं। हमारे हाउस में आज तीन पर्सनैलिटीज़ हैं who have a dominating influence. लेकिन हम एक बात शर्म के साथ बोलना चाहते हैं that we are living in a man-dominated society. Please accept it. This man dominated society is reflected in political, economic and social exploitation of the womanhood of the country... (Interruptions)

अध्यक्ष महोदया : क्या कर रहे हैं? आप बैठ जाइए।

...(व्यवधान)

MADAM SPEAKER: Please do not do all this.

SHRI GURUDAS DASGUPTA: Madam, it is neither fair nor honourable to politicalize such an important occasion.

अध्यक्ष महोदया : आप बोलिए।

...(व्यवधान)

श्री गुरुदास दासगुप्त : हम मानते हैं कि हमारे पोलित ब्यूरो में एक वूमेन है।...(व्यवधान)

MADAM SPEAKER: You do not have to react. आप जिस विषय पर बोल रहे थे, बोलिए।

...(व्यवधान)

श्री गुरुदास दासगुप्त: मैडम, सवाल क्या है। सवाल है rape is not the only issue. Physical assault is not the only issue. The basic issue is that woman of the country is being exploited in all spheres of life. महिलाओं को उनके काम का दाम नहीं मिलता। महिलाओं को पुरुषों से कम मजदूरी मिलती है। महिलाओं के लिए मेटरनिटी बैनीफिट नहीं है। महिलाओं के लिए काम-काज की जगह में सुरक्षा का इंतजाम नहीं है। They are not safe in Delhi alone. They are not safe anywhere in the country. They are not safe in their working place. साथ ही यह भी कहते हैं unfortunately woman has been made a commercial object by the society. आप न्यूज़ पेपर देखिए half-clad woman is being shown. आप टेलीविजन देखिए half-clad woman is there. क्रिकेट मैच देखिए, 20-20 क्रिकेट मैच, चियर गर्ल्स हैं। At least, stop this. Let us ask the Government to stop, at least, this. What I am saying is

that freedom of the country for 63 years has not given freedom to the woman to live. We believe there should be a movement by the women. There should be awakening of the women and we must support that. I am ashamed to say that this male dominated society is endangering the existence of life.

Nobody has said as to what is the proportion of women in our country. There is adverse sex ratio. The number of women is declining in the country. Women are less in number in this country than that of men. This is the consequence of the shameful social atrocity and economic exploitation in the country.

Therefore, let us not make this day a ritual. It has become a ritual. Look at the House. This day must be a day for dedicating ourselves to the struggle for the liberalization of women from poverty, from exploitation and from physical assault. Only then, this day can be fruitful for our discussion in the Parliament.

DR. M. THAMBIDURAI (KARUR): Madam Speaker, thank you very much for giving me this opportunity to participate on a subject which initiated an effort to give some kind of message to the country.

As you said, on this International Women's Day, we have to take some pledge to see that good education is given to female. They are empowered and are lifted in the society. I come from a District called Krishnagiri which was formerly called Dharmapuri. In those days, when female infants are born, they used to feed poisoned milk resulting in the death of those female children. That kind of a system prevailed in my district in those days. As Shri Dasgupta has said, female population is going down because such kind of a thinking is there among the people. When female babies were born, they want to kill them which used to happen in those days. To emancipate this kind of a problem, our honourable Chief Minister of Tamil Nadu, Dr. Amma, introduced the Cradle Baby Scheme to save female children. It was inaugurated in Dharmapuri itself which I want to mention here. The scheme is important because it was introduced to save the female babies.

As he said, we have to give good education to them. For that purpose, as soon as our Chief Minister assumed office for the third time, she introduced many schemes to help women. For example, free education is given to girls to study in post graduation courses in colleges as well as to encourage them for higher education courses. When their marriage takes place, the Government has announced a scheme to give four grams of gold for purchasing *mangal sutra* and Rs. 25,000 as cash towards marriage expenses. Apart from that, if the girl is a graduate, she is given Rs. 50,000 as a grant. There are many such schemes which have been introduced.

Many hon. Members spoke about Women Reservation Bill in this House. I am very proud to say that when I was the Minister of Law in 1998-99, as per the advice of my leader, Dr. Jayalalitha, I introduced or piloted the Bill in this very House. At that time, hon. Vajpayee was the Prime Minister and I had introduced it during his period. That Bill is still pending. The House must seriously think about it and that Bill has to be passed to give ample opportunities to women. It is a very important point which I am requesting in this House.

Apart from that, to empower women, they should participate in politics also. I am very proud to say that our leader is a woman. She is taking bold steps in maintaining law and order in our State.

In the local bodies in our State also, out of ten Corporations, at least six are headed by women as Mayors. Therefore, in that way, our Party is encouraging women by giving them more opportunities in participating administration also.

SHRIMATI J. HELEN DAVIDSON (KANYAKUMARI): Madam, on this wonderful occasion of the celebration of International Women's Day, I, first of all, wish you Madam Speaker, UPA Chairperson, Madam Sonia Gandhi and Leader of Opposition, Shrimati Sushma Swaraj and all women Members of this august House and each woman in the world.

Madam, I take this opportunity to congratulate and appreciate the Government of India for giving more opportunities for women in all fields including politics. Every year, there is a strong request to provide 33 per cent reservation for women while contesting elections, be it Parliament election or Assembly election. On behalf of women community, I urge the Government to fulfill this genuine demand. I urge the Government to fulfill the demand by passing the Women Reservation Bill during this Session itself. The entire women community of India will ever be grateful to the Union Government of India if the Bill is passed in Lok Sabha.

The former Chief Minister of Tamil Nadu, Kalaignar, gives importance to women of Tamil Nadu by providing record rights to women to move out from home to public places. Our Indian women prepare special dishes for men but do not get equal rights.

In recent times, attacks and harassment of women are on rise and the people are committing the same mistake. In order to prevent physical harassment of women, the Government should instruct all the State Governments and Department of Police to pay special attention by taking action on complaints given by women so that women will feel free to come out in the public.

The Father of our Nation, Mahatma Gandhi fought and dreamt for the freedom of women in Independent India. Every one in this House must take a resolution to grant full freedom to women for their empowerment and growth in their day-to-day activities.

Madam, I once again wish the whole House on the occasion of International Women's Day.

MADAM SPEAKER: Shri Thol Thirumaavalavan may be allowed to associate with Shrimati Helen Davidson.

श्रीमती सुमित्रा महाजन (इन्दौर): धन्यवाद, माननीया अध्यक्ष जी, आज महिला दिवस का दिन है। महिलाओं ने जो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संघर्ष किया है, कहीं-न-कहीं उस संघर्ष को पहचान देने वाला आज का दिन है। आपने बिल्कुल सही बात कही, माननीया सुषमा जी ने और सभी लोगों ने अपनी बात रखी है। आपने जो बात कही कि केवल जो यहां-वहां हम थोड़ी-सी महिलाएं दिखती हैं, वे महिला नहीं हैं, खेत में काम करने वाली महिलाएं और अपने घर में बैठी महिलाएं, कहीं-न-कहीं ये सब नारी शक्ति को एक पहचान देने की बात है। कभी-कभी मैं सोचती हूं कि नारी शब्द में ही वह बात है- न अरि, किसी की शत्रु नहीं है। तो नहीं किसी की अरि, वह है भारतीय नारी, फिर भी युगों-युगों से रही ताड़न की अधिकारी। यह प्रश्न आज सबके सामने है कि फिर भी ऐसी स्थिति क्यों है? जब हम महिला दिवस की या महिला उत्थान की बात करते हैं, तो किसी को ऊँगली पकड़कर लाना नहीं है। उसमें वह स्वाभिमान जगाना है, उसे एक आत्मविश्वास देना है, उसे एक पहचान देनी है कि वह आगे आने के लिए खुद को पहचाने। वास्तव में, आज भी वे दहलीज़ पर खड़ी हैं, आगे जरूर कुछ महिलाएं आयी हैं। लेकिन, आज भारत की स्त्री दहलीज़ पर खड़ी होकर बाहर देख रही है। अपने आप को पहचानने की कोशिश कर रही है। वह पहचान उसे देना है। अगर वह छोटा-मोटा काम भी करती है, तो उसमें आत्मविश्वास भरना है।

महोदया, मुझे याद है, जब हमारी सरकार थी, माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी प्रधानमंत्री थे, कृष्णा जी भी जानती हैं, हमने एक स्त्री-शक्ति पुरस्कार की स्थापना की थी। उस समय मुझे याद है कि उस स्त्री-शक्ति पुरस्कार में तिमलनाडु की एक सामान्य महिला थी। वह खेतिहर मज़दूरों के लिए संघर्ष करने वाली महिला थी। उसे ढूंढ करके पुरस्कार दिया गया था कि वह अच्छा काम कर रही है। जब वह महिला पुरस्कार लेने आयी, तो उसके पके हुए बाल, मेहनत किया हुआ दुबला शरीर, पाँव में खाली स्लीपर थे। इस प्रकार जब वह महिला पुरस्कार लेने आयी, तो इस देश के प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने स्टेज पर उस महिला को झुककर प्रणाम किया। यह हमारे देश का चिरत्र है। आज कहीं-न-कहीं इसी चरित्र को कायम करने की बात है। मैं बहुत लम्बी बात नहीं कहकर, बस इतना ही कहना चाहूंगी कि आज स्त्री बाहर आ रही है, अपनी दुर्बलता को दूर करके बाहर आ रही है, दुर्बलता को झटक-फटक कर, शिक्षा-दीक्षा, सामर्थ्य समेटकर ये वह कर रही है, अग्रसर हो रही नारी, विश्व के कैनवास पर अपने सामर्थ्य की

08.03.2013 74

पहचान बनाने। जैसा सुषमा जी ने कहा कि इतना ही करना है कि उसे सुरक्षा देना है। वह ज्यादा कुछ नहीं चाहती है। मैं आपकी बात की पुष्टि करती हूँ, सुषमा जी की बात की पुष्टि करती हूँ और सदन को नहीं, इस देश के सभी लोगों को, इसमें स्त्री और पुरुष में अलग भाव नहीं करती हूँ। लेकिन, समाज में एक वातावरण चाहिए। क्या चाहती है स्त्री? मैं इतना ही कहना चाहती हूँ कि

" नहीं चाहती वह नरम कालीन, लेकिन काँटे तो मत बिछाओ। बनाएगी वह रास्ता खुद अपना, लेकिन बीच रास्ते में न छेड़ो, न सताओ।"

यही वह नारी आज अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर कहती है। यह अगर बन जाए, तो हम बोलते हैं कि भारत को महाशक्ति बनने से कोई नहीं रोक पाएगा। यही मुझे कहना है।

MADAM SPEAKER: Shrimati Krishna Tirath

... (Interruptions)

महिला और बाल विकास मंत्रालय की राज्य मंत्री (श्रीमती कृष्णा तीरथ): अध्यक्ष महोदया, आज के दिन...(व्यवधान)

SHRI H.D. DEVEGOWDA (HASSAN): Madam, I want to say a few words.... (Interruptions)

MADAM SPEAKER: Hon. Minister, are you yielding?

... (Interruptions)

MADAM SPEAKER: She started speaking. She is not concluding.

SHRI H.D. DEVEGOWDA: I have an impression that you will give me a chance. I am sorry.

MADAM SPEAKER: There are other Members to speak. वह समाप्त नहीं कर रही हैं, इंटरवीन कर रही हैं। It is not ending.

SHRI H.D. DEVEGOWDA: Thank you very much.

श्रीमती कृष्णा तीरथ: अध्यक्ष महोदया, आज ही महत्वपूर्ण दिन है। अंतराष्ट्रीय महिला दिवस पर मैं सरकार की ओर से और अपनी ओर से, जैसा आप सभी ने कहा है, अपने देश एवं विदेशों में रहने वाली महिलाओं को मुबारकवाद देती हूं। उनकी शक्ति को पहचाना है, शक्ति को जाना है। यहां माननीय सदस्यों ने बहुत सी बातें कही हैं, उनमें उनके मन का दर्द, महिला का दर्द उभरकर आया है। मुझे यह मालूम है कि देश की आजादी के बाद हमारा देश पहला ऐसा देश है

जिसने महिलाओं को मताधिकार दिया और चुनने के लिए आजादी दी गयी। बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर जी ने संविधान में उन्हें बराबर का अधिकार दिया। महात्मा गांधी जी ने कहा कि इस देश में हिंसक प्रवृत्तियों को दूर करके अहिंसा को लेकर कोई चल सकता है, तो वह नारी शक्ति है, जो अहिंसा को लेकर आगे बढ़ सकती है। इसीलिए इस सरकार में मैंने अपने मंत्रालय से अहिंसा मैसेंजर क्रिएट किए हैं। हमारी 1.5 मिलियन निर्वाचित महिला जनप्रतिनिधि हैं पंचायती राज में, लोकल बॉडीज में, जो देश में अहिंसा मैसेंजर बनकर अलग-अलग गांव स्तर पर, ट्राइबल एरियाज में, अनुसूचित जाति-जनजाति एरियाज में जाकर महिलाओं को सशक्त करने की बात कर रही हैं। इसके साथ ही महात्मा गांधी जी ने कहा था कि अहिंसा में अग्रसर रहेंगी महिलाएं। राजीव गांधी जी ने 33 प्रतिशत आख्क्षण पंचायती राज में दिया, लोकल बॉडीज में मिला और अब बहुत सारे राज्यों में, दिल्ली जैसे राज्य में 50 प्रतिशत आख्क्षण महिलाओं को देने से महिलाएं आगे उभरकर आई हैं। गुरुदास दासगुप्ता जी चले गए, उन्होंने कहा था कि हमारा समाज मेल डोमिनेटिंग सोसाइटी रहा है और मैं इसका उदाहरण बताती हूं। जितने भी हमारे शब्द हैं, अगर हम कहते हैं "फीमेल", तो "मेल" उसमें समाहित है। कुछ शब्द ऐसे हैं कि महिलाओं में मेल समाहित है, वह ताकत उस महिला में है कि वह सबको समाहित करके चलना चाहती है।

फीमेल फोएइटीसाइड की जब बात आई, तो मैंने एक मैसेज दिया है - "लड़की नहीं है, तो संसार नहीं है।" आप खुद विंतन कीजिए, मंथन कीजिए कि अगर लड़की पैदा नहीं होगी, तो संसार नहीं बनेगा, संसार बन नहीं सकता है। इसीलिए "No girl, no world" का स्लोगन लेकर पूरे देश भर में, हर जिले में हमने नेशनल मिशन एम्पावरमेंट ऑफ वीमेन शुरू किया है। मैं समझती हूं कि इस प्रोग्राम को लेकर हमें आगे बढ़ना है। आज हम सबला की बात करते हैं, नारियां सबला हैं। हमने एक स्कीम शुरू की थी - राजीव गांधी एम्पावरमेंट ऑफ एडोलसेंट गर्ल, सबला। यह अभी पायलट स्कीम है। देश भर में लाखों सबला निकलकर आई हैं, जिनमें यह शक्ति आई है कि वे अपनी बात को बोल सकती हैं, अपने दर्द-दुख को बता सकती हैं, लेकिन आज आदमी का माइन्ड सेट चेंज करने की जरूरत है। मैंने एक विचार और किया है, जिसे मैं आपके माध्यम से सदन को बताना चाहती हूं कि हम सक्षम स्कीम लेकर आना चाहते हैं - राजीव गांधी एम्पावरमेंट ऑफ एडोलसेंट ब्वाय, जिसका नाम रखेंगे - सक्षम। उन लड़कों को, जो अभी बच्चे हैं, जिनके चित्त में क्या सोच घरवाले डालते हैं, पुरानी परम्परा, जो मेल डोमिनेशन की बात करते हैं, जो हमारा पुरूष प्रधान देश है। इसमें घर में कभी-कभी उसके साथ भेद होता है। लड़की को दूघ नहीं मिलेगा, लड़के को दूध मिलेगा। वड़का काम नहीं करेगा, लड़की काम करेगी, इस बात को बदलना होगा। देश भर की समस्त महिलाएं, चाहे वे शहरों में रहती हैं, ग्रामीण क्षेत्रों में रहती हैं, दुरदराज के ट्राइबल एरियाज में रहती हैं, जंगलों में रहती हैं या कहीं भी हैं, उनको

आत्ममंथन करना पड़ेगा कि हमें महिला को सशक्त करने के लिए महिला की ही जरूरत है। जब हम महिलाओं के बार में फीमेल फीटिसाइड की बात करते हैं, उस महिला को बाकायदा मुकाबला करना चाहिए कि यह चीज नहीं होगी, मैं बाहर नहीं जाऊंगी, मैं चेकअप नहीं कराऊंगी। कई बार मैंने देखा कि उसके घर के जो मेल मेम्बर्स हैं या उसकी सास ही है, वह भी एक महिला है, उन्हें भी आत्मचिन्तन और आत्ममन्थन करना पड़ेगा, महिला को सशक्त बनाने के लिए। इसलिए हम सबको एक होकर इस काम को आगे बढ़ाना होगा। उन्होंने कहा कि महिलाएं सुरक्षित नहीं हैं। हमने वर्किंग प्लेस में काम करने वाली महिलाओं के लिए जो प्रोटेक्शन आफ विमेन अगेंस्ट से क्यान हेरासमेंट एट वर्क प्लेस बिल है, दोनों सदनों ने बहुत अच्छी तरह से इसे पास किया है। कामकाजी महिलाएं चौहे संगठित क्षेत्र में हों या असंगठित क्षेत्र में हों, जहां–जहां भी वे काम करती हैं, उन्हें इस एक्ट के माध्यम, जो हम बना रहे हैं, रूल्स बना रहे हैं, से सुरक्षा प्रदान की जाएगी। लेकिन जो हमने नेशनल मिशन एम्पावरमेंट आफ विमेन 2010 में शुरू किया है, उसके माध्यम से हर जिले में हमने एक-एक परफार्मा दिया है कि आज महिला की क्या स्थिति है और हम उसे ट्रेनिंग देकर ट्रेंड करते हैं। उसे घर की ट्रेनिंग, स्किल ट्रेनिंग जो दे रहे हैं, छः महीने के बाद उसका क्या स्तर बढ़ा है, इस बात पर हम लोग काम कर रहे हैं। सरकार भी इसमें सतर्क रहेगी।

मैं आपके माध्यम से पुनः आप सभी को यह जो वर्ष है, यह महिला की सुरक्षा के लिए डेडिकेट करें और हम सब महिला और पुरूष मिलकर उसे सुरक्षित माहौल दें, उसे पलने दें, बढ़ने दें और अपने कदमों पर खड़ा होकर इस देश का अच्छा नागरिक बनने दें।

SHRI H.D. DEVEGOWDA: Hon. Speaker, you have given me the opportunity to participate in this vital issue. You have given opportunity to all of us to apply our mind to think as to how the atmosphere has been so polluted today, after the Delhi Gang rape, which has made the entire international community to express it as a shameful act. What this House has to do, and what steps the Government has to take in this aspect, is a major issue. I don't want to go into the details of the Ordinance that has been promulgated. But at the same time, I would like to state that the responsibility of the Central Government and State Government is more important on this occasion. In my humble opinion, I think, the House should know as to what steps some of the States have taken. I was very closely watching the debate and the speeches of the hon. Leader of the Opposition and several sisters on the other side.

Madam Speaker, I had been in power in Karnataka for a short period of 18 months when we had given equal rights to women; we had given reservation of 50 per cent to the

teaching staff, starting from the primary school up to the university level. I must recall that we wanted to give reservation in the very same House when I was heading the Coalition Government – I have myself moved Constitutional (Amendment) Bill for giving 33.3 per cent reservation for women in Legislatures. Not only that, all the jobs in the Government, starting from constable - in all direct recruitments made by the Government - we have given 33 per cent reservation for women. We have extended all educational benefits to the tune of 33.3 per cent. I am not going to satisfy with the steps we have taken in those 18 months. I have also introduced a scheme for girl child. Our Government deposited Rs.10,000 in her name the day she was born; and at the time of marriage, it will be Rs.3 lakh or Rs.3.50 lakh, according to the rate of interest; and the same should be utilized for the marriage of that girl.

Today, one of the most important things which I would like to bring to the notice of the House, through you, Madam, is about the advertisements with sexual connotations, which spoil the mind of young boys and girls. This is being done for the sake of earning the revenue. The Information Department is also handling this. It is the most important thing. So, my humble opinion is that somehow it should prevail that not to demonstrate such types of issues in the electronic media or in the advertisement which is going to spoil the minds of young boys.

It is very much essential and the need of the hour to stop such incidents of rape whether at the State level or at the Central lever Tam not going to discriminate. For the first time we are seeing such types of shameful acts. This was one of the worst years where we are facing a situation where the entire country has witnessed such types of shameful acts, particularly, the capital city of Delhi.

MADAM SPEAKER: Please conclude. Thank you so much.

SHRI H.D. DEVEGOWDA: There is a global reaction to this. In this connection, let the Government take any radical steps for which we are all going to cooperate. Madam, you have given us an opportunity to apply our minds to cooperate with the Government and to extend all our support whether for reservation or for any radical steps which the House is

going to take to provide equal rights to women and not to have any type of further sexual harassment to my sisters and daughters.

Madam, our philosophy is *Matra Devo Bhava*. That is our basic philosophy. We will remember that mother is God; she has given birth to us. It is very important and essential thing to see how further we move to protect the interests of our sisters and daughters. It is essential to pledge ourselves today on this International Women's Day.

डॉ. रघ्वंश प्रसाद सिंह (वैशाली): अध्यक्ष महोदया, नेता विपक्ष सहित सभी नेताओं ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर अपने उद्गार व्यक्त किये हैं, हम उनके समर्थन में हैं। महोदय, शास्त्र और अपनी संस्कृति के मुताबिक मैं देख रहा हूं कि ''यत्र नारी पूजयन्ते तत्र रमन्ते देवता।'' देवताओं के मंत्रिमंडल में सबसे ताकतवर पोर्टफोलियो महिलाओं को ही दिया गया। दुर्गा जी शक्ति की देवी, लक्ष्मी जी धन की देवी और सरस्वती विद्या की देवी के रूप में पूज्य हैं। पुराने जमाने से हमने नारी को महत्वपूर्ण स्थान दिया। आज से ढाई हजार वर्ष पहले भगवान बुद्ध वैशाली में आये। उन्होंने कहा था कि "वज्जीनाम शत अहरिहान्याधम" seven virtues of Vajjiyan leading not to decline. जिस समाज में सात धर्मों का पालन होगा, वह समाज तरक्की में जाएगा, उसकी अवनति नहीं होगी। सात धर्म में एक है कि जिस समाज में महिला और बच्चे सूरक्षित होंगे, वह समाज तरक्की करेगा। नारी सशक्तिकरण आज लोग हमें सिखा रहे हैं लेकिन नारी सशक्तिकरण वैशाली में शुरु हुआ था। भगवान बुद्ध के समय बुद्धिज्म में नारी को बराबरी का अधिकार और प्रवेश मिला था। अभी मैं देखता हूं कि तमाम महत्वपूर्ण और ताकतवर पदों पर महिलाएं विद्यमान हैं, फिर भी महिलाओं की दुर्दशा है। कारण क्या है और कैसे इसका समाधान होगा? लोग भाषण में बता रहे थे कि इसका कारण है पुरुष प्रधान समाज और वातावरण। जन्म से लेकर महिला को दबाया जाता है, भ्रूण हत्या की जाती है, बड़े होने पर पढाई में बराबर का अधिकार नहीं दिया जाता, घर में दासी की तरह बर्ताव और अबला-अबला कहकर उसे दबाया जाता है। लेकिन ऐसा नहीं है और दुनिया भर के समाजशास्त्री, ज्ञानी, ध्यानी, वैज्ञानिक, सभी का कहना है कि नारी में नर से कम क्षमता नहीं है। उन्हें दबाकर रखा गया है। कन्यादान, पुरुषदान, गौदान, स्वर्णदान आदि हमारे समाज में किया जाता है। हमारे देश में दहेज प्रथा भी बहुत बड़ी बुराई है। इन सामाजिक बुराइयों का मेरी समझ में इलाज क्रांति से ही हो सकता है। जैसे अमीर गरीब में भेद समाप्त करना चाहिए, ऊंच नीच में भेद समाप्त करना चाहिए, बड़े छोटे में भेद खत्म करना चाहिए, काले गोरे का भेद खत्म करना चाहिए, उसी तरह से नर नारी में समता होनी चाहिए और इनमें भेद समाप्त होना चाहिए। हिंदुस्तान का माथा दुनिया के देशों में नीचे हुआ जब दिल्ली की घटना घटित हुई। लोगों ने कहा कि फांसी क्यानून बनाओ। लोगों ने नारे लगाए कि हमें न्याय चाहिए। सारा देश गुरसे से भर गया। उसके बाद भी कोई असर नहीं दिखाई दे रहा है। फिगर्स बताती हैं कि कोई असर नहीं हुआ। हमने कैसे समाज को

बनाया? हमें ऐसा समाज बनाना पड़ेगा जिसमें नर नारी समता हो और उन्हें बराबरी का अधिकार देना चाहिए। महिलाओं पर जो जुल्म हो रहे हैं जैसे छेड़खानी, विश्वासघात, बलात्कार। ये तीन अपराध महिलाओं के साथ हो रहे हैं। जब तक ये जुल्म जड़ से समाप्त नहीं होंगे, जब तक समाज में इस तरह की सोच विकसित नहीं होगी, तब तक हिंदुस्तान दुनिया के सामने अपना माथा ऊंचा नहीं कर सकता है। आज अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर यह संकल्प लेने की जरूरत है और नर नारी समता वाली क्रांति लानी पड़ेगी। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस - जिंदाबाद।

DR. RATNA DE (HOOGHLY): Madam Speaker, at the outset, I would like to congratulate the hon. Minister Krishna *ji*, hon. Leader of Opposition Sushma *ji*, our Chief Minister Mamata Banerjee, our UPA Chairperson Sonia *ji*, all the women across the world and my mother also.

Today, the 8th March, is a special day for women, that is the International Women's Day. It is an occasion not only to celebrate but also to review as to how women face problems to assert for their place in the world and to ensure equality. This year, the focus is on violence against women. Women have been at the receiving end for ages. We often talk of women empowerment, equality of women and what not. But, what is the reality?

Women constitute 48 per cent of our country's population. If we put women and children together, they constitute nearly 70 per cent of our country's population. I would request all the hon. Members, cutting across the party line, to introspect about the improvement in the status of women in the last decade or so.

Discrimination against women has been there for centuries. In one way, it reflects our social values and ethics. A lot of introspection needs to be done on rendering gender justice in real sense of the term. There is a need to change the mindset of man. As is said somewhere correctly, we need to educate man to empower woman. If we want to remove subjugation, suppression and discrimination against women, we need to tighten the laws and make them harsh. Penalties should be enhanced considerably and we should teach a lesson to everyone who indulges in crime or violence against women and who does not think of gender justice so that they would think twice before they act against women.

There is a need to ensure good governance. If governance is good, no one dare go against women. If message goes out that anyone who commits a crime or bents rules or laws is not spared, then we can see equality, gender justice and women empowerment.

In the end, I would request all of you to dedicate yourselves wholeheartedly to surge ahead in ensuring women empowerment in real sense of the term.

DR. MIRZA MEHBOOB BEG (ANANTNAG): Thank you, Madam Speaker. I will just take one minute. The entire House has spoken on this subject in one voice. So, there is no dispute. I will just make two points.

Sushma ji has said: "The only solution to this problem is that we must instill fear in the minds of aggressors by making stringent laws. Everybody agrees on that. My question is this. Does it mean that we have to set the system right? There are loopholes in the system. Everybody wants to set it right. Everybody wants the same. The entire House says the same thing but still it is not happening. Still she is not getting justice. I think, the time has come when we have to overall or, at least, make some changes in the system. Whatever we feel, our concern will mean something to her only if she gets it on the ground. She will get it only, if we set the system right.

I would like to ask something from Sushma ji but she is not here. My colleague from TMC said and even Justice Verma said in his report: "Whether a woman belongs to Jammu and Kashmir; whether she belongs to North-East or any part of the country; she needs justice." I am grateful to Justice Verma that he had taken it up. He had said and recommended, "the rapes which take place in Jammu and Kashmir, and the rapes which take place in North East or any part of the country on women under the garb of Armed Forces Special Powers Act, they should also get justice". But they are not getting it because the people in uniform run away under the garb of Armed Forces Special Powers Act.

So, I would recommend to the Government to consider the Report submitted by Justice Verma, in which he had strongly recommended that even people in uniform should be tried under civil laws and not under Army camera. I would also recommend that woman is a woman whether she belongs to Jammu and Kashmir, North East or any part of the country, she should get equal justice.

This is my plea to the Government.

श्रीमती पुतुल कुमारी (बांका): अध्यक्ष महोदया, मैं आपको एवं सदन की सारी महिला सदस्यों को तथा सभी गणमान्य व्यक्तियों को इस शुभ दिन की बधाई देती हूं। दिल में अत्यन्त दुख के साथ मैं यह बधाई दे रही हूं क्योंकि आज का दिन नारी सशक्तीकरण का दिन है लेकिन हमारे मन में बहुत तकलीफ है। जिस स्थिति से हम गुजर रहे हैं, महिला सशक्तीकरण का समय है लेकिन फिर भी स्त्रियों की स्थिति बहुत दयनीय है।

जब हम अपने पुराने इतिहास को देखते हैं तो हम वेद पुराणों में देखते हैं कि हमारे देश में स्त्रियों को काफी ऊंचा सम्मान दिया गया। वहां पर उनको वेद के पठन-पाठन का अधिकार दिया गया। हवन करने का अधिकार दिया गया। प्राचीन काल में गार्गी और मैत्री जैसी विदुषी महिलाएं थीं। महाकवि कालिदास की प्रेरणा भी एक स्त्री ही थी जिन्होंने अभिज्ञानशाकुंतलम और मेघदूत जैसी रचनाएं लिखने की प्रेरणा दी थी। रत्नावली भी ऐसी ही एक महिला थीं जिन्होंने अपने पित महाकि तुलसीदास को यह प्रेरणा दी कि रात के अंधेरे में जैसी प्रीति आपकी हमारे साथ है, वैसी प्रीति अगर भगवान प्रभु राम के साथ होती तो आप एक बहुत ऊंचे योगी बन गये होते और उसी उलाहना ने उनको इतना विद्वान बनाया कि उन्होंने रामचरित मानस जैसे महाकाव्य की रचना की। हमारे इतिहास में, हमारे पुराणों में ही लिखा है कि यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते, रमन्ते तत्र देवता- अर्थात् जहां नारियों की पूजा की जाती है, वहां ही देवता का निवास होता है। किंतु समय बदला, स्थितियां बदलीं, पर्दे का चलन हुआ और स्त्रियां पर्दे में कैद हो गई और समय के साथ साथ वह गंदगी आई जिसका आज समाज में हम बढ़ता हुआ रूप देख रहे हैं तथा तभी आज हम कहते हैं कि अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी, आंचल में है दूध और आंखों में है पानी।

आज एक महीने में 554 महिलाओं से छोड़छाड़ की घटनाएं होती हैं। लगभग एक दिन में औसत 4 बलात्कार की घटनाएं होती हैं। अगर हम आंकड़े उठाकर देखें तो पाएंगे कि ये घटनाएं काफी शर्मसार करने वाली हैं। अभी जो 16 दिसम्बर 2012 में घटना घटी, उस घटना ने हम भी को शर्मसार कर दिया।



14.00 hrs.

उस घटना ने हम सबको सोचने को मजबूर कर दिया कि हमने आज पढ़ लिखकर, शिक्षित होकर, सभ्य समाज के नागरिक होकर कैसे समाज का निर्माण किया है। आज हम इस तरह के अत्याचार, जघन्य घटनाओं के खिलाफ कड़े नियम बनाने की मांग कर रहे हैं। कभी फांसी देने की मांग करते हैं और कभी शारीरिक दृष्टि से अक्षम बनाने की मांग करते हैं। जब हम अकेले होते हैं तो कहीं न कहीं जरूर सोचने को मजबूर हो जाते हैं, हर पढ़ा लिखा व्यक्ति सोचने का मजबूर हो जाता है कि आज समाज को क्या हो गया है? महिला मां बनकर बच्चे को कोख में पालती है, मातृत्व देती है जिसके अमृत से व्यक्तित्व का निर्माण होता है, बहन के रूप में रक्षा सूत्र कलाई पर बांधती है, पत्नी और सहचरी बनकर जीवन के दुख सुख को बांटती है, जीवन में समरता का भाव लाती है। गांवों में आज भी माना जाता है कि लड़का होगा तो वंश बढ़ेगा इसलिए लड़कियों को जन्म के समय ही मार दिया जाता है इसलिए स्त्रियों का अनुपात कम हो रहा है। हमें लड़कियों की घटती संख्या चेतावनी दे रही है कि आने वाला समय अच्छा नहीं है। आज पढ़े लिखे लोग शहरों में बड़े डाइग्नोस्टिक सैंटर्स में जाते हैं जहां जन्म से पहले ही लड़की को मार दिया जाता है। शहरों में भ्रूण हत्या बहुत तेजी से फैलता हुआ जुर्म है। नियम भी बने हैं लेकिन नियमों का पालन कहीं नहीं हो रहा है। लिंग अनुपात विषम हो रहा है, यह हमें चेतावनी दे रहा है।

अध्यक्ष महोदया, स्त्रियां कुपोषण की शिकार हैं। खून की कमी की शिकार हैं और इसके कारण शिशु मृत्यु दर बढ़ रही है। इन हालातों को देखते हुए स्त्री की दशा में सुधार के लिए कई कार्यक्रमों की जरूरत है। स्त्री को सबसे पहले अपने अस्तित्व को पहचानना होगा। सबसे बड़ी बात है कि स्त्रियों को बदलते परिवेश में उपभोक्तावादी संस्कृति का हिस्सा नहीं बनना चाहिए जिसके लिए उन्हें मजबूर किया जा रहा है। कानूनी व्यवस्था के नियमों के साथ आत्मचिंतन और आत्ममंथन करने की जरूरत है। आज के हालात में हमें महाकवि जयशंकर प्रसाद की इस कविता को अपने जीवन में लाना चाहिए-

नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पल तल में, पीयूष स्रोत सी बहा करो, जीवन के सुंदर समतल में।

अध्यक्ष महोदया : इस चर्चा का बहुत सुंदर समापन हुआ। Hon. Members, we have had an extremely fruitful discussion on the occasion of the International Women's Day.

We are the Parliament of India representing 120 crores men and women of the largest democracy of the world. We legislate, we exercise oversight on the Executive, and through our debates on the floor of the House we also change the mindset of the people. We must resolve to enact legislations for the safety, security, welfare and empowerment of

women. We must also keep close watch as to how these laws are being implemented by the Executive.

More importantly we should also have at least one discussion as suggested on women issues in every Session to change the attitude of the people towards women.

This Parliament, the supreme body, today has sent a clear message that women in India will be empowered and will always be held in the greatest of respect.

14.05 hrs.

RESOLUTION RE: APPROVAL OF THIRD REPORT OF RAILWAY CONVENTION COMMITTEE, (2013-14)

RAILWAY BUDGET (2013-14) – GENERAL DISCUSSION

DEMANDS FOR GRANTS ON ACCOUNT – (RAILWAYS), 2013-14

DEMANDS FOR SUPPLEMENTARY GRANTS –(RAILWAYS), 2012-13 AND DEMANDS FOR EXCESS GRANTS – (RAILWAYS), 2010-11

MADAM CHAIRMAN: The House shall now, take up Item No. 9 to 13 together.

श्री गणेश सिंह (सतना): अध्यक्ष महोदया, कल रेल बजट की चर्चा प्रारम्भ करते हुए मैं कह रहा था कि देश को रेल मंत्री जी से बहुत उम्मीदें थी। लेकिन उन्होंने भी उसी तरह निराश किया, जैसे पूर्व के रेल मंत्रियों ने किया था। इसीलिए मैंने कहा था कि यह बजट अदूरदर्शी तथा निराशाजनक है। 17 वर्षों के बाद रेल मंत्री, श्री पवन कुमार बंसल जी ने खुद रेल की ड्राइविंग सीट पर बैठकर आगे बढ़ाया। अभी तक तो वह एसी फर्स्ट क्लास में बैठकर सिर्फ रेल की यात्रा को देख रहे थे। लेकिन पहली बार उन्होंने ड्राइविंग सीट पर बैठकर इसे चलाने की कोशिश की। लेकिन मुझे लगता है कि इतने बड़े देश में जिस दिशा में उन्हें रेल को

14.06 hrs.

Shri Ganesh Singh.

(Shri Francisco Cosme Sardinha in the Chair)

ड्राइव करना चाहिए था, उस दिशा में वह रेल को ड्राइव नहीं कर पाये। वास्तव में रेल की जो समस्या है और जो हमारे सामने चुनौतियां हैं, उन चुनौतियों के बारे में उन्होंने अपने भाषण में जरूर कहा है, लेकिन जब रेल बजट की गहराई में जाकर मैंने देखा तो मुझे लगा कि उन तमाम सुविधाओं को जुटाने के लिए बहुत धीमा प्रयास इस बजट में किया गया है और ऐसा लगा जैसे "खोदा पहाड़ और निकली चुहिया "। ऐसा लग रहा था कि कांग्रेस के पास 17 वर्षों के बाद रेल मंत्रालय आया है और अब वह पूरी तरह से देश को ध्यान में रखकर इसे आगे बढ़ाने का काम करेंगे। आज देश के सामने रेलवे का नैटवर्क 64,600 किलोमीटर है। लगभग 12,335 से अधिक गाड़ियां चल रही हैं। आठ हजार से ज्यादा रेलवे स्टेशंस हैं। दो करोड़ से ज्यादा लोग रोजाना यात्रा करते हैं। लेकिन मैं पूछना चाहता हूं कि सुविधाएं कितनी हैं एक तरफ आप कहते हैं कि हमारी रेलवे वन मिलियन क्लब में शामिल हो चुकी है। जहां रूस, चाइना और अमरीका हैं। आज चाइना की तुलना अगर हम अपने देश से करें तो हम देखते हैं कि हमसे बाद में चाइना

में रेल नैटवर्क शुरू हुआ था। 1947 में हमारा नैटवर्क 53396 किलोमीटर था। 63 वर्षों में देश में हम सिर्फ नौ हजार किलोमीटर नई रेल लाइन बना पाये हैं और कहा जा रहा है कि हम चीन से आगे विश्व स्तर पर अपनी रेलवे को ले जायेंगे। चीन में माल ढुलाई का रूट 120 किलोमीटर प्रति घंटा है। जबिक हमारे 26 किलोमीटर प्रति घंटा है। उनकी गाड़ियां यात्रियों को लेकर 300 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चलती हैं और हमारे यहां 80-90 किलोमीटर प्रति घंटे से ज्यादा नहीं चल पा रही हैं। यह हालत शताब्दी और राजधानी जैसी गाड़ियों की है। बािक गाड़ियों की बात ही मत करें, हम कैसे चीन से तुलना कर सकते हैं। दस हजार मीटिरिक टन भाड़ा लेकर हमारी माल गाड़ी चलेगी और ट्रैक की क्या पोजीशन है, ट्रैक की हालत कितनी खराब है। हमें रेल लाइनों के सुदृढ़ीकरण का काम करना चािहए था। हमें रेलों की संरक्षा और सुरक्षा के लिए काम करना चािहए था। हमें याित्रयों के लिए सुविधाएं जुटाने का काम करना चािहए था। जो ऑन गोइंग प्रोजैक्ट, हैं, उन्हें हम समय पर कैसे पूरा करें, हमारे सामने यह चुनौती थी। लेकिन आपने बजट में जो प्रावधान कर दिया है कि अभी तक जो रेल लाइनों के निर्माण का काम चल रहा था, उसे भी हम कम करेंगे। पहले जो आमान परिवर्तन हो रहा था, उसमें भी आपने कम कर दिया। मात्र 30 परसैन्ट रेलवे ट्रैक का अभी तक विद्युतीकरण हो पाया है, इससे बड़ी असफलता और क्या हो सकती है।

महोदय, आपकी सरकार रोज एक तरफ डीजल के दाम बढ़ा रही है और आप कह रहे हैं उसकी वजह से हम माल भाड़े में हम फ्यूल चार्ज लगायेंगे और आपने फ्यूज चार्ज लगा दिया। फ्यूल चार्ज लगाकर आप 4200 करोड़ रुपये वसूल करेंगे और रेलवे का खर्चा मात्र 840 करोड़ रुपये हो रहा है। 840 करोड़ रुपये रेलवे अधिभार देगा और आप 4200 करोड़ रुपये लोगों से ले रहे हैं। यह कहां का न्याय है। आपने 20 जनवरी को यात्री किराया बढ़ा दिया और फिर उसके बाद आपने बजट पेश किया तो उसमें भी आपने टिकट कैंसिलेशन, तत्काल में और आख्क्षण में पैसे बढ़ाकर वसूली करने का काम किया। इसलिए मैं कह रहा हूं कि यह बजट पूरी तरह से दिशाहीन है।

श्री रघुदयाल, पूर्व प्रबंध निदेशक, कानकोट में रह रहे हैं। उन्होंने इस बात को कहा है कि इस बार भी रेल बजट वैसा ही है, जैसा वह हमेशा होता है। वही वायदे, वही दावे, वहीं परियोजनाएं और खस्ता हालत से उबारने का कोई ठोस प्रयास नहीं किया गया है। रेल बजट गलत पटरी पर आ गया है तो निश्चित तौर पर एक्सिडेंट होना ही है। जब रेल बजट गलत पटरी पर आएगा तो निश्चित तौर पर विस्फोट होगा और वह उस समय देखने को मिला जब सांसदगण रेल मंत्री जी के बजट भाषण के समय वेल में आ कर अपना विरोध जाहिर कर रहे थे। इसीलिए मैं कहना चाहता हूँ कि यह क्यों हुआ था। आज रेल मंत्री जी कह रहे हैं कि हमने रेलवे के लिए पैसे जुटाने के लिए व्यवस्था की है। हम प्राइवेट सेक्टर से पैसा लेंगे। पीपीपी मॉडल में पैसा मांगेंगे। आप कहां से पैसा लाएंगे? रेल का जो शेयर है, वह रोज डाउन हो रहा है। आपको क्या है, मैं उसमें साफ-साफ कहना चाहता हूँ कि आपको उस दिशा में बहुत

गंभीरता से प्रयास करना चाहिए। मध्य प्रदेश में रेल का जो नेटवर्क है, वह लगभग पांच हजार किलोमीटर है। पांच हजार किलोमीटर रेल नेटवर्क में आपने क्या दिया है? मैं आपको बताना चाहता हूँ कि आपने वहां पर सिर्फ दो गाड़ियां दी हैं। आपने 66 नई गाड़ियों की घोषणा की है। 66 नई गाड़ियों में आपने केवल दो गाड़ियां दी हैं और वह भी सप्ताह में एक-एक दिन के लिए दी हैं। मैं कहना नहीं चाहता हूँ कि मेरा उन क्षेत्रों से और क्षेत्र के सांसदों से कोई विरोध है, भले ही वे मेरी पार्टी के नहीं है। लेकिन मुझे लगता है कि कहीं न कहीं पक्षपात हुआ है, इसलिए मैं उस बात को कह रहा हूँ। चंडीगढ़ से इंदौर और जबलपुर से यशवंतपुर, आपने जो दो गाड़ियां दी हैं वह पर्याप्त नहीं है । 26 गाड़ियों के फेरे बढ़ाए हैं। एक गाड़ी इंदौर-अमृतसर जो दो दिन की थी, उसको आपने बढ़ाने का काम किया है, जबलपुर-अमरावती को सात दिन का किया है। 26 नई पैसेंजर ट्रेनें चालू की हैं लेकिन मध्य प्रदेश को एक भी नहीं दी हैं। आठ मेमू गाड़ियों में से एक भी नहीं दी है। 57 गाड़ियों का विस्तार किया है, जिसमें जबलपुर-जयपुर को अजमेर तक बढ़ाने का काम किया है। आखिरकार यह सब क्या है? यह कैसा बजट है? यह पक्षपातपूर्ण बजट क्यों है? मंत्री जी ने हरियाणा, चंडीगढ़ और पंजाब में दो नए कारखाने दे दिए हैं। दो स्थापना के कारखाने दे दिए है, एक विद्युतीकरण का काम सैंक्शन कर दिया है, तीन नई रेल लाइन दे दी हैं, दो दोहरीकरण दे दिए हैं, नौ एक्स्प्रेस गाड़ियां दे दी हैं, दो पैसेंजर ट्रेने दे दी हैं, चार डेमू-मेमू गाड़ियां दे दी हैं, तीन गाड़ियों का विस्तार कर दिया है, तीन गाड़ियों के फेरे बढ़ा दिए हैं। राजस्थान को 12 ट्रेनें दे दी हैं, हमें कोई आपत्ति नहीं है लेकिन कहीं न कहीं पक्षपात दिख रहा है। आपने दिल्ली को नौ ट्रेन दे दी हैं। मुझे लगता है कि यह पक्षपात है। इसलिए मैं कहना चाहता हूँ कि आपको इसमें गंभीरता से देखना चाहिए।

मैंने कल भी निवेदन किया था कि यह रेल बजट रूपी गाड़ी जो पवन कुमार बंसल जी ने चलाई थी, वह रायबरेली, अमेठी से होते हुए हिरयाणा, चंडीगढ़ चली गई है। वह मध्य प्रदेश की तरफ गई ही नहीं है। जबिक मध्य प्रदेश देश के हृदय स्थल में है और मध्य प्रदेश को हम मजबूत नहीं करेंगे तो पूरब को पश्चिम से नहीं जोड़ पाएंगे, उत्तर से दक्षिण को नहीं जोड़ पाएंगे, क्योंकि वह मध्य में है। वहीं से सारा रेल नेटवर्क चलता है। अगर वह कमज़ोर रहेगा तो आपका रेल नेटवर्क हमेशा कहीं न कहीं बाधित होता रहेगा।

मैं निवेदन करना चाहता हूँ कि किराए-भाड़े में जो वृद्धि हुई है, 22 जनवरी को आपने 21 प्रतिशत किराया बढ़ा दिया है और 6,600 करोड़ रूपये का अधिभार आपने आम आदमी पर लगा दिया है। आप उस आम आदमी की दुहाई देते हैं। माल भाड़े में 5.8 प्रतिशत फ्यूल चार्ज लगा कर आपने 4200 करोड़ रूपये वसूलने का लक्ष्य रखा है। जब कि डीजल में मात्र 850 रूपये अतिरिक्त भार लग रहा है। टिकट के आरक्षण, कैंसलेशन, तत्काल में दस से सौ रूपये तक बढ़ा दिए हैं। जिसमें से 486 करोड़ रूपये का आपको अतिरिक्त लाभ होने वाला है।

अभी मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूँ कि आखिरकार उन महत्वपूर्ण परियोजनाओं का क्या हुआ? रेलवे की जो 918 परियोजनाएं स्वीकृत हैं, उनमें से आपने मात्र 347 परियोजनाओं को वित्तीय सहायता देने की बात कही है,

जिसमें 1 लाख 47 हज़ार हज़ार करोड़ रूपये देने हैं। लेकिन बाकी की परियोजनाओं का क्या हुआ? एक अखबार ने लिखा है कि सैंकड़ों परियोजनाओं से हाथ खींचा। आखिरकार यह क्या हो रहा है? आप एक तरफ कहते हैं कि प्रधानमंत्री जी ने आपको बधाई दी है कि आपने रेल के नेटवर्क को बढ़ाने की बात कही है, आपने सुविधा जुटाने की बात कही है। प्रधान मंत्री जी ने कहा है कि आप मितव्ययिता बरत रहे हैं। दूसरी तरफ जो ऑन गोइंग प्रोजेक्ट्स हैं, उनको आप ब्लॉक कर रहे हैं। जो 250 स्वीकृत नई रेल लाइनें भी जो अधूरी हैं, आप उनको बंद करने जा रहे हैं। 225 आमान परिवर्तन के काम रोकने जा रहे हैं। आपने कहा है कि मात्र 347 परियोजनाओं को वित्तीय सहायता देने का काम करेंगे। मैं इसी में कहना चाहाता हूँ कि इसमें लगभग 9 लाख करोड़ रूपये चाहिए । आप पैसा कहां से लाएंगे? आपके पास पैसा कहां है? आपने देश को नहीं बताया। बुंदेलखण्ड, जहां पर माननीय राहुल गांधी जी गए थे, और कह रहे थे कि साहब बुंदेलखण्ड बहुत पिछड़ा हुआ जिला है, बहुत पिछड़ा हुआ क्षेत्र है। बुन्देलखंड बहुत पिछड़ा हुआ क्षेत्र है। वहां से सन् 1997-98 में एक रेल लाइन ललितपुर-सिंगरौली के निर्माण करने की बात हुयी थी, जो बुन्देलखंड और विंध्य क्षेत्र की लाइफलाइन है। यह बिल्कुल सही बात है। वह 541 किलोमीटर की रेल लाइन है, आज तक उसमें पूरी तरह से काम नहीं हो पाया है, अभी तक उसमें मात्र 25 परसेंट काम हुआ है। जहां से वह रेल रूट जाना था, ललितपुर से टीकमगढ़, छतरपुर, पन्ना, सतना, रीवा, सीधी और सिंगरौली, अभी कहीं कुछ पता ही नहीं है। वहां पन्ना से सतना को जोड़ने का एक आंदोलन चल रहा है। वहां के विधायक ने 70 किलोमी ट्रिंग् की पदयात्रा की, हजारों लोग उनके साथ थे। आखिरकार लोग चाहते हैं, ये बहुत महत्वपूर्ण परियोजना जल्द पूरी हो जाए। सिंगरौली कोल और विद्युत पॉवर का हब है और ललितपुर से सिंगरौली रेल लाइन जायेगी तो जो कोयला उत्पादन होता है, वह सीधे इसी रूट से आएगा। रेलवे की आमदनी ज्यादा होगी, इसमें खर्च भी कम होगा, कोयले का भाव कम हो जाएगा। ये परियोजनाएं बहुत महत्वपूर्ण हैं, लेकिन उनको आपने कभी इसमें महत्व नहीं दिया। इस साल आप मात्र 45 करोड़ रूपए दे रहे हैं, कहां 1,000 करोड़ रूपए की योजना है, आप 45 करोड़ रूपए देकर, ऊंट के मुंह में जीरा के बराबर पैसा देकर काम करना चाह रहे हैं।

पिछली बार रेल मंत्री जी ने हमारी नेता सुषमा स्वराज जी के क्षेत्र में घोषणा की थी, कि हम सांची में एक कारखाना देंगे, लेकिन आज तक उसका कुछ पता नहीं है। एक साल बीत गया। आपने मिसरोद में एक नया कारखाना देने की बात कही थी, उसका भी पता नहीं है। आपने भोपाल में मेडिकल कॉलेज खोलने की बात की, उसका भी पता नहीं है। आपने इन्दौर से रीवा के लिए सप्ताह के तीन दिन, दिन की एक गाड़ी दी थी, जो अभी 3 मार्च से शुरू हुयी है। यह 18 घंटे तक चलेगी, लेकिन इसमें एक भी स्लीपर कोच नहीं है। अब चेयर कार में 18 घंटे बैठकर कौन चलेगा, क्या वह जिंदा बचेगा? मैं समझना चाहता हूं कि रेलवे किस तरह का काम करना चाहती है? मेरी मांग है कि इस ट्रेन को सप्ताह भर किरए और उसमें सभी श्रेणियों में स्लीपर लगाइए, तब तो वह गाड़ी चलने लायक है, अन्यथा उसे बंद ही कर दीजिए। मैं यह निवेदन करना चाहता हूं।

रेल मंत्री (श्री पवन कुमार बंसल): आप किस गाड़ी की बात कर रहे हैं?

श्री गणेश सिंह : इन्दौर से रीवा। संरक्षा एवं सुरक्षा का बड़ा सवाल है, मैं इसको विशेष रूप से कहूंगा। रेल की सुरक्षा के संबंध में डाॅंं0 अनिल काकोडकर जी ने अपनी रिपोर्ट दी और रेलवे के आधुनिकीकरण के लिए सैम पित्रोदा जी ने एक अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की। उन लोगों ने कहा कि लगभग 5.60 लाख करोड़ रूपए लगेंगे, तब जाकर रेलवे ट्रैक पर आएगा। यही सच्चाई है, लेकिन आपने इनको महत्व नहीं दिया। एक तरफ आप 10,797 समपार फाटक बंद करने वाले हैं, बंद कर दीजिए, लेकिन आप वहां अंडर ब्रिज, ओवर ब्रिज बनायेंगे या नहीं। आपने कहा कि हमारे पास पैसा नहीं है। 3,700 करोड़ रूपए आपको केंद्रीय सड़क निधि से मिलने चाहिए, लेकिन आपको मात्र 1,100 करोड़ रूपए मिले, बाकी का पैसा कहां से आएगा? आपने उम्मीद की है कि राज्य सरकारें शेयर करेंगी, राज्य सरकारें तब शेयर करेंगी जब राज्य सरकारों को आप महत्व देने का काम करेंगे। मैं निवेदन करना चाहता हूं कि मध्य प्रदेश की विधानसभा ने एक संकल्प पारित किया था, उसमें सभी पार्टियों के विधायक हैं, हम लोग हर बार कहते हैं। मैं निवेदन करना चाहता हूं कि उसमें उन्होंने ललितपुर-सिंगरौली की बात की थी, इस रेल लाइन को जल्दी से पूरा किया जाए। राजकोट गाड़ी नंबर 1463, 1465 को जबलपुर से सतना, रीवा तक बढ़ाया जाए। हावड़ा जबलपुर शक्तिपूंज को भोपाल तक बढ़ाया जाए। इन्दौर से मनमाड़ वाया खरगौन सेधवा रेल लाइन का विस्तार किया जाए। ग्वालियर श्योपुर मीटरगेज को ब्राडगेज में परिवर्तन किया जाए। भिंड से कोच वाया लहार नयी रेल लाइन का निर्माण कराया जाए। उज्जैन से भूसावल वाया भोपाल फास्ट ट्रेन शुरू की जाए। सिंगरौली से भोपाल वाया बीना नयी ट्रेन शुरू की जाए। सागर से मकरोनिया रेलवे स्टेशन से बड़ा मलेहरा छतरपुर खजुराहो तक नयी रेल लाइन स्वीकृत की जाए। पन्ना रेल लिंक को सतना से जोड़ा जाए। भोपाल हावड़ा एक्सप्रेस को प्रतिदिन किया जाए। उज्जैन से वाराणसी वाया भोपाल कटनी एक नयी ट्रेन चलायी जाए। ये विधान सभा के पारित प्रस्ताव हैं, जिन पर मैं आपसे निवेदन कर रहा हूं। इसी तरह से मुलताई से नटखेर नयी रेल लाइन, सिंगरौली से कटनी सतना के लिए एक नयी रेल यात्री गाड़ी दी जाए। रीवा-आनन्द विहार रेवांचल एक्सप्रेस को जैतवारा में स्टॉपेज दिया जाए। इन्दौर-हावड़ा-क्षिप्रा एक्सप्रेस को पूरे सप्ताह भर कया जाए। एक और मामला इसी के साथ जुड़ा हुआ था, इन्दौर-पूना गाड़ी को सप्ताह में तीन दिन बढ़ाकर प्रतिदिन किया जाये और इसे चिंचवड में स्टॉपेज दिया जाये। इंदौर-नागपुर को रायपुर तक बढ़ाया जाए। इंदौर-दाहोद रेल लाईन बिछाने के लिए बजट में प्रावधान किया जाए। प्रधान मंत्री जी ने इसका शिलान्यास किया था। प्रधान मंत्री जी शिलान्यास करें, इसके बावजूद रेलवे भूल जाए, इससे बड़ा मज़ाक और क्या हो सकता है? सिंगरौली में दूसरा प्लेटफॉर्म बने चूँकि वह पॉवर हब है, कोयले का हब है और इतनी बड़ी संख्या में यात्री आते हैं कि एक रेलवे स्टेशन में एक प्लेटफॉर्म है। कम से कम दो प्लेटफॉर्म होने चाहिए।



महोदय, अब मैं अपने लोक सभा क्षेत्र के संबंध में विशेष रूप से कुछ निवेदन करना चाहता हूँ। मैंने माननीय पवन कुमार बंसल साहब से व्यक्तिगत रूप से मुलाकात की थी। मैं रेलवे की स्टैन्डिंग कमेटी का सदस्य भी हूँ। हम लोगों ने अलग से बैठक की। सभी माननीय सदस्यों ने लिखकर दिया, स्टैन्डिंग कमेटी ने रिकमंड भी किया, लेकिन आपके रेल के अधिकारियों ने लगता है कि आपको बताया नहीं। व्यक्तिगत रूप से जब मैं आपसे मिला तो मैंने आपसे निवेदन किया, लेकिन उसको भी आप भूल गए। लगातार हमारे यहाँ से एक मांग हो रही थी कि रीवा-सतना से मुम्बई की एक ट्रेन हो जिसके लिए आपने कहा भी था कि देंगे। हमारे यहाँ के लोग व्यापारिक दृष्टिकोण से मुम्बई जाते हैं, दवाई के लिए और इलाज के लिए वहाँ जाते हैं और वहाँ से जितनी गाड़ियाँ अप-डाउन की चलती हैं, उन सारी गाड़ियों में जगह नहीं मिलती। इलाहाबाद 200 किलोमीटर है, जबलपुर 200 किलोमीटर है, वहाँ के यात्रियों को कभी किसी गाड़ी में जगह नहीं मिलती। अप-डाउन की गाड़ियों के लिए हमने कई बार कहा कि सभी श्रेणियों में वीआईपी कोटा दे दीजिए जो पहले थे तािक वहाँ के यात्रियों को कुछ लाभ मिले। 25000 यात्री रोज़ सतना रेलवे स्टेशन से आते-जाते हैं लेकिन उनको आरक्षण सुविधा का लाभ नहीं मिल रहा है।

महोदय, सतना में टर्मिनल और आरक्षण सुविधा की लंबे समय से हम मांग कर रहे हैं। यह वाकयी वहाँ के लिए बहुत ज़रूरी है। यह सुविधा वहाँ होनी चाहिए। यहाँ रीवा से आनन्द विहार के लिए एक ट्रेन चलती है। एक ही ट्रेन है जो दिल्ली से हमारे क्षेत्र को कनैक्ट करती है और वह सुपरफास्ट है। उसकी इतनी खराब हालत है कि पूछिये मत। अभी 3 मार्च को उस गाड़ी में हमारे क्षेत्र के पूर्व विधायक श्री प्रभाकर सिंह यात्रा कर रहे थे। इलाहाबाद में उनकी अटैची चोरी चली गई। मैं खुद जाता हूँ तो मैं खुद दो लड़के रखता हूँ ताकि वे सब सामान को व्यवस्थित रखें और देखते रहें। कॉक्रोच, खटमल और चूहे तो खूब मिलते हैं। बाथरूम में पानी की टोटी चलती नहीं और इतनी बदबू कि हालत खराब है। किस तरह से यात्रा पूरी होती है, इस संबंध में मैंने कई बार रेल बोर्ड के चेयरमैन को और जो मैम्बर ट्रैफिक हैं, उनको लिखकर दिया, निवेदन किया, लेकिन दुर्भाग्य है कि उनके कान में आज तक जूँ नहीं रंगी। आज तक उस गाड़ी को ठीक नहीं कर पाए। वह इतनी खराब है और वह सुपरफास्ट गाड़ी है। एक तरफ आप कहते हैं कि हम विश्वस्तरीय गाड़ियाँ बनाएँगे लेकिन विश्व स्तरीय गाड़ियाँ कैसे बनाएँगे? उन गाड़ियों के डिब्बे तक आप बदल नहीं पाए। सुपरफास्ट गाड़ियों की हालत यह है कि आप निश्चित तौर पर यात्रियों से पैसा ज़रूर ज़्यादा लेंगे लेकिन इसके बावजूद भी उनको सुविधाएँ देने का काम नहीं करेंगे। 58 रेलवे स्टेशन आपने विश्वस्तरीय बनाए हैं जहाँ से आपको 50 करोड़ रुपये की आमदनी साल में हो रही है। मैं दावे के साथ कहता हूँ कि पूरे देश में उन रेलवे स्टेशनों में से किसी एक स्टेशन का नाम बता दीजिए जहाँ विश्वस्तरीय सुविधाएँ हों। अकेले नई दिल्ली के लिए मैं कहता हूँ जो भारत की राजधानी का रेलवे स्टेशन है। क्या वह विश्वस्तरीय है? वहाँ स्टेशन में आर.ओ. का पानी तक नहीं मिल रहा है। और आप क्या देंगे? बदबू के अलावा स्टेशनों में और क्या है? अभी इलाहाबाद भी विश्वस्तरीय रेलवे स्टेशन है। वहाँ पर क्या हुआ? कुम्भ के यात्रियों के साथ क्या दुर्गति हुई? आपका रेल पुल टूट गया। उसमें लोग मर गए, हताहत हुए।

08.03.2013 90

श्री पवन कुमार बंसल: रेल पुल नहीं टूटा।

श्री गणेश सिंह: कुछ टूटा है।

श्री पवन कुमार बंसल: आप थोड़ा सा फैक्ट्स देख लीजिए, पुल टूटा नहीं है।

श्री गणेश सिंह: अखबारों में मैंने जो पढ़ा उसमें लगा कि रेलवे का पुल क्षतिग्रस्त हुआ, उसी से लोग नीचे

गिरे। ...(व्यवधान)

श्री दारा सिंह चौहान: सच्चाई यह नहीं है।

श्री गणेश सिंह: अब क्या है क्या नहीं है, लेकिन दुर्घटना हुई या नहीं, लोग मरे या नहीं?

श्री पवन कुमार बंसल: पुल नहीं टूटा। ...(व्यवधान)

श्री दारा सिंह चौहान: माननीय सदस्य अपने शब्द वापस लीजिए।

श्री गणेश सिंह: अगर पुल नहीं टूटा तो मैं अपने शब्द वापस लेता हूँ।

SHRI PAWAN KUMAR BANSAL: Thank you.

महोदय, रीवा से जबलपुर जाने वाली इंटरिसटी के लिए मैंने निवेदन किया था कि उसमें श्री गणेश सिंह: बगहाई और झुकेही में स्टापेज देना था। रीवा-सतना रेलमार्ग के अंतर्गत जमूना और मैहर कटनी के मार्ग में घुनवाड़ा में नए रेलवे स्टेशन की मांग वहाँ की जनता ने बड़ा आंदोलन करके किया है। लेकिन आज तक उनकी सुनवाई नहीं हुई। इसी तरह से हमारे कई गाँव हैं जो रेलवे लाईन के उस पार हैं, उनकी खेती उस पार है, लेकिन वहाँ आने जाने के लिए कोई सुविधा नहीं है। अब आप फाटक भी बंद कर रहे हैं लेकिन वहाँ अंडरब्रिज नहीं बना रहे हैं। ऐसे ही सतना से आगे चलकर गोबराँव गाँव है, एक धतूरा है मैहर के आगे चलकर और एक खैरा गाँव है। ऐसे कई गाँव है जिनके लिए मैं पहले लिखकर दे चुका हूँ। वहाँ पर अंडरब्रिज बनाए जाने का काम किया जाना चाहिए। मानिकपुर से झाँसी एक ऐसा रेल रूट है जिसका आज तक विद्युतीकरण नहीं हुआ, वह ऐसा रूट है जहाँ पर दोहरी लाईन नहीं हुई। उस रास्ते में चलने वाली सब गाड़ियाँ डिले हो रही हैं। आखिरकार ऐसा क्यों हो रहा है? हमारी रीवा और सतना से चलने वाली जितनी ट्रेने हैं, नैनी रेलवे स्टेशन पर उन्हें घण्टो रोक दिया जाता है। इलाहाबाद वाले उनको कभी नोटिस में नहीं लेते हैं। फिर जब फोन करते हैं तब उसे आगे बढ़ाने का काम करते हैं। इसलिए मेरा रेल मंत्री जी से निवेदन है कि कुछ ऐसे ट्रैक्स हैं जो बहुत व्यस्त हैं। बनारस, इलाहाबाद से होते हुए मुम्बई तक का हमारा ट्रैक है। यह बहुत बिजी है। यहां से दो सौ गाड़ियां रोज चलती हैं। सतना एक रेलवे स्टेशन है दो सौ किलोमीटर जबलपुर और दो सौ किलोमीटर इलाहाबाद के मध्य में है। कई गाड़ियों का टैक्नीकल स्टॉपेज है, लेकिन कमर्शियल स्टॉपेज नहीं है। इलाहाबाद से मुम्बई एक ट्रेन चलती है। उस ट्रेन के लिए डीजल और स्टाफ हमारे यहां से ले रहे हैं, लेकिन वहां के पैसेंजर को नहीं ले रहे हैं। यह कैसा न्याय है? कहां का न्याय है? किस तरह से आप रेलवे को चलाएंगे?

आज रेलवे की जो स्थिति है, खान-पान की व्यवस्था, सफाई की व्यवस्था, यात्रियों की सुरक्षा की व्यवस्था, जिस तरह से अवैध वैंडरों की भरमार है। रेलवे की तरफ से जो खाना मिलता है, उसकी क्वालिटी ठीक नहीं है। इसका ठेकेदार कौन है? कपड़े धोने वाला ठेकेदार कौन है? लेनिन धोने वाला कौन आदमी है? उनमें बदबू आती है। पैसा तो आखिरकार पैसेंजर से लिया जाता है और रेलवे उनका भुगतान भी करती है, लेकिन फिर भी वह ठीक काम क्यों नहीं कर रहे हैं? कई बार मैंने स्वयं कम्पलेंट की है, लेकिन आज तक उन पर कोई कार्रवाई नहीं हुई?

MR. CHAIRMAN: Hon. Member, please conclude now.

श्री गणेश सिंह: महोदय, मैं निवेदन कर रहा हूं कि जो हालात हैं, उनको कौन ठीक करेगा? किस को कहेंगे कि वह हालात ठीक करे? पवन कुमार बंसल जी बहुत सीनियर मिनिस्टर हैं, बहुत जानकार आदमी है और उनसे बड़ी उम्मीद है कि वे रेलवे को ठीक ट्रैक पर लाकर खड़ा करेंगे। लेकिन मुझे लगता नहीं है। रेलवे का जो विकास नहीं हो रहा है, उसमें बड़ा रोल अधिकारियों की नादिरशाही का भी है।...(व्यवधान)

MR. CHAIRMAN: Please conclude. You have made your point.

श्री गणेश सिंह: यह अधिकारी आपके कंट्रोल में नहीं हैं। इनमें इतनी अफसरशाही हो चुकी है कि यह अपनी मनमानी करते चले जा रहे हैं। जब तक आप इन पर लगाम नहीं लगाओगे, जब तक इन पर नियंत्रण नहीं करोगे, जब तक ये जनता की तकलीफ को नहीं समझेंगे, राज्य सरकार के प्रस्तावों पर विचार नहीं करेंगे, कैसे आप सही दिशा में रेलवे को ले जाने का काम कर पाएंगे। इसलिए मेरी विनती है कि यह रेल बजट आपका पहला रेल बजट है। यह हो सकता है कि आपको समय कम मिला हो, लेकिन अभी आप अनुपूरक मांगों को सदन में लेकर आएंगे। अभी यह रेल बजट स्टैंडिंग कमेटी में भी जाएगा।...(व्यवधान)

MR. CHAIRMAN: Shrimati Annu Tandon.

श्री गणेश सिंह: अभी वह रिकमण्ड करेंगे। मेरा निवेदन है कि इसे रिव्यू कीजिए, इस पर पुनर्विचार कीजिए। आपने जो यात्री किराया बढ़ाया है, उसे वापस कीजिए। फ्यूल चार्ज खत्म कीजिए। फ्यूल चार्ज अगर लेना है तो उतना ही लीजिए, जितना आप दे रहे हैं।...(व्यवधान)

MR. CHAIRMAN: Now, nothing will go on record. I have given you enough time.

(Interruptions) ...*

_

^{*} Not recorded.

* DR. MIRZA MEHBOOB BEG (ANANTNAG): Unfortunately after 1947 Jammu & Kashmir State got disconnected from rest of the world as our road connectivity to Muzafar-ABAD (POK), Jammu-Sialkot, Kargil-Askardoo, Poonch-Rawalkote all closed down for political reasons. Our only link to rest of the country is Srinagar-Jammu Road. Four Prime Ministers laid foundation stones from both ends (Kashmir and Jammu) to connect Kashmir valley through Railway. Still this has not happened. I would urge upon the Railway Ministry to complete this long-standing project so that Kashmir gets connected to rest of the country. Physical connectivity can lead to mental connect which is the need of the hour.

And also connect erstwhile Doda District and Rajouri, Poonch and inter-connect valley of Kashmir through Rail.

I would also demand halt station at MONGHAL (Anantnag) which is the demand of the local population. I must also thank you Mr. Minister that you have given a lot of space to J&K State in your Budget speech.

^{*} Speech was laid on the Table

*DR. RATNA DE (HOOGHLY): I express my views on the Budget (Railways). New Railway Minister, Shri Pawan Kumar Bansal immediately after taking over the reins of the Ministry has hiked the fares of railway passengers by 20%. This is unheard of in the annals of history of Railways in the country. As far as I am concerned, it is adding salt to injury as poor, needy and downtrodden are already reeling under acute price of essential goods, petroleum products.

Now with the Railway Budget, he has presented, he has hiked fares of other things, namely tatkal charges, reservation and cancellation charges. This not fair at all by any standards or norms.

Having expressed my displeasure on the Railway Budget and the State of Affairs of Railways, I would like to state that West Bengal has given a raw deal in the Budget. Except a few cosmetic additions, nothing concrete has been announced for West Bengal. No new rail line, no gauge conversion, no mention of doubling of line, no new survey, no mention of Tarakeswar-Mogre line which was proposed in last year, no new PRS. HWH to Serampore via Dankuni and Singur as proposed in the last year Budget. But there is no mention of it here.

There is no mention of new lines and trains in economically backwardness district and Maoist affect areas.

As everyone is aware, Railways being the life line of our nation, it has a daunting task of catering to needs of the whole country. When Miss Mamata Banjerjee was the Hon'ble Railway Minister, she did not increase the fares of passengers considering the plight of aam aadmi due to rise in prices of every items particularly essential food items, petroleum products etc.

^{*} Speech was laid on the Table

08.03.2013 94

Some features of the Railway Budget, I wish to appreciate. They are these. There has been a setting up of companies of women RPF personnel and another eight companies are going to be formed with a view to strengthen the security of women passengers and 10% RPF vacancies are being reserved for women.

An amount of Rs.100 crores has been earmarked for improving stations in New Delhi. I would suggest that Railways should also make efforts and earmark funds for improving the conditions of other major stations in other parts of the country.

Railway Minister has made an announcement for setting up of new coach manufacturing and maintenance facilities in various places but there is no mention of any place in West Bengal. I condemn this.

There is a mention in the Railway Budget that the safety fund is inadequate. If that is the case, where would the funds collection before the Railway Budget and where the Railway Budget would go. Would the Hon'ble Minister respond to this? How would he propose to ensure safety of Railways passengers with the Railway safety fund in inadequate?

I wish that Government generate more funds for safety and for other pressing purposes without hiking the passenger fares further or collecting indirectly through Tatkal, cancellation and reservation charges and burden the poor and downtrodden.

There is a need to ensure cleanliness in railway stations across the country. It is difficult task. I agree but efforts should be made in that direction if the Minister wants to improve the image of Railways in the country.

The Railways is the cheapest economic means of transportation in our country and it is an important vehicle for the poorest of poor. It is an engine for growth. There is denying of the fact our Railway network is one of the largest in the universe. There is lack of toilets and waiting halls, benches etc. in most of the major Railway Stations and small stations.

I would strongly urge the Railway Minister to give utmost importance and priority to the pending projects an ensuring manned level crossing across the country and ensure its completion early.

In the end, I would only expect this Government and the Hon'ble Railway Minister to roll back the passenger fares particularly of sleeper class and also take back the hike in cancellation and reservation charges as it has burdened the poor to a very great extent. With these words I conclude.

*श्री श्रीपाद येसो नाईक (उत्तर गोवा): माननीय रेल मंत्री जी ने 2013-14 का बजट पेश करते हुए कहा कि भारतीय रेल एक अत्यंत महत्वपूर्ण संगठन है जो राष्ट्र को जोड़ने में अतुलनीय भूमिका अदा कर रहा है। राष्ठ्र को स्वतंत्र हुए 65 साल हो गए हैं किंतु अभी भी देश के विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण स्थल रेलवे से नहीं जुड़े हैं। गत वर्ष इसी सदन में रेल बजट पर बोलते हुए मैंने कई सुझाव और मांगें रखी थी पर उनमें से एक पर भी अमल नहीं हुआ। उदाहरण के लिए मैं महाराष्ट्र के सोलापुर से तुलजापुर (मात्र 48 कि.मी.) नई लाईन डाल कर रेल शुरू करने की मांग की थी। पहले इसका सर्वे भी हुआ है। यहां हर दिन माता तुलजा भवानी के दर्शन के लिए हजारों भक्त आते हैं। पूर्णिमा के दिन तो लाखों की संख्या में भक्त आते हैं। आवागमन की सुविधा के अभाव से परेशान रहते हैं। माननीय खैरे साहब ने अपने भाषण में इसकी मांग की है। मैं रेल मंत्री जी से मांग करता हूं कि यह रेल मार्ग बनाकर माँ तुलजा भवानी और जनता का आर्शीवाद ले ले।

माननीय मंत्री जी ने प्रत्यक्ष किराया न बढ़ाकर सरचार्ज, केंसलेशन चार्ज, तत्काल चार्ज लगाकर खाद्य और अन्य वस्तुओं की कीमत बढ़ाई जिससे मंहगाई और बढ़ेगी । महंगाई से जनता पहले ही त्रस्त है। इसमें आपने महंगाई बढ़ाने वाला बजट प्रस्तुत किया है । रेल यात्रा करने के लिए यदि 6 महीने पहले बुकिंग कराने के बाद भी टिकट कंफर्म नहीं हो पा रही है । गाड़ियां कम और मांग ज्यादा हो गई है । जो गाड़ियां चल रही हैं उनका रखरखाव, साफ-सफाई और खानपान का स्तर भी गिर गया है । जनता रेलवे की लापरवाही से व असुविधाओं से परेशान है ।

, पूरा देश संरक्षा और सुरक्षा के बारे में चिंतित है । इलाहाबाद में कुंभ के समय पुल टूटने से बड़ी दुर्घटना हो गई । कई लोग मर गए, कई घायल हो गए हैं । सुरक्षा की जिम्मेदारी किसकी थी । अनेक स्थानों पर अभी भी 'अनमैन गेट्स' हैं, जहां प्रतिदिन दुर्घटना में लोग मरे जा रहे हैं । यहां ओवर ब्रिज या अंडर ब्रिज की जरूरत है । दुर्घटना रोकने के लिए कोंकण रेलवे में एक सुरक्षा कवच किया था जिसे लगाने के बाद गाड़ियां अपने आप रूक जाती है । दुर्घटना से बचते हैं । क्या यह सुरक्षा कवच सभी गाड़ियों में लग चुका है । डॉ अनिल काकोडकर और सैम पित्रोदा की समिति की सिफारिशें लागू करना आवश्यक है ।

^{*} Speech was laid on the Table

08.03.2013 97

मैंने पिछले रेल बजट के भाषण में अपने प्रदेश गोवा के लिए 'प्लेस ऑन व्हील' ट्रेन की मांग की थी । मड़गांव स्टेशन को वर्ल्ड क्लास स्टेशन का दर्जा दिया गया था । लेकिन वहां कुछ भी काम शुरू नहीं हुआ है । वैसे ही करमली स्टेशन को आदर्श स्टेशन बनाने की मांग की थी । लेकिन आज तक कुछ भी कार्यवाही नहीं हुई है ।

मैं गोवा से निर्वाचित हूं । गोवा विश्व का एक महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल माना गया है । हिन्दुस्तान से नहीं, बिल्क पूरे विश्व के पर्यटक यहां आते हैं । यहां कोंकण रेलवे रेल की सुविधाएं अपर्याप्त हैं । यहां 6 महीने पहले टिकट बुकिंग करने के बाद भी टिकट कंफर्म नहीं होती । गाड़ियां कम, प्रवासी ज्यादा है । इसीलिए मैं इसी संदर्भ में निम्न प्रस्ताव रखना चाहता हूं :-

- कोंकण रेल की लाईन डबल किया जाए ताकि गोवा-मुम्बई, गोवा-मंगलौर, वसई-त्रिवेन्द्रम तक गाड़ियां चलाने की सुविधा हो ।
- 2. पणजी गोवा की राजधानी है । इसके लिए नजदीक स्टेशन करमली (ओल्ड गोवा) है । दिल्ली, मुम्बई, मंगलौर से आने वाली गाड़ियां यहां रूकती नहीं । वह मडगांव स्टेशन पर ही रूकती है । न रूकने के कारण पर्यटक और गोवा के लोगों को तीन घंटे का ज्यादा वक्त देना पड़ता है । इसलिए मैं मांग करता हूं कि यह सभी गाड़ियों करमली स्टेशन पर रूकवाई जाए । कई गाड़ियां थिवी स्टेशन पर भी रूकती नहीं है । उत्तर गोवा का यह एकमात्र स्टेशन है । यहां नहीं रूकी तो मडगांव जा के फिर 40 कि.मी. वापस आना पड़ता है । वर्तमान रेल सुविधा अपर्याप्त है ।

गोवा में कोंकण रेल आने से पहले दक्षिण-पश्चिम रेल चलती थी । उस रूट का मीटर गेज में रूपांतर करने के बाद ज्यादा गाड़ियां फिर शुरू नहीं की गई । गोवा के कंज्यूमर एसोसिएशन ने गोवा से दिल्ली तक अपनी मांगें पहुंचाई । किंतु कुछ भी कार्यवाही नहीं हुई । मैं मांग करता हूं कि :-

- 1. वास्को-डी-गामा से मिराज वापस फास्ट पैसेंजर ट्रेन जो पहले चलती थी वह फिर शुरू किया जाए ।
- 2. प्रतिदिन वास्को-डी-गामा से तिरूपति, सिकंदराबाद फास्ट गाड़ी चलाई जाए ।
- 3. वास्को-डी-गामा बीजापुर-सोलापुर-बीजापुर प्रतिदिन एक्सप्रेस चलाई जाए ।
- 4. 'गोमांतक एक्सप्रेस' नाम से प्रतिदिन वास्को-मुम्बई सीएसटी चलाई जाए ।
- वास्को-यशवंतपुर सप्ताह में जो गाड़ी चलती है वह गाड़ी प्रतिदिन चलाई जाए । उसका नाम 'दूधसागर एक्सप्रेस' दिया जाए ।
- 6. वास्को-हावड़ा अमरावती एक्सप्रेस जो सप्ताह में चार दिन चलती है उसे प्रतिदिन चलाया जाए । उसमें पेन्ट्री की व्यवस्था दी जाए ।
- 7. गाड़ी सं. 17312/17311 जो वास्को से चैन्नई जाती है । जो एक बार जाती है उसे सप्ताह में दो बार चलाया जाए और उसका नामकरण 'दूधसागर एक्सप्रेस' किया जाए ।

8. साउथ-वेस्टर्न रेल का सावर्डे स्टेशन आदर्श स्टेशन बनवाया जाए I

पूरे विश्व में से आने वाले पर्यटकों की सेवा के लिए अच्छी सुविधाएं उपलब्ध कराने की जरूरत है। स्टेशनों की मरम्मत करनी पड़ेगी। रेल मंत्री जी ने पिछले दो साल पहले मडगांव स्टेशन को वर्ल्ड क्लास स्टेशन का दर्जा दिया था। लेकिन आज तक यहां काम शुरू ही नहीं हुआ है। करमली स्टेशन जो राजधानी स्टेशन है उसे आदर्श स्टेशन का दर्जा देने की हम मांग करते हैं। इन सभी रेलवे स्टेशनों का काम करके सही मायने में गोवा वर्ल्ड क्लास टूरिस्ट स्टेशन बनाने में आप सहयोग देंगे। ऐसी अपेक्षा रखता हूं।

*DR. TUSHAR CHAUDHARY (BARDOLI): First of all, I would like to heartily thank the Hon'ble Minister of Railway, Shri Pawan Kumar Bansal for presenting a very progressive and dynamic Rail Budget. The Rail Budget has brought its own share of optimism for the people of Gujarat as the State is set to get a Rail Neer bottling plant and I am thankful to Hon'ble Railway Minister for the initiative. I fully support all the proposals in the Railway Budget. Simultaneously, I would like to put forth some suggestions also to be incorporated in the Railway Budget proposals which are as follows:

Surat is a very important industrial and commercial centre in the country yielding huge revenues for the Railways. In Gujarat, Surat city is known as financially and economically developed city and has developed as an important industrial hub for Diamond Industries, Textile Manufacturing Units, Corporate Sectors like Reliance Group, NTPC, ESSAR Group, L&T, ADANI Group, KRIBHCO, a Fertilizer Complex to manufacture Urea, Ammonia & Bio-fertilizers, ONGC, a Public Sector Undertaking under Government of India at Hazira area in Surat. Surat is also having Asia's biggest Sugar factories. I would like to request that the funds for converting Surat Railway Station into a "World Class Railway Station" as announced earlier may kindly be allocated in the current Budget 2013-14.

Bardoli in District Surat has been the "Karma Bhoomi" of the "Iron Man of India, Late Shri Sardar Vallabhbhai Patel". Bardoli is also having the biggest Sugar factories and has developed as an important industrial hub for Diamond Industries and Textiles

^{*} Speech was laid on the Table.

Manufacturing Units. I shall feel grateful, if Hon'ble Railway Minister considers Bardoli Railway Station under the "Multi Functional Complex Scheme".

A permanent post of A.C.M. at Class-I employee level at Surat Railway Station is absolutely required considering the size of traffic and commerce this city handles.

Goods Yard of Surat Railway Station should be shifted to Udhna or Bhestan Railway Station to solve the Surat intra-city traffic problem.

Number of daily trains from Surat to Ahmedabad and Mumbai is required to be increased to solve the dearth of trains in morning originating from Surat.

Frequency of Surat-Amarwati Express, Surat-Mahuva Express, Surat-Bhagalpur, Surat-Mujjafarpur Express, Amrawati Express, Surat-Puri Express, Bandra-Ajmer Express, Surat Tapti Ganga Train, Memo Train from Surat to Vapi, Bandra Ajmer Express, etc. should be increased mostly to daily basis as currently these trains are running once or twice a week only.

Railway may please provide and increase emergency quota of Surat in various classes in Surashtra Mail, Duranto Express, Bandra Bhavnagar Express, Trivandrum-New Delhi, Bhavnagar Kakinada Express, Train No.2288 Kochivali, Sampark Kranti, Golden Temple Train, Flying Rani Express, Suryanagari Express, 2953 August Kranti Express, Baroda Express, Gujarat Mail and Aaravali Express, No. 2951 Rajdhani Express, Dehradun Express, Bandra Avadh Express, Gujarat Queen, Paschim Express for Surat due to which passengers are suffering badly.

Some of the Express trains, namely, Duranto Express, Trivandrum-New Delhi Express, Sampark Kranti, may be provided stoppage at Surat Railway Station and Valsad Vadodara Intercity at Udhna Railway Station.

In my constituency Bardoli, Umarpada and Mangrol Tehsils are mainly undeveloped and tribal areas. These areas have no industry and other modern sustainable employment sources for the people. A major chunk of population, especially younger people go daily to Kosamba, Ankleshwar and Surat, which are industrially developed areas, for employment and education. A narrow gauge train runs once a day and passes through Umarpada, Kosamba and Mangrol Tehsils of my constituency. Earlier this train used to run more frequently which has reduced drastically now. I would request to increase the frequency of this Umarpada-Kosamba train at least to twice each in morning and evening according to the convenience of general public to facilitate better commuting in this otherwise backward area and approve conversion of this narrow gauge line into broad gauge line in this Budget. In this regard, I submit a newspaper clipping published in, a leading newspaper 'Gujarat Mitra' to Hon'ble Railway Minister.

Another important point I would like to mention here is that more than one lakh people living in and around the area of Uchhal Tehsil in Surat which is served by Bhadbhuja Railway crossing situated near Songarh. The railway crossing opens only for 12 hours (from 7 a.m. to 7 p.m.) during the day time and remains closed during the whole night. Due to this, vehicles cannot pass in an emergency situation during night. Most of the villages in this area are connected with this Railway crossing only to the outside world.

The opening and closing of the said Railway crossing should be increased to 24 hours by posting permanent suitable staff for whole day.

The number of current ticket and reservation windows at Surat Station should be increased. The east side of Surat Station should be developed for amenities. Provision of pure drinking water at platforms of Surat station should be made. RPF Police Station may be shifted to ground floor of Platform No.1 at Surat Railway Station for better law and order situation. Entrance and exist gates of Surat Railway Station should be made broad and easily accessible for passenger. Udhana station may be developed as a terminus to ease traffic situation at Surat station and nearby Municipal areas.

There is an urgent need to construct Railway Over Bridge near some of the Railway Stations like Sachin Railway Station, Sayan and Kim Railway Stations at Vadodara Division.

Gujarat Queen may be extended upto Mahesana along with provision of extra AC Chair car.

One more 2nd Class Sleeper Reservation Coach be added to Surat Bhusaval Passenger train.

One 2 tier AC Coach may be added to Tapti Ganga Train, Surat-Bhagalpur Express, Surat-Varanasi Express.

Railway Crossing gates at Gangadhra Bardoli Road, Godadara-Dindoli near Sachin village and Sayan are vary narrow which may be widened alongwith development of surrounding roads.

A few new trains may please be started. Surat –Nandubar-Surat MEMU/DEMU between 7.15 and 15.35 hrs; Surat-Sirdi-Nasik via Jalgoan, Surat-Amravati passenger Daily, Surat-Puri Express Daily, Local Train from Surat to Navapur on Bhusaval track may be started.

The implementation of construction of Udhna-Jalgaon double Rail Line may be monitored and supervised properly for early completion.

Vyara is the headquarters of the Tapi District and Vyara Railway Station has been declared as a modern Railway station during last financial year. At present, only a footover bridge exist on Vyara Railway platform. A foot-over bridge for connecting outer north and south side of Vyara and Tapi villages is required so that the natives may cross over the line without using railway platform. Earlier, there were two railway road crossings near Vyara Railway Station, which were closed and due to this the people from both sides are forced to walk about three kilometers to reach their destination. I would request to construct an outer foot-over bridge from north side to south side of Vyara Railway Station to connect the two locations for convenience of the people.

At Vyara-Songarh National Highway-6, near Virpur village, there is only one Railway crossing, which results in heavy traffic jams on both sides of border in Gujarat and Maharastra. As the area witnesses passage of heavy commercial vehicles and is also used by light vehicles of the natives of the area, an underpass structure below the railway line near the existing railway crossing is required and must be approved in the current Budget 2013-14.

I am sure, Hon'ble Railway Minister will kindly consider all of my suggestions and will incorporate them in the Railway Budget. I once again congratulate Hon'ble Minister for presenting an "Aam Aadmi Ka Rail Budget".

श्रीमती अन्नू टन्डन (उन्नाव): महोदय, मैं आपकी आभारी हूं कि आपने मुझे रेल बजट पर बोलने का अवसर प्रदान किया।

में खास कर एक बात कहना चाहती हूं।...(व्यवधान)

MR. CHAIRMAN: Nothing is going on record. Why are you wasting time of the House?

(Interruptions) ...*

MR. CHAIRMAN: Hon. Member, nothing is going on record.

(Interruptions) ... *

श्रीमती अन्तू टन्डन : सभापित महोदय, मैं एक बात कहना चाहती हूं कि राजनैतिक दृष्टिकोण से देखा जाए और वर्ष 2014 के चुनाव को ध्यान में रखा जाए तो विपक्ष जो कह रहा है या मीडिया में जो कहा जा रहा है। इन सब बातों को देख कर शायद लगेगा कि बजट में मजा नहीं आया, लोगों को लगता होगा। चूंकि वह चाहते थे कि बड़े-बड़े सपने बुने जाएं, बड़े-बड़े वायदे किए जाएं, बड़े-बड़े आश्वासन दिए जाएं, लेकिन सही बात तो यह है कि मैं माननीय मंत्री जी का धन्यवाद देना चाहती हूं कि इन्होंने एक बहुत ही प्रैक्टिकल, प्रैगमेटिक और संतुलित बजट पेश किया है, जिसमें सिर्फ आज की बात नहीं की है, कल की सुरक्षा की भी बात की गयी है। योजना आयोग ने 12वीं प्लान में रेलवे के लिए 5.19 लाख करोड़ रुपये निर्धारित किए हैं। भारतीय रेलवे के लिए यह उसका महत्व दर्शाता है। एक लाख करोड़ रुपये पीपीपी के माध्यम से और 1.05 लाख करोड़ रुपये आंतरिक संसाधनों के माध्यम से जुटाने की बात कही गयी है। मुझे लगता है कि अगर हिन्दुस्तान और भारतीय रेल का जो यह परिवार है, वह चाहेगा तो यह नामुमिकिन नहीं है, बहुत आराम से मुमिकिन है। लेकिन मैं मंत्री महोदय से आग्रह करना चाहूंगी कि जब आंतरिक संसाधन जुटाने की बात हो तो सामान्य रेल किराये के उत्पर जरूर ध्यान रखें।

वर्ष 2013-14 के लिए 63,363 करोड़ रुपये के प्लान इंवेस्टमेंट की बात की गयी है जो कि पिछले साल से 3,263 करोड़ रुपये अधिक है। यह भी इसका एक महत्व दर्शाता है।

अभी हमारे माननीय सदस्य महोदय कह रहे थे कि चीन और रूस के साथ हिन्दुस्तान भी बिलियन टन फ्रेंट के क्लब में आ रहा है। मेरे ख्याल से इस बारे में जो एक आत्मविश्वास और गर्व के साथ मंत्री महोदय जी बता रहे थे तो हमें भी गर्व महसूस हुआ। यह बात तो साबित हो जाती है कि देश का विकास हो रहा है तभी हम बिलियन टन फ्रेंट की बात कर सकते हैं, नहीं तो हम कम फ्रेंट की बात करते। विकास न होता तो यह बात कैसे होती?

रेल टिकट पर सीधे बढ़ोतरी न कर के फ्रेट में नौ प्रतिशत की वृद्धि कर के 94,000 करोड़ रुपये का लक्ष्य रखा गया है जो बिल्कुल सही है।

-

^{*} Not recorded.

इस वित्त वर्ष में 3,000 करोड़ रुपये का ऋण ब्याज सिहत वित्त मंत्रालय को वापस किया गया। इस पर जब मंत्री महोदय जी चर्चा कर रहे थे तब उनकी आवाज़ में जो खुशी और आत्मविश्वास झलक रहा था, वह भी साफ नज़र आ रहा था। मुझे बेहद खुशी है कि रेल विभाग एवं मंत्रालय अब सही हाथ एवं सही दिशा में है।

मैं इस वर्ष के प्रस्तावित 67 नयी एक्सप्रेस गाड़ियां, 26 नयी पैसेंजर गाड़ियां, 8 डी.ई.एम.यू. सेवाएं और 57 गाड़ियों के चालन-क्षेत्र में विस्तार का स्वागत करती हूं। साथ ही, मैं आशा करती हूं कि जो नयी एक्सप्रेस गाड़ियां जैसे कि बांद्रा टर्मिनस-रामनगर एक्सप्रेस व जयपुर-लखनऊ एक्सप्रेस मेरे संसदीय क्षेत्र से गुजरेंगी। उन का ठहराव भी हमारे संसदीय क्षेत्र उन्नाव से किया जाए।

इसके साथ कमज़ोर वर्गों व अलग तरह से जो सक्षम व्यक्ति हैं, उन के लिए निर्धारत 47,000 रिक्त पदों को भरने व बैकलॉग को समाप्त करने का जो निर्णय लिया गया है, वह सराहनीय है। बहुत दिनों से इस का इंतज़ार था और इससे उन्हें फायदा होगा।

सभापित महोदय, इसी बात पर मैं एक बात रखना चाहती हूं। आप के द्वारा अपनी सरकार से और इस सदन से अनुरोध करना चाहती हूं कि इन लोगों की बात जिन के बारे में मैं बात कर रही हूं, इन लोगों के लिए विकलांग शब्द का इस्तेमाल न किया जाए। विकलांग शब्द जब प्रयोग किया जाता है तो थोड़ा-सा अपमानजनक-सा साबित होता है। मेरा मानना है कि ऐसे भाई-बहनों को अलग तरह से सक्षम माना जाए तो वह ज्यादा अच्छा रहेगा। अक्सर हम लोग जब यह चर्चा करते हैं तो बार-बार उन्हें विकलांग क्यों कहते हैं?

माननीय रेल मंत्री द्वारा इस बजट में सत्रह रेल पुलों का पुनर्स्थापन शामिल है जिसकी मैं खास सराहना करती हूं। इसकी वज़ह यह है कि उन्नाव और कानपुर के बीच सन् 1875 में अंग्रेजों के ज़माने में यह रेलवे का पुल बना था। आप सोच सकते हैं कि इतने सालों में उस की आज क्या हालत होगी। हम बस यह प्रार्थना करते हैं कि इन सत्रह पुलों में वह पुल भी शामिल हो ताकि आगे हम कोई नुकसान न भुगतें।

हमें रेल की जरूरत क्यों पड़ती है? इसकी जरूरत लोगों को इधर-उधर ले जाने में या माल इधर-उधर ले जाने में पड़ती है। जब माल इधर-उधर जाता है तो औद्योगिक विकास की बात होती है लेकिन इन्सान जब इधर-उधर जाता है तो उसके कई कारण होते हैं। इन्सानों के मूवमेंट के लिए, ह्यूमन ट्राफिक बढ़ाने के लिए मेरे ख्याल से पर्यटन एक बहुत ही अहम भूमिका निभा सकता है। दस लाख से अधिक की जनसंख्या को सेवित करने वाले धार्मिक या पर्यटन की दृष्टि से सौन्दर्यीकरण के लिए मंत्री जी ने जिन 104 महत्वपूर्ण स्टेशनों के नाम चयन करके बताया है, उससे केवल रेल यात्रियों को ही सुविधा नहीं मिलेगी बल्कि इससे वहां का विकास भी होगा और लोगों को वहां पर रोज़गार भी मिलेंगे।

इसी क्रम में मैं बताना चाहती हूं कि ऐतिहासिक व धार्मिक दृष्टि से जिस तरह के स्थल उन्नाव में मौज़ूद हैं, उनकी पहचान बढ़ाने के लिए हमें पर्यटन बढ़ाना पड़ेगा और इस में रेल मंत्रालय हमारी काफी मदद कर सकता है।

कहने का तात्पर्य यह है कि मेरी मांग जायज़ है। मैं माननीय रेल मंत्री जी से अनुरोध करना चाहती हूं कि उन्नाव में व उन्नाव जैसे भारत के सभी जिलों में पर्यटन को मद्देनज़र रखते हुए रेल नेटवर्क व सुविधाएं बढ़ाने पर विचार करें।

उन्नाव जैसी ऐतिहासिक भूमि, शहीदों की भूमि, साहित्यकारों व रण-विजयों की धरती हमारे हिन्दुस्तान में गिनी-चुनी हैं। उन्नाव कलम, कोपीन और कृपाण की धरती कही जाती है। लव-कुश की जन्मस्थली, जानकी कुंड, माता कुश्हारी देवी का प्राचीन मंदिर, सफ़ीपुर का 400 सालों से ज्यादा पुराना इमामबाड़ा, राजा राव राम बख्श का किला, राजा सातन पासी का किला, महर्षि परशुराम की जन्मभूमि, पंडित सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', मौलाना हसरत मोहानी, पंडित प्रताप नारायण मिश्र, शिव मंगल सिंह सुमन, रमई काका, भगवती चरण वर्मा और अनेकों किवयों और साहित्यकारों की ये जन्मस्थली रही है। उन के साथ अमर शहीद चन्द्रशेखर आज़ाद, अमर शहीद राजा राव राम बख्श, अमर शहीद गुलाब सिंह लोधी, ठाकुर जसा सिंह से लेककर पंडित विश्वम्भर दयालु त्रिपाठी और हबीबुर्रहमान अंसारी जैसे आज़ादी की लड़ाई लड़ने वाले उन्नाव के वीर और राजनैतिक हस्तियां पैदा हुई हैं। आजादी एक्सप्रैस नामक शैक्षणिक पर्यटक गाड़ी चलाने का प्रस्ताव, जिससे वे स्थल आपस में जोड़े जा सकें, जो स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े हैं, वह एक बहुत ही सराहनीय कदम है। इससे हमारे युवकों को उन स्थानों की यात्रा की प्रेरणा तो मिलेगी, पर साथ में उन स्थलों का विकास और रोजगार भी बढ़ेगा।

सभापित महोदय, इसमें मैं मंत्री महोदय से आपके द्वारा यह अनुरोध करना चाहती हूं कि उन्नाव को भी शामिल किया जाए। दूर देशों से, खासकर साइबेरिया से सात समुंदर पार करके बहुत सुन्य चिड़ियां हमारे यहां पर प्रियदर्शनी पक्षी विहार में आते हैं। पर्यटन स्थल और रेलवे के लिए यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण जिला होने में उन्नाव में कोई कमी नहीं है। फिर भी बहुत सालों से बहुत किमयां रही हैं। जिस तरह का काम हम चाहते थे, उस तरीके का काम नहीं हुआ है। फिर भी इतने सालों में नज़रअंदाज किए जाने के बावजूद में यह नहीं कहूंगी कि तीन सालों में मंत्रालय ने हमारा सहयोग नहीं किया। कई ट्रेनें यहां पर रुकीं, लेकिन पर्याप्त नहीं। अभी तक हम संतुष्ट नहीं हैं। ट्रेने रुकवाने की फैहरिस्त और लोकल जो ट्रेनों की बोगिया बढ़ाने की बातें हैं, वह मैंने पूरी फैहरिस्त मंत्री महोदय को दी हैं। मैं आशा करती हूं कि मेरे जिले के तीस लाख जो लोग हैं, उनकी आवाज मेरे माध्यम से उनके पास पहुंच चुकी होगी।

मैं अपने लोक सभा क्षेत्र उन्नाव के संदर्भ में एक उदाहरण के तौर पर पेश करना चाहती हूं कि वह एक जंक्शन तो है, लेकिन उसके बावजूद जो आम नागरिक है, वह एक्सप्रैस ट्रेन या दूरदराज के लिए जो फास्ट ट्रेनें हैं, उनको पकड़ने के लिए या तो लखनऊ जाता है या कानपुर जाता है। आप अभी जो नयी ट्रेनें चालू करवाने जा रहे हैं, उसका ठहराव उन्नाव में हो, ऐसी मैं गुज़ारिश कर चुकी हैं।

में माननीय मंत्री जी द्वारा प्रस्तावित रेल सुरक्षा संबंधित जो उपाय हैं, उनका स्वागत करती हूं। बहुत सारी उन्होंने जैसे स्पार्ट है, सेल्फ प्रोपैल्ड एक्सीडेंट रिलीफ ट्रेनें हैं, क्रेश-वर्दी एलएचबी है, इन सब का मैं स्वागत करती हूं। सब कुछ अगर सही ढंग से किया जाता है तो भी हादसे क्यों होते हैं। अभी हमारे एक माननीय सदस्य इसका जिक्र भी कर रहे थे। अभी हाल ही में मैं भी इलाहाबाद महाकुंभ में गई थी। वहां जो हादसा हुआ है, उसके दर्द लोगों से मिल कर व्यक्तिगत तौर पर महसूस किए। उस हादसे में वृद्ध महिलाएं और कई बच्चे भी मरे हैं। कम्पैनसेशन के अलावा भावी योजनाओं में और अधिक कंटीजेंसी मार्जिन रखने में माननीय रेल मंत्री जी की सोच बहुत ही सराहनीय है, उसका मैं स्वागत करती हूं। इस हादसे के बावजूद मैंने वहां के रेलवे के प्लेटफॉर्म पर आवागमन और रेलवे द्वारा किए गए इंतजाम की इतनी तारीफ सूनी कि मुझे बहुत ही अच्छा लगा। पता चला कि राज्य सरकार के साथ मिल कर रेलवे वालों ने प्लानिंग तो बहुत बढिया की थी, परन्तु उस दिन रविवार का दिन था और संगम में नहाने वालों की संख्या बहुत ज्यादा थी। उस संगम में नहान करने वाले लोगों के बीच में स्टैमपीड हो गया। जब स्टैमपीड हुआ तो दो लोग मरे और अनेक घायल हुए। उन्हें हॉस्पिटल पहुंचाया गया। नतीजा यह हुआ कि महाकुंभ की व्यवस्था करने वाले जो अधिकारी थे, जो इंतजाम करने वाले थे, उन्होंने वहां से नहान करने वाले लोगों को स्टेशन की तरफ भेज दिया और वह भी सिविल लाइंस की तरफ, जो स्टेशन के सिविल लाइंस की तरफ है, वहां पर भेजा, जहां पर सिर्फ आरक्षित रेल यात्रियों का जाना तय था। जब भीड़ वहां पहुंची तो वहां पर इंतज़ामात ठीक नहीं थे। उसकी वजह यह हुई कि जो पैदल यात्री चलने वाले, एफओबी था, उसके ऊपर भीड़ ज्यादा हो गई। अगर ये समय से रेलवे के अधिकारियों को सूचना दे देते तो उसका पर्याप्त इंतजाम बहुत आराम से हो सकता था और ये हादसा न होता। लोग मरे, लेकिन स्टैमपीड में भी मरे और एफओबी पर चढने वाले लोग भी मरे। लेकिन उसकी गिनती एक ही तरफ हो गई। यह कलंक रेलवे के ऊपर लगा, जिसके लिए मुझे काफी दुख हुआ, वहां पर देखने के बाद।

इससे हमें सिर्फ एक ही सीख मिलती है कि हादसे के बाद नहीं, अगर तुरंत उसी वक्त लोगों के बीच में कोऑर्डिनेशन और समन्वय बना दिया जाए तो इस तरीके का कलंक कभी किसी के ऊपर नहीं लगेगा। समन्वय की बहुत आवश्यकता है। इस हादसे में महिला और बच्चे कई मरे और उनकी सुरक्षा के लिए जो पहलू मंत्री महोदय ने रखे, वे सराहनीय हैं। माननीय मंत्री महोदय को मैं खासकर धन्यवाद देना चाहती हूं कि उन्होंने महिलाओं की सुरक्षा के ऊपर खास ध्यान देते हुए आरपीएफ की महिलाओं की भर्ती बढ़ाने की बात की है, लेकिन आरपीएफ की भर्ती बढ़ाने में चार कम्पनियों का गठन और दस प्रतिशत रिक्तियां महिलाओं से आरक्षित करने की बात की गई है। इसमें मैं उनसे अनुरोध करना चाहती हूं, अगर आप 35 परसेंट नहीं कर सकते हैं, तो कम से कम बीस परसेंट या पच्चीस परसेंट रिक्तियां महिलाओं के लिए आरक्षित करें तो बहुत अच्छा होगा, क्योंकि बहुत सी महिलाएं वहां चलती हैं और उनके अधिक मात्रा में वहां रहने पर महिलाओं को काफी सुरक्षा महसूस होगी।

एक आम मुसाफिर की चर्चा क्या होती है? उसकी चर्चा होती है, बुकिंग से लेकर महफूज सफर हो जाए, उसे साफ बिस्तर मिल जाए, उसका लैट्रिन-बाथरूम स्वच्छ हो, ताजा खाना मिल जाए, समय पर पानी मिल जाए और जगह पर आप पहुंच जाएं। बजट भाषण में आप अगर देखें तो मंत्री महोदय ने खासकर बहुत विस्तार से इसके ऊपर चर्चा की। इससे यह लगता है कि उनका इरादा बहुत साफ है। इससे उम्मीद ही नहीं हमारा विश्वास भी जागा है।

अंत में मैं अपने वीर जवानों एवं शहीदों को जो रेल मंत्रालय ने श्रद्धांजिल के रूप में मुफ्त रेल यात्रा की सुविधा उनके वृद्ध माता-पिता के लिए दी है, उसके लिए मैं सलाम करना चाहती हूं और संसद की तरफ से उनको हृदय से धन्यवाद देना चाहती हूं। इस बजट का सही क्रियान्वयन एक अहम कदम होगा, तािक इसका लाभ भारतवािसयों को मिल सके।

महोदय, इसी संदर्भ में मैं आपके द्वारा माननीय मंत्री महोदय से अनुरोध करना चाहूंगी कि बजट 2012-13 की नयी लाइन सर्वेक्षण सूची में जो उन्नाव को दी हुयी दो रेल लाइनें थीं, उन्नाव-पुरवा-मौरावां-लखनऊ और दूसरा सफीपुर (उन्नाव-पीलीभीत खंड पर) बिठूर स्टेशन वालों का सर्वेक्षण जल्द से जल्द करवाने की कृपा करें। हमारे क्षेत्र के लोग इसका इंतजार कर रहे हैं। मैं मानती हूं कि इस काम में समय लगता है, लेकिन अब एक साल गुजर गया है। मैं उम्मीद करती हूं कि इस पर काम जल्दी से जल्दी शुरू होगा।

माननीय सभापित महोदय, मैं माननीय रेल मंत्री द्वारा पेश किए बजट 2013-14 का समर्थन करती हूं और अपनी बात को यहीं समाप्त करती हूं,

*श्री राम सिंह राठवा (छोटा उदयपुर): हम हर वक्त अलग-अलग बात करते हैं, कभी-कभी चुनाव को ध्यान में रखकर घोषणा करते हैं और योजना को लागू करने और पूरी करने में 10 से 12 साल लग जाते हैं। आज भी कई

-

^{*} Speech was laid on the Table

लाइनें 10 से 15 साल के विलम्ब में पड़ी हैं। उनको पूरा करने में रेलवे ने कभी ठोस कदम नहीं उठाया। हम घोषणा करते हैं। बाद में विलम्ब होने की वजह से धनराशि बढ़ जाती है और बढ़ी हुई धनराशि की वजह से काम रुका पड़ा रहता है।

जहां सब कुछ होते हुए भी रेल मंत्रालय कुछ करना ही नहीं चाहता है ऐसा मेरा मानना है और मैं रेल मंत्री जी को बताना चाहता हूं कि आज से करीब 150 साल पहले नेरोगेज़ रेल लाइन शुरू हुई थी। गुजरात की सबसे पुरानी रेल लाइन डभोई मीयांगाम से शुरू हुई थी। धीरे-धीरे प्रताप नगर , छोटा उदयपुर-डभोई-चांणोद-चांपानेर-अंकलेश्वर-जंबुसर-पादरा-पावी माईत्स-शीवराजपुर-समलाया-टीबा-मालसर आदि कई नेरोगेज़ रेल लाइन शुरू हुई थी। आज भी कुछ रेल लाइन चल रही हैं।

अमान परितर्वन की परियोजना के अंतर्गत पादरा-जंबुसर शामिल किया जाए और उनको दहेज तक जोड़ने के लिए नया लाइन डाला जाए। इस बजट में राजपीपला-केवडीया नया लाइन घोषित किया है उसका मैं स्वागत करता हूं और मेरा सुझाव है कि इस लाइन को तणखला तक लाया जाए, क्योंकि तणखला तक लाइन है।

मेरा निवेदन है कि डभोई एन.जी. हैरीटेज पार्क बना कर डभोई से जितनी भी नेरोगेज़ लाइनें चल रही थी कुछ बंद है, उन सभी नेरोगेज़ रेल लाइनों पर हैरीटेज गाड़ियां चलायी जाए या तो सभी लाइनों में परिवर्तन किया जाए।

हैरीटेज कॉरीडोर के संदर्भ में यह उल्लेखनीय है कि भारत का एकमार्ग रेलवे ट्रैनिंग कॉलेज गुजरात के बरोडा में स्थित है। इस कॉरीडोर के बन जाने से इलाके में स्थानीय, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा। नैरोगेज़ रेलवे लाइन का नेटवर्क यहां अर्से से है उसका यथोचित रखरखाव और संस्क्षण बहुत जरूरी है। हम नयी रेलवे लाइन, नए रेल गाड़ियों का स्वागत करते हैं। साथ ही साथ यह भी चाहते हैं कि पुराने रेल की लाइनों और पुरानी गाड़ियों पर भी रेल मंत्री समय रहते ध्यान दें, तािक खराब हालत में पड़े रेलवे के हालत में सुधार हो और साथ ही साथ इनका संस्क्षण हो सके। इस इलाके में यह हेरीटेज कॉरीडोर बन जाने से यह ट्रायबल बेल्ट और यहां रहने वाले लोगों को बहुत सी सुविधाएं मिल सकेगी और विकास भी अच्छे से हो सकेगा।

देश में बहुत तीर्थस्थान हैं जहां श्रद्धालु लोग पूजा अर्चना के लिए जाते हैं। गुजराती में एक कहावत है "काशी का मरण और सूरत का लोभन" करने का मतलब यह है कि अगर काशी में मृत्यु हुई तो भाग्यवान है वैसे अगर भोजन करना है तो सूरत का वो भी भाग्यवान होता है। यह ऐसा एक बहुत बड़ा तीर्थ है, जहां देश के कई हिस्सों से लोग गुजरात के डभोई से 16 कि.मी. दूरी पर नर्मदा किनारे चांणोद तीर्थ में आते है। चांणोद पूजापाठ के लिए अलग महत्व है। देश-परदेश से लोग सर्विपेत्रु श्राद्ध पूजा के लिए आते हैं। अपने देश में तीन स्थान ऐसे हैं, जैसे गया में सिर्फ पित्रु श्राद्ध होता है। सिद्धपुरा में मातृ श्राद्ध होता है, लेकिन चांणोद में सर्व पित्रु श्राद्ध होता है। ऐसे महत्वपूर्ण तीर्थ स्थान के

लिए पहले नैरोगेज़ भी थी, अभी बंद है। इस बंद नैरोगेज़ लाइन को बड़ी लाइन मे परिवर्तित किया जाए और डभोई से चांणोद लाइन तुरन्त चालू की जाए।

जब देश की आजादी की लड़ाई चल रही थी तब कहीं जानी-मानी हस्तियों ने नर्मदा के किनारे चांणोद में गुप्तवास किया था, जिनमें तात्या टोपे भी थे। ऐसे ऐतिहासिक और तीर्थ स्थान के महत्व को देखते हुए और हेरीटेज लाइन के महत्व को बढ़ावा देने की कृपा करके इस बजट में घोषणा करने का मेरा अनुरोध है।

मैं मा. रेल मंत्री महोदय जी का ध्यान देश के अधिकांश बहुल आदिवासी क्षेत्र में रेल परियोजनाओं के प्रति उदासीनता और अत्यधिक विलम्ब से चल रहे कार्यों के प्रति आकर्षित करना चाहता हूं।

मेरा संसदीय क्षेत्र छोटा उदयपुर जो गुजरात के बहुल आदिवासी क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है। गुजरात और मध्य प्रदेश के आदिवासी क्षेत्र के बीच सीधे सम्पर्क के लिए छोटा उदयपुर से धार तक की नई रेल लाइन चालू करने के लिए परियोजना चल रही है, वो बहुत लम्बे समय से धीमी गति चल रही है और अत्यधिक विलम्ब से इसका कार्य हो रहा है। यह योजना संपन्न होने के बाद आदिवासी क्षेत्र के लिए अत्यंत लाभप्रद साबित होगी।

मा. रेल मंत्री महोदय जी से निवेदन करता हूं कि वे स्वयं इस परियोजना को शीघ्रातिशीघ्र नई रेल लाइन चालू करने के लिए हस्तक्षेप करे छोटा उदयपुर और धार के स्थानीय आदिवासी लोगों को देश की मुख्य धारा से जोड़ा जा सकेगा वे इस प्रस्ताव को रेल बजट में रखकर छोटा उदयपुर से धार तक की नई रेल लाइन चालू करने के लिए यह योजना रेल बजट में शामिल करें और इस योजना को देय वित्तीय सहायता का आबंटन किया जाए ताकि पश्चिम भारत के आदिवासी संभाग को रेल सम्पर्क से जोड़ा जाए।

प्रतापनगर से छोटा उदयपुर अभी ट्रेन दिन में दो बार चल रही है, उसको बढ़ाकर पांच बार चलाया जाए।

* SHRI R. THAMARAISELVAN (DHARMAPURI): At the outset, I would like to put it here that the Hon'ble Minister gave some happiness and some disappointment for the State of Tamil Nadu. The people of Tamil Nadu expected much from the Hon'ble Railway Minister being the last Railway Budget of the UPA II. However, I would like to say here that one should be happy with what he has got and pursue for what he has not achieved or got it.

I am thankful to the Hon'ble Railway Minister that finally the railways acceded to the much long pending demand of the people of my parliamentary constituency for a railway line between Morapur and Dharmapuri and included in the budget for updating of

-

^{*} Speech was laid on the Table.

the survey. This is the long pending demand of the people living in my constituency. If this project is implemented, the people from the headquarter of Dharmapuri district i.e. Dharmapuri town and surrouding towns will be benefited and it would also generate a lot of resources for the Railways as these routes are highly economically viable because of the geographical structures connecting places of importance with regard to religion, commerce and tourism.

Following are the few railway projects concerning my Dharmapur parliamentary constituency which need your special attention as these have been hanging for many decades and I desire that these may be taken up on an urgent basis.

Through my earlier letter in connection with the previous meeting convened by you, I have made representation to augment or implement the following demands of people of my constituency and I reiterate again herein to consider and implement them on an urgent basis:

Construction of Rail over-bridges at following places are urgently required:

- a) Adhiyaman Kottai Railway Gate falling on the Dharmapuri-Salem National Highway (NH-7)
- b) Vennampatti Railway Gate in Dharmapuri town
- c) Pennagaram Railway Gate (Kumarasamy Pettai Railway Gate)
- d) Chnthalpadi Railway Gate
- e) Buddireddipatti Railway Gate

Although, these rail over-bridges have been sanctioned, yet, there is an urgent need to complete these over bridges at above places. All these places fall under Bangalore Division of South Western Railways and under Salem Division of Southern Railway. The construction of these over bridges is very essential as public passing through these gates are finding it very difficult to commute.

There is also need to construct a level crossing at Sivanalli under Salem Division of Southern Railways. In the absence of level crossing at Sivanalli, people from more than 30 villages have to take the risk of their lives by crossing un-manned level crossing. There is

a sizeable population in each of these 30 villages. The vehicular movement has increased and thereby the accidents have also increased at the above unmanned level crossing.

The route for the new train to be run between Nagarcoil-Bangalore-Nagarcoil announced in the budget for 2013-14 is via Madurai-Trichy-Namakkal-Salem-Jolarpettai-Bangalore. However, if the route of the said new train is made as Bangalore-Hosur-Dharmapuri-Salem-Namakkal-Trichy-Madurai-Nagarcoil, the demand of the several lakh rail commuters can be met. Therefore, it is urged that the route of the said new train may please be fixed as aforesaid instead of the route announced in the budget for the said train.

Railway station at Morappur is an ancient Railway Station under the control of Salem Division of Southern Railways which falls in my constituency. This station serves the people who are heading towards Chennai and other parts of the country and the State. Hundreds of people visit the railway station regularly. Dharmapuri District is the most backward district in the State of Tamil Nadu. Due to this backwardness, the people of this district had to move from Dharmapuri to far away places for their livelihood and for better prosperity. However, the trains which are passing this Morappur station, do not stop over here i.e. Train No.3351/3352 Tata Nagar-Alleppey-Tata Nagar-Bokaro Express and 2695/2696 Chennai-Thiruvanathpuram, Chennai Express.

Another important Railway Station falling in my district is Bommidi. This station also serves the people of both Dharmapuri and Krishnagiri districts. However, this station does not have stoppage for train no. 6381/6382 Mumbai-Kanyakumari Mumbai as well as 7229/7230 Sabari Express running between Thiruvanathpuram to Hyderabad via Tirupati. It is painful and pertinent to mention here that when the Mumbai-Kanyakumari GST Express enters Kerala, it stops at all stations in Kerala, whereas it does not have a stoppage at many important stations in Tamil Nadu.

Dharmapuri Railway Station under control of Bangalore Division of South-Western Railway serves the people of both Dharmapuri and Kanyakumari heading towards Bangalore, Mumbai, Thiruvanathapuram etc. However, it does not have a stop for train No.6537/6538 Bangalore-Mangalore-Bangalore Express. Therefore, I urge upon the

Hon'ble Minister to direct the concerned authorities to make a stoppage for this train at Dharmapuri.

There has been a popular demand for stoppage of train no. 16537/16538 running between Bangalore and Kanyakumari (Nagarcoil) Express at Dharmapuri, and also to enhance its frequency on daily basis instead of twice in a week as there is huge volume of passenger traffic between Nagarcoil and Bangalore daily.

Stoppage of train intercity running between Banglore - Ernakulam - Banglore(12677-12678) Mysore- Mayladuthurai-Mysore(16231-16232) at Palacode .It has been a long pending demand of the people of this area which is one of the biggest taluks in the Dharmapuri district. Palacode is a big commercial centre having big sugar mill, etc. Being a big commercial centre, the movement of people from here to many places across the state and other parts of the country is quite high. Moreover, passenger traffic to industrial towns like Coimbatore, Tirupur, etc. from here is quite high. Therefore, if a stoppage is allowed for this train at Palacode, both the people and the railways will benefit immensely. Therefore, stoppage at Palacode for this train be provided.

Presently there is no reservation facility at Palacode railway station and the people have to visit Dharmapuri railway station which is more than 25 kms away from Palacode. In the absence of reservation facility at Palacode, the businessmen of this area, students and others are affected badly and they are forced to look out for other mode of transportation. Therefore, if a reservation counter is opened at Palacode railway station, both the people and the railways will benefit handsomely.

Dharmapuri being close to Bangalore, the capital of Karnataka, passenger traffic to and fro (Dharmapuri-Bangalore-Dharmapuri) is quite high as in the case of traffic to all other state capitals in the country from its neighbouring areas. Presently the said passenger train is only plying between Bangalore-Hosur-Bangalore. If this train is extended upto Dharmapuri, several hundreds of people can travel daily on both sides from Dharmapuri to Bangalore and Bangalore to Dharmapuri. Therefore, this train be extended upto Dharmapuri.

I urge upon the Hon'ble Railway Minister to look into these long pending demands of the people of my parliamentary constituency as he has considered the new railway line between Morappur and Dharmapuri.

*श्री राम सिंह करवां (चुरू): रेल बजट में इस बार उम्मीदें कुछ ज्यादा थी, लम्बे समय पश्चात् कांग्रेस पार्टी का मंत्री रेल बजट पेश कर रहा है, लेकिन इस बार भी रेल बजट वैसा ही है जैसा वह हमेशा होता है। वहीं वायदे, वहीं दावे, वहीं परियोजनाएं और रेल के खस्ता हालात से उबरने का कोई ठोस प्रस्ताव नहीं। 20 वर्ष पूर्व चीन प्रति किलोमीटर यात्री के लिहाज से भारतीय रेल से 15 वर्ष पीछे था, अब चीनी रेलवे के पास 90,000 किलोमीटर का रेल मार्ग है और अब वह भारतीय रेल से 50 वर्ष आगे है। आज रेल की आर्थिक स्थिति बहुत बुरी है, जो रेलवे हमारी अर्थव्यवस्था का इंजन बन सकती थी, वह एयर इंडिया की तरह बोझ बन जाने के हालात पैदा हो गए हैं। रेल मंत्री जी ने कुछ समय पहले यात्री किराए की वृद्धि की थी, अब किराया नहीं बढ़ाने का श्रेय लेने का प्रयास कर रहे हैं। बजट में रेल बजट में यात्री किराया नहीं बढ़ाया गया है लेकिन अन्य जरियों से यात्रा को महंगा कर दिया गया है। मालभाड़े में 5 प्रतिशत की वृद्धि की गई है। भारत दुनिया का ऐसा देश बन गया है जहां रेलवे का माल ढ़ोने का भाड़ा सबसे ज्यादा है। भविष्य में भी डीजल की कीमत के आधार पर माल भाड़ा नियंत्रित होगा, बजट में हर वर्ष यात्री किराए में 6 फीसदी तक की वृद्धि के संकेत दिए हैं।

मेरे संसदीय क्षेत्र की जनता नई गाडियां चलाने एवं उंनके विस्तार की मांग वर्षों से कर रही है। जोधपुर से दिल्ली सराह रोहिल्ला गाड़ी नम्बर 22481/22482 सुपर फास्ट गाड़ी का संचालन प्रतिदिन करते हुए इसे हरिद्वार तक, बान्द्रा से जम्मू तवी 19027/19028 विवेक एक्स. साप्ताहिक का संचालन सप्ताह में तीन दिन, हावड़ा-जैसलमेर 12371/12372 साप्ताहिक को सप्ताह में तीन दिन, सूरत से चंडीगढ़ एक्सप्रेस गाड़ी वाया अहमदाबाद-जोधपुर-डेगाना-सादुलपुर-हिसाब, बान्द्रा से हरिद्वार एक्सप्रेस वाया अहमदाबाद-जोधपुर-चुरु, अमृतसर से मुम्बई वाया हिसार-सादुलपुर-रतनगढ़-जोधपुर, दिल्ली सराय रोहिल्ला-सुजानगढ़ 14705/14706 सालासर एक्सप्रेस का विस्तार लाडनू तक करते हुए छापर ठहराव किया जाए, जोधपुर-बान्द्रा सूर्यनगरी एक्सप्रेस 12479/12480 का विस्तार रतनगढ़-सादुलपुर, हैदराबाद से हजरत निजामुद्दीन गाड़ी नम्बर 12721/12722 दक्षिण एक्सप्रेस का विस्तार बीकानेर तक, जोधपुर-रेवाड़ी सवारी गाड़ी 54809/54810 का विस्तार दिल्ली सराह रोहिल्ला तक, लुधियाना से हिसार 05401/05402 सवारी गाड़ी का विस्तार खेगाना तक, बाड़मेर-जोधपुर सवारी गाड़ी 54815/54816 का विस्तार रतनगढ़ होते हुए रेवाड़ी तक, बजट में घोषित रतनगढ़-बीकानेर पैसेंजर ट्रेन को सादुलपुर तक, गोरखपुर-हिसार गोरखधाम सुपर फास्ट गाड़ी का विस्तार सादुलपुर तक, बीकानेर से गौहाटी वाया रतनगढ़ सुपर फास्ट, बीकानेर से हावड़ा वाया रतनगढ़ दुरन्तो एक्सप्रेस, रेवाड़ी-बीकानेर साधारण सवारी गाड़ी, बीकानेर-जयपुर गाड़ी वाया रतनगढ़-डेगाना-फुलेर होकर चलाई जावे। डेगाना-सादुलपुर के बीच 6-7 कोच की डी.ई.एम.यू. सवारी गाड़ी के प्रतिदिन 2-2 फेरे लगाए जाए। सादुलपुर ज. के पूर्व व पश्चिम साईड में सी-142 व सी-144 पर निर्मित मानव सहित रेल क्रॉसिंग पर रेल उपरिप्ल का निर्माण, चुरू जं. के पूर्वी साईड में

⁻

^{*} Speech was laid on the Table

चुरू-सादुलपुर रेल मार्ग पर (चुरू-राजगढ़ सड़क पर) निर्मित मानव सहित रेल क्रासिंग पर रेल उपरिपुल निर्माण, सादुलपुर-हिसार खंड पर मानव सहित समपार सी-43 को यथावत रखने, नोहर-दीपलाना स्टेशनों के मध्य (सादुलपुर-हनुमानगढ़ खंड) सोती बड़ी हाल्ट स्टेशन कायम करने, सादुलपुर-हनुमानगढ़ खंड पर गोगामेड़ी-भादरा के मध्य रेल कि.मी. 105 के पास, जहां रेलवे क्वार्टर निर्मित है, सरदारगढ़िया हाल्ट स्टेशन कायम करने, सादुलपुर-हिसार खंड पर झुंपा-सिवानी के मध्य सैनीवास हाल्ट स्टेशन कायम करने, उ.प. रेलवे सादुलपुर जं. व सुजागढ़ स्टेशनों के पश्चिमी साईड में आबाद बस्तियों को जोड़ने के लिए फुट ब्रिज, चुरू जं. पर निर्मित रेलवे कॉलोनी को जोड़ने वाली फुट ओवर ब्रिज से प्लेटफार्म नं. 1 व 2 पर सीढियाँ निर्माण, सादुलपुर-हनुमानगढ़ खंड पर तहसील भादरा स्टेशन के पश्चिम साईड में फूट ओवर ब्रिज, चुरु जं. एवं सादुलपुर जं. पर यात्रियों की भीड़ को देखते हुए आरक्षण केन्द्रों पर एक-एक अतिरिक्त टिकट खिड़िकयां चालू करने, सादुलपुर जं. के सी-142 के निकट एकत्रित गन्दे पानी को आबादी से अन्यत्र दूर निकासी हेतू नाला निर्माण। पिछले रेल बजटों में घोषित नई रेल लाइन परियोजना सरदारशहर-हनुमागढ, सीकर-नोखा, भिवानी-पिलानी-चुरू, सूरतगढ़-सरदारशहर-सादुलपुर, चुरू-तारानगर-नौहर का सर्वेक्षण किया जा चुका है, लेकिन इनमें से किसी एक भी नई रेल लाइन डालने की परियोजना का बजट में चर्चा तक नहीं है। ये महत्वपूर्ण रेल लाइन है, जो काफी बड़े भाग को रेल सेवाओं से जोड़ने का काम करेगी। आपकी योजना मानव रहित समपार के स्थान पर रेल अंडर पास का निर्माण की है। यह काम तो आप करने जा रहे है लेकिन उन स्थानों, सड़क मार्गों व कटानी रास्तों का क्या होगा, जहां 40-40 किलोमीटर तक रेल समपार नहीं है। गांव एक तरफ है व गांव की कृषि भूमि रेल लाइन के दूसरी तरफ उन किसानों के समक्ष विकट संकट है, वे खेतों में जाए तो कैसे जाए।

रेलवे का सौ साल पुराना रेल कानून आज भी लागू है, इसे बदला जाना चाहिए। इन रेल अंडर पास पर होने वाला व्यय रेल को वहन करना चाहिए। वर्तमान में 4X3.60 मीटर साइज के रेल अंडर पास का निर्माण किया जा रहा है। इस साइज में बड़े वाहन, चारा लाने वाले वाहन क्रोस नहीं कर सकते। उक्त साइज के अंडर पास के स्थान पर 5X4 मीटर के अंडर पास का निर्माण किया जाए। निम्न स्थानों पर रेल अंडर पास की मांग काफी समय से की जा रही है। हनुमानगढ़-सादुलपुर खंड पर लाल खां की ढाणी-7, 9 आरपीएम 60/4-5, नौहर-सोती बड़ी 80/4-5, सरदारगढ़िया-45 एसएमआर व ढाणी बेरवाल 105/5-4, कालाना से मोमनवास-डोबी 102/12-14, भनाई-सिधमुख 136/13-14, सिधमुख-चबुकिया ताल 44/11-12, सिधमुख-चुबकिया ताल 146/1-6, ढिगारला-घणाउ 153/6-7, चैनपुरा छोटा-हांसियावास 156/7-8, ख्याली-भगेला, पहाइसर-नरवासी 165/7-8, भगेला-चैनपुरा गुलपुरा-मिठ्ठीरेडूवान, गुलपुरा-लूदी, गुलपुरा-लुटानासदासुख 169/13, सादुलपुर-रेवाड़ी खंड पर किरतान-बेवड/भैंसी, भोजाण-बेवड़ कालरी-बेवड़, रड़वा-कान्दराण 215/01, रामपुरा शहर 192/9, गुगलवा-रामपुरा 196/7-8, सादुलपुर-रतनगढ़ खंड पर रतनसरा-खुडेराबीकान-जान्दवा 309/0-1, खारिया-खुडेरा चारणान, जुहारपुरा गांव के पास और सिरसला गांव के उत्तर साईड में,

हिसार-सादुलपुर खंड पर लसेड़ी-मिठी रेडूवान 56/5-6, एन.एच. 65 से लुटाना पूर्ण, लुटाना अमीचन्द व लुटाना सदासुख के ग्रामीण रेल अंडर ब्रिज के लिए धरने पर बैठे है, रतनगढ़-सरदारशहर खंड पर उदासर-मेहरासर 34/1-2, कल्याणपुरा साजनसर 37/1-2 एवं 38/1-2, रतनगढ़-भानूदा 5/1-2, रतनगढ़-सिकराली 3/8-9, पाबूसर-मालासर 19/2-3, रूपलीसर-मांगासर 24/9, रूपलीसर-खिलेरिया 22/4, घोटड़िया-गोगासर 14/7-8, गोलसर-गोगासर 11/1-2, नौसरिया-कांगड़ 7/3-4 पर अंडर ब्रिजों की मांग कर रहे हैं, काफी स्थानों पर लोग धरने पर बैठे है।

* SHRI SUKHDEV SINGH (FATEHGARH SAHIB): First of all, I congratulate to Hon'ble Minister of Railways Shri Pawan Kumar Bansal for presenting balanced railway budget.

I appreciate the action taken by the Hon'ble Minister for special security providing the women perform their journey by railway. In these times the women of the country do not feel secure when they are moving alone from home. The Hon'ble Minister has taken steps for the security and dignity of the women passengers.

I appreciate the action taken by Railway Minister regarding the station serving a population of more than one million or those serving place of religious importance for immediate attention to all aspects related to cleanliness, progressive extension of bio-toilets on train extension of UTS, ATVM.

I have made a request to Hon'ble Rail Minister regarding upgrading of more railway stations. I also make a request for some genuine demands of my constituency.

Hon'ble Railway Minister going to establish Railway Bottling Plant in the country but ignored Punjab. I made a request that a Rail Neer Bottling Plant may be establish at Sirhind, Punjab.

Sirhind Railway Station was declared Adarsh Station in last budget and the work is going at a very slow pace. There is a need to complete the work speedly.

Khanna is known as a big Grain market in India, please declare a freight corridor at Khanna, Punjab and Khanna railway station also declared as Adarsh Railway Station.

I made a request to Railway Minister to provide Jansatabadi from Amritsar to Delhi and Delhi to Amritsar. It is a matter of record that two Satabadi are successfully running on Delhi Amritsar track but there is no train like Jansatbadi for middle class and poor people.

Escalators are moving successfully in Metro Station but a lift system may be provided at small station and junction for the handicapped and old age peoples.

A Mobile Ticket Van may be provided in rural and remote areas of my constituency.

^{*} Speech was laid on the Table.

There is no doubt the catering facilities have improved but Hon'ble Minister knows very well that it needs more improvement.

It is a matter of record that most of foreigners visit Punjab, they must do the Holy Darshan of Golden Temple. So there is need to set up facilities like a Executive lounge at Amtritsar.

*श्री जितेन्द्र सिंह बुन्देला (खजुराहो): रेल मंत्री महोदय द्वारा पेश किए गए रेल बजट 2013-14 पर सदन में चर्चा की जा रही है। मेरे पूर्ववर्ती वक्ताओं द्वारा बजट के संदर्भ में बहुत कुछ कहा गया है। लेकिन एक बात सुनिश्चित है कि रेलवे विकास की वाहिनी है। रेलवे के सम्पर्क मात्र से उस क्षेत्र के विकास की संभावना बढ़ जाती है। किंतु खेद से कहना पड़ता है कि हम जब स्वतंत्र हुए तब हमको अंग्रेजों द्वारा 54 हजार कि.मी. रेल लाइन सौंपी गई थी। लेकिन हमारे स्वतंत्रता के 65 साल बाद हम केवल 11 हजार कि.मी. ही रेल लाइन बिछा पाए हैं। इस पर हमें विचार और चिंतन करने की आवश्यकता है। रेलवे द्वारा 12 हजार 180 रेलगाड़ियों के द्वारा करीब 2 करोड़ 30 लाख यात्रियों द्वारा प्रतिदिन आवागमन किया जाता है। लेकिन हमारी बढ़ती जनसंख्या के दबाव को झेलने के लिए यह स्थिति संतोषजनक नहीं कही जा सकती।

हमारे खंड प्रायः जैसे देश में अभी भी केवल 7 हजार से कुछ अधिक रेलवे स्टेशन है। इसकी संख्या और नई पटरी बिछाने की जरूरत को देखते हुए सरकार को इस पर ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है।

लेकिन सरकार द्वारा संसाधनों के अभाव की बात कहकर रेलवे के विस्तार की उपेक्षा की जा रही है। अभी हाल ही में रेलवे मे आमूलचूल परिवर्तन लाने के लिए डॉ. अनिल काकोड़कर तथा सैम पित्रोदा समिति का गठन किया गया। उन्होंने अपनी रिपोर्ट में सिफारिश की है। उनको देखते हुए सरकार केवल लोकप्रिय घोषणा तो कर रही है लेकिन इन घोषित परियोजनाओं को पूरा करने पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है। उनके आकलन के अनुसार पूर्व घोषित परियोजनाओं को पूरा करने के लिए 1 लाख 47 हजार करोड़ रुपए चाहिए। सरकार ने स्वयं माना है कि रेलवे वित्तीय संकट से जूझ रही है। फिर घोषणाएं क्यों की जा रही हैं। सरकार ने रेलवे बजट में भाड़ा न बढ़ाने की बात कही है किंतु बजट से दो महीने पहले ही रेल भाड़ा बढ़ाकर रेल यात्रियों से 6600 करोड़ रुपए की उगाही का इंतजाम कर लिया गया है। डीजल की मूल्यवृद्धि के कारण रेलवे पर 3300 करोड़ रुपए का बोझ पड़ा है। इसके लिए सरकार ने प्रत्यक्ष मूल्यवृद्धि करने की बजाय पीछे का रास्ता चुना। रेल मंत्री ने आरक्षण शुल्क, तत्काल सेवा तथा टिकट निरस्तीकरण शुल्क में बेहिसाब बढ़ोत्तरी करके देश की जनता को बरगलाने का प्रयास किया है। डीजल की मूल्यवृद्धि को रेलमाड़े तथा मालभाड़े से जोड़ने के कारण आगे भी रेल टिकट तथा मालभाड़े के दाम बढ़ेंगे। इससे महंगाई में और इजाफा होगा। रेल मंत्री ने माल भाड़े टैरिफ में 5 प्रतिशत बढ़ोत्तरी करने का प्रस्ताव भी दिया है। यह भविष्य में लोगों पर पड़ने वाले बोझ का सूचक है। इसलिए रेलमंत्री द्वारा लोगों पर कोई बोझ नहीं डाला, यह कहना गलत है।

रेल मंत्री ने कई नई गाड़ियों की घोषणा की है, कई गाड़ियों का विस्तार किया लेकिन हमारे मध्य प्रदेश की इस रेल बजट में उपेक्षा की गई है। रेलवे पूरे देश की सम्पत्ति है। इसका समावेशी और समन्यायी विवरण और फैलाव होना चाहिए। किसी प्रदेश विशेष पर ध्यान केन्द्रित करने से रेलवे का सावित्रिक विकास अवरुद्ध हुआ है। इससे कई

^{*} Speech was laid on the Table

क्षेत्र विकास में पिछड़ गए हैं। इसलिए क्षेत्र विशेष पर ध्यान केन्द्रित करने की इस परिपाटी को अब बदलने की आवश्यकता है।

मेरे अपने संसदीय क्षेत्र खजुराहो जो कि एक विश्वस्तरीय पर्यटन स्थल है, यहां पर देश-विदेश से बड़ी संख्या में पर्यटक आते-जाते हैं। उनके परिवहन के लिए रेलवे द्वारा उचित प्रबंध किया गया तो यहां के पर्यटन व्यवसाय को बढ़ावा मिल सकता है। खजुराहो स्टेशन को विश्वस्तरीय रेलवे स्टेशन का दर्जा देकर इसके विकास की प्रत्यक्ष कार्ययोजना बनाने की मैं रेल मंत्री महोदय से मांग करता हूं। देश के प्रमुख स्थानों, पर्यटन स्थलों और देश के राज्य की राजधानियों से खजुराहो रेलवे स्टेशन को जोड़ने के लिए नई ट्रेनों का परिचालन करने की मांग सरकार से करता हूं।

मेरा क्षेत्र पिछड़े क्षेत्र में आता है, इस क्षेत्र के विकास के लिए स्थानीय स्तर पर यात्री ट्रेनों का परिचालन बढ़ाने की आवश्यकता है। साथ ही, यहां पर रोजगार सृजित करने के लिए रेलवे द्वारा सीमेंट स्लीपर निर्माण या अन्य रेलवे द्वारा संचालित उद्योग स्थापित करने की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त, मैं अपने संसदीय क्षेत्र की रेलवे संबंधी कुछ आवश्यक और महत्वपूर्ण मांगों, जिनको पूर्ण करने के लिए क्षेत्र की जनता पिछले कई वर्षों से मांग और संघर्ष करती आ रही है और मैं भी समय-समय पर सदन में उठाता रहा हूं, उनकी ओर आपका ध्यान दिलाना चाहता हूं.

*श्री जितेन्द्र सिंह बुन्देला (खजुराहो): रेल मंत्री महोदय द्वारा पेश किए गए रेल बजट 2013-14 पर सदन में चर्चा की जा रही है। मेरे पूर्ववर्ती वक्ताओं द्वारा बजट के संदर्भ में बहुत कुछ कहा गया है। लेकिन एक बात सुनिश्चित है कि रेलवे विकास की वाहिनी है। रेलवे के सम्पर्क मात्र से उस क्षेत्र के विकास की संभावना बढ़ जाती है। किंतु खेद से कहना पड़ता है कि हम जब स्वतंत्र हुए तब हमको अंग्रेजों द्वारा 54 हजार कि.मी. रेल लाइन सौंपी गई थी। लेकिन हमारे स्वतंत्रता के 65 साल बाद हम केवल 11 हजार कि.मी. ही रेल लाइन बिछा पाए हैं। इस पर हमें विचार और चिंतन करने की आवश्यकता है। रेलवे द्वारा 12 हजार 180 रेलगाड़ियों के द्वारा करीब 2 करोड़ 30 लाख यात्रियों द्वारा प्रतिदिन आवागमन किया जाता है। लेकिन हमारी बढ़ती जनसंख्या के दबाव को झेलने के लिए यह स्थिति संतोषजनक नहीं कही जा सकती।

हमारे खंड प्रायः जैसे देश में अभी भी केवल 7 हजार से कुछ अधिक रेलवे स्टेशन है। इसकी संख्या और नई पटरी बिछाने की जरूरत को देखते हुए सरकार को इस पर ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है। लेकिन सरकार द्वारा संसाधनों के अभाव की बात कहकर रेलवे के विस्तार की उपेक्षा की जा रही है। अभी हाल ही में रेलवे में आमूलचूल परिवर्तन लाने के लिए डॉ. अनिल काकोडकर तथा सैम पित्रोदा समिति का गठन किया गया। उन्होंने अपनी रिपोर्ट में सिफारिश की है। उनको देखते हुए सरकार केवल लोकप्रिय घोषणा तो कर रही है लेकिन इन घोषित परियोजनाओं को पूरा करने पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है। उनके आकलन के अनुसार पूर्व घोषित परियोजनाओं को पूरा करने पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है। उनके आकलन के अनुसार पूर्व घोषित परियोजनाओं को पूरा करने के लिए 1 लाख 47 हजार करोड़ रुपए चाहिए। सरकार ने स्वयं माना है कि रेलवे वित्तीय संकट से जूझ रही है। फिर घोषणाएं क्यों की जा रही हैं। सरकार ने रेलवे बजट में भाड़ा न बढ़ाने की बात कही है किंतु बजट से दो महीने पहले ही रेल भाड़ा बढ़ाकर रेल यात्रियों से 6600 करोड़ रुपए की उगाही का इंतजाम कर लिया गया है। डीजल की मूल्यवृद्धि के कारण रेलवे पर 3300 करोड़ रुपए का बोझ पड़ा है। इसके लिए सरकार ने प्रत्यक्ष मूल्यवृद्धि करने की बजाय पीछे का रास्ता चुना। रेल मंत्री ने आरक्षण शुल्क, तत्काल सेवा तथा टिकट निरस्तीकरण शुल्क में बेहिसाब बढ़ोत्तरी करके देश की जनता को बरगलाने का प्रयास किया है। डीजल की मूल्यवृद्धि को रेलभाड़े तथा मालभाड़े से जोड़ने के कारण आगे भी रेल टिकट तथा मालभाड़े के दाम बढ़ेंगे। इससे महंगाई में और इजाफा होगा। रेल मंत्री ने माल भाड़े टैरिफ में 5 प्रतिशत बढ़ोत्तरी करने का प्रस्ताव भी दिया है। यह भविष्य में लोगों पर पड़ने वाले बोझ का सूचक है। इसलिए रेलमंत्री द्वारा लोगों पर कोई बोझ नहीं डाला, यह कहना गलत है।

रेल मंत्री ने कई नई गाड़ियों की घोषणा की है, कई गाड़ियों का विस्तार किया लेकिन हमारे मध्य प्रदेश की इस रेल बजट में उपेक्षा की गई है। रेलवे पूरे देश की सम्पत्ति है। इसका समावेशी और समन्यायी विवरण और फैलाव होना चाहिए। किसी प्रदेश विशेष पर ध्यान केन्द्रित करने से रेलवे का सावित्रिक विकास अवरुद्ध हुआ है। इससे कई

^{*} Speech was laid on the Table

क्षेत्र विकास में पिछड़ गए हैं। इसलिए क्षेत्र विशेष पर ध्यान केन्द्रित करने की इस परिपाटी को अब बदलने की आवश्यकता है।

मेरे अपने संसदीय क्षेत्र खजुराहो जो कि एक विश्वस्तरीय पर्यटन स्थल है, यहां पर देश-विदेश से बड़ी संख्या में पर्यटक आते-जाते हैं। उनके परिवहन के लिए रेलवे द्वारा उचित प्रबंध किया गया तो यहां के पर्यटन व्यवसाय को बढ़ावा मिल सकता है। खजुराहो स्टेशन को विश्वस्तरीय रेलवे स्टेशन का दर्जा देकर इसके विकास की प्रत्यक्ष कार्ययोजना बनाने की मैं रेल मंत्री महोदय से मांग करता हूं। देश के प्रमुख स्थानों, पर्यटन स्थलों और देश के राज्य की राजधानियों से खजुराहो रेलवे स्टेशन को जोड़ने के लिए नई ट्रेनों का परिचालन करने की मांग सरकार से करता हूं।

मेरा क्षेत्र पिछड़े क्षेत्र में आता है, इस क्षेत्र के विकास के लिए स्थानीय स्तर पर यात्री ट्रेनों का परिचालन बढ़ाने की आवश्यकता है। साथ ही, यहां पर रोजगार सृजित करने के लिए रेलवे द्वारा सीमेंट स्लीपर निर्माण या अन्य रेलवे द्वारा संचालित उद्योग स्थापित करने की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त, मैं अपने संसदीय क्षेत्र की रेलवे संबंधी कुछ आवश्यक और महत्वपूर्ण मांगों, जिनको पूर्ण करने के लिए क्षेत्र की जनता पिछले कई वर्षों से मांग और संघर्ष करती आ रही है और मैं भी समय-समय पर सदन में उठाता रहा हूं, उनकी ओर आपका ध्यान दिलाना चाहता हूं

*श्री जितेन्द्र सिंह बुन्देला (खजुराहो): रेल मंत्री महोदय द्वारा पेश किए गए रेल बजट 2013-14 पर सदन में चर्चा की जा रही है। मेरे पूर्ववर्ती वक्ताओं द्वारा बजट के संदर्भ में बहुत कुछ कहा गया है। लेकिन एक बात सुनिश्चित है कि रेलवे विकास की वाहिनी है। रेलवे के सम्पर्क मात्र से उस क्षेत्र के विकास की संभावना बढ़ जाती है। किंतु खेद से कहना पड़ता है कि हम जब स्वतंत्र हुए तब हमको अंग्रेजों द्वारा 54 हजार कि.मी. रेल लाइन सौंपी गई थी। लेकिन हमारे स्वतंत्रता के 65 साल बाद हम केवल 11 हजार कि.मी. ही रेल लाइन बिछा पाए हैं। इस पर हमें विचार और चिंतन करने की आवश्यकता है। रेलवे द्वारा 12 हजार 180 रेलगाड़ियों के द्वारा करीब 2 करोड़ 30 लाख यात्रियों द्वारा प्रतिदिन आवागमन किया जाता है। लेकिन हमारी बढ़ती जनसंख्या के दबाव को झेलने के लिए यह स्थिति संतोषजनक नहीं कही जा सकती।

हमारे खंड प्रायः जैसे देश में अभी भी केवल 7 हजार से कुछ अधिक रेलवे स्टेशन है। इसकी संख्या और नई पटरी बिछाने की जरूरत को देखते हुए सरकार को इस पर ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है।

लेकिन सरकार द्वारा संसाधनों के अभाव की बात कहकर रेलवे के विस्तार की उपेक्षा की जा रही है। अभी हाल ही में रेलवे मे आमूलचूल परिवर्तन लाने के लिए डॉ. अनिल काकोडकर तथा सैम पित्रोदा समिति का गठन किया गया। उन्होंने अपनी रिपोर्ट में सिफारिश की है। उनको देखते हुए सरकार केवल लोकप्रिय घोषणा तो कर रही है लेकिन इन घोषित परियोजनाओं को पूरा करने पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है। उनके आकलन के अनुसार पूर्व घोषित परियोजनाओं को पूरा करने के लिए 1 लाख 47 हजार करोड़ रुपए चाहिए। सरकार ने स्वयं माना है कि रेलवे वित्तीय संकट से जूझ रही है। फिर घोषणाएं क्यों की जा रही हैं। सरकार ने रेलवे बजट में भाड़ा न बढ़ाने की बात कही है किंतु बजट से दो महीने पहले ही रेल भाड़ा बढ़ाकर रेल यात्रियों से 6600 करोड़ रुपए की उगाही का इंतजाम कर लिया गया है। डीजल की मूल्यवृद्धि के कारण रेलवे पर 3300 करोड़ रुपए का बोझ पड़ा है। इसके लिए सरकार ने प्रत्यक्ष मूल्यवृद्धि करने की बजाय पीछे का रास्ता चुना। रेल मंत्री ने आरक्षण शुल्क, तत्काल सेवा तथा टिकट निरस्तीकरण शुल्क में बेहिसाब बढ़ोत्तरी करके देश की जनता को बरगलाने का प्रयास किया है। डीजल की मूल्यवृद्धि को रेलभाड़े तथा मालभाड़े से जोड़ने के कारण आगे भी रेल टिकट तथा मालभाड़े के दाम बढ़ेंगे। इससे महंगाई में और इजाफा होगा। रेल मंत्री ने माल भाड़े टैरिफ में 5 प्रतिशत बढ़ोत्तरी करने का प्रस्ताव भी दिया है। यह भविष्य में लोगों पर पड़ने वाले बोझ का सूचक है। इसलिए रेलमंत्री द्वारा लोगों पर कोई बोझ नहीं डाला, यह कहना गलत है।

रेल मंत्री ने कई नई गाड़ियों की घोषणा की है, कई गाड़ियों का विस्तार किया लेकिन हमारे मध्य प्रदेश की इस रेल बजट में उपेक्षा की गई है। रेलवे पूरे देश की सम्पत्ति है। इसका समावेशी और समन्यायी विवरण और फैलाव होना चाहिए। किसी प्रदेश विशेष पर ध्यान केन्द्रित करने से रेलवे का सावित्रिक विकास अवरुद्ध हुआ है। इससे कई

^{*} Speech was laid on the Table

क्षेत्र विकास में पिछड़ गए हैं। इसलिए क्षेत्र विशेष पर ध्यान केन्द्रित करने की इस परिपाटी को अब बदलने की आवश्यकता है।

मेरे अपने संसदीय क्षेत्र खजुराहो जो कि एक विश्वस्तरीय पर्यटन स्थल है, यहां पर देश-विदेश से बड़ी संख्या में पर्यटक आते-जाते हैं। उनके परिवहन के लिए रेलवे द्वारा उचित प्रबंध किया गया तो यहां के पर्यटन व्यवसाय को बढ़ावा मिल सकता है। खजुराहो स्टेशन को विश्वस्तरीय रेलवे स्टेशन का दर्जा देकर इसके विकास की प्रत्यक्ष कार्ययोजना बनाने की मैं रेल मंत्री महोदय से मांग करता हूं। देश के प्रमुख स्थानों, पर्यटन स्थलों और देश के राज्य की राजधानियों से खजुराहो रेलवे स्टेशन को जोड़ने के लिए नई ट्रेनों का परिचालन करने की मांग सरकार से करता हूं।

मेरा क्षेत्र पिछड़े क्षेत्र में आता है, इस क्षेत्र के विकास के लिए स्थानीय स्तर पर यात्री ट्रेनों का परिचालन बढ़ाने की आवश्यकता है। साथ ही, यहां पर रोजगार सृजित करने के लिए रेलवे द्वारा सीमेंट स्लीपर निर्माण या अन्य रेलवे द्वारा संचालित उद्योग स्थापित करने की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त, मैं अपने संसदीय क्षेत्र की रेलवे संबंधी कुछ आवश्यक और महत्वपूर्ण मांगों, जिनको पूर्ण करने के लिए क्षेत्र की जनता पिछले कई वर्षों से मांग और संघर्ष करती आ रही है और मैं भी समय-समय पर सदन में उठाता रहा हूं, उनकी ओर आपका ध्यान दिलाना चाहता हूं।

कटनी जंक्शन के विकास एवं यात्री सुविधाओं की दृष्टि से कई वर्षों से लंबित मांगों को पूर्ण किए जाने की मैं मांग करता हूं। जो इस प्रकार हैं -

कटनी जंक्शन से नई रेल गाड़ियां चलाने के लिए एवं उनके समुचित परीक्षण एवं धुलाई हेतु वॉशिंग पिट का निर्माण किए जाने की आवश्यकता है।

कटनी जं. के अंतर्गत केएमजेड मुड़वारा में रेलवे माल गोदाम है जो शहर के बीच में होने के कारण आम जनता को भारी परेशानी हो रही है। अतः इस माल गोदाम को तत्काल यहां से स्थानांतरित किए जाने की आवश्यकता है। यह भी बहुत पुरानी मांग है।

कटनी एवं इसके पास के गांव एवं शहरों से हजारों लोग प्रतिदिन स्वास्थ्य की दृष्टि से इलाज कराने के लिए नागपुर जाते हैं। किंतु नागपुर के लिए सुविधाजनक रेल सम्पर्क न होने के कारण जनता को काफी कठिनाई होती है। अतः कटनी जं. से नागपुर के लिए सीधे रेल सेवा प्रारंभ की जाए। इससे रेलवे के राजस्व में भारी बढ़ोत्तरी होगी।

कटनी जं. के अंतर्गत केएमजेड़ से मझगंवा फाटक के मध्य स्थित कैलवारा फाटक पर आर.यू.बी. की बहुप्रतीक्षित मांग को पूर्ण करते हुए ब्रिज निर्माण कराया जाए।

कटनी जं. से पटवारा के मध्य लमतरा फाटक और केएमजेड़ से हरदुआ के मध्य मझगंवा फाटक पर स्वीकृत आर.ओ.बी. शीघ्र बनाए जाने की मैं मांग करता हूं।

कटनी जं. बहुत ही व्यस्ततम रेलवे स्टेशन है। यहां यात्रियों की संख्या को देखते हुए मैं रेलवे स्टेशन के पास ही अलग से सर्वसुविधा युक्त रिजर्वेशन बिल्डिंग बनाए जाने की मांग करता हूं।

रीवा से जबलपुर जाने वाली इंटरसिटी में भारी भीड़ को देखते हुए इसमें एक अतिरिक्त ए.सी. चेयरकार कोच लगाने की मैं मांग करता हूं।

चिरमिरी से चंदिया तक चलने वाली गाड़ी संख्या 58221 एवं 58222 को चंदिया से केएमजेड तक बढ़ाए जाने की मैं मांग करता हूं।

कटनी जं. पर गाड़ी सं. 12141/12142, 11055/11056, 11059/11060, 12165/12166, 12539/12540 का ठहराव देने की मैं मांग करता हूं तथा प्रस्ताव समय-सारणी सभी में लंबित है, इसको शीघ्र स्वीकृत कराए जाने की मैं मांग करता हूं।

दमोह से भोपाल चलने वाली राजरानी एक्सप्रेस को दमोह के स्थान पर केएमजेड मुड़वारा से भोपाल तक चलाए जाने की मैं मांग करता हूं, ताकि यात्रियों का दबाव कम हो सके।

कटनी जं. स्टेशन पर स्थित पूछताछ कार्यालय पूर्णतः अनुपयोगी है। यात्रियों को गाड़ियों की सही स्थिति जानने में काफी कठिनाई होती है। अतः इस पूछताछ कार्यालय को किसी अन्य उपयुक्त स्थल पर बनाए जाने की मैं मांग करता हूं।

यात्रियों के आवागमन की सुविधा की दृष्टि से कटनी जं. स्टेशन पर प्लेटफार्म क्र. 1 से 06 तक आधुनिकतम फुट ओवर ब्रिज बनाए जाने की मैं मांग करता हूं।

कटनी जं. पर यात्रियों की मांग एवं आवश्यकता को देखते हुए मैं कटनी जं. पर गाड़ी सं. 12141/12142 (पटना-राजेन्द्र नगर-पटना), 11055/11056 (गोदान एक्स.), 11059/11060 (गोदान एक्सप्रेस), 12165/12166 (रत्नागिरी), 12539/12540 (यशवंतपुर-लखनऊ-यशवंतपुर) का ठहराव देने की मांग करता हूं।

कटनी-बीना रेल खंड पर रीठी रेलवे स्टेशन पर सवेरे कटनी की ओर जाने के लिए कोई भी यात्री गाड़ी नहीं है, जिससे जनता को काफी कठिनाई होती है। अतः मैं रीठी रेलवे स्टेशन पर कुर्ला-बनारस (11071/11072), दामोदर एक्स. (12181/12182), दामोदर एक्स. की मांग करता हूं। यह जबलपुर मंडल की है और यह जबलपुर जाकर खड़ी हो जाती है। यदि इसका ठहराव रीठी पर हो जाता है तो कटनी-जबलपुर के लिए लोगों को सुविधा होगी।

भोपाल-बिलासपुर पैसेंजर यात्री गाड़ी का ठहराव पटौदा रेलवे स्टेशन पर देने की मैं मांग मा. रेल मंत्री जी से मांग करता हूं।

कटनी जं. के अंतर्गत आने वाले रीठी रेलवे स्टेशन पर यात्री प्रतीक्षालय न होने के कारण लोगो को काफी कठिनाई होती है। अतः मैं मांग करता हूं कि रीठी रेलवे स्टेशन पर प्रतीक्षालय बनाया जाए।

कटनी जं. के अंतर्गत आने वाले खन्न बंजारी रेलवे स्टेशन पर यात्री सुविधाओं का भारी अभाव है। इस स्टेशन पर यात्री सुविधाएं उपलब्ध कराने तथा यहां से गुजरने वाली साप्ताहिक गाड़ियों का खन्ना बंजारी रेलवे स्टेशन पर ठहराव दिए जाने की मैं मांग करता हूं।

कटनी जं. के अंतर्गत आने वाले खन्ना बंजारी रेलवे स्टेशन का नाम बदले जाने की मांग यहां की जनता द्वारा वर्षों से की जाती रही है। मैं भी इसका समर्थन करता हूं और सरकार से मांग करता हूं कि खन्ना बंजारी रेलवे स्टेशन का नाम बदलकर बरही किया जाए।

कटनी जं. एवं केएमजेड मुड़वारा स्टेशन से आने-जाने वाली गाड़ी नं. 15159/15160 (सारनाथ एक्स), 11905/11906 (क्षिप्रा एक्स), 12823/12824 (सम्पर्क क्रांति), 18207/18208 (जयपुर-दुर्ग), 12549/12550 (जम्मूतवी-दुर्ग), 11072/11073 (कामायनी एक्स), 18204/18205 तथा 18202/18203 ये सभी गाड़ियां जबलपुर को टच नहीं करती है। अतः मैं इन सभी यात्री गाड़ियों के ई-क्यू (इमरजेंसी कोटा) एरिया मैनेजर, एन.के.जे. कटनी को आवंटित करने की मांग रेल मंत्री जी से करता हूं।

बुंदेलखंड क्षेत्र की पहली रेलवे लाईन जो लिलतपुर, टीकमगढ़, छतरपुर, पन्ना, सतना को जोड़ने वाली है। इस लिलतपुर-सिगरौली रेलवे लाइन का काम बजट के अभाव में पिछले 15 वर्षों से लंबित पड़ा हुआ है। मैं रेल मंत्री जी से मांग करता हूं कि इस परियोजना को पर्याप्त बजट उपलब्ध कराकर शीघ्र पूरा किया जाए।

पन्ना-सतना रेलवे लाइन के निर्माण में किसी प्रकार का व्यवधान नहीं है। इसको चालू करने के लिए जनांदोलन चल रहे हैं। जनता की मांग को देखते हुए तत्काल इस योजना पर कार्य आरंभ किया जाए और शीघ्र पूरा किया जाए।

छतरपुर को रेल डिवीजन की मांग वर्षों से होती आ रही है। लिलतपुर-टीकमगढ़, छतरपुर-खजुराहो, छतरपुर-सागर-भोपाल, खजुराहो-पन्ना-सतना-न्यू लाइन, सतना-मानकपुर, सतना-रीवा-सिंगरौली-न्यू लाइन, सतना-कटनी, दमोह-हटा-पन्ना-खजुराहो-न्यू लाइन, उक्त सभी रेल लाइनें छतरपुर से गुजरती हैं। अतः यह आवश्यक है कि छतरपुर को रेल डिवीजन बनाया जाए और मैं जनता की इस मांग का पुरजोर समर्थन करता हूं।

छतरपुर-सागर-भोपाल रेलवे लाइन का सर्वे हो चुका है। परन्तु बजट में इस रेल लाइन के निर्माण के लिए प्रावधान नहीं किया गया है। मेरी मांग है कि इस रेलवे लाइन का निर्माण कार्य शीघ्र प्रारंभ किया जाए। इस रेल लाइन के निर्माण से बुदंलेखंड की जनता रेल द्वारा सीधे भोपाल से जुड़ सकेगी।

इसी प्रकार, दमोह-हटा-पन्ना एवं दमोह-हटा-खजुराहो न्यू रेलवे लाइन के लिए बजट आवंटित कर इस पर निर्माण कार्य शीघ्र किया जाए।

छतरपुर और ईशानगर के बीच की दूरी लगभग 25 कि.मी. है और इस बीच कई ग्राम जैसे पनोठा, राहोडमा, दाड़री आदि पड़ते हैं जिनकी आबादी भी काफी है। रेलवे स्टेशन न होने के कारण यहां के लोगों को काफी कठिनाई होती है। अतः मेरी मांग है कि छतरपुर और ईशानगर के बीच में एक नया रेलवे स्टेशन बनाया जाए ताकि बीच के ग्रामवासियों को रेल सुविधा का लाभ मिल सके।

छतरपुर रेलवे स्टेशन के निर्माण के साथ यहां आरक्षण भवन, माल गोदाम और गुड्स साइडिंग निर्माण का कार्य शीघ्र आरंभ कराने की मैं सरकार से मांग करता हूं।

मुझे विश्वास है कि रेल मंत्री जी मेरी मांगों पर गंभीरतापूर्वक विचार करेंगे और उनको शीघ्र पूरा करने के लिए आवश्यक कार्यवाही करने का कष्ट करेंगे।

*SHRI SHER SINGH GHUBAYA: (FEROZEPUR): Hon. Chairman, Sir, I thank you for giving me the opportunity to speak on the Railway Budget (2013-2014).

Sir, since we attained Independence, a person from Punjab has become the Railway Minister for the first time. People from Punjab and Chandigarh had great hopes from him. We hoped that justice, which has generally not been done to Punjab, will be done at least this time. However, Sir, all our hopes have been dashed to the ground as our just and genuine demands have again been ignored.

Sir, the Railway Budget has not lived up to the expectations of the people of Punjab. Train-connectivity of various areas of Punjab to Delhi and Chandigarh has not been provided. The people of Ferozepur had demanded a Shatabdi train to Delhi. However, only an Inter-city train has been provided which will not even have any First Class coach. This announcement has fallen short of our expectations.

Fazilka lies on the Indo-Pak border. The demand for a Shatabdi train from Fazilka to Delhi has also been turned down.

Sir, a few passenger trains have been announced for Punjab and Chandigarh but they fall far short of our needs. Sixty years of indifference towards Punjab still continues. I urge upon the Hon. Minister to do away with this discrimination towards Punjab.

Sir, for the Annual Plan, a sum of `63,663 crores has been earmarked. The Government claims that 500 kms of new railway lines will be laid. However, Punjab doesn't find a mention here. Ferozepur needs to be connected to Amritsar by Railway network. Similarly, Patti needs railway connectivity with Ferozepur. The existing route is very long and circuitous.

Ferozepur-Amritsar connectivity is the need of the hour. It is a distance of only 100 kms. This long-pending demand has been conveniently ignored.

Sir, during the NDA rule under Shri Vajpayee, the Abohar-Fazilka rail-link had been announced. Work has started on this route after 15 years. When will it be completed?

.

^{*} English translation of the Speech originally delivered in Punjabi.

Sir, there is an urgent need of railway over-bridges in Punjab. Sir, Punjab is a densely populated state. Muktsar is a major town. But, it has no railway over-bridge on the Muktsar-Amritsar road. Faridkot also needs an over-bridge. At Talwandi also, an over-bridge is urgently needed. Due to manned level-crossings, long traffic jams have become the order of the day. So, I request the hon. Minister to bail out the people of these areas by constructing over-bridges at these places.

Sir, the Jalalabad-Muktsar railway line is also the need of the hour. At some places, gauge-conversion is also needed. Chandigarh is the capital of Punjab. But it has no rail-connectivity with many areas & towns of Punjab. A Ferozepur-Chandigarh train is urgently needed. Fazilka-Chandigarh train *via* Muktsar is also the need of the hour. Kapurthala and Tarn Taran must also be linked by train to the capital city of Chandigarh. Sir, we want to be proud of the fact that the hon. Railway Minister hails from our state. However, the hon. Minister must give us the opportunity to feel so by accepting the genuine demands of Punjab. However, his refusal to connect Amritsar to Ferozepur has been a dampener. He must provide justice and relief to the people of Punjab.

Chairman, Sir, Punjab is a thickly populated state. At several unmanned railway crossings, dangerous accidents take place. These result in loss of precious lives. Sometimes, even mini-buses carrying school-children have collided with trains and dozens of innocent lives have been lost. So, all unmanned level-crossings must be converted into manned level-crossings. It will also provide employment to the poor local people. It will also save human lives. At other places, over-bridges and under-passes must be constructed.

Chairman, Sir, doubling of railway lines at several places in Punjab is needed urgently. In Punjab, railway lines were mostly laid decades ago. Movement of lakhs of tonnes of stored wheat and rice is required. Hence, doubling of railway lines is the crying need of the hour. Single line creates problems for passengers as well as for the transportation of goods.

Sir, lakhs of vacancies are yet to be filled in the Railways. Railways, however, is dragging its feet on this issue. When will these posts be filled? Sir, the youth in Punjab is

getting addicted to drugs. We must provide employment to our youth so that they do not go astray.

MR. CHAIRMAN: Please conclude, you have got only one minute more.

SHRI SHER SINGH GHUBAYA: Chairman, Sir, I want to raise only two more points.

Sir, some old railway stations have been closed down by the Railways. Sir, these stations must be made functional again.

Sir, a train plies from Ganganagar to Sarai Rohila. Abohar, Malout, Bathinda, Gidderbaha and Mansa fall on the route. Sikh pilgrims visit Shri Hazoor Shahib. Halts of this train should be provided at these stations to cater to the needs of Sikh brothers. Trains that ply twice or thrice a week must be converted into daily trains. Their frequency must be increased. Sir, Ferozepur-Ganganagar train had been started. It passes through densely populated areas like Guru Har Sahai, Mandi Lado *etc*. These are 8 to 10 stations which are important and halts of this train must be provided at each station so that the people of the area can avail the railway facilities.

14.54 hrs.

(Mr. Deputy Speaker in the Chair)

Sir, in Ferozepur division, there are very few ticket counters at the station. Over the years, population has increased by leaps and bounds. Army too has its major headquarter here. So, more ticket-counters should be opened at the station. Defence people should have a separate ticket-counter so that civilians do not face problems.

Chairman Sir, Fazilka-Delhi and Ferozepur-Delhi Shatabdi trains must be started at the earliest. All district headquarters must be connected by train to Chandigarh so that people can gain out of it.

Sir, these just and genuine demands of Punjab must be accepted by the hon. Railway Minister. I will provide him a list of our other demands in writing.

* SHRI PREM DAS RAI (SIKKIM): I support the railway budget. However, following the tradition of previous rail budgets, the State of Sikkim has yet again not found a mention in the Budget speech of the Hon'ble Minister. We have been ignored for long and the people of Sikkim join me to raise our voice against this unfortunate neglect. It is disappointing that even after 37 years of joining the Indian Union, Sikkim is yet to be connected to the rest of India by rail.

For our beautiful mountain state, tourism is one of the most important service industries. We have created world-class tourist destinations and despite being denied a rail link for all these years, the number of tourists has been steadily increasing. To maintain this growth momentum, the rail link is very crucial.

The Hon'ble Minister has proudly announced that for the first time, the State of Arunachal will be brought into the rail network. It would be helpful if he can make a commitment to make a similar announcement for the State of Sikkim in his next budget speech. The work on the rail link from Sevoke in North Bengal to Rangpo in Sikkim, which was commissioned in 2010, must be hastened. Repeated questioning on this front only elicits words which sermonizes everlasting hope; with no action on the ground. I must impress upon the Hon'ble Minister to ensure speedy completion of the railway link. I cannot overemphasize now strategic this rail link will become in time to come. Perhaps we who come from that area are able to appreciate this. Not so from New Delhi.

However, it cannot be ignored that railway projects in the mountains must be sensitive to the environment and the delicate balance of nature must be maintained. The

_

 $[^]st$ Speech was laid on the Table.

mountains present a new set of challenges for constructing rail infrastructure and a specialized body should be entrusted with their management. For this purpose, as has been proposed in my earlier speeches and letters, I re-propose that a special mountain unit be created within the Railway Ministry, which oversees the execution of railway projects in the mountains. This must be further strengthened by linking it to research institutions like the IITs or NITs. We have one being set up in Sikkim, perhaps that can be called upon to play this all important role.

We share over 3,000 kilometers of Himalaya borders with China. China will soon bring a railway line to almost our border head at Nathu-La. It is a matter of great concern that China has almost encircled Indian border areas through rail and road network. Connecting Sikkim with the Indian rail network is not only important for our state's economy, but also strategically important for India. I urge the Hon'ble Minister to declare the Sevoke-Rangpo rail link a Project of National Importance with dedicated financial package.

The people of Sikkim, the Government and our leader and Chief Minister, Shri Pawan Chamling will support this venture as proposed for national and regional benefit.

With these words, I support the budget proposals and amendments.

* SHRI N. PEETHAMBARA KURUP (KOLLAM): The railway budget has a new vision and has given more importance to develop Indian Railways with modern technology.

The railway budget shows that while 65% of its income is generated from freight charges 27% is accrued from the passenger fare and rest of the 7% is earned from other sources. It also indicates 37% of its income is utilized for giving salaries, 18% for fuel, 16% for giving pension to the ex-employees and 29% of the income is utilized to meet other expenses. Even though the passenger fare has not been increased the freight charges has been increased through the railway budget.

I would like to extend my sincere thanks on behalf of the people of Kerala to Hon'ble Minister of Railways for acceding our request and introducing the two new passenger trains (i) from Punalur to Guruvayoor and (ii) from Shornur to Kozhikkode in Kerala. I would also like to express my sincere thanks on behalf of the people of Kerala for introducing two new weekly trains i.e. (i) from Mumbai Lokmanya Tilak to Kochuveli and (ii) from Visakhapatnam to Kollam. The amount of Rs.56 crore allocated for the establishment of coach factory at Palakkad will speed up the construction work. The budget allocation for the Rolling Stock Factory in Alleppey is a welcome move and will enrich the people of Kerala. It is heartening to note that the doubling up of railway line from Piravam road to Kuruppanthara has found its place in the time-bound completion projects. The doubling up work of railway line from Meenakshipuram to Palakkad, Guage conversion work from Punalur to Edamon, the decision to complete 6 k.m. route from Ankamali to Kaladi in the Sabari line and the proposed survey for the Shornur-Mangalapuram third line are welcome move. Hon'ble Minister has tried to make budget popular as well as in consonance with the new age. The decision to set up a skill development training institute at Kollam under the Indian Railways is a matter of happiness for the people of Kerala.

Even though the railway is facing acute financial constraints Hon'ble Minister has taken care for safety aspects, women's protection, modernization of railway stations,

-

 $[^]st$ Speech was laid on the Table.

ensuring clean food, diversification of ticket booking facilities, increasing the facilities of travelers etc. The budget aims to get an investment of one lakh crore rupees from private investors during the 12th Plan period. Our country has reached the billion select club of China, U.S. and Russia by attaining new strides in the freight sector of Indian Railways. The Budget envisages to earn resources through joint rail ventures in collaboration with ports, industries, mines etc. The budget also envisages to implement corporate safety project during the next 10 years. In order to increase the safety of the passengers fire extinguishers will be provided in the guard room, air conditioned coaches, pantry car etc. More women police will be appointed in lady's compartments. Ten per cent vacancies in the Railway Protection Force will be reserved for women. The decision to introduce eticketing facility through mobile, opening of internet reservation facility 23 hours in a day will help to reduce corruption and will enhance the facility of ticket reservation. The decision to establish an Energy Management Company to encourage green power projects is a welcome move. It is heartening to note the Indian Railways has won the national energy protection award. The decision to prevent the use of plastic and encourage the use of recycled paper in catering service of the trains will be welcomed by the passengers. Hon'ble Minister has stated that he could find that railway stations and the trains are really dirty. The assurance given by the Hon'ble Minister to take necessary steps to get the railway stations and trains cleaned is really encouraging.

However, there is no mention of long distance trains or allocation of amount in the railway budget as expected by Kerala. Even though Kerala had sought for 25 new trains the announcement of few trains pained the people of Kerala. The amount allocated in the current railway budget for Kerala is only Rs.200 crore while the budget allocation during the last year was Rs.470 crore. The amount of Rs.68 crore allocated for completion of doubling up of the railway line is a very paltry sum. The amount allocated for electrification work in Kerala by the Indian Railways during the period 2013-14 is only Rs.18.1 crore.

I would like to draw the attention of the Hon'ble Minister of Railways to the following discrepancies in the Indian Railways:-

It would be difficult to stand in the platforms because of the nauseating smell emanating form the human discrete in our railway tracks. The human discrete not only corrode the railway lines but also results in health hazard to the travelers. Hence the project of bio-toilets should be implemented at the earliest.

The railway coaches running in the Kerala bound trains are outdated and infested with rats and cockroaches. It is true even in the case of air conditioned coaches of Kerala bound trains. Many a times the air conditioner do not work resulting lot of inconvenience to the passengers. There have been number of instances where the bags of the passengers have been cut by the rodents. Many of the removable side glass of the toilets of the coaches have been missing resulting in lot of inconvenience to the lady passengers to go to the toilets. Even though the cleaning of the toilets have been privatized the toilets are not cleaned at various stations. Many a times there will not be water in the toilets of the trains. Pipes and taps are missing in the toilets of a number of trains. Window shutters do not close properly resulting in entry of dust, cold and hot air into the bogies. It is, therefore, requested that the Kerala bound trains should be replaced with new coaches.

It has been told to the passengers in the air conditioned coaches that warm clothes issued to them are never washed/dry cleaned. It is needless to mention that it will result in spread of diseases amongst the passengers using such uncleaned warm clothes. Passengers are being told that the Indian Railways has dispensed with the issue of towels in the trains.

Coach display boards should be introduced in all platforms of atleast important railways stations so as to enable passengers especially elders to locate correct bogies and board the train.

The gauge conversion work of Kollam-Shenkotta railway line should be expedited.

Since a lot of foreign tourists are visiting Kollam, the Kollam Railway station should be modernized to that of international standard. Keeping in view the historical importance the Chinese Palace in Kollam should be renovated and protected as a historical palace.

The doubling up work and the electrification work of railway lines should be completed in a time bound manner.

With these words, I would like to support the Railway Budget 2013-14 introduced by the Minister of Railways.

* SHRI SANJAY DINA PATIL (MUMBAI NORTH EAST): I demand Elevated suburban Railway Corridor from Chhatrapati Shivaji Terminus to Kalyan Junction on suburban main line.

There is one weekly and one for other 4 days in week train to Jammu from Mumbai. It takes too much time to travel on this long route. Jammu is a holy place (Vaishno Devi) and Kashmir is the Tourist place, and the said route covers Himachal Pradesh, Punjab and Dehli also. Hence, considering the volume of passengers on this route, one more AC Super Fast Train is necessary from Mumbai to Jammu.

Lakhs of people from India and foreign countries, as pilgrims and tourists visit the famous Shrines viz. Yamunotri, Gangotri, Kedarnath and Badrinath and religious places in Haridwar, Rishikesh, Hemkund Sahib, Uttarkashi, Nandadevi, Ageshwar and most attractive and beautiful Garhwal Himalayas, Almora, Ranikhet etc. are important places of tourism. As there is no direct Super Fast Train between Mumbai and Dehradun and between Mumbai to Kathgodam, the passengers have to face too much hardships. Hence, daily superfast trains from Mumbai to Dehradun and Super Fast Train from Mumbai to Kathgodam via Mathura are very necessary.

The train Ala Express (Train No.4313) from Lokmanya Tilak Terminus, Mumbai to Barelly, is running only once in a week. The quantum of passengers for this train is large. However, the train does not meet the heavy demand of the large waiting passengers, hailing mostly from district Chandusi, Bisoli, Tundla, Aligarh, Badaun, Bareilly, Pilibhit, Shahjahanpur, Moradabad. These districts are having population about 20 to 25 lakhs and these people are affected due to the shortage of train service. It is, therefore, necessary to start daily Ala Hazrat from Lokmanya Tilak Terminus, Mumbai to Bareilly, for the convenience of the people.

New Daily Superfast Express from CST Mumbai-Trivandrum via Kottayam-Tiruvalla should be provided.

.

^{*} Speech was laid on the Table.

Frequency of 2201/2202 LTT Kurla-Kochuveli Garib Rath may be increased from Bi-weekly to Daily.

Tirupati being a holy place, lakhs of people from Mumbai intend to visit Tirupati, during all the seasons. However, there is no direct train available to go to Tirupati and the five indirect trains going to Tirupati are always crowded with passengers, keeping back a long queue of waiting listed passengers. Hence, the people of Mumbai always find very inconvenient and difficult to travel to Tirupati and they demand for a direct train from Mumbai to Tirupati.

Trains No.2188 Garib Rath Super Fast is presently running from CST Mumbai to Jabalpur, twice in a week to be extended upto Allahabad: The said train is officially extended upto Allahabad but still it is running upto Jabalpur only. There is no direct train from Mumbai to Ayodhya, the Holy birth place of Lord Shriram. Therefore, the said Garib Rath No.2188 train should be extended from Jabalpur to Ayodhya/Faizabad via Allahabad, Jaunpur, Shahganj, Ambedkar Nagar to Ayodhya and the services of the said train should be made daily.

The new train No. 12293 Duranto/Garib Rath has started w.e.f. 11th March 2012 is very useful for the passengers. However, it is necessary to be extended upto Varanasi, taking into consideration the demand of the people.

Train No. 2161 Lashkar Express running from Lokmanya Tilak Terminus, Mumbai. The rounds of the said train required to be increased by thrice in the week and the said train should be extended upto Mathura Junction, the Holy Birth place of Shri Krishna which will also cover Vrindayan etc.

There are only two trains for Kutch Bhuj region in Gujarat and there is no single super fast train on this route. The official time of the said train is 17:00 hours. The actual distance is only 850 kms. Therefore, it is necessary to start a Duranto train and one super fast train to Kutch Bhuj. In addition to this the Dadar, Mumbai to Bhuj train is required to run daily, considering the volume of the passengers.

There is a constant demand from the public for Train No.12171 Dn. Running between LTT Kurla, Mumbai to Haridwar twice in a week. The volume of the waiting list

passengers is also very high. Hence, this train should run daily, to meet the demand of public.

The special reservation quota is granted to number of categories of people. However, special quota is not awarded to the ladies. Taking into consideration the volume of lady passengers, it is necessary to have special reservation quota for the ladies.

Most of the time, the eatable items provided in the Rail journey are not warm and fresh. Most of the passengers are having complaints on this issue. On enquiries with the catering staff it is revealed that these items are not prepared or cooked in the canteens on platforms but obtained from outside. With a view to make available fresh and warm eatable items to the commuters they should be permitted to cook in the canteen on platform.

The present system of 4 months (120 days) advance reservation period is inconvenient for the commuters. It creates many problems to the passengers, since it is very difficult to chalk out journey schedule 4 months in advance. For the convenience of passengers the advance booking period is necessary to reduce it to 30 days or 45 days. It will help to solve many problems faced by long journey passengers.

Pantry car facility is necessary to provide in all mail/express trains which covers the journey for more than 12 hours. It is seen that in the trains which are running more than 1500 kms. are not provided with pantry car facilities.

There should be a separate coach for Tatkal Passengers, since they pay more than other passengers. This system was earlier in existence. However, it is stopped presently. The waiting list passengers run into the reserved class compartments and this tendency causes number of inconveniences to the Tatkal Ticket Passengers.

Faizabad Express (12563/64) running from L.T.T. Mumbai to Faizabad only once in a week. Looking at the load of passengers on the route of the Faizabad Express Train, it should be made daily. The said train is the only direct train for two holy places viz. Allahabad & Ayodhya from Mumbai.

The eastern Mumbai suburbans and the areas of New Mumbai are developing very fast. The people of these areas have to go to Mumbai Central to catch train for Delhi. It is very inconvenient for them. Hence for the convenience of the citizen residing in eastern

suburbans and in New Mumbai one train like Rajdhani Express from L.T.T. Kurla, Mumbai to Delhi should be started, for the convenience of the people.

Presently there are only 3 trains going to Chennai from Mumbai. There is no any other super fast train for Chennai. Hence, for the convenience of people one AC super fast train for Chennai from Mumbai is necessary.

For Mangalore there are only 2 trains running with heavy load of passengers. Considering the strong demand of people, one AC super fast train is required for Mangalore from Mumbai.

One more train is urgently required from Mumbai to Madgaon on Konkan Railway which covers the belt of Konkan Region.

In all the Mail and Express trains cleaning staff must run within the trains. The cleaning staff is not available even in Haridwar Express and Garibrath (1209/10) which causes inconveniences and creates problem to the passengers.

Frequency of Indore-Pune-Indore Express may be increased from the present 3 days in a week to daily, since it always keep the considerable passengers on the waiting list in all category of classes.

Kindly give halt to Mail/Express trains at Kopar (high level) for the trains running through Vasai Raod station on Konkan Railway, as it will give benefit to use trains by the people residing nearby Thane.

The Railway passengers consisting of ladies and senior citizens find it very difficult to climb the steps of the Railway Bridges. With a view to provide some relief and convenience to such passengers the new Railway bridges should have ramps instead of steps. At the same time the old Railway Bridges required to be provided either with Lift Systems or with ramps system.

Previously, the local train service from Kurla station, Mumbai to Panvel, New Mumbai was in existence. But the same is discontinued since long. Navi Mumbai has developed rapidly and new residential complexes, educational institutes and medical colleges have been established in New Mumbai. New I.T. complexes, Government Offices, Commercial establishments, Iron market, fruit market, grain market and vegetable market

have come up in New Mumbai. Apart from this, in the adjacent area of Bandra-Kurla complex, Bandra (East), number of Government Offices, Corporate Offices, I.T. park and Diamond Business centers are functioning and inviting number of people from outside.

Kurla is very near and convenient Railway station for these people. Kurla Railway station being acentralized railway station and well connected with other stations like C.S.T. Mumbai and New Mumbai and other places, it always remains overcrowded with Rail Commuters and it finds very difficult to catch trains to go to New Mumbai. Hence the Local Train service from Kurla to Panvel is absolutely necessary for the convenience of the people.

Construction of ROB at Vikhroli Railway station crossing is the urgent need of the people of Vikhroli, since it will connect the East and West parts of Vikhroli and reduce the traffic congestion on Ghatkopar and Vikhroli-Jogeshwari Linking Bridges. Construction of ROB at Vidyavihar Railway Station is also essential for convenience of the people.

The people residing in the Central Suburban from Ghatkopar, Bhandup and Mulund etc. do not have convenient Rail route to go to Koparkhairane, Vashi and other places in New Mumbai. They have either to go to Kurla or Thane Railway Station to catch the train. To make them easy and to avail of convenient rail route, it is necessary to introduce ring round train route from C.S.T. to Thane to Koparkhairane to Vashi to C.S.T.

The present railway terminus at LTT Kurla and CST are over burdened and over pressured. To cater the ever demanding requirement of the Rail passengers, the time has come to search some other proper place for a new Railway Terminus. In this context, the Diva is the right choice for construction of a new Terminus. There is plenty of open land at Diva to construct a new Railway Terminus. Hence, it is necessary to chalk out proposal to construct new Railway Terminus at Diva.

Presently the DMU Rail service from Thane to Vasai is in existence. Taking into consideration the increasing need of the people of Thane and the looms owners and workers in Bhiwandi it is necessary to have a regular train service from Thane to Vasai, via Diva. Thane city is the district place of the vast Thane district. The office of the Collector of Thane is situated at Thane and all other related offices providing civil services are

centralized at Thane. As such, the people of Thane District including remote places of Vasai and Boisar have to visit Thane for their various works. Hence, this route will be very fruitful to the people of Thane, Bhiwandi, Vasai and Boisar etc.

Presently all the ticket windows are crowded with passengers in a long standing queues. The main reason for these queues is that more than 50% of booking windows are found to be closed due to non-availability of staff. This position is require to be improved for the sake of convenience of the rail passengers. The passengers have to waste their valuable time in standing in the queues to purchase tickets. To solve this problem proper arrangements have to be done to keep open all the Booking windows.

For giving immediate medical treatment to the victims of Rail accidents, the availability of Medical Officers at the Railway Stations is necessary. Hence, the Medical Officers should be posted at least at the important Railway stations such as L.T.T., Kurla, Ghatkopar, Bhandup, Mulund, Thane and Kalyan railway stations etc.

It is observed that the Sleeper Class Compartments are not properly maintained by the Railway Staff. The passengers are having serious and repeated complaints in this respect. Hence, the concerned official of Railway should be directed to maintain the Sleeper Class Compartment properly.

The height of most of the platforms on Local Railway Station in Mumbai is raised. However the height of the roofs of the sheds on platform are not raised proportionately. Due to which many times, during the peak hours it causes suffocation to the passengers. Therefore, it is necessary to raise the height of roofs of the sheds proportionately to the raised platforms.

The toilet facilities should be provided on both the ends of all the platforms, since the length of the platforms are now increased to accommodate the increased number of rakes.

All the FOBs should be connected with ramps/escalators/lifts for the convenience of the senior citizens and disabled passengers.

Most of the ticket windows are closed for the reason of lack of staff, which causes serious problems to passengers. It is, therefore, necessary to make provision to keep all the ticket

windows open for all the times in the interest of passengers and Railway too, since it gives revenue to Railways.

There is need provide sufficient fund for the projects of Mumbai Railway Vikas Corporation and Mumbai Urban Transport Projects and to complete the projects on priority.

Redevelopment of all the old Railway Stations should be done with proper planning.

The construction of platforms on the both sides of the track on crowded local Railway Stations should be undertaken.

A Special unit should be formed with the help of Railway Authorities and State Government to provide immediate medical help to the victims of Railway accidents.

Steps to be taken to increase appropriate number of lavatories, urinals and fans and lights and benches, taking into consideration the ever increasing number of suburban Railway passengers.

Efforts should be made to accelerate the working system of Railway Claim Tribunal to get compensation early to the victims of Railway accidents. For immediate disposal of the claims, sufficient number of tribunal offices along with requisite staff should be created.

All suburban Railway stations should be provided with sufficient number of drinking water taps and all under construction Railway FOB and Sheds should be completed on priority.

Efforts should be made to provide sufficient number of foot over bridges and underground subways on the suburban Railway stations.

Taking into consideration the large number of passengers, there is a need of having an independent Zone for Mumbai suburban section.

The heights of the platforms of suburban Railway stations should be maintained ideally within the prescribed limits, keeping in view the heights of platforms vis-à-vis heights of coaches.

To give halt to mail/express train at Kopar Railway Station in Mumbai Division on Central Railway, I would request your honour to kindly consider the above suggestions and take suitable decision on the above issues, before declaration of the current Railway Budget and oblige.

*THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF RAILWAYS (SHRI ADHIR CHOWDHURY): Respected Deputy Speaker Sir, we are discussing the Railway Budget 2013-14. The reply to this debate will be given by Hon. Railway Minister of India, Shri Pawan Bansal ji. I have sought your permission to intervene in the discussion and you have kindly allowed me to speak. I thank you for that I don't wish to go into details but will only say a few words. More Hon. Members will speak on this and our Hon. Minister will come up with a detailed reply. he has presented the Railway Budget and one thing is clear that this year's budget is a very balanced budget which will have far-reaching impact. There is a proper direction in this budget. However, after the budget was presented, criticisms have poured in from different quarters, different political parties. While listening to these criticisms and analyzing the facts and figures. I have felt that I would be failing in my duties if I do not give answers to some issues. Sir, it has been alleged that this Rail Budget is anti-people and it is a budget tailor made for Rae Bareilly. Sir, Rae Bareilly is part of a state; so if a work is done in Rae Bareilly, it is actually done in the state of Uttar Pradesh, I believe. But it is very surprising that the name of Rae Bareilly is being mentioned time and again deliberately, only to attack Congress President Sonia Gandhi ji. On one hand it is called Rae Bareilly's budget and on the other hand it is called a budget of deprivation. Naturally, I felt that there should be more clarity in the views and understandings of respected speakers who are raising the issues in this debate. I have great respect for all Hon. Members and I am no one to criticize them but when I look at the Rail Budget, I find that as alleged, the state of West Bengal has not been discriminated against. Sir, I hail from West Bengal. Once Barkat Gani Khan Chowdhury was the Rail Minister from this state. For the first time, people of Bengal witnessed that in what manner, utilizing the portfolio of Railway Minister, the lost glory and heritage of a state could be revived. He undertook a stunning turnaround. The entire state started to progress and prosper with the help of the railways. Under his leadership, people were introduced to a new dawn.

^{*} English translation of the Speech originally delivered in Bengali.

He was the Cabinet Minister of Railways. Since then, there have been three Cabinet Ministers from West Bengal viz Smt. Mamata Banerjee, Shri Dinesh Trivedi, Shri Mukul Roy. I am the Minister of state. There was another MoS, Railways after independence from Bengal, probably he was Parimal Ghosh. Naturally, the people of West Bengal expect a lot whenever a Bengali Cabinet Minister takes charge.

Sir, I want to remind everyone of the statement made by the former Railway Minister Shri Dinesh Trivedi. He had said that the Department of Railways, the railway system has gone into the Intensive Care Unit and he has to bring the railways out of that ICU. I repeat, this was said by Shri Dinesh Trivedi, who was in-charge of railways. Then, Shri Mukul Roy took over as Railway Minister, we found that the losses of the department have touched the sky in the passenger services it was to the tune of about Rs.25,000 crore. Therefore, the burden of bringing out the department from the ICU now rests on the shoulders of our new Minister Bansal ji. He has to revive it and make it healthy again. He needs some time for this. He is no magician who can do wonders in merely 4 months (Interruptions) No, no this is just intervention. I cannot give the whole reply. Hon. Minister is here. He is my senior.

I just want to say one thing. When Bansal ji is trying his best to refurbish the maligned image of railways, all of us should whole-heartedly cooperate with him and give him some more time to organise everything. He is yet to be tested and tried. He does'nt have any magic wand in his hand. Every problem cannot be solved in a jiffy, we must accept this fact and our Minister is also saying this very frankly. Sir, we have just introduced only 87 new trains as we did not want to follow a populist path. For the first time, it is announced in the budget that a committed fund has to be provided earmarked for the 347 pending projects so that these can be completed in a time bound manner while insuring requisite funds for the 12th Five Year Plan. Sir, I am shocked to hear the criticisms and allegations that are being leveled against us by the Members of Trinamool Congress Party. They are saying that Bengal has been altogether neglected.

There are 3 railway zones in West Bengal – Eastern Zone, South – Eastern Zone, and North East Frontier Zone. In this years plan outlay, Rs.4742.91 crores Rs.2853.9 crores and Rs.4268.14 crores have been earmarked for the Eastern, South-Eastern and Northern Frontier Zones respectively. Inspite of this, if anyone says that Bengal has been deprived, it cannot be accepted. When approximately Rs.10,000 crores in all has been allocated for the 3 zones involving Bengal, one cannot possibly point a finger at us and if someone criticizes us for alleged neglect then I am sorry to say, but I think that the budget document has not been meticulously studied by Hon. Members. So I would request them to go through the budget once again.

Sir, you must be aware of the fact, that before Trinamool Congress came to power in West Bengal, agitations were held mostly on 3 issues –Singur, Nandigram and Jangalmahal. People of Singur had expected that some big projects would come up at Singur as the Railway Minister at that time was the Trinamool Congress leader. Since the closure of Tata Nano factory, they had hoped that the Rail Ministry would be setting up its factory on the disputed land and pay compensation to the displaced persons. A Kisan-Vision Project was announced in that year's Rail Budget. In the year 2009, the foundation stone was laid but since then there has been no progress so far. The location is also not suitable for any big construction because the approach road is so narrow that trucks cannot smoothly enter into there. So the agency which had come forward to complete the project has withdrawn resulting in shelving of this Kisan-Vision Project. Thus people of Singur were disheartened as the promise made by the then Railway Minister was not fulfilled.

Sir, let me talk about another project. You must have heard of Jangalmahal. Yesterday, Hon. Members from West Bengal were saying that nothing has been announced for Jangalmahal. Sir, one rail project is Bhadutala – Jhargram via Lalgarh, can be mentioned here. Sir, as you know, Lalgarh is the nerve centre of Jangalmahal. It came into focus due to the naxalite activities. People of that area had supported Trinamool Congress and had high hopes from Trinamool Government and its leadership as Smt. Mamata Banerjee had made tall promises when she was the Railway Minister. A decision was

taken for a special rail project in that area worth 289 crore rupees. But that promise did not see the light of the day. The revised cost was not determined during her tenure. It was said that there will be cost – sharing i.e half the cost will be borne by the State Government. But to date, not a single paisa has been released by the State Government. Thus this project too is about to be shelved. Even then Hon. Rail Minister Bansal ji has allocated Rs. one crore for this project which may not actually take off. This gesture of Bansal ji must be appreciated and I thank him for that. Money is not important, important is the intention. He at least made a provision in the budget for this project.

You are aware that review is done in railways at least thrice a year. Every project and provision is analysed. So fund is not a problem; it can be managed from even supplementary grant. But we should look at the intention, the will of Hon. Minister. When a promise made by the State Government was belied, the Railway Ministry took it upon itself – this is praiseworthy.

Sir, you know that Nandigram in West Bengal is a well known place. The then Railway Minister had declared that a Wagon Component Factory would be set up at Jellingham in Nandigram. with joint venture of Steel Authority of India and Burn Standard Co. Ltd. 35 hectares of land was identified, feasibility report was approved, proposal was mooted by the Registrar of Companies, road connectively was improved by Haldia Development Authority, survey work was completed, permission was given by the Irrigation Department. But the road is yet to be widened because the district administration has not given us due sanction. Production is slated to be started by 2015-16. Despite of all the work has not started in a desired manner and so uncertainty remains there, this year's Rail Budget has allocated Rs. 10 crores for that project. So the question arises that why should we criticize a Government which is taking so much pain to extend a helping hand to all the pending projects of the state announced by the former Railway Ministers. Sir, out of the 347 projects that will be given committed funds in the 12th Plan, 67 projects belongs West Bengal. Sir, this Government did not ask TMC to leave Railway Ministry. They abandoned the Ministry out of their own will, and which might have been more dear to

them. But 35 items have been allotted to West Bengal in this years budget. Out of the 67 new express trains, 6 new trains have been introduced in West Bengal in addition tgo passenger trains. This is no mean feat. Besides, 18 additional services have been extended to Kolkata and in 80 services, the number of rail coach has been increased from 9 to 12 ie. people will get the facility of 240 new coaches.

Sir, we know that railway overbridges are constructed on a cost – sharing basis. The name ROB itself signifies that it is a property of the railways. We were astonished to see that the bridge was inaugurated by Chief Minister of West Bengal without informing the railway department. This is ridiculous. She is a former Rail Minister. As such she should pay due respect to the rules and conventions of the Ministry; that was expected of her. But she did not follow any rule while inaugurating the bridge keeping us in complete darkness.

Sir, another issue is regarding the hilly areas of West Bengal, the Darjiling hills. We call Kanchenjunga the queen of hills. The area comprising Darjiling, Sikkim is a great tourist spot. The toy trains run in the area under the aegis of Darjiling –Himalayan railways. UNESCO has recognized the toy train as world heritage. For the last 2.5 years, this toy train service is not operational. It is plying in some routes, but the direct service from hill to valley has been completely stopped due to various reasons like land slide, earthquakes etc. The tracks have been badly damaged and have not been repaired. This toy train ride was the biggest attraction for the visitors. So I request the Ministry of Railways, not only as an MoS, but also as a common man, an ardent nature lover, a tourist, to revive this service immediately because we have a special love and affection for Darjiling hills. Keeping the emotions of our people in view and the attachment which we have for that region, this toy train service should be started as early as possible.

Before concluding Sir, I'd just say that I congratulate the Ministry for this budget. Letters were written to all the Hon. Members of West Bengal when this budget was being prepared and their suggestions and proposals were sought. But barring a few, none had responded. I reiterate, we all want to take the railways to new heights. This is not our private property. Railways is a property of the nation, of the people of this country. This is

Indian railways, this is our national pride. So I seek everybody's cooperation in our journey towards a new beginning. Let us come together to take railways forward . With these words, I conclude my intervention.

.

श्री अजय कुमार (जमशेदपुर): उपाध्यक्ष जी, मैं आपको धन्यवाद देता हूं कि आपने मुझे रेल बजट पर बोलने का मौका प्रदान किया। इसके साथ ही मैं आपसे यहां से बोलने की अनुमित चाहूंगा।

उपाध्यक्ष महोदय: ठीक है।

श्री अजय कुमार : उपाध्यक्ष महोदय, रेल मंत्री पवन कुमार बंसल जी, रेल राज्य मंत्री अधीर रंजन जी और रेलवे बोर्ड के चेयरमैन साहब को मैं अपने क्षेत्र में ओबीज़ बनाने के लिए धन्यवाद देना चाहूंगा और हमारे स्टेशंस के आधुनिकीकरण के लिए भी उन्हें धन्यवाद देना चाहूंगा। लेकिन झारखंड के लोगों की काफी शिकायतें हैं। रेलवे बजट में 9 हजार करोड़ की व्यवस्था कोयला और आयरन-ओर निकालने के लिए की गयी है। हम लोगों का पूरा कैंपिटल एक्सपेंडिचर सिर्फ झारखंड या खासतौर से पूर्वी झारखंड या उड़ीसा के क्षेत्र को है। हमें तो सिर्फ इस्तेमाल किया गया है और अगर कैंपिटल इंवैस्टमेंट है तो वह सिर्फ आयरन-ओर या कोयला निकालने के लिए है। रेलवे बजट का 40 प्रतिशत फ्रेंट रेवेन्यू झारखंड से आता है। लेकिन अगर हमारी संख्या कम है तो उसका कैंपिटल एक्सपेंडिचर भी एक प्रतिशत से कम है। आप कोयला निकालने का काम छोड़ दीजिए। आप तो उसी क्षेत्र से हैं तो आपसे कि आप दबाव डाल दीजिएगा कि जिस तरह से हम लोगों का रेल मंत्रालय का खर्चा है वह बहुत ही अफर्सोसजनक है। अभी मंत्री जी ने कहा था कि पंजाब के पास बहुत सारी ट्रेन हैं, बंगाल के पास बहुत सारी ट्रेन हैं, काफी काम यूपी में भी हो रहा है, तो सर, बाकी देश के बारे में भी चिंता करने की आवश्यकता है।

झारखंड में बोकारो, रांची, धनबाद, जमशेदपुर या टाटानग से बंगलौर, अजमेर, जयपुर आदि के लिए ट्रेन की व्यवस्था नहीं की गयी है। मैं एक राजनीतिक पार्टी की हैसियत से नहीं बल्कि पूरे झारखंड की तरफ से कहना चाहूंगा कि पिछले 25-30 सालों से झारखंड को नजर-अंदाज किया जा रहा है। अगर हमें ट्रेन मिली है तो वह भी कोलकाता से झारखंड को पार करती है, तब वह ट्रेन मिली है लेकिन झारखंड के लिए कोई ट्रेन नहीं है। मेरे संसदीय क्षेत्र में काफी सालों से मांग हो रही है कि भागलपुर के लिए, जयनगर के लिए, अमृतसर के लिए, छपरा के लिए ट्रेन चलाई जाएं। झारखंड के लोग छोटी-छोटी बातों में, जैसे ओवर-ब्रिज मिल जाए, तो खुश हो जाते हैं। अगर आपकी आमदनी हमारे क्षेत्र से ज्यादा है तो ऐसी स्थिति नहीं होनी चाहिए कि हम लोगों को सिर्फ रेवेन्यू बढ़ाने के लिए यूज किया जाए, लेकिन पैसेंजर के लिए कोई सुविधा न हो। काफी सालों से पुरुषोतम के लिए घाटशिला से छोटा सा हॉल्ट मांगा, जिसके लिए 30-40 सालों से लोग आंदोलन कर रहे हैं लेकिन उसकी व्यवस्था नहीं की गयी है।

अगर हम सरायकेला और हजारीबाग क्षेत्र का विकास करना चाहते हैं तो वहां पर रेलवे लाइन बनाने की आवश्यकता है। हम माननीय अधीर चौधरी जी और माननीय पवन बंसल साहब को यह कहना चाहेंगे कि हमारे क्षेत्र में छोटा-छोटा काम तो कर दीजिए, जैसे चकुलिया में ओवर-ब्रिज के बारे में मैंने कहा है, लेकिन उसे भी नजर-अंदाज किया जाता है। पांच साल पहले एक बजट पास हुआ था कि चकुलिया से बुरामाला लाइन के लिए जो उड़ीसा से हम

लोगों को झारखंड के पूर्वी क्षेत्र को कनैक्ट करती है, उसके बारे में किसी भी बजट में पैसे की व्यवस्था नहीं की गयी है। पांच साल पहले बजट में अनाउंस हो चुका है। वहां पर लाइन बनने से उड़ीसा में जो 200 किलोमीटर दूर से घूमकर जाना पड़ता है वह 80 किलोमीटर ही रह जाएगा और हम लोग ईस्टर्न कोरीडोर के माध्यम से विशाखापटनम हो या चैन्नई हो, वहां के लोगों को फायदा होगा, लेकिन उसकी व्यवस्था नहीं की गयी है। चकरधरपुर इस देश का सबसे बड़ा रेवेन्यू जैनरेट करने वाला डिवीजन है। हम माननीय पवन बंसल जी से विनती करेंगे की इसकी व्यवस्था आप करें। वहां पर दो ट्रेन सांतलकांची से अजमेर अनाउंस की गयी थी वह भी कोलकाता से जाते हुए दिल्ली के लिए हैं। अगर झारखंड दिल्ली और चंडीगढ़ के बीच में होता या कहीं और होता तो उसका विकास होता, लेकिन ऐसा नहीं है, यह बहुत अफसोसजनक है। चकरधरपुर में इंटरिसटी की बात जो पिछले बजट में अनाउंस हुई थी वह अभी तक शुरु नहीं हुई है, उसे जल्दी से शुरु किया जाए। हम यह नहीं कह रहे हैं कि आप जोन मत बनाइये। आपने पॉलिटिकल कंसीडिरेशन पर जोन बना दिये लेकिन कम से कम झारखंड में एक जोन तो बना दीजिए। जब आप हमारे प्रदेश से इतना ज्यादा पैसा कमा रहे हैं तो वहां भी बनाइये।

दूसरी बात है कि फैक्ट्री हर जगह बनती है, हमारे जमशेदपुर-टाटानगर से सब लोग रेलवे फैक्ट्री को सप्लाई करते हैं, एक्शन से लेकर वहां सभी बड़े-बड़े उद्योग हैं, प्राइवेट उद्योग हैं, लेकिन आप वहां पर फैक्ट्री स्थापित करने के लिए कोई कारगर कदम नहीं उठा रहे हैं।

अगर हमें नक्सलवाद के खिलाफ कारगर लड़ाई करनी है तो रेलवे एक महत्वपूर्ण टूल है। एक तो हमारे क्षेत्र से खनन निकालना और दूसरे वहां पैसा खर्च न करना, इस तरह से नक्सलवाद से कैसे लड़ा जाएगा। जितने भी नक्सल क्षेत्र हैं वे आदिवासी बहुल क्षेत्र हैं। अगर आप वहां विकास चाहते हैं तो वहां रेल लाइये। जिस इलाके में रेलवे लाइन शुरु हुआ, उस इलाके में नक्सलवाद एकदम खत्म हो गया। वहां व्यापार बढ़ेगा, तो रोजगार भी बढ़ेगा। आपके माध्यम से मैं रेल मंत्री जी को कहना चाहता हूं कि झारखंड, पूर्वी उड़ीसा या छत्तीसगढ़ को इस तरह से नजरअंदाज करना उचित नहीं है। मंत्री जी को बधाई देना चाहता हूं कि उन्होंने शहीदों के परिवार वालों के लिए गैलेंटरी अवार्ड के तहत छूट दी है, लेकिन उसमें एक छोटी सी त्रुटि है, क्योंकि मैं भी पुलिस आफिसर था और राष्ट्रपति जी से पदक भी मिला है। उन्होंने एक डिफरेंटसिएशन सेना और पुलिस के पदक के बीच में क्रिएट किया है। मेरा कहना है कि संसद में जो घटना घटी थी, उसमें पुलिस वाले शहीद हुए और माओवाद से लड़ते हुए या दूसरी जगहों पर सेना के लोग भी शहीद हुए। पुलिस की वीरता और सेना की वीरता के बीच में भेदभाव करना उचित नहीं है। वीरता तो वीरता ही है। मैं यही अनुरोध करुंगा कि इस विषय पर गंभीरता से सोचा जाए। हमारे कई पुलिस अधिकारी मुझसे मिले थे। सिर्फ यही मांग थी कि हमने भी देश की सेवा में जान दी है, इसलिए सेना और उनमें कोई फर्क नहीं मानना चाहिए।

कुछ दिन पहले मेरे बेटे ने कुंभ मेले जाने के लिए अनिरजर्ब्ड कम्पार्टमेंट में जाने का अनुभव लिया था। मैं यही कहना चाहता हूं कि हम तो एसी फर्स्ट क्लास में जाते हैं। हर ट्रेन में एक या दो अनिरजर्ब्ड कम्पार्टमेंट लगता है। यदि हम बाकी सुविधाओं को छोड़ कर इनकी संख्या बढ़ा देंगे, तो गरीब लोगों के लिए यह सबसे बड़ा कारगर कदम होगा। हम देखते हैं कि छपरा और पटना वाली ट्रेन में लोग घुस-घुस कर जाते हैं। अनिरजर्ब्ड कम्पार्टमेंट्स के डिब्बे बढ़ाने की अति आवश्यकता है।

मंत्री जी को धन्यवाद देना चाहूंगा कि सफाई पर उन्होंने काफी ध्यान दिया है, लेकिन आपके मंत्री ने ही कहा है कि इंडियन रेलवे इज दि बिग्गेस्ट ओपन टायलेट। अगर हमें सफाई पर कारगर कदम उठाने हैं, तो ओपन टायलेट के सिस्टम को रोकना पड़ेगा।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं आपको धन्यवाद देता हुआ अपनी बात समाप्त करता हूं।

श्रीमती जयश्रीबेन पटेल (महेसाणा): उपाध्यक्ष महोदय, मैं अपने कुछ विचार रेलवे बजट 2013-14 के लिए रखना चाहती हूं। आज अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस भी है और मैं महिला सदस्य के नाते चाहती हूं कि मंत्री जी इसे नजरअंदाज न करके गौर करें।

महोदय, आज तक जितने भी बजट पेश किए गए हैं सभी में नई-नई घोषणाएं की गई हैं। बजट में की गई घोषणाएं पूरी नहीं होती हैं और नई घोषणाएं कर दी जाती हैं। रेलवे ने भी कुछ ऐसे ही वायदे पिछले साल किए थे, जिन्हें अभी तक पूरा नहीं किया गया है तथा नई घोषणाओं का ऐलान कर दिया गया है, फिर चाहे नई ट्रेन चलाने का मामला हो या नए ट्रेक बिछाने का मामला हो। रेलवे के पास पहले से ही दस साल आगे की परियोजनाएं पड़ी हैं जो आज तक पूरी नहीं हुई हैं। उनके साथ ही दूसरी नई घोषणाएं कर दी गई हैं। स्रक्षा, सफाई और आध्निकीकरण में लगातार रेलवे तंत्र पिछड़ता चला जा रहा है। डेडिकेट फ्रेट कोरिडोर महत्वपूर्ण परियोजना आगे नहीं बढ़ पा रही है। रेलवे मंत्री जी नई घोषणाएं करते जा रहे हैं, लेकिन पिछले बजट में आईआईएम और एनआईडी के साथ रेलवे कोच डिजाइन और रिसर्च के बारे में एमओयू भी हुए थे, लेकिन आज तक इस प्रोजेक्ट में कोई प्रगति नहीं हुई है। गुजरात में देश की सबसे ज्यादा 1663 किलोमीटर लम्बी दरियाई सीमा है। मंत्री जी गुजरात देश का ग्रोथ ईंजन हैं और इसलिए मैं कहना चाहती हूं कि यहां 42 बंदरगाह हैं और देश का 34 प्रतिशत कार्गो कांडला पोर्ट से ही हैंडल किया जाता है, लेकिन गुजरात सरकार की बंदरगाहों को न जोड़ने की बात करके गुजरात के साथ अन्याय हुआ है। अहमदाबाद को पश्चिम रेलवे का हैडक्वार्टर बनाने की बात आज तक लम्बित है। गुजरात को भारत के उत्तर-दक्षिण के साथ जोड़ने वाली ट्रेनों की सुविधा नहीं मिल पाई है। ओखा-गुवाहाटी ट्रेन को प्रतिदिन चलाने की बात नहीं बन पाई है। छपइया-सीड़ी जैसे धार्मिक स्थलों पर आने-जाने के लिए कोई ट्रेन सुविधा नहीं मिल रही है। अहमदाबाद को वर्ल्ड क्लास स्टेशन बनाने की बात आज तक लम्बित है। अहमदाबाद से एक भी नई लम्बी दूरी की ट्रेन हमें नहीं मिल पाई है। गुजरात देश का इंडस्ट्रियल स्टेट बन गया है। इसके कारण भारत के अन्य राज्यों से मजदूर और मध्यम वर्गीय व्यापारी लोग गुजरात के भिन्न भिन्न शहरों में काम काज के लिए बसते हैं। उनके आवागमन के लिए नई ट्रेन्स की तथा लंबी दूरी वाली ट्रेन्स को शुरु करने और उसको बढ़ावा देने की आवश्यकता है लेकिन सिर्फ 4 पैसेंजर ट्रेन्स देकर गुजरात के हाथ में एक झुनझुना पकड़ा दिया गया है।

महसाना से मुंबई और सूरत आने जाने के लिए रेल सुविधा की मांग की घोर उपेक्षा की गई है।

मेरे निर्वाचन क्षेत्र मेहसाना जो मिल्क, इंडस्टियल ऑयल सिटी तथा उंझा जो एशिया की सबसे बड़ी मसाला मंडी है, एवं धार्मिक स्थल भी है वहां पूरे भारत भर से लोग बसते हैं। उनके आने जाने की सुविधा तथा सभी गाड़ियों के ठहराव के लिए कुछ भी प्रावधान नहीं किए गए हैं। गांधीनगर जो गुजरात की राजधानी है, उसको कोई रेल सुविधा से संतुष्ट नहीं किया गया है।

कडी जो कॉटन सिटी कहलाती है और बहुचराजी जो बड़ा धार्मिक शक्तिस्थल है, वहां आने जाने के लिए अहमदाबाद से कलोल होके चाणसमा, रनुज तक की ट्रेन्स की सुविधा में जो कमी की गई है, उसको फिर से चालू किया जाए क्योंकि बहुचराजी में मारुति उद्योग जापान की कंपनी के सहयोग से लगाया जा रहा है।

साबरमती रेलवे स्टेशन के अपग्रेडेशन करने की बात आज भी लंबित है तथा अहमदाबाद में ट्रैफिक की समस्या आज भी हल नहीं हुई है।

एनयुईटी के मुताबिक रेलवे ओवर ब्रिज बनाने की गुजरात की दरख्वास्त आज तक लंबित है। ट्रेनों की फ्रीक्वेंसी, नई ट्रेनों की शुरुआत करने में गुजरात की सरासर उपेक्षा हुई है। रेल विकास से वंचित मेहसाना से तारंगा, पालनपुर से अम्बाजी, खेडब्रहमा, आबुरोड नई रेल लाइनें बिछाने का काम आज भी कागजों में ही चल रहा है। कलोल, कड़ी, उंझा, बहुचराजी के आदर्श स्टेशनों के पुराने वादे भी वादे ही बन कर रह गए हैं। उनमें आज तक कोई तरक्की नहीं हुई है।

रेलवे लाइनों के आमान परिवर्तन के बारे में गुजरात की दरख्वास्तें भी स्वीकार नहीं हुई हैं। रेलवे लाइनों के दोहरीकरण में भी गुजरात के साथ अन्याय हुआ है।

आम जनता तक पीने के पानी को पहुंचाने वाली गुजरात सरकार की 26 दरखास्तें आज भी केन्द्र सरकार के रेलवे मंत्रालय के पास लंबित है जिससे हम आम लोगों को पानी जैसी बुनियादी सुविधाएं भी मुहैया नहीं करवा पा रहे हैं। उभरता हुआ नया मध्यम वर्ग जिसे आजकल महत्वाकांक्षी भारत एसपीरेबल इंडिया कहा जाता है। इस बजट के तहत रेल मंत्री जी ने सरचार्ज डालकर उनकी भी जेब ढ़ीली कर दी है। रेल मंत्री जी ने सैकड़ों परियोजनाओं से अपना हाथ खींच लिया है जिसमें 130 नई लाइनें और 225 आमान परिवर्तन की लाइनें अधूरी ही छोड़ दी हैं। यात्रियों को इस बजट से सुरक्षा की कोई गारंटी नहीं मिल रही है।

महिलाओं के साथ बढ़ती हुई घटनाओं की तादाद को देखते हुए आरपीएफ में महिलाओं के लिए दस प्रतिशत रिजर्वेशन देने की घोषणा अपर्याप्त है। आज चूंकि अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस भी है, स्थानीय संस्थाओं में और कई जगहों में 33 प्रतिशत और पचास प्रतिशत की बात महिलाओं के लिए कहते हैं तो हम चाहेंगे कि दस से बीस प्रतिशत रिजर्वेशन देने की घोषणा भी की जाए। खन्ना कमेटी की सिफारिशों में रेल मंत्रालय ने कुछ प्रगति नहीं की है। किराया बढ़ाकर सफर महंगा कर दिया है। भारतीय रेलवे सही ट्रैक पर नहीं चल रही है। इसीलिए मैं इस बजट को जनविरोधी कहती हूं। रेलवे का ऑपरेशन रेशियो क्या है, वह स्पष्ट किया जाए और हमारी बातों पर गौर किया जाए।

2009 से लेकर आज 2013 हो गया है। कई बार चार मंत्री बदल चुके हैं। हर रेल मंत्री के पास हमने अपनी मांग रखी है लेकिन आज तक वह लम्बित पड़ी हुई है। मैं आशा करूंगी कि आज अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के मौके पर मंत्री जी भी यहां बैठे हैं और वे हमारी बात पर गौर करेंगे, यही हमारा उनसे निवेदन है।

*श्री कमल किशोर "कमांडो" (बहराइच): रेल मंत्री द्वारा बहुत अच्छा रेल बजट पेश किया गया है, मैं उसका समर्थन करता हूं और साथ ही मेरे संसदीय क्षेत्र के अंतर्गत पूर्वोत्तर रेलवे से संबंधित निम्न विकास कार्यों की ओर मंत्री जी का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। इन परियोजनाओं का क्रियान्वयन किए जाने हेतु अतिरिक्त अनुदान की जरूरत है। मेरा यह संसदीय क्षेत्र विकास व आर्थिक रूप से काफी पिछड़ा हुआ है, इसलिए मेरा आग्रह है इस क्षेत्र को एक विशेष दर्जा देते हुए अतिरिक्त धन आबंटित किया जाए ताकि समस्त योजनाएं जनहित में पूरी हो सके।

गोण्डा से बहराइच के बीच में आमान परिवर्तन की गति बहुत धीमी है। यह परियोजना 10 वर्ष पहले शुरू की गई है, कार्य प्रगति पर है। रेलवे को पर्याप्त निधि आबंटित करनी चाहिए जिससे कार्य में तेजी आ सके।

बहराइच-नानपारा-नेपाल गंज रोड़ स्वीकृति हो चुके हैं, लेकिन धन के अभाव के कारण इस परियोजना पर कार्य प्रारंभ नहीं हो सका है। यह रेल मार्ग रूपईडीहा बार्डर से नेपाल व भारत को जोड़ता है और इस रास्ते हजारों की संख्या में यात्री आते-जाते हैं, इस रेल मार्ग के बनने से रेल विभाग बहुत लाभ होगा व राजस्व में भी बढ़ोत्तरी होगी।

बुढवल-बहराइच आमान परिवर्तन के लिए सर्वे हो चुका है। इस सम्बन्ध में केस फाईल योजना आयोग में पड़ी है। मेरा आग्रह है कि इस क्षेत्र के गरीब लोग भी बड़ी लाईन पर रेल की यात्रा कर सकें, उन्हें भी रेल पर बैठने का अवसर प्राप्त हो सके। इसे अविलम्ब कार्यान्वित किया जाए।

यात्रियों की भीड़ को देखते हुए दिल्ली से मुम्बई के बीच अतिरिक्त एक्सप्रेस गाड़ी, दिल्ली, लखनऊ के बीच एक एक्सप्रेस गाड़ी तथा दिल्ली गोरखपुर के बीच में एक अतिरिक्त रेलगाड़ी को शुरू किया जाए*

बहराइच रेलवे स्टेशन आदर्श स्टेशन बन गया है, लेकिन अभी तक कोई भी कार्य चालू नहीं हुआ है। इस स्टेशन पर जल्दी समस्त सुविधाओं को अतिशीघ्र चालू किया जाए ताकि यात्रियों को पर्याप्त लाभ मिल सके।

संहजनवा से दोहरीघाट रेल मार्ग को बड़ी लाईन में परिवर्तित किए जाने संबंधी रेल मंत्रालय सलाहकार सिमिति की बैठक दिनांक 22.01.2013 में चर्चा भी हुई थी, इसे ड्रीम प्रोजेक्ट के रूप में आमान-परिवर्तन के लिए जहां तक मेरी जानकारी है, सर्वे हो चुका है। स्थानीय लोगों की मांग पर इस योजना को अतिशीघ्र चालू किया जाना अति आवश्यक है।

गोण्डा से बहराइच होते हुए सीतापुर को जाने वाली लाइन को बड़ी लाइन में परिवर्तन किया जाना अति आवश्यक है। इस क्षेत्र में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के ज्यादातर लोग निवास करते हैं। इस रेल मार्ग के आमान-परिवर्तन होने से इन गरीब लोगों को भी रेल में यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा और वे रेल यात्रा का अनुभव ले सकेंगे।

-

^{*} Speech was laid on the Table

गोरखपुर से लखनऊ डबलिंग कार्य करीब-करीब पूरा हो गया है। अतः इस लाइन पर महत्वपूर्ण रेलगाड़ियां, राजधानी एक्सप्रेस जैसी गाड़ियों को चलाने की तथा स्पीड़ बढाने की अति आवश्यकता है।

अत्यधिक ट्रैफिक लोड के कारण इंटरिसटी ट्रेन को जगतबेला रेलवे स्टेशन पर रुकने का प्रावधान करने की जरूरत है तथा आरक्षण एवं यात्री सुविधा प्रदान करना आवश्यक है, इससे रेलवे के राजस्व में बढोत्तरी होगी।

बहराइच-गोण्डा रेलमार्ग कि.मी. 8 निकट सपना भट्टा, सुहेलदेव चित्तौरा पर बने पुल-कम-पैसेज जैसा विगत् कई वर्षों से स्थापित है, को पूर्व की भांति ही पुल डिजाइन करके निर्माण किए जाने की अति आवश्यकता है।

बहराइच जिले में यार्ड, एक माल एवं सवारी डिब्बा कारखाने का निर्माण किया जाना चाहिए, जहां उपयुक्त अवसरंचना और अन्य सुविधाएं हों। राज्य सरकार भूमि और अन्य सुविधाएं उपलब्ध करा सकती है।

महत्वपूर्ण रेलगाड़ियों के समय पालन व निगरानी रखने के लिए क्षेत्रीय रेलवे के स्तर पर निगरानी तंत्र की स्थापना की जानी चाहिए।

कैलाश पुरी हॉल्ट व गायघाट पर रेलवे हॉल्ट की स्वीकृति हो चुकी है जो एम.पी.लैंड्स फंड से होना है। इस संबंध में रेलवे की मदद की भी जरूरत है।

बुढ़वल बहराइच लाइन को शीघ्र पूरा करने व इसका नेपाल गंज, श्रावस्ती, सिरसिया, तुलसीपुर व गोरखपुर तक आमान परिवर्तन करके रेल लाइन का विस्तार करने की जरूरत है।

बरहज बाजार जिला देवरिया में रेलवे आरक्षण सुविधा एवं बरहज रेलवे स्टेशन को आदर्श बनाने की आवश्यकता है।

गोरखपुर से नई दिल्ली व मुम्बई केमध्य अन्य तीव्र गति की रेलगाड़ियां चलाने हेतु क्षेत्रीय रेलवे प्रस्ताव बनाकर केन्द्र सरकार के पास भेजे।

बहराइच जिले में यात्री रेलगाड़ियों में सवारी डिब्बों की कमी है, आम जनता बहुत कठिनाई से यात्रा करती है। इसलिए इस राज्य में यात्री रेलगाड़ियों में अधिक सवारी डिब्बे उपलब्ध कराए जाने चाहिए।

रेलगाड़ियों के अन्दर सफाई अभी तक संतोषजनक नहीं है, उसमें सुधार की जरूरत है। विभिन्न क्षेत्रों और परियोजनाओं के लिए धन के आबंटन के मानदंड बताए जाएं।

जोनल रेलवे द्वारा जनता, प्रतिनिधियों की मांग के आधार पर नई लाईन/आमान परिवर्तन/दोहरीकरण/रेलवे विद्युतीकरण परियोजनाओं के लिए जोनल रेलवे स्तर पर सर्वेक्षण रिपोर्ट की जाती है और जांच हेतु रेलवे बोर्ड को प्रस्तुत की जाती है। लेकिन उत्तर प्रदेश के बहराइच क्षेत्र में अब तक क्या-क्या सर्वेक्षण हुआ है।

मिहींपुरवा एवं रायबोझा रेलवे स्टेशनों के बीच गायघाट पर रेलवे हॉल्ट स्टेशन की अति आवश्यकता है। गोण्डा से बहराइच स्टेशनों के बीच में आमान-परिवर्तन पूर्वा से लेकर गोरखपुर रेलवे स्टेशनों के मध्य आमान-परिवर्तन की आवश्यकता है।

बहराइच रेलवे स्टेशन को आदर्श रेलवे स्टेशन बनाए जाने हेतु कार्य बड़ी धीमी गति से चल रहा है। इस कार्य में जनहित में तीव्रता लाने की अति आवश्यकता है।

यात्रियों की सुविधा के लिए मटेरा रेलवे स्टेशन पर एक्सप्रेस गाड़ियों के ठहराव की अति आवश्यकता है। यात्रियों को रेलवे आरक्षण के लिए दूर जाना पड़ता है, इसलिए मिहीपुरवा रेलवे स्टेशन पर आरक्षण केन्द्र स्थापित किए जाने की व्यवस्था करें।

सभी रेलवे स्टेशनों पर स्टेशन सलाहकार सिमिति का गठन किया जाए।

विछिया रेलवे स्टेशन पर गोकुल एक्सप्रेस का टिकट उपलब्ध कराने की व्यवस्था करें।

पूर्वोत्तर रेलवे के अंतर्गत अनेक स्थानों पर निष्प्रयोज्य स्क्रैप की निलामी कराने की जरूरत है।

बहराइच रेलवे स्टेशन पर पड़ी भूमि पर गौशाला एवं यात्री रैन बसेरा निर्माण कराए जाने की व्यवस्था करें,

तािक सामाजिक कार्य में एक नया मील पत्थर सािबत स्थापित हो सके।

पूर्वोत्तर रेलवे के बड़हलगंज व उरूआ, गोला में यात्रियों की सुविधा के लिए रेल आरक्षण स्थापित किया जाना बहुत जरूरी है। इस संबंध में रेल प्रशासन अविलम्ब कार्यवाही करे।

गोरखपुर से लखनऊ डबलिंग का कार्य करीब-करीब पूरा हो गया है। अतः जो महत्वपूर्ण रेलगाड़ियां इस मार्ग पर चलती हैं, उनकी स्पीड बढ़ाने की जरूरत है ताकि यात्री अपने गंतव्य पर पहले की अपेक्षा जल्दी पहुंच सके। *श्री सज्जन वर्मा (देवास): वर्ष 2013-2014 के रेल बजट का मैं स्वागत करता हूं। निश्चित रूप से यह बजट आम नागरिकों के लिए हितकारी है। इसलिए देश के तमाम लोगों ने इसका दिल से स्वागत किया है। 17 वर्षों के पश्चात् कांग्रेस के व्यक्ति के हाथ में रेल मंत्रालय का प्रभार आया है, इस हेतु देश की जनता में बड़ी उत्सुकता थी कि कहीं बड़ा कठोर बजट तो नहीं आएगा, कहीं रेल यात्रा के किराए में बढ़ोत्तरी तो नहीं की जाएगी, पर रेल मंत्री श्री पवन बंसल जी ने एक बहुत ही सरल रेल बजट प्रस्तुत कर देश की जनता के मन को मोह लिया है। इस बजट में कहीं कोई किराया बढ़ोत्तरी की बात की, ना ही कहीं कोई अधिभार जनता पर लादने की कोशिश की गई, बल्कि रेल यात्रा को अच्छा खाना कैसे मिले तथा रेलों की साफ-सफाई अच्छे स्तर की कैसे मिले, रेलवे स्टेशनों को कैसे उन्नत किया जाए, यात्रियों की सुरक्षा का इंतजाम कैसे बेहतर किया जाए, इन सभी बातों के लिए बजट में प्रावधान किए गए हैं। नई रेल लाइन के सर्वे की घोषणा की गई है, पुरानी परियोजनाओं को पूरा करने की दिशा में एक कदम बढ़ाया गया है।

इस बजट में कुछ विसंगतियां भी हैं जिसकी तरफ मंत्री जी का ध्यान दिलाना चाहूंगा। जैसे हजारों की संख्या में मानव रहित रेल क्रोसिंगों को बंद करने का निर्णय सूझ-बूझ के साथ नहीं लिया गया है क्योंकि कई रेल क्रोसिंग ऐसी जगह है जहां किसान का घर एक तरफ है उसके खेत दूसरी तरफ है वह फसल काट कर अपने घर तक कैसे लाए। दूसरा पहलू है ग्रामीण क्षेत्रों में हास्पिटल दूर है, बीमार को हॉस्पिटल ले जाना हो तो कई किलोमीटर का चक्कर लगाकर ले जाना पड़ता है, क्योंकि रेलवे क्रॉसिंग बंद होता है।

अतः मंत्री जी से मेरा अनुरोध है कि कुछ ऐसा सिस्टम बनाया जाए कि ट्रेन आने के 10 मिनट पहले क्रॉसिंग का गेट ऑटोमेटिक बंद हो जाए तथा रेल निकलने के बाद गेट खुल जाए।

इसके साथ ही मैं अपने संसदीय क्षेत्र की कुछ समस्याओं की तरफ मंत्री जी का ध्यान आकृष्ट कर रहा हूं, इस आशा ओर विश्वास के साथ कि अति शीघ्र इनका निराकरण कर दिया जाएगा।

पिछले बजट सत्र 2012-13 में रामगंज मंडी-झालावाड़ व्हाया आगर होते हुए उज्जैन तक रेलवे लाईन के सर्वे की घोषणा की गई। परन्तु एक वर्ष बीत जाने के बाद सर्वे कार्य प्रारंभ नहीं हुआ। आग्रह है कि आगर (शाजापुर) में सर्वे कार्यालय अतिशीघ्र खुलवाने का निर्देश जारी करें। ज्ञात हो कि यह रेलवे लाइन मेरे संसदीय क्षेत्र देवास और संसदीय क्षेत्र उज्जैन को कवर करती है जो एस.सी. में रिजर्व है।

बजट सत्र 2013-2014 में देवास से हाटिपपिलिया होते हुए सोनकच्छ से आष्टा सिहोर होते हुए भोपाल नई रेल लाइन (यह क्षेत्र रेल लाइन से वंचित है) सर्वे हेतु निवेदन किया गया था जो स्वीकार हो चुका है कृपया अतिशीघ्र कार्य प्रारंभ करने हेतु निर्देश जारी करें।

.

^{*} Speech was laid on the Table

पुरी-बलसाड ट्रेन का ठहराव शुजालपुर में दिया जाए। गाड़ी संख्या 19325 एवं 19326 इंदौर-अमृतसर का ठहराव शाजापुर में दिया जाए। ट्रेन नं. 19053 एवं 19054 सूरत-मुजफ्फरपुर का ठहराव शाजापुर में दिया जाए। ट्रेन नं. 19239 एवं 19328 इंदौर-नागपुर- इंदौर का ठहराव बैरछा में दिया जाए। ट्रेन नं. 14323 एवं 14324 इंदौर-हबीबगंज-इंदौर का ठहराव बैरछा में दिया जाए। ट्रेन नं. 11471 एवं 11472 जबलपुर-इंदौर -जबलपुर -ओवर नाईट का ठहराव कालापीपल में दिया जाए। शाजापुर जिला मुख्यालय पर आरक्षण टिकट एवं सामान्य टिकट एक ही काउन्टर से दिए जाते हैं, जिसे अलग-अलग किया जाए। ट्रेन 59379 एवं 59380 इंदौर मक्सी इंदौर, मक्सी में चार घंटे तक रूकी रहती है जिसे शाजापुर तक बढ़ाया जाना चाहिए।

रोड अंडर ब्रिज (सब-वे) लेवल क्रॉसिंग नं. 80 उज्जैन भोपाल सेक्शन नियर शाजापुर का निर्माण कराया जाए। रोड अंडर ब्रिज (सब-वे) लेवल क्रॉसिंग नं. 31 इंदौर देवास सेक्शन नियर देवास का निर्माण किया जाए।

अतः मेरा अनुरोध है कि जनहित को ध्यान में रखते हुए उक्त प्रस्तावित मांगों को पूरा कराए जाने की कृपा करेंगे।

^{*}श्री **हंसराज गं. अहीर (चंद्रपुर)**: मैं 2013-14 के रेलवे बजट पर अपने विचार व्यक्त करता हूं। इस बजट में मंत्री जी ने रेल सेवा का विस्तार कर अधिकाधिक क्षेत्र में रेल सेवा उपलब्ध कराने हेतू कोई नई दृष्टि, दिशा नहीं दी है। जिन्हें रेल सेवा उपलब्ध है उन्हें ही इस बजट में सुविधा के बारे में सोचा गया। यह दुर्भाग्य है कि ब्रिटिश काल में जो रेल मार्ग बने, उसमें बहुत बढ़ोत्तरी नहीं हुई। हम उन लोगों को रेल सुविधा उपलब्ध कराने में असफल साबित हो रहे हैं जिन्हें अभी तक रेल का दर्शन ही नहीं हुआ है। आजादी के 65 साल बाद भी हम यह कार्य नहीं कर सके। जिन-जिन जनप्रतिनिधि या सांसदों द्वारा ऐसे प्रस्ताव भेजे गए, उन पर विचार नहीं हुआ है, तो अमल नहीं हुआ है। जिन क्षेत्रों में आदिवासी ग्रामीण लोग रहते हैं, उन वनबहुल, पहाड़ी व दुर्गम क्षेत्रों में रेल की मांग, नई लाइनें जहां पूर्व मंत्रियों ने घोषणा की, उन लाइन हेतु भी इस बजट में प्रावधान नहीं हुआ। जैसे बलारशाह से सुरजागढ़ सर्वे हुआ। आरमोरी-वडसा, गडचिरोली सर्वे पूर्ण हुआ। माणिकगढ़ आदिलाबाद इन नई लाइनों का सर्वे हुआ। 2008-09 में घोषणा हुई। राज्य सरकार अपना हिस्सा देने हेतु पत्र दे चुकी है। फिर भी बजट में प्रावधान नहीं हुआ। 2008-09 में बलारशाह से मुम्बई हेतू सेवाग्राम एक्स. लिंक एक्सप्रेस के रूप में चलने हेतू घोषणा हुई। अभी तक इस गाड़ी के 7 डिब्बे बलारशाह से वर्धा स्टेशन तक नहीं छोड़े गए। 3-4 डिब्बे पैसेंजर गाड़ी को जोड़कर भेजे जा रहे हैं। 5 वर्षों से यही चल रहा है। 7 डिब्बों की अलग से गाड़ी छोड़ी जाए। नंदीग्राम एक्सप्रेस नागपुर-मुम्बई चलती है। नागपुर से अन्य अनेक गाड़ियां मुम्बई चलती हैं। जिन्हें 12-13 घंटे का समय लगता है। इस गाड़ी को वाया नांदेड़ 22-24 घंटे लगते हैं। इस गाड़ी का उपयोग नागपुर से मुम्बई कम होता है। यह देखते हुए इस गाड़ी को बलारशाह-मुम्बई वाया नांदेड़ चलाया जाए, लाभ में चलेगी तथा इसी गाड़ी को मनमाड़ से होते हुए जो गुजरती है। यहां से कुछ डिब्बे अलग कर मुम्बई तथा पूना के लिए लिंक एक्सप्रेस के रूप में चलाई जाए। नई गाड़ियों में बलारशाह वाया चंद्रपुर-वर्धा से होकर नागपुर के लिए शटल ट्रेन या मेमो गाड़ी चलाएं। इस मार्ग पर भारी ट्रैफिक है। कुछ गाड़ियों का विस्तार करने की मांग करता हूं। तेलंगाना गाड़ी जो सिकन्दराबाद, कागजनगर तक चलती है इस गाड़ी को चांदाफोर्ट या बलारशाह स्टेशन तक चलाए। जी.टी.एक्सप्रेस चेन्नई से दिल्ली तक चलती है। जिसको आगे अमृतसर तक विस्तार करें। यशवंतपुर-बिलासपुर गाड़ी को आगे हावड़ा तक चलाएं, जिसे हफ्ते में तीन दिन से बढ़ाकर हर दिन चलाया जाए।

चंद्रपुर स्टेशन से चांदाफोर्ट स्टेशन का अंतर 1.5 कि.मी. होगा। इन दोनों स्टेशनों को जोड़ने हेतु नई 1.5 कि.मी. रेल लाइन बिछाने की तथा आवश्यक सर्वे की घोषणा हो। कुछ शहरों के बीच गुड़्स शेड रेलवे स्टेशन पर है जिन्हें स्टेशन तथा शहरों से कुछ अंतर पर स्थापित करने की जरूरत है। वणी शहर के बीच स्टेशन पर ही कोयला जैसी प्रदूषणकारी वस्तुओं का लदान होने से वणी शहर में भारी समस्या खड़ी हुई है। इस गुड़्स शेड को कुछ आगे अंतर पर 5 कि.मी. की दूरी पर स्थापित करें।

-

^{*} Speech was laid on the Table

कई रेल मार्गों पर जो मेन गेट बने हैं उन्हें बंद किया जा रहा है। ग्रामीणों को दिक्कत होगी। इस पर गेटमैन दें या अंडरब्रिज (आर.यू.बी.) बनाएं। रेल गेट बंद ना करें। वणी आदिलाबाद मार्ग पर पिंपलखुटी स्टेशन के पास गेट था जिसे बंद किया गया इस गेट को पुनः शुरू करें। बलारशाह से चांदाफोर्ट-नागभीड मार्ग पर विद्युतीकरण तथा दूसरी रेलवे लाइन, यह लाइन गेज परिवर्तन की गई थी और जिस पर बने स्टेशन प्लेटफार्म पुराने हैं, उन्हें ऊंचा करने की जरूरत है। जबलपुर-नैनपुर-बालाघाट मार्ग पर गेज परिवर्तन हो रहा है। अधिकाधिक धनराशि का प्रावधान कर जल्द से जल्द पूरा करें। एक नई गाड़ी हैदराबाद से चांदाफोर्ट होकर हावड़ा तक चलाए तथा माणिकगढ़ से गड़चांदूर रेल लाइन पर गाड़ी चलाए। जिस लाइन पर सिर्फ गुड़स गाड़ियां चलती है, पैसेंजर चलाने हेतु जांच करें, प्रारंभ करें मुर्तिजापुर-यवतमाल रेल मार्ग का गेज परिवर्तन तथा यवतमाल से वणी हेतु नई रेल लाइन का सर्वे कराने हेतु प्रावधान करें।

रेल के डिब्बों में हो रहे अत्याचार, हमले, महिलाओं की असुरक्षा तथा ट्रेन से फेंककर हो रही हत्याएं, मारपीट, लूटपाट के मामले बार-बार सामने आ रहे हैं। इस पर अंकुश लगाने हेतु हर डिब्बों में सीसीटीवी कैमरे लगाए जाएं तथा स्टेशनों पर भी सीसीटीवी कैमरों की संख्या बढ़ाई जाए।

*श्री राकेश सचान (फतेहपुर): इस रेल बजट में मेरे क्षेत्र फतेहपुर की उपेक्षा की गई है। फतेहपुर जनपद दिल्ली-हाबड़ा की मेन रेलवे लाइन के बीच में स्थित फतेहपुर जनपद की आबादी 40 लाख की है, परन्तु रेलवे की उपेक्षाओं के कारण यहां की जनता को दिक्कते हों रही है।

फतेहपुर व बिन्दकी रोड़ स्टेशनों से 15-20 हजार दैनिक यात्री कानपुर एवं इलाहाबाद अपने रोजगार व अन्य कार्यों के लिए जाते हैं साथ ही उच्च शिक्षा के लिए यहां के छात्र व छात्राएं भी काफी संख्या में शिक्षा के लिए रोज आते व जाते हैं। इन सभी लोगों की परेशानियों को देखते हुए इलाहाबाद से प्रातः फतेहपुर-कानपुर के लिए इंटरिसटी एक्सप्रेस गाड़ी को चलाया जाए। जिससे जनपद के यात्रियों को सुविधा होगी एवं रेलवे को राजस्व का लाभ भी होगा। वर्ष 2012-13 के बजट में घोषित कानपुर से इलाहाबाद एक गाड़ी चलायी जा चुकी है।

दिल्ली से प्रातः 6.50 पर नार्थ ईस्ट एक्सप्रेस के बाद रात्रि में लाल किला एक्सप्रेस ही सीधी गाड़ी फतेहपुर के लिए है और इसी प्रकार फतेहपुर से दिल्ली के लिए रात्रि 10.50 बजे प्रयागराज एक्सप्रेस के बाद प्रातः तूफान एक्सप्रेस है। जबिक इस बीच में दिल्ली व इलाहाबाद के बीच में 15 गाड़ियां फतेहपुर से गुजरती हैं और इन गाड़ियों का फतेहपुर में ठहराव नहीं होने से फतेहपुर के यात्रियों को लम्बी दूरी की गाड़ियों को पकड़ने के लिए कानपुर जाना पड़ता है। जिससे ज्यादा समय व ज्यादा पैसे खर्च करने के बावजूद लोगों को काफी असुविधा होती है और इससे रेलवे को भी राजस्व की हानि उठानी पड़ती है। यदि फतेहपुर स्टेशन पर महाबोधी, लिच्छवी व झारखंड व स्वर्णजयन्ती एक्सप्रेस गाड़ियों का ठहराव दोनों दिशाओं से फतेहपुर कर दिया जाता है तो रेलवे को राजस्व का फायदा होगा। साथ ही, यहां के यात्रियों को भी लम्बी दूरी की यात्राओं के लिए भी नहीं भटकना पड़ेगा।

फतेहपुर रेलवे स्टेशन पर एक टिकट काउंटर की संख्या को बढ़ाया जाए साथ ही, एम.एस.टी. के लिए एक अलग काउंटर खोला जाए। फतेहपुर स्टेशन पर आरक्षण काउंटर की संख्या को बढ़ाया जाए तथा यहां पर हो रही असुविधाओं एवं भ्रष्टाचार को समाप्त कराया जाए।

फतेहपुर रेलवे स्टेशन से होने वाली वार्षिक आय को देखते हुए मॉडल रेलवे के स्टेशन के रूप में विकसित किया जाए। स्टेशन के प्लेटफॉर्म नम्बर 4 का लेबल ऊंचा करके प्लेटफार्म में शेड का भी निर्माण किया जाए।

बिन्दकी रोड़ स्टेशन में स्वर्णजयन्ती, संगम व झारखंड एक्सप्रेस का ठहराव दिया जाए। खागा स्टेशन में झारखंड एक्सप्रेस का ठहराव दिया जाए।

^{*} Speech was laid on the Table

कुंवरपुर-बिन्दकी सड़क, औंग, खागा और बहरामपुर रेलवे स्टेशन की प्रमुख सड़कों पर रेलवे ओवर ब्रिज का निर्माण कराया जाए। फतेहपुर व बिन्दकी रोड़ स्टेशनों पर निर्माणाधीन ओवर ब्रिजों में इन दोनों स्टेशनों पर सीधे पहुंचने के लिए सीढ़ियों का भी निर्माण किराया जाए जिससे यात्रियों को सीधे स्टेशन में पहुंचने की सुविधा मिल सके।

फतेहपुर स्टेशन में पूछताछ कार्यालय शुरू किया जाए तथा टेलीफोन पर स्थानीय पूछताछ की व्यवस्था की जाए। फतेहपुर-कानपुर पैसेंजर जो प्रातः 7 बजे चलकर 10 बजे कानपुर पहुंच कर पूरे दिन खड़ी रहकर सांय 6 बजे कानपुर से चलकर रात्रि 8.30 बजे फतेहपुर पहुंचती है। फतेहपुर रात्रि में खड़ी रहती है। इस गाड़ी को दिन में कानपुर से एक बार फिर चलाकर फतेहपुर तक के फेरे को बढ़ाया जाए जिससे इस गाड़ी का उपयोग भी दिन में हो सकेगा और इससे रेलवे के राजस्व में भी वृद्धि होगी।

जाड़े के दिनों में कोहरे के कारण 2 से 3 माह के लिए चौरीचौरा, तूफान, लाल किला व जनता एक्सप्रेस गाड़ियों को निरस्त कर दिया जाता है जिससे फतेहपुर के यात्रियो को काफी असुविधा होती है। अतः इन गाड़ियों को निरस्त न करके कम दूरी पर कानपुर तक चलाया जाए।

इलाहाबाद से वाया फतेहपुर होते हुए अजमेर शरीफ से एक नई एक्सप्रेस गाड़ी चलायी जाए। इलाहाबाद मुम्बई एक्सप्रेस वाया फतेहपुर-कानपुर-झांसी होकर सीजनल चलायी जाती है उसे प्रतिदिन किया जाए।

बिंदकी (फतेहपुर) स्टेशन पर चौरी-चौरा एक्सप्रेस का दोनों तरफ से ठहराव प्रदान किया जाए। कानपुर-बांदा रेल लाइन में जहानाबाद-घाटमपुर (मार्ग), कानपुर नगर में एक नया आर.ओ.बी. पुल स्वीकृत किया जाए।

फतेहपुर रेलवे स्टेशन पर समस्त प्लेटफार्मी पर 2-2 वाटर कूलर लगवाए जाएं, जिससे गर्मियों में यात्रियों को ठंडा पानी मिल सके।

इटावा-औरया-भोगनीपुर-घाटमपुर-जहानाबाद-बकेवर होते हुए बिन्दकी रोड़ तक 184 कि.मी. नई रेलवे लाइन बनायी जाए जिससे इस पिछड़े हुए क्षेत्र का विकास होगा। साथ ही, दिल्ली-हाबड़ा लाइन में दबाव भी कम होगा। घाटमपुर एवं भोगनीपुर में लग रहे नए पावर प्लांटों में रेलवे के सहयोग से कार्य जल्द होगा तथा रेलवे के राजस्व में वृद्धि होगी।

घाटमपुर, कानपुर नगर स्टेशन को उच्चीकृत कर शेड बनाया जाए तथा वहां पर पानी की समुचित व्यवस्था की जाए। फतेहपुर-लखनऊ के बीच में कानपुर होकर एक सीधी ई.एम.यू. गाड़ी को चलाया जाए, जो फतेहपुर से प्रातः चलकर सायं फतेहपुर वापस आए।

फतेहपुर जनपद की रेल समस्याओं को मैं पहले भी पूर्व रेल बजट में उठा चुका हूं , परन्तु इस पर अब तक कोई प्रगति नहीं हो सकी है।

अतः आपसे आग्रह है कि रेलवे इस पर त्वरित कार्यवाही करके इन समस्याओं को दूर कराए, जिससे फतेहपुर की जनता को इसका लाभ प्राप्त हो सके और इससे रेलवे को राजस्व भी अत्यधिक मिल सके।

*SHRI RAYAPATI SAMBASIVA RAO (GUNTUR): At the very outset, I would like to highlight a fact that this is the first Budget presented by a Congress Railway Minister in 15 years.

The new Railway Minister, Shri Pawan Kumar Bansal may be having his own compulsions in running his Ministry and hence his reasoning for hiking the fares of railway passengers by 20%. When I think of over 90% poor and downtrodden who use railways as the cheap mode of transport, I think that it is not the right thing to do. Instead he should have thought of increasing the revenue of Railways by some other means for implementation of various schemes, including improving the safety of passengers.

Now, I would come to Guntur division, a part of South Central Railways and which has been neglected in this Railway Budget.

Taking care of Guntur division would undoubtedly help and rejuvenate the growth, sustenance and development of the Guntur division as this all important division finds no place in the 2013-14 Rail Budget.

Now, I would state about doubling and electrification project of Guntur (Nallapadu)-Nadikudi-Nalgonda-Bibi Nagar, which has been awaiting appraisal of the Planning Commission. If and when implemented, this project would not only satisfy the aspirations of the local travelling public of my parliamentary constituency, Guntur but would also reduce already super saturated Vijayawada-Kazipet section. It may be aptly explained in road traffic parlance as touching *bumper-to-bumper*.

_

^{*} Speech was laid on the Table.

Next, there is a mention in this year is Railway Budget about the introduction of a bi-weekly Express train between Kakinada and Mumbai but unfortunately, there is no mention of its route. Hence, it would not be out of place to request the hon. Minister to see that this bi-weekly Express runs via Guntur-Nadikudi-Nalgonda and Bibi Nagar or via Guntur-Guntakal-Wadi so that the people of my parliamentary constituency, Guntur are benefited.

There is no dearth of trains to Shirdi Sai Nagar via Vijayawada-Kazipet-Secunderabad route. There is a proposal in this year's Budget to increase the frequency of the Train No.17213/17214-Narasapur-Nagarsol (Near Sai Nagar Shiridi) Train No.17213/17214 to daily. Here, I would like to mention and to draw the attention of the hon. Rail Minister, Shri Bansal that he may instruct the authorities to see that this train passes via Guntur-Nadikudi-Nalgonda and Bibi Nagar-Secunderabad, which would be of immense help to the people of the region.

If there is one train or route which is very essential, it should be Guntur-Chennai-Guntur. Unfortunately, there is no direct train between Chennai and Guntur and vice versa from dawn to dusk. There is also a need for a Guntur-Chennai-Guntur Intercity Express train starting at Guntur in the early morning hours.

Previously Secunderabad-Tenali-Secunderabad, Nagarjuna Express is running between Tenali, Guntur-Secunderabad, which caters to the needs of the passengers of this region. To the dismay of passengers in the Guntur region, after the extension of Janmabhoomi Express to Secunderabad via Guntur, Nadikudi, Nagarjuna Express was stopped with the result passengers of the region are put to a lot of inconvenience and

hardship to get any accommodation in the long distance run Janmabhoomi Express between Visakhapatnam-Secunderabad. As the hon. Minister is aware, there is an ever growing rush between Tenali, Guntur-Secunderabad and hence, an immediate and urgent measure should be taken to revive Nagarjuna Express.

I would like to bring to the notice of the hon. Minister that there is only one night Narayanadri Express between Secunderabad and Tirupati, which runs via Guntur. Though there is a Guntur-Tirupati Passenger Train, it takes long hours to reach Tirupati and that too, there is no reservation facility.

Added to this, there is no express train connecting Bapatla, Chirala, Ongole, Nellore route from Guntur during the day time. Hence, an Intercity Express train between Guntur-Tirupati-Guntur has become absolutely essential as the same would help the student community and workers and employees to reach their destination in between where the train starts and where it ends.

Likewise, regarding women, 10% RPF vacancies are proposed to be reserved for women. I wholeheartedly appreciate this effort of the Railway Minister. Another redeeming feature is about issue of passes for freedom fighters. As per the announcement, their passes can now be renewed every 3 years. Earlier, renewal was done every year.

I would also make a request of manning all the unmanned level-crossings of the country, which may be a Herculean task but for a dynamic and innovative Minister like Shri Pawan Kumar Bansal, nothing is impossible or unattainable. Next comes the cleanliness of railway stations, which I think, would be taken care of under the new

Railway Minister's regime. I would strongly urge the Rail Minister to ensure safety and

security of rail travelers.

Coming to my constituency, Guntur. I would say that I have brought out the

deficiencies and shortcomings with high hopes that the able Railway Minister, who has the

foresight and will to change the map of railways in the country, would correct the same in

the Supplementary Railway Budget which would make the traveling public and people of

my parliamentary constituency, Guntur and the region to benefit.

Almost all the projects, I have raised are viable. Hence, I would like to plead and

request the hon. Minister on behalf of the people of my parliamentary constituency, Guntur

as well as on my own behalf to consider the issues raised by me and ensure its

implementation as early as possible.

SHRI LALIT MOHAN SUKLABAIDYA (KARIMGANJ): Thank you, Sir. The entire

nation is congratulating the hon. Minister of Railways for announcing a realistic Budget for

2013-14.

Sir, I am glad to say that it is for the first time that Arunachal Pradesh will be taken

into the Railway Map and my State Assam will get first ever double lining from Kamakhya

to Bongaigaon.

उपाध्यक्ष महोदय: आप अगले दिन इसको जारी रखेंगे। अब प्राइवेट मैम्बर्स बिल लेंगे।

...(व्यवधान)

15.30 hrs

MOTION RE: THIRTIETH AND THIRTY-FIRST REPORTS OF COMMITTEE ON PRIVATE MEMBERS' BILLS AND RESOLUTIONS

MR. DEPUTY-SPEAKER: Now, Private Members' Business. Prof. Saugata Roy.

प्रो. सौगत राय (दमदम): उपाध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं:-

"कि यह सभा क्रमशः 27 फरवरी और 6 मार्च को सभा में प्रस्तुत गैर-सरकारी सदस्यों के विधेयकों तथा संकल्पों संबंधी समिति के 30वें और 31वें प्रतिवेदनों से इस उपांतरण के अध्यधीन सहमत है कि संकल्पों के लिए समय के नियतन के संबंध में 30वें प्रतिवेदन के पैरा 6 और पैरा 7 के उप-पैरा (चार) का लोप किया जाए।"

MR. DEPUTY-SPEAKER: The question is:

"That this House do agree with the Thirtieth and Thirty-first Reports of the Committee on Private Members' Bills and Resolutions presented to the House on 27 February and 6 March, 2013, respectively, subject to modifications that para 6 and sub-para (iv) of para 7 of the Thirtieth Report relating to allocation of time to resolutions, be omitted."

The motion was adopted.

15.35 hrs

PRIVATE MEMBERS' BILL -Introduced

(i) Destitute Children (Rehabilitation And Welfare) Bill, 2011*

SHRIMATI PRIYA DUTT (MUMBAI NORTH-CENTRAL): I beg to move for leave to introduce a Bill to provide for the rehabilitation and welfare measures of destitute children and for matters connected therewith or incidental thereto.

MR. DEPUTY-SPEAKER: The question is:

"That leave be granted to introduce a Bill to provide for the rehabilitation and welfare measures of destitute children and for matters connected therewith or incidental thereto."

The motion was adopted.

SHRIMATI PRIYA DUTT: I introduce* * the Bill.

15.35 ½ hrs.

(ii) Writers And Artists' Social Security Bill, 2011*

SHRIMATI PRIYA DUTT (MUMBAI NORTH-CENTRAL): I beg to move for leave to introduce a Bill to provide for social security and welfare measures for writers and artists and for matters connected therewith or incidental thereto.

MR. DEPUTY-SPEAKER: The question is:

"That leave be granted to introduce a Bill to provide for social security and welfare measures for writers and artists and for matters connected therewith or incidental thereto."

The motion was adopted.

SHRIMATI PRIYA DUTT: I introduce the Bill.

^{*} Published in the Gazette of India, Extraordinary, Part-II, Section-2, dated 08.03.2013.

^{**} Introduced with the recommendation of the President.

15.36 hrs.

(iii) Persons With Disabilities (Equal Opportunities, Protection Of Rights And Full Participation) Amendment Bill, 2011* (Amendment of section 33)

SHRIMATI PRIYA DUTT (MUMBAI NORTH-CENTRAL): I beg to move for leave to introduce a Bill further to amend the Persons with Disabilities (Equal Opportunities, Protection of Rights and Full Participation) Act, 1995.

MR. DEPUTY-SPEAKER: The question is:

"That leave be granted to introduce a Bill further to amend the Persons with Disabilities (Equal Opportunities, Protection of Rights and Full Participation) Act, 1995."

The motion was adopted.

SHRIMATI PRIYA DUTT: I introduce the Bill.

15.36 ½ hrs.

(iv) Prevention of Bribery in Private Sector Bill, 2012*

SHRI VARUN GANDHI (PILIBHIT): I beg to move for leave to introduce a Bill to establish bribery as a criminal offence and to promote effective practices to prevent bribery in private sector and for matters connected therewith or incidental thereto.

MR. DEPUTY-SPEAKER: The question is:

"That leave be granted to introduce a Bill to establish bribery as a criminal offence and to promote effective practices to prevent bribery in private sector and for matters connected therewith or incidental thereto."

The motion was adopted.

SHRI VARUN GANDHI: I introduce the Bill.

^{*} Published in the Gazette of India, Extraordinary, Part-II, Section-2, dated 08.03.2013.

15.37 hrs.

(v) Indian Penal Code (Amendment) Bill, 2012* (Insertion of new section 304AA)

डॉ. किरीट प्रेमजीभाई सोलंकी (अहमदाबाद पश्चिम): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं कि भारतीय दंड संहिता, 1860 का और संशोधन करने वाले विधेयक को पुरःस्थापित करने की अनुमति दी जाए।

MR. DEPUTY-SPEAKER: The question is:

"That leave be granted to introduce a Bill further to amend the Indian Penal Code, 1860."

The motion was adopted.

डॉ. किरीट प्रेमजीभाई सोलंकी : मैं विधेयक पुरःस्थापित करता हूं।

MR. DEPUTY-SPEAKER: Item number 26, Shri Satpal Maharaj – Not present.

15.37 ½ hrs.

(vi)Lakshadweep Coconut Tree Climbers (Welfare) Bill, 2012*

SHRI HAMDULLAH SAYEED (LAKSHADWEEP): Sir, I beg to move for leave to introduce a Bill to provide for welfare and protection of coconut tree climbers and for matters connected therewith.

MR. DEPUTY-SPEAKER: The question is:

"That leave be granted to introduce a Bill to provide for welfare and protection of coconut tree climbers and for matters connected therewith."

The motion was adopted.

SHRI HAMDULLAH SAYEED: I introduce the Bill.

^{*} Published in the Gazette of India, Extraordinary, Part-II, Section-2, dated 08.03.2013.

15.38 hrs.

(vii) Disclosure Of Lobbying Activities Bill, 2013*

SHRI KALIKESH NARAYAN SINGH DEO (BOLANGIR): Sir, I beg to move for leave to introduce a Bill to set up an Authority for registration of lobbyists; to provide for disclosure of lobbying activities that influence legislative and executive decision-making in order to increase transparency in governance and for matters connected therewith.

MR. DEPUTY-SPEAKER: The question is:

"That leave be granted to introduce a Bill to set up an Authority for registration of lobbyists; to provide for disclosure of lobbying activities that influence legislative and executive decision-making in order to increase transparency in governance and for matters connected therewith."

The motion was adopted.

SHRI KALIKESH NARAYAN SINGH DEO: I introduce the Bill.

15.38 ½ hrs.

(viii) Jute Growers (Remunerative Price And Welfare) Bill, 2013*

DR. KAKOLI GHOSH DASTIDAR (BARASAT): Sir, I beg to move for leave to introduce a Bill to provide for payment of remunerative price for raw jute to the jute growers, insurance of jute crop free of cost and for overall welfare of jute growers and for matters connected therewith.

^{*} Published in the Gazette of India, Extraordinary, Part-II, Section-2, dated 08.03.2013.

MR. DEPUTY-SPEAKER: The question is:

"That leave be granted to introduce a Bill to provide for payment of remunerative price for raw jute to the jute growers, insurance of jute crop free of cost and for overall welfare of jute growers and for matters connected therewith."

The motion was adopted.

DR. KAKOLI GHOSH DASTIDAR: I introduce the Bill.

15.39 hrs.

(ix) Nationalisation Of Inter-State Rivers Bill, 2013*

SHRI RAMEN DEKA (MANGALDOI): Sir, I beg to move for leave to introduce a Bill to provide for nationalisation of inter-State rivers for the purpose of equitable distribution of river waters among the States and for matters connected therewith or incidental thereto.

MR. DEPUTY-SPEAKER: The question is:

"That leave be granted to introduce a Bill to provide for nationalisation of inter-State rivers for the purpose of equitable distribution of river waters among the States and for matters connected therewith or incidental thereto."

The motion was adopted.

SHRI RAMEN DEKA: I introduce the Bill.

^{*} Published in the Gazette of India, Extraordinary, Part-II, Section-2, dated 08.03.2013.

15.39 ½ hrs.

(x) Indian Penal Code (Amendment) Bill, 2013* (Amendment Of Section 304a, Etc.).

डॉ. भोला सिंह (नवादा): महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं कि भारतीय दण्ड संहिता, 1860 का और संशोधन करने वाले विधेयक को पुरःस्थापित करने की अनुमित दी जाए।

MR. DEPUTY-SPEAKER: The question is:

"That leave be granted to introduce a Bill further to amend the Indian Penal Code, 1860."

The motion was adopted.

डॉ. भोला सिंह: महोदय, मैं विधेयक पुर स्थापित करता हूं।

15.40 hrs.

(xi) Child Welfare Bill, 2013*

डॉ. भोला सिंह (नवादा): महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं कि बालकों के कल्याण और तत्संबंधी विषयों का उपबंध करने वाले विधेयक को पुरःस्थापित करने की अनुमित दी जाए।

MR. DEPUTY-SPEAKER: The question is:

"That leave be granted to introduce a Bill to provide for the welfare of children and for matters connected therewith."

The motion was adopted.

डॉ. भोला सिंह: महोदय, मैं विधेयक पुरःस्थापित ** करता हूं।

 $^{^{*}}$ Published in the Gazette of India, Extraordinary, Part-II, Section-2, dated 08.03.2013.

^{*} Introduced with the recommendation of the President.

15.40½ hrs.

(xii) Compulsory Military Training Bill, 2013*

डॉ. भोला सिंह (नवादा): महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं कि समर्थ शरीर वाले सभी व्यक्तियों के लिए सैन्य प्रशिक्षण अनिवार्य करने और तत्संबंधी विषयों का उपबंध करने वाले विधेयक को पुरःस्थापित करने की अनुमित दी जाए।

MR. DEPUTY-SPEAKER: The question is:

"That leave be granted to introduce a Bill to make military training compulsory for all able-bodied persons and for matters connected therewith."

The motion was adopted.

डॉ. भोला सिंह: महोदय, मैं विधेयक पुरःस्थापित करता हूं।

15.41 hrs.

(xiii) FODDER BANK BILL, 2013*

श्री हंसराज गं. अहीर (चन्द्रपुर): महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूँ कि अकाल, सूखा या बाढ़ जैसे प्राकृतिक आपदा से प्रभावित स्थानों में पशुओं के लिए चारा और पानी उपलब्ध करने के लिए चारा बैंक की स्थापना करने और उससे संसक्त या उससे आनुषंगिक विषयों का उपबंध करने वाले विधेयक को पुरःस्थापित करने की अनुमित दी जाए। MR. DEPUTY-SPEAKER: The question is:

"That leave be granted to introduce a Bill to provide for establishment of a fodder bank for making available fodder and water to animals in places affected by natural calamities like famine, drought or floods and for matters connected therewith or incidental thereto."

The motion was adopted.

श्री हंसराज गं. अहीर: महोदय, मैं विधेयक पुरःस्थापित** करता हूँ।

^{*} Published in the Gazette of India, Extraordinary, Part-II, Section-2, dated 08.03.2013.

^{**} Introduced with the recommendation of the President.

15.41 ½ hrs.

(xiv) Constitution (Amendment) Bill, 2013* (Insertion of new articles 16A and 16AA)

श्री हंसराज गं. अहीर (चन्द्रपुर): महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूँ कि भारत के संविधान का और संशोधन करने वाले विधेयक को पुरःस्थापित करने की अनुमित दी जाए।

MR. DEPUTY-SPEAKER: The question is:

"That leave be granted to introduce a Bill further to amend the Constitution of India."

The motion was adopted.

श्री हंसराज गं. अहीर: महोदय, मैं विधेयक पुरःस्थापित करता हूँ।

15.42 hrs.

(xv) Constitution (Amendment) Bill, 2013* (Amendment Of The Eighth Schedule)

श्री हंसराज गं. अहीर (चन्द्रपुर): महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूँ कि भारत के संविधान का और संशोधन करने वाले विधेक को पुरःस्थापति करने की अनुमति दी जाए।

MR. DEPUTY-SPEAKER: The question is:

"That leave be granted to introduce a Bill further to amend the Constitution of India."

The motion was adopted.

श्री हंसराज गं. अहीर: महोदय, मैं विधेयक पुरःस्थापित करता हूँ।

^{*} Published in the Gazette of India, Extraordinary, Part-II, Section-2, dated 08.03.2013.

15.42 ½ hrs.

(xvi) Constitution (Amendment) Bill, 2013* (Insertion Of New Article 72a)

श्री हंसराज गं. अहीर (चन्द्रपुर): महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूँ कि भारत के संविधान का और संशोधन करने वाले विधेयक को पुरःस्थापित करने की अनुमति दी जाए।

MR. DEPUTY-SPEAKER: The question is:

"That leave be granted to introduce a Bill further to amend the Constitution of India."

The motion was adopted.

श्री हंसराज गं. अहीर: महोदय, मैं विधेयक पुरःस्थापित करता हूँ।

15.43 hrs.

(xvii) Powerloom Sector (Welfare) Bill, 2013*

श्री सुरेश काशीनाथ तवारे (भिवन्डी): महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूँ कि पावरलूम सेक्टर के बुनकरो, कर्मकारों और लघु उद्यमियों के संरक्षण और कल्याण के उपायों और उससे संसक्त विषयों का उपबंध करने वाले विधेयक को पुरःस्थापित करने की अनुमित दी जाए।

MR. DEPUTY-SPEAKER: The question is:

"That leave be granted to introduce a Bill to provide for the protection and welfare of the weavers, workers and small entrepreneurs engaged in powerloom sector and for matters connected therewith."

The motion was adopted.

श्री सुरेश काशीनाथ तवारे: महोदय, मैं विधेयक पुरःस्थापित करता हूँ।

^{*} Published in the Gazette of India, Extraordinary, Part-II, Section-2, dated 08.03.2013.

15.43 ½ hrs.

(xviii) Bureau Of Accountability Bill, 2013*

SHRI JAI PRAKASH AGARWAL (NORTH EAST DELHI): I beg to move for leave to introduce a Bill to provide for establishment of a Bureau of Accountability to suggest measures for rooting out corruption; making administration efficient and for matters connected therewith.

MR. DEPUTY-SPEAKER: The question is:

"That leave be granted to introduce a Bill to provide for establishment of a Bureau of Accountability to suggest measures for rooting out corruption; making administration efficient and for matters connected therewith."

The motion was adopted.

SHRI JAI PRAKASH AGARWAL: I introduce the Bill.

15.44 hrs.

(xix)Cinematograph (Amendment) Bill, 2013 (Amendment of section 2, etc.)

SHRI JAI PRAKASH AGARWAL (NORTH EAST DELHI): I beg to move for leave to introduce a Bill further to amend the Cinematograph Act, 1952.

MR. DEPUTY-SPEAKER: The question is:

"That leave be granted to introduce a Bill further to amend the Cinematograph Act, 1952."

The motion was adopted.

SHRI JAI PRAKASH AGARWAL: I introduce the Bill.

^{*} Published in the Gazette of India, Extraordinary, Part-II, Section-2, dated 08.03.2013.

श्री जय प्रकाश अग्रवाल (उत्तर पूर्व दिल्ली): सर, आपसे मेरी एक दरख्वास्त है। मैंने यह दरख्वास्त आपके सामने पहले भी रखी थी। ...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय: पहले इसको तो पूरा कर लीजिए।

...(व्यवधान)

श्री जय प्रकाश अग्रवाल: सर, आप पहले मेरी बात सुन लीजिए। आप परिपाटी नहीं बदलना चाहते हैं तो मत बदलिए। मेरा कहना है कि जो ऑर्डनरी बिल है, उसमें आपने विषय लिखा है, लेकिन जो संविधान संशोधन बिल होता है, उसके लिए विषय लिखने में क्या तकलीफ है? आप मुझ से कहते हैं कि Those in favour may say 'Aye' किसी को पता है कि इसके अंदर मेरा क्या विषय है? सर, क्या दिक्कत है? उसमें एक लाइन यह जोड़ दीजिए कि आप किस विषय पर संविधान संशोधन करना चाहते हैं।

उपाध्यक्ष महोदय: आगे से सुधार किया जायेगा।

...(व्यवधान)

श्री जय प्रकाश अग्रवाल: ऑर्डिनरी बिल में है, लेकिन संविधान संशोधन बिल में नहीं लिखते हैं।...(व्यवधान)

प्रो. सौगत राय (दमदम): महोदय, आप ऑर्डर दे दीजिए।...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय: हमने बोल दिया है कि आगे से हम लो

...(व्यवधान)

श्री जय प्रकाश अग्रवाल : महोदय, परिपाटी बदलनी चाहिए।...(<u>व्यवधान</u>) कोई चीज गलत हो रही है तो उसको कहने में क्या दिक्कत है।...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय: हमने बोल दिया है कि आगे से हम लोग सुधार करेंगे।

...(व्यवधान)

15.45 hrs.

(xx) Constituion (Amendment) Bill, 2013* (Insertion of new article 30A)

SHRI JAI PRAKASH AGARWAL (NORTH EAST DELHI): Sir, I beg to move for leave to introduce a Bill further to amend the Constitution of India.

MR. DEPUTY-SPEAKER: The question:

"That leave be granted to introduce a Bill further to amend the Constitution of India."

The motion was adopted.

SHRI JAI PRAKASH AGARWAL : Sir, I introduce the Bill.

MR. DEPUTY-SPEAKER: Item No. 44, Shri Sudarshan Bhagat: Not present.

श्री शैलेन्द्र कुमार (कौशाम्बी): आप हम लोगों को तो बता दीजिए।...(व्यवधान)

15.46 hrs.

OBSERVATION BY THE CHAIR

Numbering of Private Members' Bills

श्री जय प्रकाश अग्रवाल (उत्तर पूर्व दिल्ली): मुझे खुद मालूम नहीं है।...(<u>व्यवधान</u>) मैंने कई बिल डाल रखे हैं, मुझे क्या पता कि यह कौन सा है?...(<u>व</u>्यवधान) यही तो सबसे बड़ी प्रॉब्लम है।...(<u>व</u>्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय: माननीय सदस्यगण, मुझे इस सभा को यह सूचित करना है कि कार्य सूची में विधेयकों का संशोधन करने के उद्देश्य का उल्लेख करने के संबंध में श्री जय प्रकाश अग्रवाल, संसद सदस्य के अनुरोध को साध्य नहीं पाया गया है, तथापि यह निर्णय किया गया है कि अब से गैर-सरकारी सदस्यों के विधेयकों की कार्य-सूची में सभी गैर-सरकारी सदस्यों के विधेयकों तथा विधेयक संख्या का उल्लेख किया जाये, तािक सदस्य ऐसे विधेयक का उद्देश्य जानने हेतु उनका संदर्भ ले सकें।

अनेक माननीय सदस्य : बहुत अच्छा।

^{*} Published in the Gazette of India, Extraordinary, Part-II, Section-2 dated 08.03.13.

...(व्यवधान)

15.47 hrs.

MAHATMA GANDHI NATIONAL RURAL EMPLOYMENT GUARANTEE (AMENDMENT) BILL,2010

(Amendment of section 2, etc.) – Contd.

MR. DEPUTY-SPEAKER: The House shall now, take up Item No. 45. Shri Arjun Meghwal to continue his speech.

श्री अर्जुन राम मेघवाल (बीकानेर): माननीय सदस्य श्री हंसराज गं0 अहीर के द्वारा गैर सरकारी बिल के माध्यम से नरेगा में जो अमेंडमेंट प्रस्तावित किया गया है, उसके संबंध में मैं बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। हंसराज जी का अमेंडमेंट यह है कि 100 दिन के रोज का बंधन क्यों? केवल 100 दिन क्यों और परिवार में एक ही आदमी को रोजगार क्यों दिया जाये? यह अमेंडमेंट करने के लिए यह बिल आया है और बहुत ही सही समय पर यह बिल आया है। मैं पिछली बार बोलते हुए यह कह रहा था कि यह लिमिटेड परपज के लिए अमेंडमेंट है, लेकिन मैं इसमें जोड़ना चाहता हूं कि नरेगा में 60-40 का एक प्रावधान हैं, माननीय मंत्री जी यहां बैठे हैं। कुछ काम ऐसे होते हैं जो 60-40 के रेश्यों से नहीं हो सकते हैं।

Sir, 60 per cent is the labour component and 40 per cent is the material component. आप भी जिस क्षेत्र से आते हैं, वहां कई जगह, पठारी क्षेत्रों में यह प्रॉब्लम आती होगी कि यह 60 परसेंट लेबर का कम्पोनेंट कैसे खड़ा करें? मेरा यह कहना है कि अपवाद स्वरूप इसमें भी अमेंडमेंट होना चाहिए। जैसे मैं बीकानेर राजस्थान से आता हूं, कई जगह ऐसे काम हैं, जहां लेबर 60 परसेंट से भी ज्यादा जाता है और कुछ ऐसे काम हैं, जहां लेबर 40 परसेंट ही रहता है। मैटीरियल कम्पोनेंट 60 परसेंट हो जाता है। मेरा यह कहना है कि यह जैसे एक पत्थर की लकीर की तरह है कि हमने तो कानून बना दिया, अगर 60-40 का रेश्यों मैन्टेन नहीं करेंगे तो हम आपकी किस्त नहीं देंगे। पहले हम सुनते थे कि यह रेश्यों स्टेट लेवल पर मैन्टेन होना चाहिए, बाद में पता चला कि यह रेश्यों डिस्ट्रिक्ट लेवल पर मैन्टेन होना चाहिए। अब जानकारी आ रही है कि हर ग्राम पंचायत लैवल पर यह रेशियों मेनटेन होना चाहिए। उपाध्यक्ष जी, यह नहीं हो सकता है। मैं आपको एक उदाहरण देता हूँ। हमने एक अमैन्डमेंट किया, हमने रेलवे के साथ एक इनीशियेशन लिया। राजस्थान से भी हमारे भाई जितेन्द्र सिंह जी बैठे हैं। हमारे बीकानेर डीआरएम रेलवे ने एक बड़ा अच्छा इनीशियेशन लिया कि जो आर.यू.बी. यानी रेलवे अंडर ब्रिज और एफ.यू.बी. ग्रामीण क्षेत्रों में होते हैं, ये नरेगा से क्यों नहीं बन सकते? हमने अपनी डिस्ट्रिक्ट मॉनीटरिंग कमेटी में इस इश्यू को उठाया। धीरे-धीरे ज़िला कलैक्टर को राज़ी किया। वे मान गए और उन्होंने प्रस्ताव कर दिये। हमारे यहाँ 21 नरेगा से *डवटेल* करके आर.यू.बी.

बने हैं जिससे किसानों को खेतों में आने-जाने का रास्ता मिल गया। पहले लंबा रास्ता था, ट्रैसपास कर के जा रहे थे, उससे सुविधा मिल गई और बहुत बिढ़या काम हुआ। जब रेल बजट पेश होने वाला था, तब वह मेरा ही लैटर था जिसके तहत रेल मंत्री पवन कुमार बंसल जी कह रहे थे कि हम आर.डी. से भी कुछ काम कराएँगे। काम वही हैं, लेकिन इसमें भी अड़चन हैं। वे कह रहे हैं कि नरेगा में अमैन्डमेंट नहीं हैं। मैं जयराम रमेश जी से भी मिला। मैंने कहा किस तरह का अमैन्डमेंट चाहिए? उन्होंने कहा कि हमारा 60:40 का रेशियो मेनटेन नहीं हो सकता। मैं यह कह रहा हूँ कि नरेगा में कई तरह के भ्रष्टाचार के आरोप लग रहे हैं, कई तरह की दुविधाएँ आ रही हैं। जो ये काम हैं, जैसे किसान ने अपनी फसल पैदा कर दी, अब वह अपनी मंडी में ले जाना चाहता है। आप कहते हैं कि उसको ट्रैसपास करो, या कहते हैं कि जहाँ फाटक है, वहाँ जाओ। वहाँ वह खड़ा रहता है। तो क्यों नहीं जहाँ फीज़ीबल है, वहाँ आप आर.यू.बी. बना देते? ग्रामीण क्षेत्र के किसानों के काम वह आएगा, रोज़गार में काम आएगा, लोगों के आने-जाने का रास्ता सुगम होगा और इसमें अगर 60:40 का रेशियो आड़े आता है तो इसमें संशोधन होना चाहिए। ऐसे कई काम हैं जिसमें 60:40 का रेशियो आड़े आता है तो इसमें संशोधन होना चाहिए। ऐसे कई काम हैं जिसमें 60:40 का रेशियो आड़े आता है।

उपाध्यक्ष महोदय, जे.सी.बी. से काम की शिकायतें बहुत आती हैं। कई जगह 60:40 का रेशियो मेनटेन नहीं होता है तो सरपंच लोग, प्रधान लोग मशीन से काम करा लेते हैं और उसके बाद उसमें पेमेन्ट करते समय दिक्कत आती है। मेरा अमैन्डमेंट है कि एक तो 60:40 के रेशियो पर अमैन्डमेंट होना चाहिए। दूसरा, नरेगा स्कीम में लिखा हुआ है कि हम जॉब कार्ड देंगे। जो आदमी जॉब कार्ड मांगेगा, उसको हम जॉब कार्ड देंगे। हंसराज जी कह रहे हैं कि सौ दिन का ही बंधन क्यों और परिवार में एक ही आदमी को रोज़गार क्यों? मेरा कहना है कि इस जॉब कार्ड में भी धाँधली होती है। वे कहते हैं कि क्या आपने फॉर्म सं. 6 भरा है? आपने जॉब कार्ड मांगा ही नहीं, हम काम क्यों देंगे? जॉब कार्ड भी लोग फर्जी बना लेते हैं। मेरा आपके माध्यम से यह सुझाव है कि नरेगा में यह अमैन्डमैंट भी होना चाहिए कि जैसे हर नागरिक को राशन कार्ड मिलता है और उस राशन कार्ड का उपयोग वह करे या नहीं करे, ऐसे ही नरेगा में जॉब कार्ड सबको मिल जाए, उसके बाद जिसको जँचेगा, वह काम करेगा, जिसको नहीं जँचेगा, वह काम नहीं करेगा। इस जॉब कार्ड को राशन कार्ड की तरह क्यों नहीं बना दिया जाए, नहीं तो ये जो रोज़गार सहायक लोग हैं, वे इसमें भी करप्शन करते हैं। जॉब कार्ड ये आसानी से नहीं बनाते हैं। तीसरा मेरा कहना था कि एरिया स्पैसिफिक आपको प्लान करने का भी अमैन्डमैंट करना पड़ेगा। आप प्रोटोटाइप नहीं कर सकते। मैं रेगिस्तान से आता हूँ। वहाँ आप कहेंगे कि 60:40 का रेशियो लागू होगा, लेकिन वहाँ कई जगह नहीं होगा। आप यह कहेंगे कि पातालतोड़ कुँआ अपने यहाँ बना लो। पता नहीं हमारे यहाँ वह सक्सेसफुल है या नहीं है। फिशरीज़ के लिए अलग होगा, रेगिस्तानी इलाके के लिए अलग होगा, नदियाँ जहाँ ज़्यादा हैं, वहाँ के लिए अलग होगा। एक प्रोटोटाइप योजना होनी चाहिए। हुक्मदेव जी यहाँ बैठे हैं। ये हमारे यहाँ कई गाँवों में गए हुए हैं। वहाँ बरसात में गाँवों में पानी भरा रहता है। पानी निकालने के लिए

नाली नहीं है। नरेगा में आप पानी निकासी का काम तो ले सकते हैं पाइपलाइन के थ्रू, तो ऐसा क्यों नहीं कर सकते आप कि एक पातालतोड़ कुँआ बना दो, नीचे भी पानी रीचार्ज होगा। लेकिन वे कहते हैं कि कानून आड़े आता है। खाली निकासी कर सकते हैं पाइपलाइन के थ्रू। पाइपलाइन लोग खोद देते हैं। आगे भी जहाँ जाएगा, वे कहेंगे कि हमारे गाँव की बदबू इस घर के पास आ गई, उस घर के पास आ गई। ग्रामीण क्षेत्रों में इनफ्रास्ट्रक्चर खड़ा करने के लिए नरेगा है। आप रोज़गार तो उपलब्ध कराएँगे ही, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में इनफ्रास्ट्रक्चर भी खड़ा होना चाहिए जिससे इस देश का पैसा काम आ सके, एक आधारभूत संरचना खड़ी हो सके।

उपाध्यक्ष महोदय, मेरा आपके माध्यम से यह कहना है कि हम जब भी फिल्ड में जाते हैं तो चार-पांच तरह की शिकायतें बार-बार हमें नरेगा में सुनने को मिलती हैं। पहली शिकायत, समय पर काम नहीं मिलता, जिसको हल करने के लिए हंसराज जी बिल लाए हैं। एक को जॉबकार्ड क्यों? मांगने वाले को क्यों? ऑन डिमान्ड क्यों? जितने भी ग्रामीण क्षेत्र में नागरिक हैं, सभी को जॉब कार्ड दे दीजिए, जैसे राशन कार्ड देते हो। जिसको इच्छा होगी, वह काम करेगा। जैसे राशन कार्ड में जिसको जरूरत होती है, वह लेता है, नहीं तो नहीं लेता है। इसलिए पहली शिकायत है कि समय पर काम नहीं मिलता है।

दूसरी शिकायत रहती है कि काम का पूरा पैसा नहीं मिलता है। इन्होंने यह टास्क बेस कर रखा है। एक ग्रुप होगा उसमें इतने लोग होंगे, उसके बाद काम का बंटवारा होगा। इसमें होता यह है कि मजबूत आदमी कहता है कि मेरे ग्रुप में काम करो। वह खुद तो काम करता नहीं है। तीन आदमी काम करते हैं, बाकी का वह रजिस्टर में नाम लिखवा देता है। इससे क्या होता है कि काम तो तीन आदमी करते हैं, लेकिन पैसा सात-आठ का उठ रहा है। यह जो टास्क बेस सिस्टम बनाया गया है, उसको कहीं न कहीं चैंज करने की जरूरत है, जिससे भ्रष्टाचार की शिकायत कम मिले।

एक शिकायत मिलती है कि समय पर पेमेंट नहीं मिलती है। यह बड़ी शिकायत है। हालांकि हमने यह कर रखा है कि पोस्ट ऑफिस या बैंक के माध्यम से पेमेंट लेंगे। लेकिन समय पर पेमेंट नहीं मिलता है, क्योंकि पोस्ट ऑफिस के पास इतने संसाधन नहीं है कि वह समय पर पेमेंट कर सके। आपने ग्रामीण क्षेत्र में जिसको भी काम देना था, आरआरबी को या जिसको भी काम देना था, आप ब्रांचिज ज्यादा खोलिए या रिप्रज़न्टेटिव इस तरह का बनाइए, जो कि नरेगा की पेमेंट करे। आपको इस तरह का कोई सिस्टम करना पड़ेगा, अन्यथा पोस्ट ऑफिस के भरोसे पेमेंट नहीं होगा। महीने-महीने भर तक पेमेंट नहीं होता है। इसलिए समय पर भृगतान नहीं होता है।

चौथी शिकायत आती है कि सोशल ऑडिट नहीं होने के कारण भ्रष्टाचार बढ़ा है। यह कुछ ऐसी चीजें हैं, जिनके अमेंडमेंट की जरूरत है। मैं मंत्री जी को बताना चाहता हूं कि जब यह नरेगा आयी थी तो जिसको हम लाइन डिपार्टमेंट बोलते हैं, पीडब्ल्यूडी, फॉरेस्ट डिपार्टमेंट, ईरीगेशन डिपामेंट, पहले बहुत काम करते थे, लेकिन आजकल लाइन डिपार्टमेंट काम ही नहीं करते हैं। फॉरेस्ट वाले काम नहीं करते हैं। ईरीगेशन वालों से मैंने मेरे एरिया में कहा कि

नहर की सफाई करनी है। लेकिन वह काम नहीं करते हैं। कहते हैं कि काम हो ही नहीं सकता है, क्योंकि आप मशीन को एलाऊ नहीं करते हैं। यदि आप ईरीगेशन फैसीलिटी गांवों में नहीं बढ़ाओगे तो नरेगा का क्या मतलब हुआ? मेरा यह कहना है कि समय की मांग है कि नरेगा में एमेंडमेंट होना चाहिए, क्योंकि समय की यह मांग है। हंसराज जी जो एमेंडमेंट लाए हैं, हम उसका स्वागत करते हैं। मंत्री जी बैठे हैं शायद सारी चीजें इन्होंने नोट की होंगी। यह होलीस्टिक एप्रोच के साथ पूरा अमेंडमेंट लेकर के आएंगे। आपने मुझे बोलने का समय दिया बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री शैलेन्द्र कुमार (कौशाम्बी): उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपका आभारी हूं कि आपने मुझे श्री हंसराज अहीर जी के मनरेगा में संशोधन पर बोलने का अवसर दिया।

महोदय, मैं बहुत ही विस्तार से अपने साथी अर्जुन मेघवाल जी की बातें सुन रहा था। उन्होंने जो बातें यहां रखीं, वह बहुत ही तार्किक और सामयिक हैं और बहुत ही आवश्यक भी हैं।

महोदय, यह योजना वर्ष 2005 में लागू हुई थी। मेरे ख्याल से इस योजना की शुरूआत आपने त्रिवेन्द्रम से की थी। सौभाग्य से पिछली लोक सभा में मैं ग्रामीण विकास मंत्रालय की कंसल्टेटिव कमेटी में सदस्य था। माननीय रघुवंश प्रसाद सिंह जी इसके मंत्री थे। इसलिए मुझे वहां जाने का अवसर प्राप्त हुआ। वहां जा कर हम लोगों ने देखा कि जिन बिंदुओं पर अभी अर्जुन मेघवाल विंता व्यक्त की थी, जिन गड़बड़ियों के बारे में कहा, वही गड़बड़ी जहां से उद्घाटन हुआ था, वहां हमने पायी। मैम्बर ऑफ पार्लियामेंट की टीम थी। सब इधर-उधर छिटक गए। कुछ प्रदर्शिनी में चले गए। हम लोगों ने देखा कि प्रधान एक पेड़ के नीचे बैठकर बना रहा था। जो मजदूर वहां काम कर रहे थे उनसे पूछा गया कि तुम्हारा कार्ड कहां है और कहां रहता है तो वह बोले कि वह प्रधान के पास जमा रहता है। जहां से इस योजना की शुरूआत हुई और जहां से उद्घाटन हुआ, अगर वहां बड़े पैमाने पर यह गड़बड़ी पायी गयी तो मेरे ख्याल से इस योजना का सात वर्षों में अब तक क्या हश्च हुआ है, यह आप सोच सकते हैं।

दूसरी बात पहले इस योजना को राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार योजना किया गया। फिर महात्मा गांधी जी का नाम जोड़ दिया गया।

16.00 hrs.

में कहना चाहता हूं कि वैसे भी महात्मा गांधी जी बेचारे हो गए हैं। तस्वीरें लगी हैं लेकिन उन की बातों पर अमल नहीं होता। मेरे ख्याल से उन का नाम जोड़ने के बाद आप ने इस योजना पर ठीक से अमल नहीं किया। अब आप ने यह कहा कि पूरी दुनिया में रोज़गार का सबसे बड़ा अवसर महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार योजना में है। मेरे ख्याल से वह फलीभूत नहीं हुई है। यह योजना तभी फलीभूत होगी जब आप आम आदमी को रोज़गार देते हुए उस को आमदनी से जोड़ेंगे कि अगर वह काम कर रहा है तो उस की आमदनी क्या है। महंगाई दिन-पर-दिन बढ़ रही है। आज जो खेतिहर मजदूर है, कृषक मजदूर है वह महंगाई के बोझ से बिल्कुल दबा जा रहा है। आप ने कहा कि पूरे देश में हमने आठ करोड़ लोगों को रोज़गार दिया जिस में हमने 47 प्रतिशत महिलाओं को रोज़गार दिया। अब आज हम अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस भी मना रहे हैं। अगर देखा जाए तो मेरे ख्याल से आज़ादी के साठ-पैंसठ वर्षों के बाद भी हम ने अभी तक उस लक्ष्य को प्राप्त नहीं किया जो हमारे पूर्वजों ने, पूर्व नेताओं ने जो सपना संजोया था। वह सपना पूरे तरीके से फलीभूत नहीं हुआ।

हंसराज अहीर जी ने जो अमेन्डमेंट दिया है कि मज़दूरी साठ रुपये, कुछ बढ़ाया है आपने। इन का अमेंडमेंट है कि 150 रुपये किया जाए। फिर राज्य सरकार उस में जो जोड़ कर दे सके, वह दे। यह व्यवस्था हो और इसको आप

बैलेंस कीजिए। जिस हिसाब से, जिस अनुपात में महंगाई बढ़ रही है उस हिसाब से मज़दूरी के दर को भी आप को बढ़ाना चाहिए तभी यह योजना सफल हो पाएगी। इसमें जो आप ने अनुमान लगाया है कि दस हजार करोड़ रुपये प्रति वर्ष खर्च होगा तो इस को अमली ज़ामा पहनाने की जरूरत है।

माननीय मंत्री जी, आप तो बुंदेलखण्ड क्षेत्र से आते हैं जहां पर बड़ी गरीबी, बड़ी गुरबत है, जहां पानी नहीं है, खेती नहीं है, किसानी नहीं है तो ऐसे हालात में आप को इस पर गंभीरता से सोचना पड़ेगा। जहां तक इस में गड़बड़ी की बात है तो इसी सदन में मैंने देखा कि चाहे प्रश्न काल हो या डिस्कशन में हमेशा देखा गया है कि उत्तर प्रदेश, बिहार, उड़ीसा, राजस्थान, मध्य प्रदेश में गड़बड़ियां पायी गयी हैं। मैं चाहूंगा कि जो गरीब प्रदेश हैं, जहां पर वाकई स्थिति बहुत खराब है, ऐसे राज्यों में स्पेशल टीम भेज कर इस का परीक्षण कराएं कि कहां पर क्या गड़बड़ी हो रही है। इस गड़बड़ी को भी दूर करने के लिए आप को प्रयास करना चाहिए।

आप इस में एक योजना ला सकते हैं। आप ने अभी इसे कृषि से जोड़ा, आप ने इसे रेलवे से भी जोड़ा। मैं तो चाहता हूं कि मज़दूरी से संबंधित जितने भी विभाग हैं, उन विभागों को इस योजना से बिल्कुल जोड़ दीजिए। दूसरी बात यह है कि उत्तर प्रदेश में मैंने बहुत पहले देखा था, आप को भी याद होगा कि जब कभी सूखा पड़ा या जब कभी इस प्रकार के अकाल की स्थिति आयी है तो हम लोगों ने काम के बदले अनाज योजना लागू किया था। उस योजना को भी आप गंभीरता से देखें। आज समय-समय पर इसी हाउस में हमेशा इस बात की चर्चा हुई कि हम सौ दिनों के रोज़गार की गारंटी देंगे। अब वह परिवार 265 दिन क्या करेगा? एक परिवार से आप एक को 100 दिनों का रोज़गार देंगे तो वह 265 दिन क्या करेगा, यह भी सोचने की जरूरत है। मैं तो चाहूंगा कि अगर रोज़गार गारंटी देना है तो आप उसे साल भर की गारंटी दीजिए। उसे आगे बढ़ाने की आवश्यकता है।

दूसरी बात, बहुत शिकायतें आयी हैं। चाहे वह तालाब की खुदाई हो या नहरों की खुदाई हो, अब तो नहरों की खुदाई भी आप ने दे दिया, तमाम पटिरयों को पीडब्ल्यूडी को और सड़क विभाग जो आर.ई.एस. देखता है उन को भी आप ने दे दिया कि आप उस से काम कराएंगे। लेकिन बहुत जगहों पर देखा गया है कि लोग जेसीबी मशीन लगा कर काम करते हैं। फर्ज़ी जॉब कार्ड पर पेमेन्ट उठा लेते हैं। ये शिकायतें बराबर आयी हैं। 60-40 का जो रेशियो है, यह तो मेरे ख्याल से आप ने ऐसा बना दिया है, जैसे अर्जुन जी ने कहा कि हम लोगों ने रेलवे की योजना पारित की और किसी तरीके से प्रस्ताव बनाकर उसे कार्य रूप में परिणत करने की योजना बनायी लेकिन वह फलीभूत नहीं हो सकी। दूसरी बात यह है कि इतने क्यूबिक मीटर मिट्टी की खुदाई करनी है तब जा कर वह पूरा हो पाएगा, मेरे ख्याल से वह भी तार्किक नहीं है। उस में भी बहुत सारी भ्रांतियां हैं। मैं चाहूंगा कि जब आप जवाब दें तो इसे बड़े विस्तार से बताएं।

जिस प्रकार से आप ने ग्रामीण क्षेत्रों में रोज़गार की गारंटी दी है उसी प्रकार से इस योजना को शहरी क्षेत्रों में भी दें। आज भी शहरों में बहुत-से ऐसे एरियाज हैं। इसको शहर की योजना से भी जोड़ने की आवश्यकता है, आप

कहेंगे कि हम तो ग्रामीण विकास मंत्रालय देखते हैं, शहर को नहीं देखते। ये मजदूर पलायन करता है, जब उसको रोजगार नहीं मिलता तो वह शहरों की तरफ आता है और मजदूरी कहीं उसको शहर में इससे ज्यादा मिलती है। इस योजना को, चाहे शहरी विकास मंत्रालय से बैठ कर आपको बात करनी पड़े, आप ग्रामीण शहरी रोजगार गारंटी योजना इस प्रकार से बनाएं कि दोनों विभागों में तालमेल हो और लोगों को रोजगार मिल सके।

आज अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस है। आपने कहा कि पूरे देश में हमने मनरेगा से रोजगार देने की व्यवस्था की है। लेकिन एक-तिहाई नौकरी महिलाओं को देने के लिए आप सुनिश्चित कीजिए। इस योजना में एक-तिहाई महिलाओं को हम रोजगार दे। बहुत सी महिलाएं ऐसी हैं, जो बाहर नहीं जा सकतीं। विधवा हैं, जिनके घर पर कोई देखने वाला नहीं है। यह महत्वाकांक्षी योजना है, इसको अमलीजामा पहनाने के लिए जहां भी गड़बड़ी है, उसमें सुधार करने की आवश्यकता है। न्यूनतम वेतन गारंटी भी हो, खास कर उसको महंगाई से जोड़ कर, आवश्यक वस्तुओं के खाद्यान्न में कितनी वृद्धि हो रही है, इसे देखा जाए। महंगाई बढ़ रही है, समय-समय पर इस सदन में आवाज उठी है, तो उस हिसाब से आपको मजदूरी को भी आगे घटाने-बढ़ानें की आवश्यकता है।

आज मैं ज्यादा कुछ न कह कर, क्योंकि मेरे ख्याल से मूलभूत सभी बातों पर यहां पर बड़े विस्तार से बातें कही गई हैं। इसको कारगर और अच्छे तरीके से लागू करने की आवश्यकता है। मैं चाहूंगा कि इसे आप गहराई से देखें। एक महत्वपूर्ण बात यह है कि इसमें शिकायतें आती हैं। सतर्कता निगरानी समिति की बैठक में, क्षेत्र पंचायत समिति की बैठकों में हम लोग जाते हैं, जो ब्लॉक पर होती हैं। जिला पंचायतों की बैठकों में ब्लॉक प्रमुख खड़े होकर यह कहता है, गांव पंचायत को डायरेक्ट पैसा आता है, उसके खाते में आता है। लेकिन जो क्षेत्र पंचायत का, ब्लॉक का पैसा है, वह ब्लॉक्स में नहीं जा रहा है। जिला पंचायतों का जो पैसा मनरेगा से जाना चाहिए, वह नहीं जा पा रहा है। प्रस्ताव बना कर ब्लॉक्स के भेजा जाता है, लेकिन उस पर पैसा नहीं मिल पा रहा है। यह बड़े पैमाने पर शिकायत है। मैं चाहूंगा कि तमाम राज्यों के नाम जो मैंने लिए हैं, उनकी आप निगरानी एवं जांच करा कर देखें कि बराबर से जो धनराशि आबंटित की गई है, क्षेत्र पंचायत, ग्राम पंचायत, जिला पंचायत को वह धनराशि जा रही है या नहीं? जो प्रस्ताव बना कर भेजे जा रहे हैं, उसके अनुरूप धन निर्गत हो रहा है या नहीं? ये व्यवस्था आप सुनिश्चित करें तो मेरे ख्याल से यह रोजगार गारंटी योजना और सफल होगी।

उपाध्यक्ष महोदय, इन्हीं बातों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं। आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, उसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं। हंसराज अहीर जी को मैं पुन: धन्यवाद देना चाहूंगा, जो अमेंडमेंट बिल यहां पर लाए हैं।

प्रो. सौगत राय (दमदम): सभापित महोदय, महात्मा गांधी नेशनल रूरल एम्प्लॉयमेंट गारंटी अमेंडमेंट बिल, 2010 जो हंसराज अहीर जी लाए हैं, मैं उसका समर्थन करता हूं और उनको बधाई देता हूं कि इस बिल के उद्देश्य बढ़ाने के लिए उन्होंने कोशिश की। मुझे यह भी अच्छा लगा कि यह बिल थोड़ा बाइपार्टिज़न है, क्योंकि इस बिल को यूपीए की सरकार, कांग्रेस के लोग लाए थे। बीजेपी के लोग भी चाहते हैं कि इस बिल को रखा जाए और इसका प्रसार किया जाए। मान लिया कि यह बिल का उद्देश्य अच्छा है। यह बाइपार्टिज़नशिप मुल्क के लिए अच्छा है, अच्छा काम सब लोग मिल कर करें। कई माननीय सदस्यों के सुझाव आए कि इस काम को आगे बढ़ाया जाए। महाराष्ट्र में शायद सन् 1972 से इंप्लायमेंट गारंटी स्कीम चालू थी, इसके साथ ही और भी कई प्रांतों में इंप्लायमेंट गारंटी स्कीम चालू की गयी, क्योंकि जब किसान के पास काम नहीं रहता है तो उसे मदद करने के लिए हर प्रांत में यह कोशिश चलती रही है। समस्या थी राशि की, साधन की, तो केंद्रीय सरकार के इस कानून को लाने के बाद राशि की समस्या हल हो गयी। प्रांतों में जो अलग-अलग इंप्लायमेंट गारंटी स्कीम थीं, ये एक साथ हो गयीं। इस कानून को आठ साल हुए हैं। कानून कैसे चल रहा है, इसके बारे में लोगों में एक धारणा बनी है। उसी की बेसिस पर हंसराज गंगाराम अहीर जी यह संशोधन लाए हैं। उनका कहना है कि broaden the base of the Bill. अभी जॉब कार्ड में एक परिवार के सभी एडल्ट सदस्यों के नाम रहते हैं। उनमें से कोई भी एक आदमी काम कर सकता है। उनका कहना है कि यह रिस्ट्रिक्शन क्यों रहे? एक परिवार में अगर पांच एडल्ट सदस्य हैं, उनमें से दो काम करें, तीन काम करें, तो उनको काम देना चाहिए।

दूसरी बात, वह चाहते हैं कि अभी सौ दिन के काम की बात कानून में है। वह कह रहे हैं कि सौ दिन क्यों? जितने वर्किंग डेज साल में होते हैं, साल में 52 रविवार होते हैं ...(व्यवधान) यह आहिस्ता-आहिस्ता होगा। 365 में से 52 दिन हटाइए, 313 दिन हो गए। वह कहते हैं कि ऑल वर्किंग डेज काम मिलना चाहिए। वह कहते हैं कि अगर कोई भी आदमी वर्किंग डे में काम करना चाहता है, तो उसे काम मिलना चाहिए। काम न मिले तो बिल में जो प्रावधान है कि उनको बेरोजगारी भत्ता या अनइंप्लायमेंट एलाउंस मिलना चाहिए।

में नीतिगत रूप में इसका समर्थन करता हूं, लेकिन इस पूरी स्कीम के बारे में दो-चार सवाल हैं। यह स्कीम पॉलिटिकली एक गेम चेंजर थी। इसने कांग्रेस को, यूपीए वन को बहुत लाभ पहुंचाया, क्योंकि एक स्कीम जो ग्रामीण क्षेत्रों में सब लोगों की जिंदगी पर एक असर रखती है, इससे कुछ सुधार भी हुआ है। यह एक अच्छी स्कीम है। मैं समझता हूं कि यह गरीबी विरोधी स्कीम है, इसका समर्थन होना चाहिए। इस स्कीम के चालू होने के आठ साल बाद हम क्या देखते हैं? मैं माननीय सदस्य से बात कर रहा था, मेघवाल जी बीकानेर के हैं, एक्सपीरियंस्ड आदमी हैं, अहीर जी महाराष्ट्र के हैं, चंद्रपुर जहां शेर निकलता है, एक्सपीरियंस्ड हैं, तो उनको क्या एक्सपीरियंस है? मैं भी अपने प्रांत पश्चिम बंगाल में देखता हूं कि सौ दिन का काम आप कह रहे हैं, कोई प्रांत ऐसा नहीं है जहां एवरेज सौ

दिन का काम हुआ है। हमारे बंगाल में पहले सरकार थी, उस समय एवरेज 12 दिन का काम हुआ करता था। हमारी सरकार आने के बाद अभी 33 दिन का काम हो रहा है। हम आशा करते हैं कि इस साल के अंत तक पचास दिन काम हो। हमें यह सोचना है कि सरकार देने के लिए तैयार है, तब भी एवरेज सौ दिन का काम क्यों नहीं होता है? इस पर मंत्री जी की भावना या मिनिस्ट्री ऑफ रूरल डेवलपमेंट की भावना पर यहां प्रकाश डालना चाहिए।

दूसरी बात, इस स्कीम में क्या हो रहा है? एक ग्रुप बनता है। ग्रुप को कहते हैं कि तुमको यह टास्क देते हैं कि इतने क्यूबिक फीट मिट्टी खोदना है, उठाना है, तो देखा जाता है कि कोई ग्रुप उसे पूरा नहीं कर पाता है। सौ क्यूबिक फीट अगर स्टैंडर्ड है, तो लोग चालीस-पचास क्यूबिक फीट पूरा करते हैं, तो उसका पैसा भी वैसे ही घट जाता है। और क्या होता है कि उसमें जो दादा किरम का आदमी है वह जा कर कहता है कि अरे, हम काम नहीं करेंगे, हम ग्रुप में है, हमको भी भाग दे दो। कुछ लोग बिना काम किए हुए भी पैसा लेते हैं। ऑफिसर लोग ग्रामीण स्तर पर बहुत खुश होते हैं। एक गरीब आदमी को पैसा मिल गया, बिना काम किए हुए ही वह खुश हो गया, बाकी ऑफिसर कागज पर कर दिया। इस पर जो मॉनिटरिंग होती है, ये मॉनिटरिंग अभी तक अच्छा नहीं है। इसमें कौन-कौन काम हो सकता है - रास्ता बनाना, तालाब खोदना, पेड़ लगाना, ये कुछ काम लिखे हुए हैं। मैं कहता हूं कि ये लिस्ट न बना कर, it local people, या पंचायत पर छोड़ दीजिए कि क्या काम वे कराते हैं। कुछ साल पहले मैं ग्रामीण क्षेत्र से एमएलए था। वहां पर एक नदी पूरा वाटर हाईसिंथ से भरा हुआ था। हम चाहते थे कि मनरेगा से वह साफ कराया जाए लेकिन डीएम साहब ने बताया कि यह हमारे लिस्ट में वाटर हाईसिंथ घटाना नहीं है। It may be a typical problem of one constituency. आप इस पर क्यों पाबंदी रखें हैं, मैं चाहता हूं कि काम का जो लिस्ट है यह और भी जनरलाइज फार्म में रखा जाए, स्पेसिफिक लिस्ट नहीं हो। पहले जो टारगेट था, हमारे पंश्चिम बंगाल में सरकार आने के बाद हम ने टारगेट कम कर दिया। क्योंकि शायद 96 क्यूबिक फीट था, हम उसको घटा कर 69 या 70 क्यूबिक फीट किया। क्योंकि राजस्थान के लोग हट्टा-कट्ठा होते हैं। बंगाल के लोग साइज में छोटे होते हैं। हमारे मैन्युअल काम में ...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय: आप तो पहलवान हैं।

प्रो. सीगत राय: सर, मैं तो अनटिपीकल हूं। ...(व्यवधान) बंगाल के जो किसान हैं, हम लोग थोड़े अंडर नैरिश्ड है, हाइट में भी कम हैं। ये जो उत्तर और उत्तर पश्चिम भारत के लोग हैं इनका तो एरियन बल्ड ज्यादा हैं। हम लोग तो Dravidian and proto-austroloid के मिक्स हैं। हिन्दुस्तान में लोगों की बहुत सारी वेरायटी है। सभी जगह आप एक तरह का काम नहीं दे सकते हैं। जैसे, आप यहां खूंटी से हैं, हमारे यहां जो आदिवासी भाई हैं वह हट्टा-कट्टा हैं। वे स्पोर्ट्स में आगे हैं। उसके साथ हम लोग तो बराबरी नहीं कर सकेंगे। इसलिए हॉकी में वहां लड़का-लड़की सब

अच्छा करते हैं। इसमें थोड़ा फलैक्सिबिलिटी होनी चाहिए। इसके बारे में स्कीम में थोड़ा फलेक्सिबिलिटा लानी चाहिए। यह मेरा ख्याल है।

सर, एक और चीज है। मनरेगा में एक सवाल होता है। मैं जिस क्षेत्र से चुन कर आया हूं, खासकर हमारा शहरी औद्योगिक क्षेत्र है। हमारे यहां काफी जूट मिल्स हैं। छोटा-छोटे कुछ गांव हैं। ये कम हैं। इंडस्ट्रियल एरिया ज्यादा है। चटकल के मजदूर बिहार और उत्तर प्रदेश के गांव से आते हैं। बंगाली लेबर, चटकल का जो लेबोरियस काम है, नहीं कर पाते हैं। ट्रेडिशनली चटकल के 80 प्रतिशत मजदूर बिहार और यूपी के होते हैं। चटकल के मालिक-मैनेजर ने मुलाकात होने पर बोला कि मजदूर नहीं मिल रहा है। चटकल में वेज बढ़ाना चाहिए। क्योंकि मनरेगा के कारण कोई यहां कोई आना नहीं चाहते हैं। यह देखना है कि मनरेगा लोगों को लेजी न कर दे। वे सोचते हैं कि अपने गांव में रह कर इतना मिल जाता है तो क्यों वह कोलकाता जा कर जूट मिल में हार्ड वर्क करेगा। दूसरी तरह से यह भी एक चिन्ता होती है। हमारी जो सोशियो इकोनॉमिक सिचुएशन है, मेरे ख्याल से मनरेगा में फ्रेश असैसमैंट करने की जरूरत है। यह देखना है कि हमारे गांव में इन्फ्रास्ट्रक्चर का बहुत काम करना बाकी है। पहले फूड फार वर्क था, उसके बाद सम्पूर्ण ग्राम समृद्धि योजना थी, फिर मनरेगा आया। इससे परमानेंट असैट बियर नहीं होता, बैलेंस होना चाहिए। अभी मेघवाल जी बता रहे थे कि 60 प्रतिशत वेज कॉस्ट, 40 प्रतिशत मेटीरियल कॉस्ट है। क्या हमने कोई असैसमैंट किया है कि मनरेगा से परमानेंट असैट कितना बना है या लोगों को ऐसे ही पैसे दिए गए। हमार क्रिय यह नहीं है कि लोगों को आलसी बनाएं, हमारा लक्ष्य है कि लोगों को काम दिया जाए, पैसा दिया जाए और गींव में कुछ परमानेंट असैट बनाए जाएं। इन तीनों के लिए मौनीटरिंग की जरूरत है।

श्री जयराम रमेश से पहले जो मंत्री थे, श्री सी.पी. जोशी, उन्होंने हर जिले में डिस्ट्रिक्ट विजिलैंस एंड मौनीटरिंग कमेटी बनाई। मैं जिस जिले से आता हूं, उसका नाम उत्तर 24 परगना है। वह बहुत बड़ा जिला है। वहां पांच एमपीज सीट हैं। मैं उस विजिलैंस एंड मौनीटरिंग कमेटी का चेयरमैन हूं। लेकिन हमें जगह-जगह जाकर काम देखने का मौका नहीं मिलता। डीएम रिपोर्ट देता है और उसके बेसिस पर हम विचार करते हैं। हम मीटिंग बुलाते हैं तो एमएलए या पंचायत समिति के सभापति आते हैं। हम मीटिंग इसिलए बुलाते हैं क्योंकि विजिलैंस एंड मौनीटरिंग कमेटी की मीटिंग नहीं होने से रुपये रिलीज नहीं किए जाते। डीएम बोलते हैं कि रुपये ब्लॉक हो रखे हैं, इसिलए आप मीटिंग कर दीजिए। मैं जाता हैं। कुछ एमएलए आते हैं, कुछ नहीं आते। पंचायत समिति के सभापति आते हैं क्योंकि उनका डायरैक्ट इंटरस्ट है कि वहां काम हो। लोगों को काम मिले, वे इसके पीछे पड़े हुए हैं। हमें देखना है कि लोगों के काम करने के दिनों को कैसे बढ़ाया जाए। जैसे मैंने कहा, पहले हमारे बंगाल में 12 दिन का कार्य था, अब 33 दिन हुए हैं, हम 50 दिन करेंगे, लेकिन 70-80 दिन क्यों नहीं हो रहे हैं? अहीर जी का कहना है कि लोगों को और काम देना है और सारा साल देना है, यह अच्छा है। हमें असैस करना है कि अभी जो प्रोजैक्ट है, उसमें हम पूरे पैसे का इस्तेमाल नहीं कर पा रहे हैं। पचास दिन के काम का मतलब आधा पैसा इस्तेमाल हुआ। पैसा रहते हुए भी पूरा काम नहीं हो रहा

है। बिल के साथ जो फाइनैंशियल मेमोरंडम होता है, उन्होंने असैसमैंट किया है कि इससे 20 हजार करोड़ रुपये एक्सट्रा लगेंगे। मैं नहीं जानता कि उन्होंने किस बेसिस पर यह असैसमैंट किया, शायद अंदाज होगा। चिदम्बरम साहब ने अगले साल के बजट में मनरेगा के लिए एक पैसा नहीं बढ़ाया। 33 हजार करोड़ रुपये इस साल एलोकेट किए गए। मैं मंत्री जी से जानना चाहूंगा, किताब देखने से मिल जाएगा, कितना खर्च हुआ।...(व्यवधान) चिदम्बरम साहब पहले बोलते थे outlay is not important outcome is important, मतलब आप आंकड़ों में जितना दिखाते हैं कि इतना एलॉट किया, अगर खर्च नहीं हो तो क्या फायदा है। यह थियोरिटिकल रह जाता है। क्यों पूरा पैसा खर्च नहीं हो रहा? एक तरफ आप कहते हैं कि हम ग्रामीण गरीबी को दूर करने के लिए महात्मा गांधी के नाम से यह स्कीम लाये हैं। यह गेम चेंजर है। ये सब बातें करके, जैसे मेघवाल जी बता रहे थे कि इस स्कीम के साढ़े सात हजार करोड़ रुपये खर्च नहीं हुए। शायद इसिलए इस बार इसकी राशि नहीं बढ़ायी गयी, लेकिन यह असेसमैंट हमें करना है। वैसे पैसे की कमी हर स्कीम के लिए रहती है। आप कह रहे हैं कि हम फूड सब्सिडी सब लोगों को देंगे। उसके लिए केवल दस हजार करोड़ रुपये हैं। उसके बारे में हम बजट मे चर्चा करेंगे। दस हजार करोड़ रुपये एक्स्ट्रा देकर आप कहते हैं कि फूड सब्सिडी हो जायेगी। मैं इस प्रस्ताव का समर्थन इसिलए करता हूं, क्योंकि in principle, it should be the democratic right of any person who wants to work on any day of the year to get work from the Government. यह डेमोक्रेटिक राइट है। वह करे या न करे, दूसरी बात है।

मेघवाल जी बीकानेर से आते हैं। वह एरिया पूरा डेजर्ट है। वहां काम करना भी मुश्किल है, क्योंकि वहां बहुत जगह केवल सैंड ही सैंड है। पेड़ लगाना, कुंए खोदना, तालाब खोदना आदि छोड़कर और कोई काम ही नहीं है। वहां लोग बहुत मुश्किल मे रहते हैं। हिन्दुस्तान का जो ह्यूज ह्यूमन रिसोर्स है, उसे कैसे इस्तेमाल करके गांव का चेहरा बदल सकते हैं, यह हमारा लक्ष्य होना चाहिए। केवल एक स्कीम ले आयें और वोट के लिए बोलें कि हमने इतना ...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय: अब आप अपनी बात समाप्त कीजिए।

...(व्यवधान)

प्रो. सौगत राय: मैं समाप्त ही कह रहा हूं। सर, क्या आपके यहां मनरेगा अच्छा काम कर रहा है? ...(व्यवधान) वहां तो सारे ट्राइबल्स माओवादी बन गये हैं। जयराम जी झारखंड गये थे। वहां बहुत सारे लोग माओवादी हो गये। ...(व्यवधान) मैं प्रिंसिपली इस बिल का समर्थन करता हूं। मैं चाहता हूं कि यह डेमोक्रेटिक हो, लेकिन यह भी चाहता हूं कि आठ साल के बाद नरेगा का प्रॉपर असेसमैंट हो कि इतना असेट क्रिएट हुआ है, खासकर कितने दिन लोगों ने काम किया है? हम क्यों पूरा खर्चा नहीं कर पाते हैं और कैसे इस स्कीम को अच्छा किया जाये? यह

पोलिटिकल बातें, गेम चेंजर है, वोट लाता है। गांव के गरीबों के पास पहुंचने का रास्ता है। यह सब वोट का स्लोगन है। असल में मुल्क की कैसे भलाई होती है, यह देखना चाहिए।

श्री हंसराज गं. अहीर बहुत पिछड़े हुए इलाके चन्द्रपुर से आते हैं। उधर गढ़िचरौली में भी माओवादी लोग पहुंच गये हैं। गांव में बहुत गरीबी है। वे समझते हैं कि गरीबी की समस्या क्या है? महाराष्ट्र में दूसरी जगह अच्छा है, लेकिन विदर्भ का इलाका बहुत ही पिछड़ा हुआ है। अगर हिन्दुस्तान को बदलना चाहते हैं, तो कैसे हम इस कानून की मदद से नरेगा का यूनीवर्सलाइजेशन कर सकते हैं, यह हमें सोचना है।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपना वक्तव्य समाप्त करता हूं।

श्री ह्क्मदेव नारायण यादव (मध्बनी): महोदय, किसानों के लिए संसद की जो स्थायी समिति है, उसने देश भर में दौरा किया। उस कमेटी के सभापति श्री बसुदेव आचार्य जी हैं। जब हम हिन्दुस्तान के आधे से ज्यादा राज्यों में दौरा किया तो सरकारी अधिकारियों के साथ साथ किसान के संगठनों को भी हम साक्ष्य के तौर पर उसमें बुलाते हैं जिसमें एक विषय रहता है कि मनरेगा से किसान को लाभ हुआ या नुकसान। हमने हिन्दुस्तान के दस-बारह प्रांतों, जो देश के मुख्य रूप से बड़े-बड़े राज्य हैं, उनमें दौरा किया। सब जगह किसानों की एक ही राय थी कि मनरेगा के कारण किसान की हालत खराब हुई है और कृषि पर इसका सबसे बुरा प्रभाव पड़ा है, क्योंकि किसान को मजदूर नहीं मिलते। मैं किसान होने के नाते, किसानों की भावनाओं से अपने को जोड़ते हुए, कह सकता हूं कि मनरेगा में चाहे जितने भी सुधार किए जाएं, संशोधन किए जाएं, लेकिन मनरेगा का लाभ किसानों को तभी मिलेगा, जब इसको बंद करके इसका रूपांतरण ग्रामीण विकास के लिए किया जाए। इसकी राशि गांव के विकास के लिए खर्च की जाए। लेकिन, इसका रूपांतरण होना चाहिए। शिखर से लेकर सतह तक भ्रष्टाचार का एक तंत्र खड़ा किया जाए, मुख्य रूप से इसके लिए मनरेगा बनाया गया था। जो समय आने पर भ्रष्टाचारियों का अंतर्प्रवाह के द्वारा मिलन हो जाए और भ्रष्टाचारियों का राज देश में सतह से शिखर तक बना रहे। गांव के किसान मरे या गांव उजड़े, इससे कोई मतलब नहीं। मैं भी गांव का हूँ। हम और आप पहली बार सन् 1967 में एम.एल.ए. बनकर आए थे। मैं सन् 1959-60 में ग्राम पंचायत का प्रधान बना तथा दो कार्यकाल तक प्रधान रहा, ब्लॉक का प्रधान रहा और जिला परिषद् का भी अध्यक्ष रहा। मैंने देखा था कि सन् 1962 तथा 1967 में अकाल पड़ा, उस समय श्री कर्पूरी ठाकुर उपमुख्यमंत्री थे। उस अकाल के समय में एक योजना बनी थी, जिसका नाम था- कठिन श्रम योजना (हार्ड मैन्अल लेबर स्कीम)। कठिन श्रम योजना को बाद में काम के बदले अनाज योजना से जोड़ दिया गया। उन्हें अनाज के रूप में पाँच किलो गेहूँ दिया जाता था, तो हम लोगों ने श्री कर्पूरी ठाकुर जी से आग्रह किया था कि जो पाँच किलो गेहूँ दिया जाता है, उसमें से ये एक किलो गेहूँ को दाल और सब्जी खरीदने के लिए बेच देते हैं। इसके बाद उन्होंने पाँच किलो गेहूँ के साथ दो रुपए नकद भी मज़दूरों को देने के लिए योजना में जोड़ा था। उसके साथ-साथ काम की ड्यूटी लगी हुई थी कि दस फीट बाई दस फीट, गहरा एक फीट, इतनी मिट्टी की खुदाई करेंगे, तो इसके बदले में उन्हें पाँच किलो गेहूँ और दो रुपए नकद दिए जाएंगे। लोग मेहनत-मज़दूरी करके, उतना काम करके दिखाते थे। उस समय मैंने अपने गांव में बाढ़ सुरक्षा तटबंध को बनाया था। वह बांध सन् 1967 का बनाया हुआ है। आज भी उसकी मज़बूती बनी है। लोग इसकी जांच करके देखें, तो मालूम होगा कि वे बांध इतने मज़बूत बने हुए हैं कि बाढ़ में भी ध्वस्त नहीं हुए। इसलिए मैं कहता हूं कि मनरेगा का रूपांतरण किया जाए। आज यह जिस रूप में है, उस रूप में इसका नाम है- किसान मरेगा, गांव उजड़ेगा, सामाजिक भ्रष्टाचार बढ़ेगा। ये तीन काम मनरेगा के द्वारा बहुत ज्यादा हुए हैं और किसानों का नाश हुआ है। इसलिए मुझे उन गरीबों के प्रति हमदर्दी है। मैं गरीब किसानों के लिए लड़ते रहा हूं, पसीना बहाते रहा हूं। जिस समय मैं समाजवादी

आंदोलन में डॉ. लोहिया के नेतृत्व में जेल में बंद होता था, जेठ की दुपहरिया में जब दीवार और छत गर्मी से तपने लगने थे, चमड़ी झुलसने लगती थी, तो हम लोग आनन्द लेने के लिए उसमें बैठकर गाया करते थे-

> "धूप-ताप में मेहनत करते, बच्चे तड़प-तड़प कर मरते, फिर भी पेट नहीं है भरता, जीवन कटता रो-रो कर, हम चलो बसाएं नया नगर, हम चलो बसाएं नया नगर। जहां न होवे छोट-बड़ाई, गले मिलें सब भाई-भाई, ऊँच-नीच का भेद न होवे, सुख का होवे डगर-डगर, हम चलो बसाएं नया नगर।"

कहाँ गया वह नया नगर का सपना! हमने अपनी जवानी को उस जेल में सड़ाया, हड़डी गलाया, लेकिन खुशी है कि जो आंदोलन हमने किया, उससे संसद के स्वरूप में बदलाव आया। आज पिछड़े, दलित, शोषित, अनुसूचित जाति के समाज के लोगों को सीना तानकर बैठे देखता हूँ, इस पर चलते देखता हूँ, हमारी संसद की कालीन पर रानी और राजाओं के चप्पल फिसला करते थे, उस पर आज पिछड़े, अनुसूचित जाति और जनजाति के धूल-धुसरित चप्पल से जब इस कालीन की छाती को रगड़ता हूँ, तो मैं कहता हूँ, तब मैं उसे कहता हूं कि एक जमाना था, जब शादी में भी इस पर बैठने का मौका नहीं मिलता था। आज हिन्दुस्तान का इतना रूपांतरण हुआ है कि मैं अपनी जूती से तेरी छाती को रगड़ रहा हूँ। यह परिवर्तन हिन्दुस्तान में हुआ है। आज मैं प्रार्थना करना चाहूँगा कि क्या आप इसका रूपांतरण कर सकते हैं? आप जानते हैं कि प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना गांव के लिए है, जिसे श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने चलाया। क्या प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना में मिट्टी का काम नहीं होता? बिना मिट्टी के काम के सड़के नहीं बन सकतीं। उसमें ईंट के खड़ंज लगते हैं। यहां ईंट भट़ठे में बनता है, जहां मज़दूर को काम मिलता है। दो सौ-तीन सौ मज़दूर ईंट के भट्ठे में काम करते हैं, वे भी ग्रामीण मज़दूर होते हैं। उनको ईंट के भट्ठे पर काम करने से जितना पैसा मिलता है, उसका आधा पैसा भी उन्हें मनरेगा में नहीं मिलता। इसलिए मेरी आपसे विनम्र प्रार्थना है कि इस सारे पैसे को प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना में डायवर्ट कीजिए, गांव-गांव की सड़कों को पक्की कीजिए, गांव की सड़कें पक्की हो जाएंगी, तो हमारा विकास होगा, किसान को यातायात का लाभ मिलेगा, उनकी फसल की उचित कीमत मिलेगी, बारह महीने वे शहर जा सकेंगे, अस्पताल जा सकेंगे, स्टेशन जा सकेंगे, हमारे गांव के बच्चों को रोजगार मिलेगा।

जिला योजना के तहत ग्रामीण सड़कों को, गली-गली में ईंट का खड़ंजा लगवाइए, पीसीसी की ढलाई कराइए जिससे गांवों में पानी न लगे, कीचड़ न हो। राजस्थान और अन्य रेगिस्तानी इलाकों की प्राकृतिक बनावट अलग है, लेकिन हम बिहार के, उत्तर बिहार के हैं, नदी के पेट में बसने वाले हैं, जून से लेकर नवंबर तक, इन छः महीनों के लिए सरकार की तरफ से वहां लिखा हुआ होता है कि यह रेनी सीजन है, इस दौरान कोई अर्थवर्क नहीं चलेगा। छः महीने उसी में चले गए, बचे छः महीने, उन छः महीनों में काम चलेगा, तो उसमें धान की कटनी चली

गयी, गेहूं की खेती चली गयी, तीन महीने इसमें चले गए। बचे केवल तीन महीने। तीन महीनों में क्या काम होगा। मिट्टी खोदो, बांध बनाओ, फिर उसी मिट्टी से गढ़ढ़े को भरो, फिर गढ़ढ़ा खोदकर ऊंचा करो, फिर ऊंचे को गढ़ढ़ा करो। इसके अलावा और कोई काम बचा नहीं है। मिट्टी कहां मिलेगी? मेरे यहां गांव में चलकर मिट्टी लाकर दिखाइए, जो लोग ट्रैक्टर के द्वारा मिट्टी की ढुलाई करते हैं, तो पांच से छः रुपये प्रति मन मिट्टी की कीमत हो रही है। कौन किसान अपने खेत में मिट्टी काटने देगा? किसान खेत में मिट्टी काटने नहीं देता है, तो फर्जी कागज भर दिए जाते हैं कि मिट्टी का काम हो गया, अर्थवर्क हो गया। कहां हुआ अर्थवर्क? किसान खेत में मिट्टी काटने नहीं देता है, उसकी उर्वरा शक्ति नष्ट हो जाती है। अगर तालाब की खुदाई हो, तालाब की उड़ाही हो, आप भी ग्रामीण क्षेत्र से आए हैं, भोला सिंह जी बैठे हैं, किसी भी तालाब की खुदाई बिना जेसीबी मशीन के कोई करा दे और भारत सरकार के योजना वाले अफसर उस जगह बैठें, वे जितना पैसा कहें, में अपने घर से देना चाहूंगा, बिना जेसीबी मशीन के मेरा एक एकड़ तालाब खुदवा दें। खुद नहीं सकता है क्योंकि आज उतनी दूर तक सिर पर मिट्टी ढोने वाला मजदूर नहीं है, कंधे पर धान का बीज उठाने वाला मजदूर नहीं है क्योंकि आज वह लड़का पढ़ा-लिखा है, मैट्रिक पास है, बीए पास है। किसान का बेटा पढ़-लिखकर भी कोई रोजगार न मिलने से खेत में मजदूर के रूप में काम करता है, लेकिन उसको इस योजना में आप लगाते हैं।.. (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय: आप मनरेगा के बारे में क्या सुझाव दे रहे हैं?

श्री हुक्मदेव नारायण यादव: महोदय, ग्रामीण सड़कों पर खड़ंजा लगाया जाए और पीसीसी कराया जाए। किसानों के लिए राष्ट्रीय कृषि विकास योजना है, जिससे हिरत क्रांति आ रही है और अन्न का अधिक उत्पादन हो रहा है। मनरेगा में से पैसा निकालकर इन तीन योजनाओं में पैसा डाल दीजिए, गांव का रूपांतरण होगा, किसान का रूपांतरण होगा, मजदूर को मजदूरी मिलेगी, देश में धन और अनाज की वृद्धि होगी, गांव का कायाकल्प हो जाएगा और गांव से भ्रष्टाचार मिट जाएगा।

अंतिम बात, जो पैसा पंचायतों को दिया गया है, वह पंचायत को दिया जाए, प्रखण्ड समिति को दिया जाए और जिला समिति को दिया जाए, तीनों जगह बांट दिया जाए। पंचायत स्तर की ग्रामीण योजना पंचायत समिति करे, एक प्रखण्ड से दूसरे प्रखण्ड को जोड़ने वाली सड़कों का क्रार्यान्वयन प्रखण्ड करे और एक प्रखण्ड से दूसरे प्रखण्ड, तीसरे प्रखण्ड जाने वाली लम्बी सड़कों का निर्माण जिला समिति के द्वारा कराया जाए, तो इस पैसे का सदुपयोग होगा। एक बात पर ध्यान दें। सभी माननीय सदस्य जी बोल रहे थे मैं उनकी भावनाओं का समर्थन करता हूं। अर्जुन मेघवाल जी ने बड़े प्रभावकारी ढंग से सुधार की बात की है। ग्रामीण क्षेत्र में वर्ष 1951 में गांव में बसने वाले लोगों की जनसंख्या 82.7 प्रतिशत थी, वर्ष 2001 में 72.2 प्रतिशत हो गयी, 10.5 प्रतिशत माइनस हो गए। इतने लोग

गांव छोड़कर चले गए, लोग अपने आदमी को खोज रहे हैं। हम किसान हैं, हम खोजते हैं कि हमारे 10.5 प्रतिशत आदमी गांव से कहां चले गए, कहां विलीन हो गए। वर्ष 1951 में किसान थे 71.9 प्रतिशत, जो वर्ष 2001 में घटकर 54.6 प्रतिशत हो गए, 17.5 प्रतिशत माइनस हो गए। खेतिहर मजदूर वर्ष 1951 में 28.1 प्रतिशत थे, जो वर्ष 2001 में 45.6 प्रतिशत हो गए, 17.5 प्रतिशत प्लस हो गए। क्या यह भयावह स्थिति नहीं है? अगर उस गांव का सुधार करना चाहते हैं, तो इस पर ध्यान दीजिए। आप देखें कि साढ़े 17 प्रतिशत किसान कम हो गए और साढ़े 17 प्रतिशत खेतीहर मजदूर बढ़ गए। इस व्यवस्था ने गांवों के अंदर ऐसी योजनाएं चलाई हैं जिसकी वजह से किसान निरंतर निर्धन होकर, शोषित होकर और गरीबी में डूबता तथा टूटता चला जा रहा है। सबसे ज्यादा पिछड़ा वर्ग मर रहा है, जो खेती पर निर्भर है, जो दिलत, अनुसूचित जाति और जनजाति के लोग हैं। इसलिए मेरी सदन से विनम्र प्रार्थना है कि इस योजना पर पुनर्विचार किया जाए। इस लूट-खसोट की योजना को बंद किया जाए और किसानोन्मुखी तथा ग्रामोन्मुखी योजना बनाई जाए। उस पर संसद के बहस कराई जाए। विशेषज्ञों के साथ-साथ गांवों के गरीब के प्रतिनिधियों को बुलाया जाए और उनके साथ बहस करके योजना बनाई जाए। सफेदपोश लोगों द्वारा, योजना आयोग में बैठे तथाकथित बुद्धिजीवियों द्वारा योजना न बनाई जाए। जिन्होंने न गांव देखा, न किसान देखा, न खेत देखा, न खिलहान देखा, न आरी देखी, न मेढ़ देखी, न सावन-भादों का कीचड़ देखा, न ज्वार देखा, न बाजरा देखा, न धान देखा, न गेहूं देखा। उनके द्वारा आप योजना बनाते हो और हमारे सिर पर उसे लादते हो। इसलिए इस योजना को बंद करो और ग्रामोन्मुखी, किसानोन्मुखी योजना का निर्माण करो, यही मेरी विनम्र प्रार्थना है।

SHRI S. SEMMALAI (SALEM): Mr. Deputy-Speaker, Sir, I thank you for giving me this opportunity.

I welcome the Bill initiated by hon. Shri Hansraj G. Ahir in principle as it seeks to accelerate the rural economy. The existing Mahatma Gandhi National Rural Employment Guarantee Act needs, no doubt, re-orientation as it does not address the rural people's need in full. There are many shortcomings in the implementation of the Programme under the Act. Many irregularities like delayed payments, short payment of wages, fudging of records, etc. are surfacing in various States. Muster Rolls are being prepared and fraudulent entries are also made in the records as if the works were done when no actual works were executed.

Sir, no tangible assets are being created and what was created is not endurable. In the answer given by the hon. Minister, even though he has stated that State and District level Vigilance Monitoring Committees are entrusted with the responsibility of monitoring the Schemes, the local audit by the District level authorities is not effective because they collude with the implementing agencies. So, I strongly feel that the flaws in the system should be removed.

At the same time, I do not discredit the Programme in Tamil Nadu. The State Administration is implementing the Programme effectively. *The Hindu*, a national newspaper has recently highlighted the efficient way of implementing the Programme by the Tamil Nadu Government. The credit definitely goes to the hon. Chief Minister of Tamil Nadu, Dr. Puratchithalavi J. Jayalalithaa. Actually the hon. Chief Minister of Tamil Nadu wants to ensure that any programme be it Central or State intended to benefit should fully reach the beneficiaries. Recently, hon. Chief Minister of Tamil Nadu has also raised the wage component from Rs.100 to Rs.132 daily and the number of working days has also been increased from 100 to 150 days in a year. This measure aims to mitigate the sufferings of the poor labourers in the delta region of Tamil Nadu. Their earning capacity was crippled due to drought caused by the non-release of water by Karnataka.

Now, coming to the Bill, I have a few reservations about the provisions of the Bill. Linking the provision of providing employment on all working days, except public

holidays, has no relevance in the rural scenario. Public holidays have nothing to do with the execution of work. In fact, the labourers have to work according to the existing provisions of the labour laws. Weekly holidays and no work on festival days are the working norms. In fact, given the financial resources, no Government will be able to provide employment on all the working days except holidays. To expect the work force to work on all the days is next to difficult, if not impossible.

Another issue on which I dissent with the hon. Member relates to providing employment for all the adults in rural areas. As I have earlier said, our resources are limited and are non-elastic. We cannot provide employment for all adults in a family.

No doubt this is a flagship programme and I have no hesitation in praising the programme but certain issues need to be sorted out. Already due to rapid urbanisation and migration from rural to urban area, getting labourers to perform the work in agricultural fields proves to be a difficult task. During seasonal agricultural operations, labourers have to be fetched from far away places. This results in rise of agricultural cost operations. Labour which is an important input becomes scarce. Hence, the best modality in implementing the programme under the Act and also to address the labour shortage is to modify the programme from the existing system to the PPP mode. Under this revised procedure, farm labourers can be hired and allowed to work in private land also during the seasonal time. Small and marginal farmers can hire the required labourers under the programme and the only obligation for them is to pay 25 per cent of the daily wage to each labourer engaged in this field. The rest 75 per cent of the wage component will be paid by the Government under the programme.

Similarly, big farmers can hire the required workers to work in their farms and is liable to pay 50 per cent of the wage component to each labourer engaged in his farm and the remaining 50 per cent will be paid by the Government.

I have already moved a draft Bill seeking an amendment to MGNREGA on the lines which I have just stated.

By adopting this methodology, we can achieve twin objectives. The first one is that the land owners will get sufficient work force to carry out agricultural operations and he

will pay wages according to his ability, either 25 per cent or 50 per cent. The second one is that the wage bill of the Government will be reduced to a great extent and at the same time it will ensure that work is provided to the needy and willing adult force. Of course, factors like determining the number of labourers to work in a farm may be worked out. The greatest benefit which, I feel, flows from the alternative strategy is increasing farm or agricultural productivity. This will be a great fillip to the rural economy and to the country's GDP.

I hope this Government will give serious consideration to my suggestions and implement it with the haste with which it needs to be implemented.



श्री महेन्द्रसिंह पी. चौहाण (साबरकांठा): महोदय, हमारे सम्मानीय सांसद श्री हंसराज जी जो प्रस्ताव लाए हैं कि महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण नियोजन गारंटी अधिनियम 2005 में संशोधन किया जाए, उसका मैं समर्थन करता हूं। वे जो संशोधन लाए हैं, वे बहुत जरूरी है कि केवल सौ दिन ही रोजगार क्यों हो। गांवों में 365 दिन रोजगारी की नहीं मिलती है, इसलिए रोजगारी के दिनों में बढोतरी करनी चाहिए। परिवार में सिर्फ एक व्यक्ति को ही नहीं बल्कि परिवार के अन्य सदस्यों को भी रोजगार देना चाहिए। मिटटी और सीमेंट के रेश्यो में परिवर्तन करके चालीस मिटटी का और साठ सीमेंट का करना चाहिए। मनरेगा का उद्देश्य बहुत अच्छा है कि ग्रामीण क्षेत्रों में अकुशल लोगों के परिवारों को सौ दिन का शारीरिक कार्य का रोजगार उपलब्ध कराना है। यह बहुत अच्छी बात है, लेकिन दिखाई कुछ और ही देता है। मनरेगा आज भ्रष्टाचार का पर्याय बन गया है। अधिकारियों, पदाधिकारियों तथा दलालों की मिलीभगत से मनरेगा में करोड़ों रुपयों के घोटाले का भ्रष्टाचार हो रहा है। हम जब क्षेत्र का दौरा करते हैं तो हम देखते हैं कि हजारों महिलाएं गर्मियों के दिनों में तालाब खोदती हैं। अपने सिर पर मिट्टी की टोकरी उठा कर तालाब की ढलान चढ़ रही हैं और पसीने से तर-बतर हांफती हुईं कुपोषित महिलाओं को देख कर दया आ जाती है। आज हम यहां महिला अंतर्राष्ट्रीय दिवस मना रहे हैं, लेकिन वहां महिलाओं की बहुत दयनीय स्थिति है। जिन महिलाओं के शरीर में खून नहीं है, ऐसी महिलाएं वहां काम करती हैं। हम उस गर्मी में खड़ा भी नहीं रह सकते, लेकिन उन्हें काम करने पर मजबूर होना पड़ रहा है। जब वेतन की बात आती है, तो उन्हें पर्याप्त वेतन नहीं दिया जाता है। हम पूछते हैं कि आपको कितना वेतन मिलता है तो वे कहती हैं कि पचास या साठ रुपया मिल रहा है। यह बहुत अन्याय है। यह गरीबों का शोषण हो रहा है। हमारे साथी जो संशोधन ले कर आए हैं, उसके अनुसार वेतन में बढ़ोतरी करनी चाहिए। अभी ह्क्मदेव जी ने कहा कि तालाब खोदना कोई आसान काम नहीं है। बड़ी मशीनों के बिना तो तालाब खोदा ही नहीं जा सकता है। महिलाओं के हाथों में छाले पड़ जाते हैं, वह कैसे काम करेगी? महिलाओं को अच्छा वेतन मिले, अच्छी खुराक मिले इस बात को भी हमें देखना चाहिए। महिलाएं अपना खून पसीना बहा कर जो काम करती हैं, मिट्टी की सड़क का या तालाब का वह काम एक-दो बारिश में पूरा खराब हो जाता है। इस काम से देश को क्या फायदा है। मनरेगा के माध्यम से जो चीजें बन रही हैं, वे एक-दो बारिश में खत्म हो जाती हैं। बारिश होती है तो मिट्टी की सड़क खत्म हो जाती है। कुछ कंक्रीट काम होना चाहिए। इसके लिए टिकाऊ राष्ट्रीय सम्पत्ति का निर्माण होना चाहिए, जिससे देश को भी लाभ

चाइना ने वैज्ञानिक संशोधनों द्वारा लोगों को काम देने की कोशिश की है। 65 सालों से हम गड्ढे खोदते आए हैं, उसमें परिवर्तन ला कर जैसे चाइना ने किया है, उसी वैज्ञानिक ढंग से छोटे उपकरण जैसे वे अपने घरों में बनाते हैं, वैसे कुछ काम करने चाहिए। हम क्यों न अम्बर चरखे का प्रयोग करें। अम्बर चरखा पहले बहुत अच्छी रोजी देता था, आज वह देखने को भी नहीं मिल रहा है। महिलाएं घर बैठ कर भी काम कर सकती हैं। जरूरी नहीं है कि वे गर्मी में

मिले।

मिट्टी का काम करें। अम्बर चरखे का काम करके महिलाओं को उनके घरों में रोजी मिले, ऐसा कुछ होना चाहिए। मनरेगा का साइड इफेक्ट कृषि पर भी पड़ रहा है। कृषि में जितनी जल्दी पहले मजदूर मिलते थे, आज वे मजदूर समय पर और पर्याप्त मात्रा में नहीं मिल रहे हैं। मेरा एक सुझाव है कि मनरेगा को कृषि के साथ जोड़ा जाए। जब मजदूर खेत में काम करेगा तो आधा पैसा सरकार देगी और आधा पैसा किसान देगा, तो उससे मजदूर को ज्यादा पैसा मिलेगा और कृषि का काम ज्यादा होगा तथा फसल भी अच्छी हागे। मैंने शून्यकाल में एक प्रश्न रखा था कि जो जंगली जानवर हैं, जैसे नीलगाय वगैरह हैं जो फसल को नष्ट कर देते हैं जो रात को बड़े झुंड बनाकर खेतों में आकर फसल नष्ट कर देते हैं। तब हमारे वन और पर्यावरण मंत्री जी ने हमें जवाब दिया था कि हम मनरेगा के माध्यम से चौकीदार रखकर फसल की रक्षा करेंगे। लेकिन आज तक कुछ नहीं किया गया है।

मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि यह जो फसल नष्ट हो रही है और किसान खेती करना छोड़ रहे हैं क्योंिक तैयार फसल खेतों में है और किसान अगर रात में घंटा-दो घंटा खेतों में न जाएं तो पूरी फसल ही नष्ट हो जाती है। हमारे क्षेत्र में स्थिति इतनी खराब हो चुकी है कि लोग अपना खेत छोड़कर शहरों में मजदूरी करने के लिए जा रहे हैं। मनरेगा के माध्यम से जो लोग कृषि की चौकीदारी करने में लगे हुए हैं, उनको भी उसमें शामिल किया जाए और मनरेगा में जो भ्रष्टाचार हो रहा है, उस पर रोक लगाई जाए और मजदूरों को अच्छी मजदूरी मिले। वही मेरा कहना है।

डॉ. भोला सिंह (नवादा): उपाध्यक्ष महोदय, श्री हंसराज अहीर जी ने जो मनरेगा पर संशोधन रखने का प्रस्ताव रखा है, मैं उसके समर्थन में खड़ा हुआ हूं।

> "अश्कों ने जो पाया है, गीतों मे वह दिया है, फिर भी सुना है दुनिया को मुझसे कुछ गिला है। जो तार से निकली है धुन, वह सबने सुनी है, पर जो शाक पर गुजरी है, वह किस दिल को पता है। हम औरों के लिए हैं फूल, लाए हैं खुशबू, पर अपने को सिर्फ एक दाग मिला है।"

काफी मंथन करने के बाद, काफी चिंतन करने के बाद मनरेगा के रूप में एक अमृत कलश गांव के जीवन में उपस्थित हुआ। लेकिन इस अमृत कलश को जिसका उद्देश्य था कि ग्रामीण जीवन की जो आबादी है, काम के अभाव में जो बेकार पड़े हैं जिनकी गरीबी बढ़ती जा रही है, काम का अभाव है, इसलिए कम से कम सौ दिनों का रोजगार उनको प्राप्त हो। योजना अच्छी थी, विचार अच्छा था, नीति भी ठीक थी, नीयत को भी मैं खोटा नहीं कह सकता हूं परंतु जो योजना जमीन पर उतरी है, वह अपराधबोध से ग्रसित है।

मैंने प्रेमचंद के 'गोदान' को पढ़ा है। उस गोदान में एक बुधिया गर्भवती है। डिलीवरी होने वाली है। वह चिल्ला रही है और उसका पित और उसका बेटा घूरा में आलू पका रहा है। गुरुवा उसका बाप नहीं जा रहा है कि अगर हम बुधिया को संभालने के लिए जाएंगे तो बेटा आलू खा जाएगा। बेटा अपनी मां को बचाने के लिए नहीं जा रहा है कि अगर हम जाएंगे तो हमारा बाप आलू खा जाएगा।

17.00 hrs.

में जिस रास्ते से जाता हूं और देखता हूं कि नेशनल हाईवे के किनारे कचरे में कुत्ते भी जिंदगी की तलाश में है, गाय भी जिंदगी की तलाश में है, छोटे-छोटे नन्हें बच्चे भी जीवन की तलाश में हैं। कुत्ते रोटी के टुकड़े को खींचते हैं और वहीं इंसान का बच्चा कुत्ते के मुंह से रोटी का टुकड़ा खींचता है। आज यह दयनीय स्थिति है।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं नहीं जानता कि आंध्र प्रदेश की क्या हालत है। मैं नहीं जानता कि कर्नाटक किस स्थिति है। मुझे नहीं मालूम कि राजस्थान की स्थिति क्या है। मैं नहीं जानता कि पश्चिम बंगाल की स्थिति क्या है। मैं बिहार से आता हूं इसलिए मैं कह सकता हूं कि मनरेगा जीवित नहीं है, मर गया है। सच पूछिए तो मैं आज यहां श्रद्धांजिल देने के लिए खड़ा हुआ हूं। मैं इस बात को इसलिए कहना चाहता हूं कि मैं नवादा लोकसभा क्षेत्र से आता हूं। मैं वहां अनुश्रमण निगरानी समिति का चेयरमैन हूं। कलक्टर उसके सचिव हैं, मैंने उस बैठक में पूछा - हमें बताइए कितने सैंकड़ों रुपए मनरेगा पर खर्च हुए हैं? योजनाएं कितनी हैं? उन योजनाओं का नाम दीजिए, हम उनकी जांच करेंगे। तीन-तीन कलक्टर बदल गए लेकिन आज तक योजनाओं की सूची सामने नहीं आई है। जब मैं कहता था तब कलक्टर

जवाब देता था कि अगली बैठक में जवाब दे देंगे। जब वह बैठक होती थी तब कहा जाता था कि आधा तैयार हुआ है और आधा तैयार कर रहे हैं, दूसरी बैठक में दे देंगे। जब तीसरी बैठक में पूछते थे तब कहा जाता था कि बस, आपके सामने प्रस्तुत ही होने वाला है। लेकिन वह कभी प्रस्तुत नहीं हुआ।

उपाध्यक्ष महोदय, आज खेती बर्बाद हो रही है। मजदूरों की कई पीढ़ियां बुढ़ापे का शिकार हो चुकी हैं। नई पीढ़ी जिसकी उम्र 18, 20, 22 वर्ष है, उनके पास सर्टिफिकेट हैं, बीए के हैं, एमए के हैं, वे मिट्टी का काम नहीं करना चाहते हैं। किसानों के बेटे भी खेत को नहीं पहचानते हैं। मजदूरों के बेटे भी खेत पर नहीं जाते हैं। बूढ़ा आदमी खेत में काम कर रहा है। मैं बहुत जिम्मेदारी कहना चाहता हूं कि प्रत्येक पंचायत में गिरोह की स्थापना हो गई है। ऐसा गिरोह जो पदाधिकारियों से मिलकर बैठा है। पढ़ेलिखे लड़कों का जाब कार्ड में नाम देकर पैसा लिया जाता है। वे लड़के कहीं भी नौकरी करते हों उन्हें 20, 25, 30, 40 रुपए दे दिए जाते हैं लेकिन काम नहीं हो रहा है। यह विडंबना नहीं है तो और क्या है? मैं इस बात को इसलिए कहना चाहता हूं कि डेमोक्रेसी में जनता ईश्वर है, परमेश्वर है। जब डेमोक्रेसी में जनता वोट बैंक बन जाती है, कमोडिटीज़ बन जाती है, बाजार की वस्तु बन जाती है, बाजार की वस्तु की तरह खरीद और बिक्री होने लगती है तो समाज में कोई भी योजना अच्छी हो, नीयत अच्छी हो, फलवती हो, दृष्टिकोण ठीक हो लेकिन वह कार्यान्वित नहीं हो पाती है।

उपाध्यक्ष महोदय, ग्रामीण जीवन में हमने गांवों को देखा है, वे वीरान हैं। मजदूर भी नहीं हैं, वे बाहर पलायन कर गये हैं। उनकी बहुएं, बेटियां, पिल्तयां वहां हैं, लेकिन उनके पित बाहर हैं। इस स्थिति में देखा जाए तो मजदूरी कम है, उसे बढ़ाया जाए। अब तो मजदूरों की मजदूरी 150, 200 और 250 रुपये हो गई है। हिरयाणा में मजदूरों की मजदूरी 250 रुपये हो गई है। लेकिन असैट्स क्या क्रिएट हो रही हैं। हमने मजदूरों की मजदूरी तो बढ़ाई, उन्हें अधिकार भी दिया, लेकिन उन्हें कितना काम कम्म है, घंटे तय किये, कितना उत्पादन करना है, कितना असैट्स क्रिएट करना है, यह शून्य नतीजा है। आज गांवों में कीवे भी नहीं रहते। कोंवे भी शहर चले गये हैं। इंसान शहर चले गये, लोग शहर चले गये, कौवे भी शहर चले गये और वे रात को कांव-कांव करते हैं। गांवों में अब कौवे भी नहीं रहते। क्योंकि उन्हें वहां आहार भी नहीं मिलता है।

उपाध्यक्ष महोदय : आपका सुझाव क्या है?

डॉ. भोला सिंह : उपाध्यक्ष महोदय, मेरे पास सुझाव है। आप तो उसी मिट्टी की काया से आये हैं। आपने उसी पीड़ा को भोगा है। सुझाव यही है कि मनरेगा को आपने क्या बनाया है, लोग आयेंगे, दरखास्त देंगे कि हमें काम चाहिए तो 15 दिन में हम काम देंगे और नहीं देंगे तो 15 दिन का बेकारी का भत्ता देंगे। शायद ही किसी भकुआ को बेकारी का भत्ता मिला हो। वह 15 दिन में दरखास्त देगा, मजदूरों को आपने देखा है, जिसके बदन पर कपड़े नहीं हैं, फटे-चीथड़े कपड़े हैं, वे पदाधिकारी के यहां दरखास्त देंगे। दरखास्त लिखवाने में भी उसे पैसा देना पड़ता है, दरखास्त को स्वीकृत

कराने में भी उसे पैसा देना पड़ता है। आपने मुखिया पर विश्वास नहीं किया। मैं यह नहीं कहता हूं कि आपने विश्वास क्यों नहीं किया। आपने पोस्ट आफिस और बैंक को जिम्मेदारी दे दी। क्या वे हंस हैं, क्या बैंक के लोग धर्मराज हैं, क्या पोस्ट ऑफिस के लोग नक्षत्र लोक से आये हैं, क्या वे ईमानदारी के प्रतीक हैं? क्या तमाशा है, समस्या का समाधान करने के बदले आप समस्या से भागते रहे हैं, समस्या को छोड़ते रहे हैं। इसलिए यह मनरेगा जिसका परीक्षण हम कर रहे हैं और जिसके बारे में पीड़ा से कह रहे हैं, तू बड़ा अच्छा था, तू बड़ा सुंदर था, तू गांव की गरीबी को दूर करने के लिए आया था। तुझे लोगों ने मार दिया, लोभ ने मार दिया, भ्रष्टाचार ने मार दिया। मैं तुझे श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। यह आज जो मैं सदन में कह रहा हूं, बड़ी पीड़ा से कह रहा हूं। इसके सुधार के उपाय हैं और सुधार के उपाय ये हैं कि मनरेगा को राज्य की केन्द्र की योजनाओं के साथ जोड़ना होगा। जो मिट्टी के काम हैं, उन कामों के साथ, जैसे प्रधान मंत्री ग्रामीण सड़क सम्पर्क योजना है, जैसे जल संसाधन विभाग की योजनाएं हैं, इनके साथ आपको इसे जोड़ना होगा और कितने पैसे खर्च होंगे, कितना काम होगा, इसकी गारंटी करनी पड़ेगी। जब तक यह नहीं होगा, तब तक हम इस बात की गारंटी नहीं कर सकते हैं।

उपाध्यक्ष महोदय, महात्मा गांधी ने कहा था कि जब तुम किसी योजना को तैयार करो तो उस आदमी का ख्याल करो, उस आदमी की चिंता करो, उसका चिंतन करो, जिसका पेट पीठ से सटा हुआ है। जिसके बदन पर कपड़े फटे-चिटे हुए हैं। देखो कि तुम्हारी इस योजना में उसके आँसुओं को पोंछने के उपाय हैं या नहीं हैं। देखो कि तुम्हारी उस योजना में उसके लिए कुछ राशि है या नहीं है। अगर नहीं है तो तुम इस पर विचार करो।

उपाध्यक्ष महोदय, आपकी घंटी हमारे मन के अंदर चेतना पैदा करती है। मैं जानता हूँ कि आपको यह बात अच्छी नहीं लगती है। लेकिन मैं एक बात कह कर अपनी बात को समाप्त करना चाहता हूँ। मैं यह कहना चाहता हूँ कि आज हम आपके सामने इस बात को रख रहे हैं कि एक नया वर्ग पैदा हो रहा है। एक नया महम्म वर्ग पैदा हो रहा है। नया मध्यम वर्ग, जिसके पास पैसे हैं, वह पुराने मध्यम वर्ग को पीछे धकेल रहा है। जो मध्यम वर्ग है, उसके अंदर मज़दूर भी है और मालिक भी है। वह कुछ काम अपने हाथ से करता है और कुछ काम वह मज़दूरों से करवाता है। उसमें मालिक और मज़दूर दोनों का समन्वय है। आपने उस किसान के मज़दूर और किसान का जो मालिक है, उसके बारे में कोई ख्याल नहीं किया है। अगर आपने मनरेगा को किसानों की खेती के साथ, मनरेगा को किसानों की कृषि के साथ, मनरेगा को ग्रामीण जीवन के साथ नहीं जोड़ा तो मैं बड़ी जिम्मेवारी से कहना चाहता हूँ कि आज ग्रामीण जीवन में और समाज के जीवन में जो बलात्कार हो रहे हैं वे नहीं रुकेंगे। आज शराब की बोतलें जगह-जगह दिखाई पड़ती हैं। ग्रामीण जीवन में 80 प्रतिशत लोग शराब के नशे में चूर हो रहे हैं। संपूर्ण ग्रामीण जीवन शराब के नशे में मस्त हो गया है। ये नाजायज़ पैसे, अकारण पैसे हमारे सामाजिक जीवन को ध्वस्त कर रहे हैं।

उपाध्यक्ष महोदय, मनरेगा के संबंध में मैं आपके द्वारा केंद्र सरकार से आग्रह करना चाहता हूँ कि तमाम राजनैतिक पार्टियों के नेताओं को बुला कर इसके संबंध में समीक्षा करें। समीक्षा के बाद, इसका जो तत्व उपस्थित हो, उसके आधार पर उसको पुनर्जीवित करें, नहीं तो मनरेगा मर चुका है। हम सभी उसके लिए पैसा बढ़ाते जाएं और उसको देखने वाला कोई नहीं है। क्या गरीबी समाप्त हो गई कि पैसे खर्च नहीं हो रहे हैं।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं अपनी बात को समाप्त करते हुए आपके माध्यम से इस बात का आग्रह करना चाहता हूँ कि मनरेगा को सामाजिक जीवन के साथ, ग्रामीण जीवन के साथ और किसानों के साथ जोड़ कर और भारत की जो ग्रामीण पद्धित है, भारत का जो ग्रामीण जीवन है, उसके साथ इसको लगा कर इसे पुनर्जीवित किया जाए तािक यह अमृत का कलश सभी के हित में हो, सभी की जिंदिगियों में सुधार लाए। इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी बात को समाप्त करता हूँ।

MR. DEPUTY-SPEAKER: Hon. Members, three more members are there to speak on this Bill. If the House agrees, we can extend the time for this Bill by half-an-hour.

SEVERAL HON. MEMBERS: Yes.

MR. DEPUTY-SPEAKER: I extend the time for this Bill by half-an-hour.

Shri Ramen Deka.

SHRI RAMEN DEKA (MANGALDOI): Mr. Deputy-Speaker, Sir, I rise here to support Ahir *ji*'s Bill. MGNREGA needs wide amendment and there is wide scope of amendment. My esteemed colleague, Prof. Saugata Roy said that this was a game changer. I do appeal to the Government, let it be a changer of the livelihood of the poor. It should not be a game changer for election. I come from a very backward State of Assam. It is a bottleneck in the communication system. You all know that. We have floods regularly. Some people say that it is a festival in Assam because in regular intervals we have flood. The life span of embankments in Assam is over. It needs repairing. As a Chairman of the District Vigilance Committee, I urge the District Committee to give the work of repairing of embankment to MGNREGA. But they refuse because that is not in the scope of MGNREGA. If it is in the scope of MGNREGA then we can repair many embankments. It will benefit the farmers because floods inundate the ploughing fields due to embankments.

Further, afforestation was under the scope of MGNREGA. But afforestation was not covered. Recently, the forest cover diminished. Forest cover is diminishing and there is alarming global warming. We talk in seminars and we talk in meetings that global warming is going on at an alarming rate. But we cannot give the money of MGNREGA for afforestation. I am surprised to notice that in Uttar Pradesh only 4 per cent forest cover is there. The largest population of the country is having only 4 per cent forest cover. You just think of it. So, MGNREGA money can be given for afforestation but it was not done.

The hon. Minister Jairam Ramesh ji, Minister of Rural Development said money is no problem. It is all right that money is no problem but what about the implementation? In my district Nalbari, a CBI investigation is going on regarding MGNREGA. Another CBI investigation is going on in Golaghat District. Why? There is corruption. We must see the implementation part. A National Level Monitor goes there but nothing happens. I raised this matter many a times under Rule 377. From here an NLM goes but they do not do anything. I wrote a letter to the hon. Minister in this regard. When Assam was inundated by flood – the world knew that there was flood – but an NLM went to the Nalbari District and he submitted a Report. Roads are inundated, how did he investigate the alleged

corruption? He was sitting in a hotel or a circuit house and he prepared the report. Then the hon. Minister sent another person there. These things are going on. You must look into the implementation part.

Our Brahmaputra River bed is coming up. MGNREGA can do something there. People can work in the river basin so that they can consume more water and flood will not come. These are the things including village roads to be done under MGNREGA. As hon. Bhola Singh ji said, that there is corruption there and there is corruption in Panchayats. It is a fact. They will choose a road in ploughing fields but they will not choose a route in village. They will not choose a road which connects schools. They will not choose the road connecting other villages. They will choose a road where people do not go. In my constituency, in Rangia, one road has been constructed under MGNREGA by spending Rs. 26 lakh and nobody is going through that road. What is the use of that road? There is asset building. How much assets we have created under MGNREGA? It is worth Rs. 33,000 crore. Last year, we spent Rs. 28,000 crore. Just analyse how much assets we have created? One more amendment is required.

Sir, we come from Assam. Our hon. Member and ex-Minister, Shri Handique is sitting here. He will be very well conversant with this fact that our roads are connecting villages and there is no land. So, tractor must be used there. You are not allowing them to use the tractor to carry things. By head load we cannot prepare roads.

So, these are the things to be rectified. I do support the Bill moved by Shri Hansraj Gangaram Ahir and this amendment should be done with wider scope covering wider network of villages.

उपाध्यक्ष महोदय: डॉ. किरीट प्रेमजीभाई सोलंकी। उपस्थित नहीं।

श्री वीरेन्द्र कश्यप।

श्री वीरेन्द्र कश्यप (शिमला): उपाध्यक्ष महोदय, श्री हंसराज अहीर जी द्वारा महात्मा गांधी ग्रामीण नियोजन गारंटी 2005 में संशोधन पर यहाँ जो विधेयक पेश किया गया है, उस बारे में कुछ बातें में भी यहाँ कहना चाहता हूँ। इसमें कुछ संशोधनों की आवश्यकता है।

महोदय, मैं हिमाचल प्रदेश से आता हूँ जो एक पहाड़ी राज्य है। पहाड़ी राज्य में मनरेगा का जो कार्य है, उसमें मैं देखता हूँ और मैं हिमाचल प्रदेश की स्पैसिफिक बात कर रहा हूँ। वहाँ पर आज मज़दूर मिलते नहीं हैं और मज़दूर न मिलने की वजह से इस योजना को गाँवों में ज़बर्दस्ती गाँव में प्रधान लोग जिस तरह से उसको यूटिलाइज़ करना चाहते हैं, उस पैसे को लगाना चाहते हैं, वहाँ पर गलत तरीके से जॉब कार्ड़ज़ बन रहे हैं।

दूसरी बात में कहना चाहता हूँ कि आज ग्रामीण क्षेत्र की दशा इससे सुधर नहीं रही है खासकर जो हमारे हिली क्षेत्र हैं, उसमें कुछ बातें जोड़ने की ज़रूरत है। मंत्री जी यहाँ बैठे हैं। मैं उनको ध्यान दिलाना चाहता हूँ कि पिछले दिनों जब जयराम रमेश जी फॉरेस्ट एंड एनवायर्नमेंट मिनिस्टर थे और डॉ.सी.पी.जोशी जी रूरल डैवलपमेंट मिनिस्टर थे तो मैंने दो बातें यहाँ हाउस में भी कई बार उठाईं। ज़ीरो आवर के माध्यम से भी और 377 के माध्यम से भी उठाईं। मैंने मंत्री जी को पत्र भी लिखा था। उसमें मैंने कहा था कि आप हिमाचल प्रदेश और जो हिली स्टेट्स हैं, और दूसरी जगह भी मैं कहना चाहता हूँ कि एक सबसे बड़ी दिक्कत आ गई जिसका रैफरैन्स मेरे सहयोगी डॉ. महेन्द्र सिंह जी कर रहे थे कि आज गाँवों में वहाँ के पशु खेती उजाड़ रहे हैं, जंगली जानवर खेती उजाड़ रहे हैं। मैं हिमाचल प्रदेश की बात आपके ध्यान में लाऊँ कि वहाँ इतनी संख्या में बंदर हो गए हैं कि वे खेती उजाड़ देते हैं। रात में सूअर, हाथी और नीलगाय खेती उजाड़ देते हैं। मैं मंत्री जी के ध्यान में यह बात लाया था और प्रदेश की सरकार ने एक रिजॉल्यूशन केन्द्र की सरकार को भेजा था कि मनरेगा के अंतर्गत आप एक आइटम ला दें कि इसके लिए रखवालों की नियुक्ति की जाए तािक वहाँ के लोगों को रोज़गार मिल जाए और पहाड़ में हमारी जो खेती है, वह इन पशुओं से और जंगली जानवरों से बच सके। हमारे यहाँ हिमाचल प्रदेश में वैसे भी खेती बहुत कम है। चार-पाँच बीघा से ज्यादा हमारे पास ज़मीनें नहीं हैं और भाइयों में बँटवारा हो गया तो दो-ढाई बीघा ज़मीनें रह जाती हैं। जो लोग खेतों में फसलें लगाते हैं, आलू लगाते हैं, टमाटर लगाते हैं, सब्ज़ियाँ लगाते हैं, बंदर 15 मिनट में आकर उसको उजाड़ देते हैं। कहीं रात को सुअर आकर खेती उजाड़ देते हैं।

उपाध्यक्ष महोदय : आपका सुझाव क्या है?

श्री वीरेन्द्र कश्यप: हमारा सुझाव यह है कि आप इसमें रखवाले नियुक्त करवाएँ ताकि वह पैसा ठीक जगह पर लगे और वहाँ के लोगों को रोज़गार भी मिल जाए और वहाँ की खेती भी बच जाए। इसका एक दुष्परिणाम यह हो रहा है कि वहाँ ज़मीनों के रेट गई गुना बढ़ गए हैं। जो ज़मीन पाँच हज़ार रुपये बीघा थी, वह पाँच लाख रुपये बीघा हो गई

है। लोग उन ज़मीनों को बेच रहे हैं और बेचने के बाद भूमिहीन होते जा रहे हैं। दूसरा, हिमाचल प्रदेश के जंगलों के बारे में मेरा एक सुझाव था। अभी हमारे असम के सहयोगी रमेन जी भी कह रहे थे।

मैं कहना चाहता हूं कि वहां पर फायर वॉचर अप्रैल से लेकर जून तक रख दिए जाएं तो जहां-जहां जंगल में आग लगती है, क्योंकि वह चीड़ के जंगल हैं। मैडम चन्द्रेश कुमारी जी यहां बैठी हैं, इनको ज्यादा पता है, तीन महीनों में आग लगती है और अरबों-खरबों के जंगल जल जाते हैं, उसके लिए फॉरेस्ट डिपार्टमेंट के पास कोई ऐसी व्यवस्था नहीं है, जिससे वहां के जंगल बच सकें। इसलिए मेरा सुझाव है सरकार के लिए कि यदि वहां फायर वॉचर रख दिए जाएंगे तो अवश्य ही वहां के लोगों को रोजगार भी मिलेगा और हमारे अरबों-खरबों रुपये के जंगल, जिनको हम बच्चों की तरह पालते हैं, वह 10-12 साल के होने के बाद वह आग में नष्ट हो रहे हैं। इससे बड़ी बात यह है कि वहां का फ्लोरा और फोना टोटली खत्म हो रहा है। उसका भी हम बचाव कर सकते हैं। मैं यही कहना चाहता हूं कि मनरेगा में यह जो सौ दिन की बात कह रहे हैं, सौ दिन से काम चलने वाला नहीं है। कई जगह पर कहा जा रहा है, इसमें कोई दो राय नहीं है कि जब यहां मनरेगा पर कोई प्रश्न उठता है तो सारा हाउस और सभी सांसद कहते हैं कि भ्रष्टाचार हो रहा है। इसमें हो सकता है कि बहुत से राज्यों में भ्रष्टाचार हो रहा होगा। मैं यह कह सकता हूं कि पिछले पांच वर्षों में हिमाचल प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी की सरकार रही है, प्रोफेसर धूमल की सरकार रही है, जिसका लाभ वहां के लोगों को मिला है। भ्रष्टचार वहीं पर होगा, जहां के मुखिया के द्वारा उसकी इम्पलीमेंटेशन ठीक ढंग से नहीं हो रही होगी। मैं यह कह सकता हूं कि भ्रष्टचार के अड्डे तो यह बन गए होंगे, परंतु इस पर यदि प्रोपर मॉनीटरिंग अगर होगी तो यह लोगों के लिए लाभदायक हो सकता है। यह मैं आपको कहना चाहता हूं। इसलिए इसे सौ दिन की जगह दो सौ दिन किया जाए ताकि 365 दिन में कम से कम आधा साल अगर आप लोगों को रोज़ी-रोटी देना चाहते हैं तो उसके माध्यम से वह मिल सकती है।

इसी तरह से पहाड़ों में जब आपने इसकी शुरूआत की थी तो कहा था कि 60-40 की रेश्यो होगी। 60 प्रतिशत लैबर कम्पोनेंट है और 40 प्रतिशत मैटीरियल कम्पोनेंट है। परंतु पहाड़ी राज्यों के बारे में मैं कहना चाहता हूं कि हमने वहां छोटे-छोटे रास्ते बनाए, क्योंकि हमारे पास सड़कें नहीं हैं। इसलिए हमने उन रास्तों को सीमेंटिड बनाने का प्रयास किया था और गांव-गांव को पक्के रास्ते के साथ जोड़ने का प्रयास किया था। उसमें पैसा ज्यादा लगता है। इसलिए मंत्री महोदय आप इसकी उलटी रेश्यो कर दें, 60 प्रतिशत मैटीरियल और 40 प्रतिशत लैबर कम्पोनेंट या पचास-पचास प्रतिशत करेंगे तो इससे हमारे पहाड़ी राज्यों को बड़ा लाभ मिल सकेगा।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं आपका आभारी हूं कि आपने मुझे बोलने का समय दिया। मुझे पूर्ण विश्वास है कि जंगली जानवरों से हमारी फसलें बच जाएं, उसके लिए रखवाले इसके अंतर्गत लाएंगे और साथ ही साथ हमारे जंगल बच सकें, उसके लिए फायर वॉचर को केवल तीन महीने के लिए एड करेंगे तो मैं समझता हूं कि यह बड़ा काम

मनरेगा के अंतर्गत होगा। इसी के साथ श्री अहीर जी जो यह रेज़ोल्यूशन लाए हैं, मैं उसका समर्थन करते हुए अपना स्थान ग्रहण करता हूं।

श्री जगदम्बिका पाल (ड्मिरियागंज): उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपका आभारी हूं कि कांग्रेस और यूपीए के द्वारा एक अत्यन्त महत्वकांक्षी योजना जो देश के खेत-खलिहान, चौपाल में गरीब नौजवान जो वहां किसी रोजगार के अभाव में देश के मुख्तलिफ़ हिस्सों में पलायन करते थे, हम तो उस क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हैं, उस क्षेत्र की नुमाइंदगी करते हैं, जिस इलाके में न आज कोई इंडस्ट्री है और हमारा जो परम्परागत उद्योग था शुगर केन इंडस्ट्री, वह भी एक-एक करके चाहे उत्तर प्रदेश की शुगर फेडरेशन की इंडस्ट्री हो, चाहे कार्पोरेशन की इंडस्ट्री हो, आज एक-एक करके सिक हो गयी हैं। पूर्वी उत्तर प्रदेश जो सबसे बड़ा मैनचेस्टर कहलाता था, जो कि चीनी का सबसे बड़ा उत्पादक था, आज वह सबसे पीछे हो रहा है। कहीं न कहीं इस महत्वकांक्षी योजना ने देश के हर गांव में लोगों की मांग के सापेक्ष जो भी 18 साल से ऊपर हों, उनको रोज़गार देने की गारण्टी दी। इसको केवल एक गारण्टी योजना के रूप में ही नहीं बनाया, कांग्रेस और यूपीए सरकार को मैं बधाई दूंगा कि इसको कानून बनाकर देश की जनता को अधिकार दिया है कि आपको रोज़गार मिलेय। अभी तक यह मांग होती थी कि हर हाथ को काम मिले लेकिन पहली बार हिन्दुस्तान में किसी सरकार ने इस पर कानून बनाने का काम किया। लोगों को रोज़गार देने की बात उठती थी कि इसको फंडामेंटल राइट की तरह ट्रीट किया जाए, काम नहीं मिले तो बेरोज़गारी भत्ता दिया जाए। मैं किसी का नाम नहीं लूंगा पर यह बात सारी मुख्तलिफ सियासी पार्टियां अपने मैनिफैस्टो में रखती थीं लेकिन वह अतीत का दस्तावेज़ बन जाता था, वह केवल भविष्य के गर्त में रह जाता था। अगर वास्तविकता के धरातल पर उसे उतारने का काम किया कि किसी भी गांव का नौजवान, नवयुवती अगर रोज़गार मागेंगे तो उस देश की कल्याणकारी सरकारों की जवाबदेही होगी उस नौजवान को, उस युवती को रोज़गार देने की अन्यथा उसे बेरोज़गारी भत्ता दिया जाएगा। इसे अगर किसी ने मूर्त रूप से कानून बनाया है तो कांग्रेस-यूपीए की सरकार ने बनाया है। इस के लिए मैं डॉ. मनमोहन सिंह और श्रीमती सोनिया गांधी को बधाई दूंगा।

अभी मेरे साथी कश्यप जी बड़ी गंभीरता से बहुत अच्छी बात कह रहे थे कि यह जो सौ दिनों का काम है यह नहीं चलने वाला। इसे सौ दिनों के जगह पर 365 दिन किया जाए। इसी तरह से भ्रष्टाचार की बात हमारे माननीय हुक्मदेव नारायण यादव जी ने भी कही। मैं कहता हूं कि वर्ष 2005 में इसका एक्ट बना कि हिन्दुस्तान के गांवों में मनरेगा लागू किया जाए। 5 फरवरी, 2006 से यह मनरेगा देश के तमाम गांवों में कन्याकुमारी से कश्मीर तक लागू है।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं आप के माध्यम से पूरे सदन का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूं कि आज तक 146 लाख वर्क टेक-अप हुआ है और उस 146 लाख में से केवल 60% काम पूरा हुआ है जिसमें 20% रूरल कनेक्टिविटी बनी, 25% काम में गांवों में जैसे कुंओं का, तालाब का निर्माण हुआ। आज कितनी कितनाई है कि जब सूखा पड़ता है तो गांव में तालाब सूख जाते हैं। उस बुंदेलखण्ड की कल्पना कीजिए जहां से माननीय मंत्री जी आते हैं। वहां कई-कई वर्ष

08.03.2013 216

सूखा पड़ता है। लोग भुखमरी के कगार पर आ कर आत्महत्या तक कर लेते हैं। मैं विस्तार में नहीं जाना चाहता हूं। चौदह प्रतिशत काम इंडीविडुअल बेनेफिशियरीज को मिला।

माननीय कश्यप जी, इस साल सरकार ने 39,000 करोड़ रुपये बजट का परिव्यय रखा। पिछली बार 41,000 करोड़ रुपये था। उसके पिछले साल 40,000 करोड़ रुपये का परिव्यय था लेकिन खर्च कितना किया? आज तक राज्यों में औसतन 42 दिनों से ज्यादा खर्च नहीं हुआ। वे 42 दिनों से ज्यादा का काम नहीं जेनरेट कर पाए। यह किस की जिम्मेदारी है? अगर हम सौ दिनों के काम की गारंटी दे रहे हैं तो आज मनरेगा में यह सुनिश्चित करना पड़ेगा कि लोगों को कम से कम सौ दिनों का काम मिले। अब तक केन्द्र सरकार द्वारा जो 2,18,000 करोड़ रुपये राज्यों को दिया गया है, उस 2,18,000 करोड़ रुपये का उपयोग कितना हुआ? इसका उपयोग 70% हुआ और वह भी 70% ऐसे नहीं हुआ। जब उस में मैटेरियल कॉम्पोनेंट के नाम पर खरीदारी हो गयी, स्टेशनरी की खरीदारी हो गयी, अन्य चीजें जैसे आलमारी की खरीदारी हो गयी, कुर्सी-मेज की खरीदारी हो गयी तो मान्यवर अब इसे भ्रष्टाचार कहा जा रहा है। यही बात तो हम कहते हैं कि भ्रष्टाचार बिल्कुल हो रहा है लेकिन भ्रष्टाचार अगर गांवों में हो रहा है तो उसे रोकने की जिम्मेदारी बीडीओ की है, सीडीओ की है, अधिकतम डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट की है। हम पैसा भी दे रहे हैं और हमारे ही उपर भ्रष्टाचार का आरोप लगाया जाता है। हम तो कहते हैं कि अगर आज इस महत्वाकांक्षी योजना को पारदर्शी बनाना है तो राज्य सरकारों को इच्छाशक्ति जाग्रत करनी होगी कि वह राज्य सरकार उस भ्रष्टाचार को रोके। इसमें संलिप्तता है। यह नेक्सस बन गया है। आज जॉब कार्ड अपने पास रख लिया जाता है।

उपाध्यक्ष महोदय: आपका सुझाव क्या है?

श्री जगदिम्बिका पाल: महोदय, मेरा सुझाव तो बहुत अच्छा है कि कोई भी राज्य सीबीआई की जांच करा दे। जयराम रमेश जी ने बयान दिया कि हम ने राज्यों को सीबीआई जांच के लिए लिखा कि भ्रष्टाचार है।

मान्यवर, आज एक-एक तालाब को बनाने में एक-एक, डेढ़-डेढ़ करोड़ रुपये लग गए। नेता, प्रतिपक्ष के विदिशा में मनरेगा के अंतर्गत छः-छः लाख के टॉयलेट बन रहे हैं। अगर हम इस सदन में ही बैठ कर इस बात को गंभीरता से नहीं सोचेंगे कि अगर आज सैनिटेशन डिपार्टमेंट का मानक क्या है? पहले इंडीविडुअल बेनेफिशियरी को देने के लिए यह 4500 था, अब यह साढ़े नौ हजार हो गया।

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन (भागलपुर): ये गलत इल्ज़ाम लगा रहे हैं।

श्री जगदम्बिका पाल: महोदय, मैं जो बात कहता हूं वह बड़ी जिम्मेदारी के साथ कहता हूं।

उपाध्यक्ष महोदय : संक्षेप में बोलिए।

श्री जगदम्बिका पाल : मान्यवर, मैं बहुत संक्षेप में कहूंगा। ...(<u>व्यवधान</u>) शाहनवाज़ साहब बहुत विद्वान हैं, बहुत काबिल हैं। इस में कोई दो राय नहीं है। इसलिए उनको पार्टी ने प्रवक्ता बना रखा है।

उपाध्यक्ष महोदय: यह विषय मनरेगा का नहीं है।

श्री जगदम्बिका पाल: महोदय, ये जान रहे हैं कि जगदम्बिका पाल जो कह रहे हैं, वे सच्चाई कह रहे हैं। अब कहीं न कहीं उन्हें प्रतिवाद करना है और उन्हें अपने दायित्व का निर्वहन करना है। लेकिन, वे मुस्कुरा इसलिए रहे हैं कि वे दिल से समझ रहे हैं कि जगदम्बिका पाल सच कह रहे हैं।

उपाध्यक्ष महोदय: आप मनरेगा के बारे में बोलिए।

श्री जगदम्बिका पाल: महोदय, मैं एक सुझाव देना चाहता हूं। उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से मंत्री जी से बड़ी गंभीरता से जानना चाहता हूं कि मंत्री जी ऐसा कोई मेकेनिज़्म तैयार करेंगे कि आप केवल यह कहेंगे कि हमने मनरेगा में सभी राज्यों को रोजगार की गारंटी देने के लिए कानून बना करके आपकी आवश्यकताओं के अनुसार जिस दिन सोशल ऑडिट कर लेंगे, यूसी सर्टिफिकेट भेज देंगे, उस दिन हम आपकी फिर से डिमांड ड्विन स्कीम है, अगर डिमांड ड्रिवन स्कीम है, उस स्कीम में इसको इम्प्लीमेंट करने की जिम्मेदारी राज्य सरकार की है और राज्य सरकार अगर इम्प्लीमेंटेशन में, हुक्म नारायण जी कहें कि विक्या का कलेक्टर नहीं सुन रहा है,...(व्यवधान) मैं बहुत गंभीर बात कह रहा हूं, मैं समझता हूं कि इस पर पूरा सदन सहमत होगा। यह कोई पार्टी का सवाल नहीं है, मैं किसी राज्य की आलोचना करने के लिए नहीं खड़ा हुआ हूं। इसको कौन सा मेकेनिज़्म हम बनाएंगे। हम संसद सदस्य सोचें कि इसका क्या रास्ता होगा। जिस तरीके से आज मनरेगा के नाम पर इरीगेशन डिपार्टमेंट को दे दिया जाएगा, फॉरेस्ट को दे दिया जाएगा। जून में जहां मानसून नहीं आता, पहली जुलाई से फॉरेस्ट का मानसून सत्र शुरू होता है। वन महोत्सव में वन मंत्री रहा हूं, एक से सात जुलाई होता है और करोड़ो रुपए फॉरेस्ट डिपार्टमेंट मनरेगा का फॉरेस्टेशन में खर्च कर देता है। आज इसीलिए 14 परसैंट कुल फॉरेस्ट है, रिमोट सेंसिंग से 21 परसैंट कह दीजिए। आज इकोलोजिकल बैलेंस भी बिगड़ रहा है। ये मेकेनिज़्म, कि आज मनरेगा हम रोजगार की गारंटी के लिए पैसा दे रहे हैं। किसी का दबाव पड़ गया।...(व्यवधान) बहुजन समाज पार्टी की सरकार थी।...(व्यवधान) जिला परिषद अध्यक्ष कलेक्टर से दबाब डाल करके डेढ-डेढ करोड़ रुपए उन्होंने इरीगेशन को दिला दिया। तीन बार कम से कम पांच करोड़ रुपया दिलाया। क्या उसकी सीबीआई जांच होगी? मैं शैलेन्द्र जी से कहता हूं कि उसकी जांच कराइए, दूध का दूध, पानी का पानी हो जाएगा। ये जनता की गाढ़ी कमाई का पैसा है। हम रोजगार देने की गारंटी देते हैं कि हिन्दुस्तान के एक-एक नौजवान को रोजगार मिलेगा। ...(व्यवधान) धनंजय जी, मैं सत्य कह रहा हूं। ...(व्यवधान) नाम नहीं लेना चाहिए, जिसने यह काम किया। लेकिन मैं कह रहा हूं,...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय: आप सुझाव दीजिए।

श्री जगदम्बिका पाल: उपाध्यक्ष महोदय, आप झारखंड की स्थिति को जानते हैं कि कंवर्जन के नाम पर जो मनरेगा का पैसा जा रहा है, वह सीधे मजदूर को भी नहीं मिल रहा। जेसीबी मशीन से राज्यों में काम हो रहा है। आज ठेकेदार

काम कर रहे हैं, शैलेन्द्र जी, इसको कैसे रोका जाए, यह चिन्ता का विषय है। हम लोगों को जनता चुन कर भेजती है, हमारी जनता के प्रति जवाबदेही है। क्या आप कोई मेकेनिज़्म बनाएंगे? राज्य सरकार को हमने पैसा दे दिया, ये राज्य सरकार का दायित्व हो गया। आपसे हम कहते हैं तो आप कहते हैं कि यूसीओ भेजें।...(व्यवधान) सोशल ऑडिट कराएं। ...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय: उसको ठीक करने के लिए क्या होना चाहिए, यह आप एक लाइन में बता दीजिए।

श्री जगदम्बिका पाल: मैं समझता हूं, आपने कहा कि जो चीजें हो रही हैं, उससे हम सब सहमत हैं। आज मनरेगा पर जो सवालिया निशान लग रहा है, इस सवालिया निशान को हटा करके, इस महत्वाकांक्षी योजना, चाहे हम किसी पार्टी से ताल्लुक रखते हों, हम सब की प्रतिबद्धता है कि देश के गांवों के उस बेरोजगार को, नौजवान को सौ दिन का रोजगार मिल सके। मैं कहता हूं कि एक ऐसा मेकेनिज्म, कि हम डेढ़ सौ दिन की माग करें, उसके बजाए सौ दिन के काम का, इस तरीके के प्रोजेक्ट तैयार हों, कि वह सौ दिन का काम हो। जिस तरह से 60-40 की बात हो रही है, बेसिकली बुनियादी तौर से ये बना था कि हम मजदूरी देंगे। इसलिए 60 परसैंट मजदूरी था और 40 परसैंट मेटिरियल कम्पोनेंट था। लेकिन गांव में कितनी बार तालाब खुदवाएंगे, कुंआ बनवाएंगे।...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय: जगदम्बिका जी, आप सुझाव देकर अपनी बात को खत्म कीजिए।

...(व्यवधान)

श्री जगदिम्बिका पाल: धनंजय जी, मैं आपकी बात से सहमत हूं, आप मेरी बात से सहमत हों कि आज उन स्थाई परिसम्पत्तियों को सृजन करने का काम करना चाहिए, यह मेरा सुझाव है। राज्य सरकार को जो दोषी हैं, जिस तरह से नेक्सस हो गया, उनको जिलों में एक एकाउंटेबल नोडल ऑफिसर बना करके, स्टेट पर टॉस्क फोर्स बना करके, इसकी चैकिंग करा कर जो भ्रष्टाचार में लिप्त हैं, उनके खिलाफ कठोर से कठोर कार्यवाही करनी चाहिए। ...(व्यवधान) कुछ जनपदों की सीबीआई जांच करा दीजिए। यही मेरा सुझाव है।

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन (भागलपुर): उपाध्यक्ष जी, मैं आपको धन्यवाद देता हूं कि आपने मुझे बोलने का अवसर दिया। मैं लंबी तकरीर नहीं करूंगा, क्योंकि मैं कम शब्दों में बड़ी बात कहने के लिए खड़ा हुआ हूं। ...(व्यवधान) पाल साहब, कई बार मुझे टेलीविजन पर मिल जाते हैं, उनसे सवाल-जवाब होता है।

उपाध्यक्ष जी, मैं अपनी कांस्टीच्युएंसी में जब मनरेगा की योजना देखने जाता हूं तो दुःख होता है। मनरेगा योजना जो बनी है, जिसकी पाल साहब बहुत तारीफ कर रहे थे, वह कह रहे थे कि पहली बार इस सरकार ने किया। जो काम नेहरू जी ने नहीं किया, इंदिरा जी ने नहीं किया, राजीव जी ने नहीं किया, वह काम मनमोहन सिंह जी ने कर दिया। ...(व्यवधान) राहुल जी के लिए भी कुछ छोड़ नहीं रहे हैं। पाल साहब बोल रहे थे, तो जब किसी भी सरकार के लिए कहते हैं तो यह भूल जाते हैं कि इंदिरा जी जैसी वरिष्ठ नेता इस देश की प्रधानमंत्री रही हैं। राजीव गांधी जी ने देश के लिए सपना देखा। ...(व्यवधान) मनमोहन सिंह जी आपको मंत्री भी नहीं बना रहे हैं और आप उनकी इतनी तारीफ किए जा रहे हैं। ...(व्यवधान) इतने सीनियर आदमी की उपेक्षा अलग से हो रही है।

उपाध्यक्ष महोदय: मनरेगा पर कहिए।

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : उपाध्यक्ष जी, जो मनरेगा योजना बनी, यह चुनाव के पहले बनी, यह बहुत अच्छी योजना है। इस पर बड़ी जांच की भी बात हो रही है। सीबीआई इंक्वायरी की बात हो रही है। जब सीबीआई की खुद ही क्रैडिबिलिटी नहीं है तो वह इंक्वायरी क्या करेगी? सीबीआई इंक्वायरी अब एक फैशन हो गया है। हर बात में सीबीआई इंक्वायरी की बात होती है। सीबीआई इंक्वायरी तो आप करायेंगे। सीबीआई आपके कंट्रोल में है, यह तो हमें मालूम हैं, कैसे कंट्रोल करते हैं, यह बताने का समय नहीं है। ...(<u>व्यवधान</u>) सवाल यह है कि जो मनरेगा योजना बनी थी, वह नौजवानों को रोजगार देने के लिए बनी थी। उनको रोजगार तो मिल नहीं रहा है, रेलवे में नौकरी देनी थी, वह नौजवानों को रोजगार देने के लिए बनी थी। उनको रोजगार तो मिल नहीं रहा है, रेलवे में नौकरी देनी थी, वह नहीं दे रहे हैं, सरकारी नौकरियों में दस लाख पोस्ट्स खाली हैं। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति के लोगों की नौकरी खाली है, वह उनको नहीं दे रहे हैं। मनरेगा की योजना बनायी, देश की इकॉनामी की हालत क्या है, उस पर अलग से चर्चा बजट में हुकुम देव बाबू करेंगे। मैं आपके सामने कहने के लिए खड़ा हूं कि जो मनरेगा योजना है, मैं भागलपुर में गया था, दियारा के क्षेत्र में, बाखड़पुर, खवासपुर एरिया में देखा कि जो प्रधानमंत्री सड़क योजना से रोड बनी है, उसके बगल में नाली खोद दिया और प्रधानमंत्री ग्राम सड़क की रोड पर मिट्टी लाकर रख दिया। वह बना हुआ रोड भी चलने लायक नहीं है। आप मनरेगा को पॉजीटिव काम में जोड़िए। आपने कहा कि इसे रेलवे से जोड़ेंग। मनरेगा में जो मिट्टी का काम है, सांसद निधि से हम अगर पांच लाख रूपए की कोई रोड बनाते हैं तो उसके अंदर मिट्टी डालनी पड़ती है, फिर ईंट डालनी पड़ता है, फिर उस पर सी.सी. रोड डालना पड़ता है। बिहार में पी.सी.सी. कहते हैं, यूपी में शायद सी.सी. रोड कहते हैं।(<u>व्यवधान</u>) हम लोग उसको थोड़ा अग्रेड़ कर देते हैं। हमारे यहां भी कहते हैं, यूपी में शायद सी.सी. रोड कहते हैं। ...(<u>व्यवधान</u>) हम लोग उसको थोड़ा अग्रेड़ कर देते हैं। हमारे यहां भी

08.03.2013 220

योजना का टेंडर होता है। जब एस्टीमेट बनता है, तो मिट्टी का एस्टीमेट बना देता है, फिर ईंट का बना देता है। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना से जो रोड बन रही है, क्या उसमें भी मनरेगा को जोड़ सकते हैं? एमपीलैड में अगर मिट्टी और ईंट का काम मनरेगा से हो जाए और उसके ऊपर हम छः इंच का सी.सी. रोड डाल दें, तो इस योजना का बहुत अच्छा उपयोग हो सकता है।

सांसद को आपने अधिकार दे दिया। आपने कहा कि सांसद अनुश्रवण सिमित का अध्यक्ष है। इतना बड़ा पद दे दिया, इससे यह लगा कि इसे लिखकर चलना चाहिए कि वह अनुश्रवण सिमित का अध्यक्ष है। कोई उसकी बात सुनने को तैयार नहीं है। पाल साहब की बात कोई और नहीं सुनता होगा, क्योंकि इनकी सरकार को समाजवादी पार्टी समर्थन दे रही है, तो यह वहां हल्ला भी नहीं कर सकते है। ...(व्यवधान) यह वहां हल्ला करेंगे तो यहां गड़बड़ होगी। ...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय: मनरेगा पर बोलिए। इधर-उधर क्यों चले जाते हैं?

...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : आप बैठ जाइए।

...(व्यवधान)

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन: उपाध्यक्ष महोदय, बिना रस का क्या कोई भाषण होता है? मैं थोड़ा-थोड़ा रस इसमें डाल रहा हूं। ...(व्यवधान) मैं बड़ी जिम्मेदारी से कहता हूं कि मैं ठोस सुझाव देने के लिए खड़ा हुआ हूं। मैंने देखा कि इस पर चर्चा हो रही है और आप आसन पर हैं। ...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय: आप पांच मिनट में समाप्त कीजिए।

...(व्यवधान)

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन: महोदय, मैं बड़ी जिम्मेदारी से कहता हूं कि मनरेगा की योजना ऐसी नहीं है कि कांग्रेस के दफ्तर से कोई चंदा का पैसा आप बांट रहे हैं। यह देश के टैक्स पेयर की मनी है। आप सरकार में आए हैं। आपको उसे खर्च करने का अधिकार मिला है। इसका मतलब यह नहीं है कि आप उसे देश में औने-पौने बहा देंगे, भ्रष्टाचार हो जाएगा। इसमें जिम्मेदारी आपकी है। ...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय: आप इधर देखकर बोलिए।

...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय: दोस्ती इतनी गहरी नहीं होनी चाहिए।

...(व्यवधान)

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : महोदय, मैं चाहता हूं कि वह ग्रामीण विकास मंत्री बन जाएं, उनको चांस ही नहीं मिल रहा है। आज मैं बड़ी जिम्मेदारी के साथ कहना चाहता हूं कि मनरेगा कि योजना बनाई गई, आज वाटर लेबल नीचे जा रहा है, हम अपने क्षेत्र में जाते हैं, वहां कुआं सूख रहा है, ट्यूब वेल सूख रहा है, तालाब सूख रहा है। आप कुआं और तालाब बनाइए। मिट्टी में नाली खोदने की योजना पर तुरंत पाबंदी लगनी चाहिए, नाली का निकास नहीं है। गांव में नाली खोद देते हैं और गंदा पानी जमा हो जाता है जिससे बीमारी हो जाती है। मैं आपके माध्यम से यह अनुरोध करना चाहता हूं कि आप बड़े-बड़े तालाब खोदिए, कुआं खोदिए। जो नदी है उस नदी के अंदर पानी कहीं से कहीं बह कर जा हमाने देखा है कि आज हमारे यहां बालू का उठान हो जाता है। हमारे यहां भागलपुर में बालू का उठान हो गया। नदी में पानी कम है। मैं भागलपुर की भाषा में कहूं तो लोग कहते हैं कि छिटका बनवा दीजिए। यदि मनरेगा के पैसा से छोटे-छोटे चेक डैम्स बना दिए जाएं तो उसका उपयोग होगा। मनरेगा के अंदर आप उपलब्धि मत मानिए। देश के इतिहास में आपको माफ नहीं किया जाएगा। आप मनरेगा पर हजारों करोड़ रुपया देने का यहां पर नारा दे रहे हैं और देश का हजारों करोड़ रुपया बर्बाद करने के लिए, इतिहास में लिखा जाएगा कि एक ऐसी सरकार थी जिसने ऐसी योजना बनाई जिसमें देश का हजारों करोड़ रुपया इधर-उधर बर्बाद हो गया। अगर आप योजना बना रहे हैं तो हमलोगों से थोड़ा सलाह ले लीजिए। आप सत्ता में हैं। आपको तो सुझाव ही नहीं चाहिए।...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय: कृपया आप अपना सुझाव दीजिए।

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन: मैं अपनी बात दो मिनट में समाप्त कर रहा हूं। आप इस योजना का सदुपयोग कीजिए। इस योजना को देश के हित में काम करने के लिए कीजिए। जो सुझाव यहां पर आएं हैं, पाल साहब सरकार में हैं, फिर भी इतना सुझाव देते रहते हैं। आप पाल साहब की भी बात मान लें। क्योंकि कांग्रेस में अब वह डेमोक्रेसी नहीं है कि वह अपने सांसदों से पूछे कि क्या-क्या करना चाहिए। आप मंत्री लोग बैंठते हैं तो सांसदों से भी फीड बैक लीजिए कि क्या सलाह चाहिए। हम सरकार कैसे चलाएं? हमारी हालत ऐसी खराब क्यों हो रही है? इतनी बड़ी-बड़ी योजना बनाते हैं फिर गुजरात में चुनाव क्यों हारते हैं। इस पर ये लोग सही-सही सलाह देंगे। बढ़िया-बढ़िया काम करिए तो राजनीति में आपको आगे बढ़ने का मौका मिलेगा। देश के लोगों ने आपको सत्ता दिया है और अगर आप लोगों को जो सत्ता मिला है उसका सदुपयोग नहीं किया, आपने देश के हित में काम नहीं किया तो वर्ष 1991 के बाद आप वर्ष 2004 में सरकार में आए हैं, फिर लंबा सूखा पड़ने वाला है। आप सत्ता में आने वाले नहीं हैं। मैं यह बात आपको बता देना चाहता हूं। सत्ता में कौन आएगा, यह जनता तय करेगी। इसका आप सही उपयोग करेंगे। ...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : कृपया आप अपनी बात समाप्त करें।

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन: उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपका धन्यवाद भी करना चाहता हूं कि इतने बिढ़या विषय पर चर्चा हो रही है। मुझे आपको आसन्न पर देख कर प्रोत्साहन मिला। मैंने हुकुमदेव जी से वादा किया है कि बगल में घर

है, शाम में आ कर यहां पर बैठा करेंगे। बिढ़या विषय पर बोलने के लिए जो मौका मिलता है इसे याद रखूंगा और मैं आपके जिए मंत्री जी को सुझाव देना चाहता हूं कि मनरेगा कि योजना में ज्यादा कुछ नहीं करना है। ये जो अधिकारी हैं इनको ज्यादा कुछ पता नहीं होता है। ये अच्छी अंग्रेजी बोलते हैं, आप इम्प्रेस हो जाते हैं। सांसदों से पूछिए जो जमीन से चुनाव जीत कर आते हैं। दादा जी की भी अंग्रेजी अच्छी है लेकिन वे जमीन वाले आदमी हैं। कुछ हम लोगों से सुझाव लीजिए और सांसदों के सुझाव के आधार पर ग्रामीण विकास मंत्री एक मीटिंग बुलाएं, हम लोगों से सुझाव लें। सुझाव हमारा और राज्य आप करेंगे। अगर आप सुझाव भी नहीं सुनेंगे तो कुछ होने वाला नहीं है।

उपाध्यक्ष जी मैं फिर से आपको धन्यवाद करते हुए, उम्मीद करता हूं कि मनरेगा में भ्रष्टाचार को दूर करने के लिए यह सरकार कोई काम करेगी और हमारी बात इधर से सुन कर उधर नहीं निकलेगी। बात निकली है तो दूर तक जाएगी। यह मैं आपसे उम्मीद करता हूं।

ग्रामीण विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री प्रदीप जैन): माननीय उपाध्यक्ष जी, एक बहुत अच्छा विषय है। इस पर हमारे साथी हंसराम गंगाराम अहीर जी ने विधेयक रखा है, जिस पर हमारे 12 माननीय सदस्यों ने विचार रखे। विचार ब्रह्माण्ड की सबसे बड़ी ताकत है। निश्चित रूप से मैंने देखा कि चाहे हमारे सत्ता पक्ष के लोग हों या विपक्ष के लोग हों, सारे लोगों ने इस अधिनियम की तारीफ की है। उस समय हम लोगों की प्रसन्नता और बढ़ जाती है जब हमारे देश के विपक्षी दल के नेता, भारतीय जनता पार्टी के आडवाणी जी यूएनओ जाकर महात्मा गांधी नरेगा की तारीफ करते हैं।...(व्यवधान) निश्चित रूप से यूपीए चेयरपर्सन श्रीमती सोनिया गांधी और प्रधान मंत्री डा. मनमोहन सिंह ने...(व्यवधान)

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन: आडवाणी जी कंट्री के बिहाफ पर गए थे।...(व्यवधान)

श्री प्रदीप जैन: उपाध्यक्ष जी, मैं कोई भी बात गलत विले रहा हूं और यह पूरा रिकार्ड में है।...(व्यवधान) हम चाहे हिमाचल से आए हुए कश्यप जी को देखें, चाहे दूसरे साथियों को देखें, कश्यप जी ने कहा, प्रश्न का जवाब भी हमारे साथियों ने दिया। उन्होंने कहा कि फैंडरल स्ट्रक्चर में अगर स्टेट का चीफ मिनिस्टर स्टेट को सही ढंग से चला रहा है तो उस स्टेट में महात्मा गांधी नरेगा गांव के अंतिम परिवार को मुख्य धारा से जोड़ने का कार्य कर रहा है। यह बहुत सारे मंथन मैंने इसी सदन में सब सदस्यों से सुने। वहीं जब भोला सिंह जी ने यह बात कही तो मेरे मन में विचार आया कि बिहार के अंदर सुशासन का दावा करने वाले मुख्य मंत्री जी को चाहिए, क्योंकि हमारा देश फैंडरल स्ट्रक्चर से चलता है, हमारा संघीय ढांचा है, एक केन्द्र की ताकत है और दूसरी राज्य की ताकत है। जिस राज्य का मुख्य मंत्री अपने सांसद को इतनी शक्ति नहीं दे सकता कि वह उन्हें वह सारी जानकारी उपलब्ध कराए जो महात्मा गांधी नरेगा में कार्यों से संबंधित है, तो यह विचारणीय प्रश्न है।

भारत सरकार, यूपीए चेयरपर्सन श्रीमती सोनिया गांधी, प्रधान मंत्री डा. मनमोहन सिंह ने जब वर्ष 2006 में इस कानून को देश के दो सौ जिलों में लागू किया था, तो उसका प्रभाव हुआ। उसके पश्चात् वर्ष 2007 और 2008 में 130 जिलों में उसे लागू किया गया और अब देश के पूरे जिलों में, जहां ग्रामीण आबादी है, यह कानून लागू है। इस कानून के अंदर हमारे देश के सात लाख से ज्यादा गांव, दो लाख पचास हजार से ज्यादा ग्राम पंचायतों के ग्यारह करोड़ परिवारों को रोजगार मिल रहा है।...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय: मंत्री जी को बोलने दीजिए।

...(व्यवधान)

श्री प्रदीप जैन: हमारे साथी हंसराज गं. अहीर जी ने जो विधेयक रखा, क्योंकि यह एक डिमांड ड्रिवन स्कीम है, इस स्कीम के अंदर देश में जो अतिरिक्त रोजगार है, हमारे देश के अधिकांश लोग कृषि पर निर्भर हैं, गांव के लोग माइग्रेट नहीं करें, गांव में रहकर ही उन्हें ग्राम पंचायत के माध्यम से काम मिले, बेरोजगारी भत्ता मिले, सोनिया जी और प्रधान

मंत्री डा. मनमोहन सिंह ने उसके लिए इस कानून का निर्माण किया। इसमें बहुत सारे सुझाव आए हैं। राय साहब ने बहुत अच्छा सुझाव दिया, शैलेन्द्र भाई ने बहुत अच्छा सुझाव दिया, असम के सिंह साहब ने बहुत अच्छा सुझाव दिया। ... (व्यवधान) इसके बाद आपका और शाहनवाज भाई ने जो कहा, हमने प्रयास भी किया। निश्चित रूप से जो प्रश्न और उत्तर है, बहुत से उत्तर हमारे एक सांसद ने दूसरे सांसद को दिए। इस एक्ट की जो मूलभूत भावना है, इस एक्ट में बहुत सारी धाराएं नहीं हैं, केवल 34 धाराएं हैं। इसका प्रीएम्बल है कि किसी भी गांव के अर्ध कुशल श्रमिक को सुनिश्चित रूप से रोजगार मिले। जब रोजगार मिलना है तो बहुत से विचारों के मंथन के बाद सामग्री और श्रमिक की मजदूरी में एक परसेंटेज फिक्स की गई। जैसे आपने अभी अपने बीकानेर की समस्या उठाई। चूंकि भ्रष्टाचार की बहुत सारी शिकायतें आती थीं। कई राज्यों में सीबीआई जांच हुई। कई राज्यों में हम लोग मांग कर रहे हैं और हमें उम्मीद है। उत्तर प्रदेश में भी पिछली सरकार के समय कुछ जिलों के अंदर जो गड़बड़ी थी, उस संबंध में हमारे माननीय मंत्री जी ने पत्र लिखा था। चाहे राज्य हो या केन्द्र, दोनों की ही जिम्मेदारी है कि योजनाएं पारदर्शी रूप से, ईमानदारी से प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचे और हमें उम्मीद है कि उत्तर प्रदेश से भी हमें वह अनुमति मिलेगी। मैं इसलिए यह बात कहना चाहता हूं कि हमारे मेघवाल जी का आशय था कि जो आरयूवी बने, क्योंकि हम क्येंंने जो परसेंटेज मेनटेन किया है, वह ग्राम पंचायत लैवल पर इसलिए किया है, ताकि गांव के व्यक्ति अपनी जो योजना बनायें, उनके ऊपर कोई बंदिश न हो कि हम बाहरी दबाव से करें, क्योंकि पूरे राज्यों ने आज पंचायती राज्य को स्वीकार किया है। हम जितने भी सांसद हैं, हम सबका लक्ष्य है। अगर हम देखें, हम देश की सबसे बड़ी महापंचायत में हैं, तो ग्राम प्रधान भी देश की सबसे बड़ी महापंचायत में है। उसे सशक्त करना, हमने और आप सबने पढ़ा होगा कि हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अपने सुप्रसिद्ध जंतर में कहा था कि जब भी मैं किसी पीड़ित अंतिम व्यक्ति की आंखों की तरफ देखता हूं, उसके चेहरे की बेबसी और उदासी की तरफ देखता हूं, मेरे मन में एक समाधान के भाव उत्पन्न होते हैं और यह योजना उस अंतिम व्यक्ति के समाधान के लिए बनी थी। वह अंतिम व्यक्ति ग्राम पंचायत के अंदर रहता है। वह परसेंटेज गांव में निर्माण के लिए आरयूवी में नहीं हो सकता।

माननीय उपाध्यक्ष जी, निश्चित रूप से बहुत सारे सुझाव आये हैं। मैं कहना चाहता हूं कि हमारे पूर्व मुख्य मंत्री सम्मानित श्री जगदम्बिका पाल जी ने भी मौनीटरिंग की बात की। उन्होंने कुछ उदाहरण दिये जहां करण्शन हुआ। मैंने बताया, क्योंकि इम्प्लीमैंटेशन की भारत सरकार गारंटी देती है। आज कई राज्य ऐसे हैं, राजस्थान सरकार ने अपने राज्य के अंदर 50 दिन के अतिरिक्त रोजगार की व्यवस्था की है। हमारे महाराष्ट्र से साथी आते हैं, महाराष्ट्र की सरकार, भारत सरकार सौ दिन की गारंटी देती है। आज भी हम देखें, तो आठ फीसदी परिवारों ने सौ दिन का कार्य किया है। ... (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय: आप संक्षेप में अपनी बात कहिए।

...(व्यवधान)

श्री धनंजय सिंह (जौनपुर): उपाध्यक्ष महोदय, सभी सांसदों ने एक ही बात कही थी। ...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय: आप बीच में इंटरप्ट मत कीजिए। उन्होंने जवाब दे दिया है।

...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय: वे बोल रहे हैं कि सबकी सलाह मान रहे हैं।

...(व्यवधान)

श्री धनंजय सिंह: उपाध्यक्ष महोदय, वे सलाह कहां मान रहे हैं। ...(व्यवधान) जो काम लोगों ने कहा, कच्चा-पक्का काम का रेशियो था, उस रेशियो में बढ़ोतरी की बात थी। पक्के काम को बढ़ाने की बात थी। उस पर आप कोई एश्योरेंस सदन में दे ही नहीं रहे हैं। ...(व्यवधान)

श्री प्रदीप जैन: हमारे सम्मानित साथी ने जो बात रखी है, चूंकि यह एक एक्ट है और इस एक्ट में संशोधन नहीं हो सकता। यह एक अच्छा विषय है जिससे सब लोग जुड़े हैं। मैं अपने सम्मानित साथी से आग्रह करूंगा कि वे अपना विधेयक वापिस लेने की कृपा करें।

श्री हंसराज गं. अहीर (चन्द्रपुर): उपाध्यक्ष महोदय, मैं जिस विषय पर संशोधन विधेयक लाया था, उस पर मंत्री जी ने जवाब नहीं दिया। आपने आरोपों का जवाब देते समय बिल के मुख्य उद्देश्य पर जवाब नहीं दिया। मैं कह रहा था कि सौ दिन के रोजगार को साल भर में बदला जाये। हम एक दूसरा प्रस्ताव भी लाये थे कि परिवार के एक सदस्य को काम दिया जा रहा है, वह गलत है। जो सदस्य काम मांगेगा, उसे काम दिया जाये। उस पर आपने कुछ नहीं कहा। मैं इस बारे में थोड़ा बताना चाहता हूं कि इसमें भ्रष्टाचार कम होने के आसार हैं। गांव में हर परिवार काम पर नहीं जाता। एक गांव में 20-25 मकान होते हैं, जिनके सदस्य मजदूरी पर जा सकते हैं, मनरेगा पर काम में जाते हैं। उस परिवार में अगर आप एक व्यक्ति को काम देते हैं, तो 20-25 लोग ही काम पर जाते हैं। अगर अधिक से अधिक लोगों को काम दिया जाएगा तो ऐसे बोगस रजिस्टर नहीं बनेंगे। रजिस्टर पर बोगस नाम नहीं लिखे जायेंगे। असली आदिमयों को काम मिलेगा और उसमें भ्रष्टाचार नहीं होगा। आप इस पर गहराई से नहीं सोच रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्र का हर व्यक्ति काम नहीं मांग रहा है। इसलिए एक परिवार से एक ही व्यक्ति को काम दिया जायेगा, उसे आप रोकिए। हम उसके लिए मना कर रहे हैं। हमारा कहना है कि यह नहीं होना चाहिए. ...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय: आप संक्षेप में अपनी बात कहिए।

...(व्यवधान)

18.00 hrs.

श्री हंसराज गं. अहीर : दूसरी बात यह है कि मनरेगा में सौ दिन के रोज़गार में गारंटी शब्द क्यों दिया? गारंटी मत दो। महात्मा गांधी रोज़गार गारंटी योजना कैसे बन सकती है? इसमें सौ दिन के रोज़गार में गारंटी नहीं होनी चाहिए। इसलिए ये सौ दिन की जो शर्त है, वह निकाली जाए। इसमें आप बार-बार कह रहे हैं कि किसानों के प्रति भी ध्यान दिया है।

उपाध्यक्ष महोदय: संक्षेप में कीजिए।

श्री हंसराज गं. अहीर: मैं कह रहा हूं कि गांव में जो स्किल्ड वर्कर्स रहते हैं, उन्हें भी काम मिलना चाहिए। उनको काम नहीं मिल रहा है। इसलिए ज्यादा दिन का रोज़गार मिले और भ्रष्टाचार पर रोक लगाएं। इस बात को आप स्पष्ट करें, तो इस बात को मैं मान लूँगा।

श्री प्रदीप जैन: हमारे सम्मानित सदस्य की जो भावना है, उनकी जो नीयत और नीति है, उसको मैंने समझा है। मैं यह बताना चाहता हूं कि आपने दो बातों पर विधेयक लाया था। आज देश के सात लाख से ज्यादा गांव और ढाई लाख से ज्यादा ग्राम पंचायतों का, हम हर राज्य का यदि सारांश देखें, तो किसी भी राज्य ने पचास दिन से ज्यादा का रोज़गार नहीं दिया है।

उपाध्यक्ष महोदय: संक्षेप में बोलिए।

श्री प्रदीप जैन: देश में आठ फीसदी ही ऐसे लोग हैं, जिन्होंने उसके अंदर सौ दिन का काम किया है। जब 92 फीसदी लोग सौ दिन का काम नहीं कर रहे हैं, तो हम सौ दिन से ज्यादा इसे नहीं बढ़ा सकते। दूसरा जो जॉब-कार्ड है, उसमें परिवार में जितने व्यस्क सदस्य हैं, वे सारे उसमें कार्य कर सकते हैं। उसमें कोई प्रतिबंध नहीं है। मैं माननीय सदस्य से आग्रह करूँगा कि वे इसे वापस लें।

श्री हंसराज गं. अहीर: महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं कि महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण नियोजन गारंटी अधिनियम, 2005 का और संशोधन करने वाले विधेयक को वापस लेने की अनुमित दी जाए।

MR. DEPUTY-SPEAKER: The question is:

"That leave be granted to withdraw the Bill to amend the Mahatma Gandhi National Rural Employment Guarantee Act, 2005."

The motion was adopted.

श्री हंसराज गं. अहीर: मैं विधेयक वापस लेता हूं।

18.01 hrs.

SAFAI KARAMCHARIS INSURANCE SCHEME BILL, 2011

MR. DEPUTY-SPEAKER: The House shall take up Item no. 46. Shri Arjun Meghwal.

श्री अर्जुन राम मेघवाल (बीकानेर): महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं:

"कि सफाई कर्मचारियों को उनके कार्य के दौरान किसी दुर्घटना होने पर आर्थिक संरक्षण प्रदान करने, उनके हितों की रक्षा करने तथा उससे संबंधित मामलों के लिए एक व्यापक और अनिवार्य बीमा योजना का उपबंध करने वाले विधायक पर विचार किया जाए।"

महोदय, मैं आज बहुत ही महत्वपूर्ण विषय पर बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। समाज का सबसे कमजोर तबका
- सफाई कर्मचारियों को उनके कार्य के दौरान किसी दुर्घटना होने पर आर्थिक संरक्षण प्रदान करने, उनके हितों की
रक्षा करने तथा उससे संबंधित मामलों के लिए एक व्यापक और अनिवार्य बीमा योजना का का उपबंध करने वाले
विधेयक पर बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। आपने मुझे इसके लिए समय दिया है, उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद देता
हूं।

उपाध्यक्ष महोदय: मेघवाल जी, आप अभी बैठ जाइए, अगली बार आप इसको कंटीन्यू करेंगे।

श्री अर्जुन राम मेघवाल: धन्यवाद।

उपाध्यक्ष महोदय: अगर सभा की अनुमति हो तो सभा का जीरो आवर समाप्त होने तक बढ़ा दिया जाए।

कुछ माननीय सदस्य: जी हां।



श्री हुक्मदेव नारायण यादव (मधुबनी): उपाध्यक्ष महोदय, मैं एक महत्वपूर्ण विषय की ओर सदन और सरकार का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूं। देश भर में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना का जो निर्माण हो रहा है। ...(व्यवधान) उपाध्यक्ष महोदय: संक्षेप में बोलिए।

श्री हुक्मदेव नारायण यादव: प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना बहुत लंबी बन रही है, इसलिए बात थोड़ी लंबी हो सकती है। प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना का काम ठप्प पड़ा हुआ, जो राशि केंद्र से जानी चाहिए, वह नहीं जा रही है। दो साल से काम अधूरा पड़ा हुआ है, जो सड़कें बन रही थीं, उनके ईंट और खड़ंजे की खुदाई कर दी गयी, सड़क पर कीचड़ का अम्बार है, गांव वालों को बरसात में चलने में कष्ट हो रहा है। इस लिए उनको जल्दी से जल्दी पूरा किया जाए। बिहार में मधुबनी और दरभंगा में, अपने क्षेत्र में मैं जब घूमता हूं, तो प्रथम चरण में वर्ष 2002 में जो सड़कें बनी थीं, उनमें से आधी दर्जन सड़कें अधूरी पड़ी हुई हैं, पैसा बेकार गया। इसलिए प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना को युद्धस्तर पर पूरा कराने के लिए, जो अधूरे काम हैं, उनके लिए राशि केंद्र सरकार निर्गत करे और राज्य सरकारों के साथ समन्वय बनाकर उस योजना को पूरा करवाने में पूर्ण रूप से केंद्र सरकार सहयोग दे। केंद्र सरकार की उपेक्षा की नीति बर्दाश्त योग्य नहीं है, मैं उसकी निंदा करता हूं। केंद्र सरकार को ऐसा नहीं करना चाहिए, राज्य सरकारों को पूरी मदद देनी चाहिए, जिससे वह योजना पूरी हो सके।

श्री हंसराज गं. अहीर (चन्द्रपुर): उपाध्यक्ष जी, एक नेशनल हाइवे जो नागपुर से चन्द्रपुर की ओर जाता है, उस पर कुछ काम हो रहा था और कुछ काम हुआ है। वहां पर अवैध रूप से एक टोल प्लाजा बनाया गया है और एक निजी कंपनी वहां पर टोल वसूल कर रही है। इस अवैध टोल वसूली की वजह से चन्द्रपुर से नागपुर की ओर उस हाइवे पर चलने वाले सभी वाहनों, गाड़ियों और प्रवासियों को टोल पर बेमतलब रुपया देना पड़ता है। जो काम इस कंपनी ने किया नहीं, यह कार्य एनडीए सरकार के कार्यकात के किया गया था, वह कार्य गोल्डन नेशनल कॉरीडोर स्कीम के अंतर्गत किया गया था। उस कार्य को एनडीए सरकार ने पूरा किया। अब यहां ओरिएण्ट नाम की एक कंपनी ने उस रोड के बगल में हाइवे के लिए एक एप्रोच रोड एवं एक ब्रिज बनाया है, जिसमें उन्होंने 210 करोड़ रुपये का काम किया है। जिस रोड का उन्होंने निर्माण किया है, उस पर टोल प्लाजा लगाना चाहिए था, लेकिन उन्होंने उस रोड को छोड़कर, जो कार्य एनडीए सरकार के समय में पूरा हुआ है, उस पर टोल प्लाजा लगाकर लोगों से टोल वसूल कर रहे हैं। करीब 70 सं 80 लाख रुपये रोज वहां टोल के रूप में वसूल होते हैं। चन्द्रपुर से नागपुर की ओर जो गाड़ियां आती हैं, वहां सीमेंट, कोयला, स्टील आदि की इंडस्ट्रीज हैं। ये सारी चीजें जब वहां से आती हैं, तो करीब 80 लाख रुपये वहां रोज टोल वसूली अवैध रूप से होती है। उस रोड का काम उन्होंने किया ही नहीं है। वह काम एनडीए सरकार के समय में किया गया था। कोर्ट के असत्य एफिडेविट देकर ऐसा किया जा रहा है। पहले वे अवैध काम कर रहे थे, तो

हाईकोर्ट ने उस टोल प्लाजा को बंद कर दिया था। हाईकोर्ट द्वारा बंद किए जाने के बाद भी एनएचएआई के वरिष्ठ अधिकारियों ने उन्हें वहां टोल प्लाजा लगाने की अनुमित दी। यह बहुत गंभीर मामला है। मैं आपके सामने बहुत बड़ा भ्रष्टाचार का मामला रख रहा हूं। इसमें मैं एक लाइन भी गलत कहने नहीं जा रहा हूं।...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : आप क्या चाहते हैं?

श्री हंसराज गं. अहीर: महोदय, जो रोड उन्होंने बनाया नहीं है, उस पर वसूली जारी है। इसमें एनएचएआई के अधिकारी, डायरेक्टर, चेयरमैन, एमडी आदि जो भी लोग वहां हैं, उनकी मिलीभगत से यह किया गया है। यहां जितनी भी वसूली होती है, उसमें भ्रष्टाचार हो रहा है। मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि नागपुर और चन्द्रपुर, इन दो शहरों के बीच के इस रास्ते पर लूट हो रही है। इस लूट को रोकने के लिए आप सरकार से कहें। जब तक यह लूट रुकेगी नहीं, तब तक हम यह समझेंगे कि ...* उसमें मिले हुए हैं।...(व्यवधान) मैं मंत्री से मिला हूं।...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय: आप बात को लम्बा कर रहे हैं। किससे-किससे मिले, यह बताएंगे, तो पूरे दिन बात चलेगी, जीरो आवर का मतलब यह नहीं है। जीरो आवर का मतलब यह नहीं है कि एक घण्टे बोलिए।

श्री हंसराज गं. अहीर: महोदय, मैं सीपी जोशी साहब से मिला, उनको पूरी डिटेल्स दी हैं। उन्होंने अभी तक मुझे जवाब तक नहीं दिया है। मंत्री यहां नहीं हैं। मुझे जवाब नहीं दिया है। दो माह से मैं लिख रहा हूं। चार माह से वसूली हो रही है, वहां पर करीब 20 करोड़ रुपये हर महीने वसूलते हैं, अभी तक उन्होंने करीब 100 करोड़ रुपये वसूल किए हुए हैं और यह तीस साल तक चलने वाला है। 30 साल में करीब आठ से दस हजार करोड़ रुपये की यहां पर उगाही होने वाली है, भ्रष्टाचार होने वाला है। यह मैं आपको पेपर में दे रहा हूं। मैं लोक सभा में बोल रहा हूं। जिम्मेदारी से बोल रहा हूं।...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : आप क्या चाहते हैं?

श्री **हंसराज गं. अहीर :** इसे रोका जाए। यह टोल प्लाजा बंद किया जाए। यही मैं मांग करता हूं।

श्री अर्जुन राम मेघवाल (बीकानेर): महोदय, आपने मुझे बहुत ही महत्वपूर्ण विषय पर बोलने का अवसर दिया, इसके लिए आपको धन्यवाद देता हूं।

महोदय, राजस्थान सरकार ने वर्ष 2009 में एक खनिज नीति बनाई और खनिज सम्पदा के आवंटन के लिए उन्होंने कहा कि "पहले आओ, पहले पाऔं की नीति के आधार पर सैण्ड स्टोन के पट्टे के लिए आवंदन की मांग की थी। उसके तहत उनको 87 आवंदन पत्र प्राप्त हुए और उसमें यह शर्त थी कि पट्टा कम से कम पांच हेक्टेअर के लिए दिया जाएगा। वर्ष 2011 में राजस्थान खनन नीति में 50 प्रतिशत आरक्षित वर्ग को और 50 प्रतिशत खदानें नीलामी में दी जानी थीं। इसके साथ ही खदान का पट्टा कम से कम पांच हेक्टेअर के लिए देने की शर्त थी। 23

^{*} Not recorded as ordered by the Chair.

नवंबर, 2012 को मुख्यमंत्री ने कैंबिनेट में प्रस्ताव लेकर राजस्थान खनन नीति में संशोधन कर पांच हेक्टेअर की शर्त की जगह एक हेक्टेअर की शर्त कर दी गयी। उसमें यह शर्त जोड़ दी गई कि जोधपुर जिले के गांव बड़ेकोटेजा में खदान उसी को मिलेगी जिसका जोधपुर के लिए मंडोर स्टोन पार्क में सैंड स्टोन का कारखाना होगा। राजस्थान सरकार के इस संशोधन का पूरा लाभ राजस्थान के...* को गया। 87 आवेदनों में से 50 आवेदक इस शर्त के साथ बाहर हो गए। बाकी बचे 37 आवेदनों में से 17 राजस्थान के ... * को गए।...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय: एलीगेशन नहीं लगाना है, नाम लेकर एलीगेशन नहीं लगाना है।

श्री अर्जुन राम मेघवाल : उन लोगों को खानें <u></u>टित हो गईं। राजस्थान सरकार के मुख्य मंत्री संवैधानिक पद पर हैं।

उपाध्यक्ष महोदय: जो नाम लिया गया है, उसे डिलीट कर दिया जाए।

श्री अर्जुन राम मेघवाल: मैं उसी पर आ रहा हूं।

उपाध्यक्ष महोदय: सीधे आइए, आप क्या चाहते हैं, वह बोलें।

श्री अवतार सिंह भडाना (फ़रीदाबाद): सुप्रीम कोर्ट में मामला है, सीसी कमेटी जांच कर रही है।

उपाध्यक्ष महोदय: ठीक है, उन्हें बोलना था, बोल दिया, आपको जवाब नहीं देना है। जवाब देने का काम सरकार का है।

श्री अर्जुन राम मेघवाल: राजस्थान के मुख्य मंत्री संवैधानिक पद पर हैं। मैं भारत सरकार के गृह मंत्री जी से मांग करता हूं कि इसकी सीबीआई जांच होनी चाहिए और जिन्हें खानें आबंटित हुई हैं, वे रद्द होनी चाहिए।

उपाध्यक्ष महोदय: श्री राजेन्द्र अग्रवाल और श्री वीरेन्द्र कश्यप, श्री अर्जुन राम मेघवाल द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को सम्बद्ध करते हैं।

श्री जगदिम्बिका पाल (डुमिरियागंज): उपाध्यक्ष जी, मैं आपका आभारी हूं कि आपने मुझे एक लोक महत्व के विषय को उठाने का यहां मौका दिया। इस विषय की प्रासंगिकता इसिलए और बढ़ जाती है कि आज मेरा जो यह विषय स्वीकार हुआ है, सौभाग्य से आज अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस है और सदन में भी माननीय सदस्याओं, स्पीकर साहिबा और अन्य सदस्यों ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर महिलाओं की सुरक्षा और सशक्तिकरण का संकल्प लिया है। भारत के महामहिम राष्ट्रपति महोदय आज राष्ट्रपति भवन में आज उस निर्भया को स्त्री शक्ति के रूप में उसके साहस का सम्मान कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर अमेरिका में मिशेल ओबामा जो वहां की प्रथम महिला हैं, वह भी उस निर्भया के साहस को सम्मानित कर रही हैं।

उपाध्यक्ष महोदय: आपको क्या कहना है, यह बताएं।

 st Not recorded as ordered by the Chair.

-

श्री जगदम्बिका पाल: मैंने विषय शुरू किया है। उस 16 दिसम्बर की घटना ने पूरी दुनिया और हमारे देश को सोचने के लिए बाध्य कर दिया है कि आज महिलाओं की सुरक्षा, सशक्तिकरण समाज के लिए आवश्यक-आवश्यक अंग है, वहीं दूसरी तरफ 16 दिसम्बर के बाद आज भी लगता है कि जैसे दिल्ली पुलिस की व्यवस्था नहीं बदली है। एक महिला पत्रकार के साथ देश की राजधानी इसी दिल्ली की सड़कों पर छेड़खानी हुई और उसे 15 घंटे लगे पुलिस में रिपोर्ट दर्ज कराने में, क्योंकि 15 घंटे तक उसकी रिपोर्ट नहीं लिखी गई। आज भी उस घटना के बाद जिस दिल्ली में या जस्टिस वर्मा की रिपोर्ट बने और आज भी 96 प्रतिशत महिलाएं अपने को यहां असुरक्षित महसूस करें तो हमें निश्चित तौर से इस विषय पर सोचना होगा। पिछले 145 दिनों में अगर 141 बलात्कार की घटनाएं होती हैं।

उपाध्यक्ष महोदय: आपकी सरकार से क्या मांग है, यह बताएं।

श्री जगदम्बिका पाल: मेरी सरकार से मांग है कि कम से कम देश की इस राजधानी को जिस तरीके से एक घटना ने हम लोगों को उद्वेलित कर दिया, उन महिलाओं की सुरक्षा के लिए पुलिस को जवाबदेह बनाया जाए। उनकी जवाबदेही हो कि राजधानी की महिलाएं सुरक्षित हों। दूसरी तरफ जो कोख के कातिल हैं, जो भ्रूण हत्या करते हैं। उपाध्यक्ष महोदय: इसका इस विषय से कोई सम्बन्ध नहीं है। आप दो विषय उठा रहे हैं, जबकि आपको एक ही विषय पर बोलना है।

श्री जगदम्बिका पाल: एक ही विषय है। आज कारण क्या है कि 1000 लड़को पर 866 लड़रिकयां हैं। यह भी एक महत्वपूर्ण कारण है। चाहे महाराष्ट्र हो, उसमें 1000 लड़कों पर 837 लड़िकयां हैं। यू.पी. में 1000 लड़कों पर 832 लड़िकयां हैं। इस तरीके से जो यह प्रतिशत घटा है, मैं समझता हूं कि इस तबको को सुरक्षा मिलनी चाहिए।

SHRI RAMEN DEKA (MANGALDOI): Thank you, Mr. Deputy Speaker, Sir. I rise here to raise a very important issue of my constituency Mangaldoi, Assam. Udalgiri, Darrang and Kamrup rural districts fall in my constituency and NH-52 pass through my constituency which connects Arunachal Pradesh. Arunachal Pradesh is located in Indo-China border. North Kamrup, Darrang and Udalgiri fall in Indo-Bhutan border. The only connectivity is NH-52. The residents of border area do not have any accessibility to district Headquarters and sub-divisional Headquarters. The only lifeline is NH-52.

So, I would urge upon the Government to connect Udalgiri, Darrang and Kamrup districts falling in Indo-Bhutan border area by a border road which will give easy accessibility to sub-divisional and district Headquarters to the residents of the above-mentioned border areas.

It will help us to have a proper vigil of the border areas. These districts are located at strategic points and hence, there is a need for a proper connectivity from the point of view of both external and internal security. Hon. Minister, Shri Paban Singh Ghatowar is here. I think he will take note of it so that a border road is constructed which will give connectivity to the border areas. This is important from the defence point of view also because if a war breaks between China and India, only NH-52 is there to move the war equipment. There is no alternative route. So, we must have an alternative Highway which connects Arunachal Pradesh with Darrang so that our military personnel can make use of this.

उपाध्यक्ष महोदय: श्री अर्जुन राम मेघवाल, श्री राजेन्द्र अग्रवाल एवं श्री धनंजय सिंह जी को श्री रमेन डेका जी के विषय के साथ सम्बद्ध किया जाता है।

श्री नारायण सिंह अमलाबे (राजगढ़): उपाध्यक्ष जी, प्रत्येक व्यक्ति की हार्दिक इच्छा रहती है कि जीवन में गंगा रनान कम से कम एक बार किया जाए। प्रयागराज जोकि अब इलाहाबाद है, हिंदू धर्म में श्रद्धालुओं का सबसे पवित्र तीर्थ स्थान है। प्रयागराज संगम महाकुम्भ में रनान हेतु जाने वाले श्रद्धालुओं की स्थिति अत्यन्त दयनीय रहती है। ट्रेनों में पैर रखने की जगह नहीं मिलती है। महिलाएं एवं वृद्धजनों एवं बच्चों को अन्यंत्र जंक्शनों पर जाकर रेलगाड़ियां बदलनी पड़ती हैं। इलाहाबाद के लिए सीधी ट्रेन की मांग मेरे संसदीय क्षेत्र की जनता की बहुत पुरानी है। उज्जैन तथा इलाहाबाद दोनों ही सप्तपुरी के नाम से प्रसिद्ध तीर्थ नगरी हैं तथा दोनों को वाया गुना होकर जोड़ने की आवश्यकता है तािक मक्सी-गुना-माणिकपुर रेलखंड के दौरान पड़ने वाले स्टेशनों की जनता भी सीधे जुड़ सके। मक्सी-रुठियाई-गुना-मालखेड़ी-कटनी-माणिकपुर सेक्शन पश्चिम मध्य रेलवे का ही सेक्शन है जिसमें से रुठियाई से कटनी तक तो पूर्णतः विद्युतीकृत है तथा कहीं भी इंजन की दिशा बदलने की आवश्यकता नहीं है। पश्चिम मध्य रेलवे जोन में स्थित संसदीय क्षेत्र राजगढ़ सहित उज्जैन, देवास-शाजापुर तथा गुना संसदीय क्षेत्र के यात्रियों को सुविधा उपलब्ध करवाने हेतु इन रेल खंडों को जोड़ते हुए एक नवीन रेलगाड़ी रतलाम-उज्जैन से इलाहाबाद वाया मक्सी, ब्यावरा, रुठियाई, गुना, मालखेड़ी तथा कटनी होकर चलाया जाना अत्यंत आवश्यक है।

अतः आपके माध्यम से माननीय रेल मंत्री जी से विनम्र निवेदन है कि एक नवीन रेलगाड़ी रतलाम-उज्जैन से इलाहाबाद वाया मक्सी, ब्यावरा, रूठियाई, गुना होकर चलवाने की कृपा करें।

श्री शैलेन्द्र कुमार (कौशाम्बी): मैं माननीय संसदीय कार्य मंत्री जी से निवेदन करना चाहूंगा कि जो शून्य काल में सम्मानित सदस्य अपनी बात रखते हैं उन्हें मंत्रालय भिजवाकर इस पर कार्रवाई करवायें। उसी कड़ी में विगत पिछले वर्ष यह देखा गया है कि मनरेगा की धनराशि ग्राम पंचायतों को डायरेक्ट जाती है। क्षेत्र पंचायत, जिला पंचायत को

नहीं जा रही है जबिक केन्द्र की यह योजना है कि जिला पंचायत के अलावा यह राशि क्षेत्र पंचायतों में जाए। उपाध्यक्ष जी, आप भी जानते हैं कि जिला सतर्कता निगरानी समिति के सभी सम्मानित सदस्य अध्यक्ष हैं, लेकिन बार-बार वहां कहने के बावजूद भी उसका इम्प्लीमेंटेशन नहीं हो पाता। अभी माननीय मंत्री जी को भी मैंने इस बारे में कहा है। क्षेत्र पंचायत एक तरीके से विकास की कड़ी ग्रामीण क्षेत्रों में होती है। हमारे यहां दो स्तर पर व्यवस्था है, एक प्रधान जिसे डायरेक्ट धनराशि जाती है, दूसरा बीडीसी जो क्षेत्र पंचायत का सदस्य होता है वह बिल्कुल बेकार रहता है, निरीह और बेसहारा रहता है। उसके पास कोई काम नहीं रहता है। अगर यह धनराशि क्षेत्र पंचायत ब्लॉक स्तर पर जाए तो मेरे ख्याल से क्षेत्र पंचायत जो बीडीसी के सदस्य हैं वे काम कराएं, उनके हाथों में भी काम आयेगा और क्षेत्र का भी विकास होगा। इन्हीं बातों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं।

उपाध्यक्ष महोदय: श्री रवनीत सिंह एवं धनंजय कुमार जी को श्री शैलेन्द्र कुमार जी के विषय के साथ सम्बद्ध किया जाता है।

श्री पोन्नम प्रभाकर (करीमनगर): उपाध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बहुत गंभीर विषय पर बोलने का मौका दिया है, इसके लिए मैं आपका आभारी हूं। मैं समझता हूं कि जितने सदस्य सदन में बैठे हैं, वे इस विषय पर मुझे सपोर्ट करेंगे। मार्च महीना शुरू हो गया है और पूरे देश में पीने के पानी की दिक्कत शुरू हो चुकी है। विशेषकर आंध्रप्रदेश, तेलंगाना में भी पीने के पानी की बहुत तकलीफ हो रही है। भारत सरकार और राज्य सरकार की तरफ से यहां पीने के पानी के लिए जितने प्रोजेक्ट्स के लिए इनवेस्टमेंट करनी है, उतनी इनवेस्टमेंट नहीं की जा रही है, जिस कारण लोगों को बहुत दिक्कत हो रही है। पीने का पानी नार्म्स के आधार पर हर व्यक्ति को 140 लीटर मिलना चाहिए, लेकिन अभी केवल 70 लीटर पानी भी नहीं दे पा रहे हैं और इसमें भी क्वालिटी के पानी की बहुत कमी है। इस कारण बहुत लोग रोगग्रस्त हो रहे हैं। पानी में फ्लोराइड का भी बहुत प्रभाव है।

महोदय, मैं आपके माध्यम से सरकार से मांग करता हूं कि इस गंभीर विषय पर चर्चा करे और देश के सभी लोगों को स्वच्छ पानी के लिए ज्यादा से ज्यादा पैसा खर्च करके प्रोजेक्ट्स बनाए। यह सरकार की सोशल रिस्पोंसिबिलिटी है।

प्रो. सौगत राय (दमदम): महोदय, आज अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस है। आज सुबह इस सदन में हमने चर्चा सुनी, जिसमें माननीय अध्यक्ष महोदया, नेता प्रतिपक्ष, सम्माननीय गिरिजा व्यास और बहुत सारी महिला सदस्यों ने इस चर्चा में भाग लिया और कुछ पुरुष सदस्य, श्री शरद यादव जी ने भाग लिया। आज महिला दिवस है, इसलिए इस विषय पर मैसेज देना जरूरी है। मुझे कहना है कि हम सब लोगों ने तय किया कि अध्यक्ष जी की बात पर चलते हुए कि महिलाओं को सम्मान और सुरक्षा हम सुनिश्चित करेंगे। लेकिन अभी आप हाउस को देखिए, एक भी महिला सदस्य नहीं है, क्योंकि छः बज गए हैं और आज अखबार में एक सर्वे रिपोर्ट निकली है, टाइम्स आफ इण्डिया और दूसरे अखबारों में, कि

दिल्ली में 96 प्रतिशत महिला अपने को शाम ढलने के बाद सुरक्षित नहीं समझती हैं। यहां महिलाओं को सुरक्षा नहीं है। यहां जगदम्बिका पाल जी शासक दल बहुत विष्ठ सदस्य, एक कमेटी के चेयरमैन और भूतपूर्व मुख्यमंत्री हैं, उन्होंने भी इस बात को दोहराया है कि दिल्ली में महिलाएं सुरक्षित नहीं हैं। महिलाओं से छेड़छाड़ होने के बाद रिपोर्ट दर्ज कराने में 16 घण्टे लगते हैं। इस सर्वे में यह भी बताया गया कि काम की जगहों पर हासमेंट होता है, उसकी सुनवायी के लिए कोई इंतजाम नहीं है। 16 दिसम्बर की घटना बड़ी दुखद थी। जिसके बाद पूरी दिल्ली उबल पड़ी। पूरी दुनिया में आज निर्भय के नाम की चर्चा हो रही है। अमेरीका में भी उसकी हिम्मत की चर्चा हो रही है। फिर भी हमारी हालत सुधरी नहीं है। यह बहुत दुखद बात है कि अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर मुझे यह बोलना पड़ा। आपको पता होगा कि जो नया बिल आना था, सरकार जल्दबाजी में एक आर्डिनेंस लाई है। उसकी जगह बिल आना था और वह बिल क्या होगा क्योंकि इसको लेकर होम मिनिस्ट्री और लॉ मिनिस्ट्री का झगड़ा चलता रहता है जिसके कारण बिल फाइनल नहीं किया गया। इसलिए हम जानना चाहता है कि क्या यह सरकार महिलाओं को सुरक्षा देने के मामले में गंभीर है? मैं चाहता हूं कि महिलाओं के साथ जो भी घटनाएं घटती हैं, उन पर कार्रवाई की जानी चाहिए तािक हिन्दुस्तान की राजधानी दिल्ली में महिलाओं के खिलाफ ऐसी कोई घटना न घटे जो हम सबका सिर देश में और देश से बाहर शर्म से झुका देती है। यही मेरा कहना है।

डॉ. भोला सिंह (नवादा): उपाध्यक्ष महोदय, बिहार सर्वधर्म समभाव की मां है परंतु बिहार चीनी उद्योग के क्षेत्र में पिछड़ गया है। वहां अंग्रेजों के जमाने में 42 चीनी मिल के कारखाने थे और आज वहां मात्र 8 कारखाने बचे हुए हैं। उत्तर बिहार में पूर्वी पश्चिमी चम्पारण, सीतामढ़ी, मुजफ्फरपुर इत्यादि सारे हिस्सों में चीनी के कारखाने थे। मैं जिस नवादा से आता हूं, वहां पर वार्शलेगंज में चीनी का कारखाना था। उस चीनी के कारखाने में उस समय की महारानी विक्टोरिया वार्शलेगंज के चीनी मिल की चीनी खाया करती थीं। उतना स्वाद, उतनी बढ़िया चीनी दूसरी जगह प्राप्त नहीं होती थी लेकिन आज चीनी के कारखाने नहीं रहने के कारण हजारों किसानों की जिन्दगी में तुषारापात हो गया है।

उपाध्यक्ष महोदय, आज भी जिस गाड़ी से उपज का उठान किसान करते हैं, वे उसकी आज भी पूजा किया करते हैं। आज भी उस चीनी के कारखाने की मशीन के सामने जाकर इस आशा से हूक दिया करते हैं कि उनकी जिन्दगी में भी बहार आएगी और ये चीनी के कारखाने खुलेंगे। ये कारखाने इसलिए बंद हैं कि बिहार सरकार ने केन्द्र सरकार के पास प्रस्ताव भेजा कि अभी जो चीनी के कारखाने हैं और जब तक इथनॉल का उत्पादन नहीं होगा, तब तक वह वॉयबल नहीं है। इसलिए इथनॉल के उत्पादन की अनुज्ञप्ति दी जाए। इसी सदन में हमारे कृषि मंत्री श्री शरद पवार ने घोषणा की थी कि यद्यपि वे नहीं चाहते हैं लेकिन बिहार का जो प्रस्ताव है, उस प्रस्ताव को ध्यान में रखते हुए हम उन्हें अनुज्ञप्ति देने पर विचार करेंगे। मैं आपके माध्यम से सरकार से मांग करना चाहता हूं कि चीनी के कारखाने

वार्शलेगंज में नहीं रहने के कारण 30-30, 40-45 साल की लड़िकयां वहां कुंवारी हैं। उनकी शादियां नहीं हो पा रही हैं और बच्चों की पढ़ाई में भी बाधा हो रही है। इस कारण से वहां की जिन्दगी काफी मुसीबतग्रस्त और बेपनाह है। वहां पर कई तरह की दुर्भावनाएं और कई तरह की हिंसक घटनाएं हो रही हैं। लोग बेरोजगार हैं। इसलिए मैं आपके माध्यम से भारत सरकार से मांग करता हूं कि बिहार सराकार का जो चीनी के कारखाने खोलने के संबंध में इथनॉल को अनुज़प्ति देने से संबंधित जो प्रस्ताव है, भारत सरकार उस पर विचार करे और इथनॉल की अनुज़प्ति दे तािक नवादा और बिहार में फिर से खुशियां आ सके और बहार आ सके। धन्यवाद।

श्री कौशलेन्द्र कुमार (नालंदा): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का मौका दिया, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं। रक्षा मंत्रालय ने आयुध निर्माण बोर्ड के माध्यम से रक्षा बलों की आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु राजगीर नालंदा में आयुध फैक्ट्री की स्थापना का कार्य 1999 में 501.42 करोड़ रुपए की पूंजीगत परिव्यय से प्रारंभ किया था। यह देश का दुर्भाग्य है कि एक ओर जहां सरकार देश को सामरिक रूप से समर्थ बनाना चाहती है वहीं दूसरी ओर 13 साल बीत जाने के बाद भी इस अति महत्वपूर्ण आयुध फैक्ट्री परियोजना राजगीर नालंदा को पूरा नहीं किया जा सका है जबकि इसे नवंबर 2005 में पूरा किया जाना था। मेरा सरकार से आग्रह है कि इस तरह की परियोजना के प्रबंधन में घोर लापरवाही बरतने के लिए जिम्मेदारी निर्धारित कर हम समुचित कार्यवाही कर आयुध फैक्ट्री परियोजना नालंदा को जल्द से जल्द चालू कराया जाए।

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन (भागलपुर): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपने मुझे जीरो आवर में बोलने का मौका दिया, इसके लिए मैं आपका धन्यवाद करता हूं। बजट पर नालंदा की चर्चा हुई थी, मैं इसके लिए सरकार को धन्यवाद देता हूं कि सरकार इस बारे में चिंता कर रही है लेकिन सरकार विक्रमशिला को भूल जाती है। मैं भागलपुर से सांसद हूं। मैं इस संबंध में माननीय प्रधानमंत्री जी से भी मिला था। कल्चर मिनिस्ट्री की तरफ से सर्वे टीम भी गई थी, अभी पूरी खुदाई भी नहीं हुई है। सरकार विक्रमशिला को क्यों भूल रही है, यह प्रश्न हमारे दिमाग में आता है। मैं आपके जिएए सरकार के समक्ष विक्रमशिला की उपेक्षा का विषय उठाना चाहता हूं।

उपाध्यक्ष महोदय, आप जानते हैं कि विक्रमिशला बहुत पुरानी संस्कृति की धरोहर है। इस तरफ सरकार को जिस तरह से ध्यान देना चाहिए और इसकी पूरी तरह से खुदाई होनी चाहिए। आपने नालंदा के नाम पर यूनिवर्सिटी बनाई है। जब आप बहुत सी सैंट्रल यूनिवर्सिटी बना रहे हैं तो क्यों नहीं सरकार विक्रमिशला के नाम पर एक अलग यूनिवर्सिटी कायम कर रही है? मैं बहुत जिम्मेदारी के साथ कहना चाहता हूं कि सरकार ने विक्रमिशला नाम की एक्सप्रेस गाड़ी चला दी है, आप भी उसमें कई बार बैठे होंगे लेकिन विक्रमिशला के नाम पर और कुछ सरकार ने एकदम से नहीं किया है। मैं भागलपुर से सांसद हूं, मुझे इस बात पर गर्व है कि वहां के लोग लगातार इस विषय को उठाने के लिए कहते हैं। मैं सरकार से निवेदन करना चाहता हूं कि विक्रमिशला के नाम पर फंड दिया जाए। दो सैंट्रल

यूनिवर्सिटी बिहार को मिली हैं लेकिन विक्रमशिला के नाम पर भी यूनिवर्सिटी खोली जाए। विक्रमशिला सिर्फ बिहार की नहीं बल्कि पूरे देश की धरोहर है। सरकार को इस पर ध्यान देना चाहिए। हमें इसकी उपेक्षा स्वीकार नहीं है। सरकार कम से कम 100 करोड़ रुपए की राशि विक्रमशिला के रखरखाव के लिए दी जानी चाहिए। इसे इस तरह से डेवलप किया जाना चाहिए जिस तरह से नालंदा डेवलप हो रहा है। हम जब स्पीकर साहिबा के साथ पाकिस्तान गए थे, तब देखा था कि तक्षशिला को किस तरह से उन्होंने देखभाल की है हालांकि पूरा पाकिस्तान उजड़ा हुआ है लेकिन तक्षशिला का ध्यान रखा है। भारत सरकार अकसर कहती है कि हमारी इकनामी बहुत अच्छी है, धरोहर को बचाने का काम करते हैं। मैं पूछना चाहता हूं कि विक्रमशिला की उपेक्षा क्यों हो रही है? क्या कांग्रेस की हुकूमत नहीं है, भागलपुर के फसाद की वजह से पूरे नार्थ में खत्म हो गई है? क्या इस बात का गुस्सा उतार रही है?

उपाध्यक्ष महोदय: आप सरकार से क्या चाहते हैं?

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन: मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि विक्रमशिला के लिए सरकार अच्छी राशि दी जाए, 100 करोड़ की राशि दे, एक सैंट्रल यूनिवर्सिटी विक्रमशिला के नाम पर शुरु करे। हम सरकार की हैसियत जानते हैं कि सरकार बहुत दिक्कत में है। आपने बिहार को एक के बदले दो यूनिवर्सिटी गया और मोतीहारी दी हैं, इसके लिए हम आपका शुक्रियाअदा करते हैं। इसके साथ यह निवेदन करते हैं कि विक्रमशिला सैंट्रल यूनिवर्सिटी की स्थापना की जाए। मंत्री जी आप रिस्पांड कर दें, हमारी बात को वहां पहुंचा दें, विक्रमशिला के लिए खड़े होकर कह दें।

SHRI S. SEMMALAI (SALEM): Mr. Deputy-Speaker, Sir, thank you for giving me this opportunity to raise an important issue pertaining to my constituency.

There is a long-pending demand for the establishment of a Common Facility Centre at Salem in the premises of Salem Steel Plant which is situated in my constituency where nearly 2,500 acres of land is kept vacant and not utilised by the SSP.

The MSME has already sanctioned a financial grant of Rs. 12.76 crore to this Common Facility Centre to install required plant and machineries. But this fund is not utilised so far and no action is taken till date. In Salem Steel Plant, the accumulated steel value of various products, right from raw materials to finished goods is about 60,000 metric tonnes, which is being kept idle. It is worth about Rs. 800 crore. The authorities are saying that it would be sent to various States on orders. But what the local Association, i.e. the Salem District Small Scale and Tiny Industries' Association says is, if the raw materials and products of the Salem Steel Plant are utilised in the district itself, a number of units will come up and more employment opportunities will be provided to the unemployed youth. And, more employment opportunities will be provided to the unemployed youth. But, so far, the SAIL has not taken any initiative in this regard.

So, I urge upon the Government, in particular, both the Ministry of MSME and the Ministry of Steel to start down-stream industries at the Salem Steel Plant by which the Salem Steel Plant can regularly market their products for the consumption of the proposed MSME units.

MR. DEPUTY-SPEAKER: What is your demand?

SHRI S. SEMMALAI: So, both the Ministries should take necessary action to solve the problems faced by the MSME units in Salem. Thank you.

श्री विष्णु पद राय (अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह): उपाध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का मौका दिया, इसके लिए मैं आपको बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं। वर्ष 2013 की जनवरी में भारत के स्वास्थ्य मंत्रालय ने हिली और रिमोट एरियाज में जहां स्वास्थ्य सेवाएं नहीं पहुंची हैं, उन्होंने वहां के लिए एक स्कीम टाइम टू केयर बनाई। इस स्कीम के मुताबिक हैबिटेशन, जहां उनके घर हैं, वहां से 30 मिनट की दूरी के अंदर उन्हें स्वास्थ्य सेवा मिले, इसलिए इस स्कीम का नाम टाइम टू केयर दिया। ऐसे सात सब-हैल्थ सैन्टर्स बनने तय हुए हैं। उसी के मुताबिक आसाम, मेघालय,

अरूणाचल, राजस्थान और गुजरात का नाम आया। लेकिन अंडमान निकोबार दीपसमूह का नाम नहीं आया। अंडमान निकोबार दीपसमूह में कम से कम दो सौ से तीन सौ ऐसे गांव हैं, जो रिमोट, बैकवर्ड, ट्राइबल, फारेस्ट और रेवेन्यू विलेजिज हैं। इनके नाम पाइलोन, बर्माचार, नारायण टिकरी, बंदनाला, गोपालनगर आदि हैं। इन एरियाज में आज भी कोई स्वास्थ्य सेवा नहीं पहुंची है। वहां से हैल्थ सब-सैंटर्स जाने के लिए तीन से चार घंटे चलना पड़ता है। वहां समुद्र के रास्ते डोंगी से आना-जाना पड़ता है। जिसके कारण रास्ते में देर हो जाने कारण पेशेन्ट्स की मौत हो जाती है। हमारे दीपसमूह में पांच सौ ट्रेन्ड नर्सेज, एएनएम्स और हैल्थ वर्कर्स बेकार बैठे हैं, उन्हें नौकरियां नहीं मिल रही हैं।

में केन्द्र के स्वास्थ्य मंत्रालय के ध्यान में लाना चाहता हूं कि अंडमान निकोबार दीपसमूह के चार अनएम्पलायड ट्रेन्ड नर्सेज हमारे साथ मंत्रालय में गये, उन्होंने वहां स्वास्थ्य मंत्री जी से मुलाकात की और पत्र देकर मांग की कि अंडमान निकोबार दीपसमूह में जो दो सौ, तीन सौ गांव फारेस्ट, रेवेन्यू, ट्राइबल विलेज हैं, जहां सब-सैन्टर्स नहीं हैं, वहां पर टाइम टू केयर स्कीम के माध्यम से सब-हैल्थ सैंटर्स खोले जाए, तािक वहां के लोगों को ट्रीटमैन्ट का मौका मिले और हर सब-हैल्थ सैन्टर में कम के कम एक नर्स, एएनएम तथा हैल्थ वर्कर्स की नियुक्ति हो, क्योंकि ये सब-सैन्टर पीएससी की तरह स्वास्थ्य सेवाएं देंगे और पीएचसी पहुंचने के लिए घंटों की यात्रा करनी पड़ती है।

अंत में मैं एक मांग करूंगा कि हमारे यहां पीएससी और सीएचची में जब लोगों की भर्ती हुई थी, उसके मुकाबले आज पापुलेशन बहुत बढ़ चुकी है। इसलिए पीएससी और सीएचसी में नर्सिंग स्टाफ की भर्ती की जाए। श्री धनंजय सिंह (जौनपुर): उपाध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का समय दिया, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं। आपको चेयर पर देखकर मुझे लगा कि यह एक बहुत महत्वपूर्ण विषय है, इसलिए इसे शून्यकाल में उठाना बहुत आवश्यक है। मैं उम्मीद करूंगा कि जो विषय शून्यकाल में उठते हैं, उनके बारे में आप सरकार को निर्देशित करेंगे कि वह उन पर गंभीरता से ध्यान दे।

उपाध्यक्ष महोदय: सरकार यहां बैठी है, ध्यान दे रही है।

श्री धनंजय सिंह: सरकार ध्यान नहीं देती है, इसीलिए मैं आपसे निवेदन कर रहा हूं।

महोदय, आप भी ग्रामीण क्षेत्र से आते हैं, यहां जो अधिकांशतः सांसद बैठे हैं, वे ग्रामीण क्षेत्र से आते हैं। उनके संसदीय क्षेत्र का अधिकांश हिस्सा ग्रामीण क्षेत्र में पड़ता है। उपाध्यक्ष जी, आप भी ग्रामीण क्षेत्र से हैं। हम लोग देखते हैं कि ग्रामीण क्षेत्रों मे अधिकांश लोगों के गरीब परिवारों के घर छप्पर के बने होते हैं। यदि उन्होंने एक कमरा बना लिया तब भी उनके घर पर आठ-दस छप्पर पड़े होते हैं, जिनके नीचे वे लोग रहते हैं। उनकी गाय, भैंस, अनाज आदि सब चीजें उनके नीचे रहती हैं। अभी गर्मी का मौसम शुरू हो रहा है, मार्च का महीना है, गर्मी के मौसम में हम लोग देखते

08.03.2013 240

हैं कि अक्सर बहुत बड़ी-बड़ी आग लगती हैं, जिसमें पूरा गांव का गांव जल जाता है। उसके तुरंत बाद जून-जुलाई से उन्हें बाढ़ की त्रासदी भी झेलनी पड़ती है।

उपाध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से सरकार का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूं कि भारत सरकार यह प्रयास करे कि जो जिले बने थे, उन प्रत्येक जिलों में सैंट्रल रिजर्व फंड जनरेट करें, जिससे कि जो पीड़ित व्यक्ति होते हैं, जो प्राकृतिक आपदा का सामना करते हैं, जिनके घर जल जाते हैं, बाढ़ में बह जाते हैं, उन्हें एक लम्बी प्रक्रिया के तहत गुजरना पड़ता है, जिसमे डिस्ट्रिक्ट एडिमिनिस्ट्रेशन स्टेट को प्रपोजल भेजता है, स्टेट गवर्नमैन्ट को प्रपोजल भेजती है तो पता चलता है कि डेढ़-डेढ़, दो-दो साल बाद उन्हें रिलीफ मिल पाता है।

मेरा आपसे आग्रह है कि क्या भारत सरकार इस दिशा में विचार कर रही है, यदि विचार नहीं कर रही है तो सरकार को विचार करना चाहिए। सरकार प्रत्येक जिले में एक सैंट्रल रिजर्व फंड बनाये, जिससे कि ऐसी समस्याओं का त्वरित निस्तारण किया जा सके, ताकि गरीब व्यक्तियों को दर-दर न भटकना न पड़े।

श्री राजेन्द्र अग्रवाल (मेरठ): उपाध्यक्ष महोदय, मैं पश्चिम उत्तर प्रदेश के मेरठ से आता हूँ। यह क्षेत्र गन्ने का बड़ी मात्रा में उत्पादन करता है। लेकिन इस क्षेत्र का गन्ना किसान बहुत परेशान है तथा आंदोलनरत है। हालत यह है कि मिलें गन्ने का ठीक समय पर उठान नहीं करती हैं और समय से भुगतान नहीं करती हैं। मेरठ मंडल के किसानों द्वारा 15 दिन या उससे पहले मिलों पर डाले गए गन्ने का लगभग 800 करोड़ रूपये से अधिक का भुगतान चीनी मिलों पर बकाया है। देश की सर्वोच्च अदालत का यह फैसला है कि 15 दिन के बाद किए गए भुगतान पर मिलें किसानों को 15 प्रतिशत की दर से बयाज का भुगतान करें। क्या सर्वोच्च न्यायालय के इस आदेश का पालन हो रहा है? इस आदेश का चीनी मिलों से पालन कराने की जिम्मेदारी किसकी है? क्या असंगठित गरीब किसान स्वयं यह लड़ाई लड़ सकता है?

उपाध्यक्ष जी, सर्वोच्च न्यायालय के आदेश की अवमानना का चीनी मिलों को कोई भय नहीं है तथा इसी कारण गन्ना किसान का भुगतान धीरे-धीरे किश्तों में अगले पेराई सीजन तक मिलें करती रहती हैं। वर्ष 2009-10 के पेराई सीजन का 75 रूपये प्रति क्विंटल का अंतर मूल्य अभी तक किसानों को नहीं मिला है। पिछले वर्ष ही सर्वोच्च न्यायालय ने तीन किश्तों में किसानों का बकाया भुगतान करने के आदेश दिए थे। 7 जून, 7 जुलाई तथा 7 अगस्त 2012 में यह भुगतान होना था परन्तु इन आदेशों का भी पालन नहीं किया गया।

उपाध्यक्ष जी, किसान का इसी प्रकार से शोषण तथा उत्पीड़न होता है। उसे उसकी उपज का भुगतान कई-कई महीनों बाद किश्तों में मिलता है, उसे ब्याज मिलता नहीं, परंतु ब्याज देना पड़ता है। समय से बिल न चुकाने से उसकी बिजली काट दी जाती है। ऋण की किश्त समय से न चुकाने पर प्रशासन द्वारा उसकी आर.सी. काट दी जाती है, उसको अपमानित किया जाता है।

मेरा आपके माध्यम से सरकार से अनुरोध है कि सरकार इस संबंध में हस्तक्षेप करे। वर्ष 2009-10 का 75 रूपये का अंतर मूल्य किसानों को दिलवाया जाए। किसानों का भुगतान समय से दिलाना सुनिश्चित किया जाए। सर्वोच्च न्यायालय के निर्णयानुसार भुगतान में विलंब होने पर उसका ब्याज किसान को मिले तथा किसान को भुगतान न होने तक ऋण वसूली को रोका जाए।

MR. DEPUTY-SPEAKER: The House stands adjourned to meet again at 11 a.m. on the 11th March, 2013.

18.41 hrs.

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Monday, March 11, 2013/Phalguna 20, 1934 (Saka).